अध्याय 15 की विषय सूची
चिकित्सा शिक्षा, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान

क्र. सं.	मदें	पृष्ठ सं.
1.	भारतीय चिकित्सा परिषद (एम सी आई)	253
2.	भारतीय दंत परिषद (डी सी आई)	253-254
3.	चिकित्सा शिक्षा के लिए योजनाएं	254
4.	भारतीय भेषज परिषद (पी सी आई)	254-255
5.	संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान का विकास	255-256
6.	भारतीय नर्सिंग परिषद	256-257
7.	नर्सिंग सेवाओं का विकास	257
8.	राजकुमारी अमृत कौर (आर ए के), नर्सिंग महाविद्यालय, नई दिल्ली	258
9.	अखिल भारतीय प्री–मेडिकल/प्री–डेंटल (यूजी) परीक्षा	258
10.	अखिल भारतीय स्नातकोत्तर प्रवेश चिकित्सा परीक्षा	259
11.	अखिल भारतीय दंत स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा	259
12.	केन्द्रीय पूल से मेडिकल/दंत सीटों का आबंटन	259-260
13.	राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड (एन बी ई)	260
14.	राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली	260-261
15.	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) नई दिल्ली	261-268
16.	जवाहर लाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, (जिपमेर), पुद्दुचेरी	268-270
17.	स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, (पीजीआईएमईआर), चंड़ीगढ़	270-272
18.	लेडी हार्डिंग चिकित्सा महाविद्यालय तथा श्रीमती एस. के. अस्पताल, नई दिल्ली	272-274
19.	कलावती सरन बाल अस्पताल, नई दिल्ली	275-276
20.	महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, सेवाग्राम, महाराष्ट्र	276-281
21.	राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र (एन सी डी सी), नई दिल्ली	282-298
22.	लेडी रिडींग हेल्थ स्कूल, दिल्ली	298-299
23.	पाश्चर इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (पीआईआई), कुन्नुर	299-300
24.	ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ फिजिकल मेडिसिन एंड रिहैबिलिटेशन (एआईआईपीएमआर), मुंबई	300-303

25.	अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान (एआईआईएसएच), मैसूर	303-305
26.	केन्द्रीय मन–चिकित्सा संस्थान (सीपीआई), रांची	305-310
27.	केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (सीआरआई), कसौली	310
28.	वल्लभभाई पटेल चेस्ट संस्थान (वीपीसीआई), दिल्ली	311-314
29.	केन्द्रीय स्वास्थ्य आसूचना ब्यरो (सीबीएचआई)	315-320
30.	पूर्वोत्तर इंदिरा गांधी क्षेत्रीय स्वास्थ्य और चिकित्सा विज्ञान संस्थान (निग्रिम्स), शिलांग	320-321
31.	राष्ट्रीय जैविक संस्थान (एन आई बी), नोएडा	321-322
32.	बीसीजी वैक्सीन प्रयोगशाला, गिंडी	322
33.	ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हाइजिन एंड पब्लिक हेल्थ (ए आई आई एच पी एच), कोलकाता	322-326
34.	केन्द्रीय कुष्ठ रोग शिक्षण और अनुसंधान संस्थान (सीएलटीआरआई), चेंगलपट्टू	326-329
35.	क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आरएलटीआरआई), रायपुर	329-330
36.	क्षेत्रीय कुष्ठ रोग प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, आस्का	330-331
37.	क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आरएलटीआरआई), गौरीपुर	331-332
38.	राष्ट्रीय मेडिकल लाइब्रेरी (एन एम एल), नई दिल्ली	332-334
39.	राष्ट्रीय तपेदिक एवं श्वसन रोग संस्थान, नई दिल्ली	334-336
40.	राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान, (निम्हांस), बेंगलुरू	336-338
41.	राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान, (एनटीआई), बेंगलुरू	338-340
42.	एचएससीसी (इंडिया) लिमिटेड, नोएडा	340-343
43.	प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पीएमएसएसवाई)	343-346
44.	अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, (आईआईपीएस), मुंबई	346-350
45.	परिवार कल्याण प्रशिक्षण व अनुसंधान केन्द्र (एफडब्ल्यूटीआरसी), मुंबई	350-351
46.	राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान (एनआईएचएफडब्ल्यू), नई दिल्ली	351-356
47.	ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र, नजफगढ़, नई दिल्ली	356
48.	गांधीग्राम ग्रामीण स्वास्थ्य संस्थान और परिवार कल्याण न्यास (जीआईआरएचएफडब्ल्यूटी)	356-357
49.	एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड (एचएलएल)	357-359
50.	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय का क्षेत्रीय कार्यालय (आरओएचएफडब्ल्यू)	359-360
51.	नई दिल्ली क्षयरोग (एनडीटीबी) केन्द्र, नई दिल्ली	360-362
52.	केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (सीएचईबी)	362-363

15
अध्याय

चिकित्सा शिक्षा, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान

15.1 प्रस्तावना

केन्द्र द्वारा चिकित्सा शिक्षा के मानकों की निगरानी करने तथा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए नियामक निकायों की स्थापना की गई है। ऐसा देश में प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक स्तरों पर स्वास्थ्य उपचार सुपुर्दगी प्रणाली की आवश्यकता को पूरा करने के लिए चिकित्सा एवं परा–चिकित्सा कार्मिक शक्ति को बनाए रखने के उद्देश्य से किया जा रहा है। इस अध्याय में विभिन्न निकायों एवं संस्थानों द्वारा संचालित किए जाने वाले क्रियाकलापों की स्थिति पर विचार किया गया है।

15.2 भारतीय चिकित्सा परिषद् (एम.सी.आई)

प्रस्तावना

सरकार द्वारा चिकित्सा एवं दंत शिक्षा के मानकों की निगरानी करने, पाठ्यक्रम की पाठ्यचर्या निर्धारित करके उसे आधुनिक बनाने तथा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए भारतीय चिकित्सा परिषद् (एम.सी.आई) तथा भारतीय दंत परिषद् (डी.सी.आई) नामक नियामक निकायों की स्थापना की गई है। ऐसा देश में प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक स्तरों पर स्वास्थ्य उपचार सुपुर्दगी प्रणाली की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चिकित्सा, दंत तथा परा–चिकित्सा कार्मिक शाक्ति को बनाए रखने के उद्देश्य से किया जा रहा है।

भारतीय चिकित्सा परिषद् (एम.सी.आई) की एक स्वायत्त निकाय के रूप में स्थापना भारतीय चिकित्सा परिषद् अधिनियम (आई.एम.सी अधिनियम), 1933 के प्रावधानों के तहत की गई थी, जिसे बाद में भारतीय चिकित्सा परिषद् अधिनियम (आई.एम.सी), 1956 (1956 का 102) के द्वारा बदला गया था। परिषद् के मुख्य क्रियाकलाप निम्नलिखित हैं:–

i स्नातक–पूर्व, स्नातकोत्तर तथा अति–विशिष्टता स्तर पर चिकित्सा शिक्षा के एक–समान मानकों का पालन करना;

ii केन्द्र सरकार को नए मेडिकल कॉलेजों को खोलने, दाखिला क्षमता में बढ़ोत्तरी करने तथा अध्ययन के नए अथवा उच्चतर पाठ्यक्रमों को आरम्भ करने के लिए सिफारिश करना;

iii भारतीय मेडिकल रजिस्टर का अनुरक्षण;

iv चिकित्सा अर्हताओं की परस्पर मान्यता के मामले में विदेशों के साथ आदान–प्रदान करना;

v मान्यताप्राप्त चिकित्सा अर्हताओं के साथ चिकित्सकों का अस्थायी/स्थायी पंजीकरण, अतिरिक्त अर्हताओं का पंजीकरण और विदेश जाने वाले चिकित्सकों को उत्तम नेकनामी का प्रमाण–पत्र जारी करना; तथा

vi क्रमिक चिकित्सा शिक्षा, आदि।

आई.एम.सी. अधिनियम, 1956 एवं इसके तहत बनाए गए विनियमों के अनुसार, नए मेडिकल कॉलेज खोलने, दाखिला क्षमता बढ़ाने तथा अध्ययन के नए अथवा उच्चतर पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने के लिए केन्द्र सरकार की पूर्व अनुमति लेना अनिवार्य है।

वर्तमान में, देश में 404 मेडिकल कॉलेज हैं जिनमें से 189 सरकारी तथा 215 निजी क्षेत्रों में हैं, जिनकी वार्षिक दाखिला क्षमता लगभग 54,348 एम.बी.बी.एस. छात्र एवं

25,346 स्नातकोत्तर छात्र प्रतिवर्ष है। शैक्षिक वर्ष 2014–15 के दौरान 17 नए मेडिकल कॉलेजों को अनुमति प्रदान की गई जिससे एमबीबीएस की 2750 तथा 1150 स्नातकोत्तर सीटों की बढ़ोतरी हो गई।

15.3 भारतीय दंत परिषद (डी.सी.आई.)

भारतीय दंत चिकित्सा परिषद् (डी.सी.आई.) की स्थापना एक स्वायत्तशासी निकाय के रूप में दंत चिकित्सक अधिनियम 1948 (1948 का 16) के प्रावधानों के तहत देश में दंत शिक्षा, दंत व्यवसाय एवं दंत–नीतिशास्त्र के मानकों को विनियमित करने, दाखिला क्षमता में बढ़ोत्तरी तथा अध्ययन के नए अथवा उच्चतर पाठ्यक्रमों को प्रारंभ करने के उद्देश्य से की गई थी। इस उद्देश्य हेतु परिषद् द्वारा पाठ्यक्रमों की उपयुक्तता एवं दंत–चिकित्सा के अध्ययन हेतु उपलब्ध सुविधाओं का पता लगाने के लिए आवधिक निरीक्षण किया जाता है।

वर्तमान में, देश में 304 दंत चिकित्सा कॉलेज है, जिनमें से 43 सरकारी क्षेत्र में और 261 निजी क्षेत्र में हैं जिनकी वार्षिक दाखिला क्षमता लगभग 26,190 बी.डी.एस तथा 5,020 स्नातकोत्तर छात्र प्रतिवर्ष है। शैक्षिक वर्ष 2014–15 के दौरान 4 नए दंत कॉलेजों को अनुमति प्रदान की गई। बी.डी.एस की 250 सीटों की बढ़ोत्तरी हो गई।

15.4 स्वास्थ्य शिक्षा सम्बन्धी योजनाएं

देश में चिकित्सा संस्थानों को उन्नत करने एवं और सशक्त करने के विचार से मंत्रालय निम्नलिखित योजनाएं संचालित करता है:–

i.) **स्नातकोत्तर सीटों में बढ़ोत्तरी हेतु राज्य सरकार के मेडिकल कॉलेजों को समर्थ करने एवं उन्नत करने हेतु योजनाएं:** यह एक जारी केन्द्र प्रायोजित योजना है जिसमें इस योजना के तहत केन्द्र तथा राज्य सरकार के बीच 75:25 के अनुपात में निधि की भागीदारी होती है। सरकारी मेडिकल कॉलेजों को संरचनात्मक विकास, संकाय तथा उपस्करों हेतु निधियां उपलब्ध करायी जाती हैं। केंद्र सरकार के हिस्से की 716.94 करोड़ रुपये की धनराशि पहले ही 20 राज्यों में 72 राज्य सरकारी मेडिकल कॉलेजों को पहले ही जारी की जा चुकी है।

ii **वर्तमान जिला/रेफरल अस्पतालों के साथ सम्बद्ध नए मेडिकल कॉलेजों की स्थापना हेतु योजना:** यह एक नई केन्द्रीय प्रायोजित योजना है जिसमें उत्तर–पूर्व/विशेष श्रेणी वाले राज्यों हेतु 90:10 के अनुपात में केंद्र तथा राज्यों के बीच निधि की भागीदारी होती है और अन्य राज्यों के लिए 75:25 के अनुपात में। योजना के तहत, सरकारी क्षेत्र में स्नातकपूर्व स्तर पर 5800 सीटों की वार्षिक भर्ती क्षमता को बढ़ाने के लिए प्रत्येक 100 सीटों की क्षमता 58 मेडिकल कॉलेज खोलने का प्रस्ताव है। इसका उद्देश्य वर्तमान जिला/रेफरल अस्पतालों के नए मेडिकल कॉलेजों को लागत प्रभावी तरीके संबद्ध करते हुए अतिरिक्त स्नातक–पूर्व सीटों में बढ़ोत्तरी करने के लिए जिला अस्पतालों के वर्तमान इनफ्रास्ट्रक्चर का प्रयोग करना है। 31.12.2014 तक इस योजना के अंतर्गत 7 प्रस्ताव अनुमोदित किए जा चुके हैं।

iii **एम.बी.बी.एस. सीटों की भर्ती क्षमता में बढ़ोत्तरी हेतु राज्यों के सरकारी मेडिकल कॉलेजों की संख्या बढ़ाना एवं उन्नत करना** – यह एक नई केंद्रीय प्रायोजित योजना है जिसमें केंद्रीय सरकार एवं राज्यों के बीच निधियों की भागीदारी उत्तर–पूर्व/विशेष श्रेणी वाले राज्यों के बीच में 90:10 के अनुपात में तथा अन्य राज्यों में 70:30 के अनुपात में होती है। इस योजना के तहत, देश भर में सरकारी मेडिकल कालेजों में अतिरिक्त 10,000 एम.बी.बी.एस. सीटों के सृजन का प्रस्ताव किया गया है। प्रत्येक एम.बी.बी.एस. सीट ऊपरी उच्चतम लागत में रुपये 1.20 करोड़ पर स्थिर रखा गया है। इस योजना में देश में स्नातक–पूर्व सीटों की संख्या में बढ़ोत्तरी द्वारा चिकित्सकों की कमी को घटाने की संकल्पना की गई है। दिनांक 31.12.2014 तक 15 कॉलेजों के सम्बन्ध में प्रस्तावों को अनुमोदित किया गया है।

15.5 भारतीय भेषज परिषद (पी.सी.आई)

भेषज अधिनियम 1948 की धारा 3 के तहत औषधियों के व्यवसाय एवं व्यवहार को विनियमित करने के लिए गठित एक निकाय है। परिषद् के उद्देश्य भेषजज्ञ के रूप में अर्हता

हेतु शिक्षा के लघुतम मानकों को निर्धारित करता, शैक्षिक मानकों का एकीकृत कार्यान्वयन, अध्ययन के पाठ्यक्रम का अनुमोदन वापस लेना, भारत से बाहर प्रदान की गई अर्हताओं का अनुमोदन और भेषज विज्ञानियों के केंद्रीय रजिस्टर का अनुरक्षण करना है।

परिषद् द्वारा डिप्लोमा, उपाधि एवं डी.फार्मा संस्थानों के 1318 निरीक्षणों की व्यवस्था की गई तथा गत एक वर्ष के दौरान कार्यकारी समिति एवं केंद्रीय परिषद् की कई बैठकों का आयोजन किया गया जिसके परिणामस्वरूप 308 डिप्लोमा एवं डिग्री संस्थानों को भेषजी अधिनियम की धारा 12 के तहत अनुमोदन को विस्तार प्रदान किया गया, 120 नए डिप्लोमा एवं डिग्री संस्थानों को भेषजी अधिनियम की धारा 12 के तहत अनुमोदन बढ़ाया गया, 31 नए डी.फार्मा संस्थानों को पाठ्यक्रम संचालित करने के लिए अनुमोदन प्रदान किया गया तथा 10 नए डी.फार्मा (पोस्ट बैकेलायूरेट) संस्थानों को पाठ्यक्रम संचालित करने के लिए अनुमोदन प्रदान किया गया।

वर्तमान में, देश में भारतीय भेषजी परिषद् द्वारा फार्मेसी में डिप्लोमा हेतु 42,282 दाखिलों के साथ 710 संस्थानों तथा फार्मेसी में डिग्री हेतु 62,375 दाखिलों सहित 930 संस्थानों को अनुमोदित किया गया है।

फार्मेसी कॉलेजों में रैंगिंग के संकट को रोकथाम करने के लिए भारतीय भेषजी परिषद् विनियमों को भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया गया है।

क्रमिक शिक्षा कार्यक्रम (सी.ई.पी.) भेषजविज्ञानियों के ज्ञान कोष के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय भेषजी परिषद द्वारा भेषजविज्ञानियों हेतु क्रमिक शिक्षा कार्यक्रम संचालित करने के लिए राज्य भेषजी परिषद को अधिकतम 12 पाठ्यक्रमों हेतु प्रति पाठ्यक्रम रु.10,000/– की वित्तीय सहायता अपने संसाधनों में से दी जा रही है।

फार्मेसी संस्थानों एवं फार्मेसी शिक्षकों तथा व्यवसायरत भेषज विज्ञानियों हेतु क्रमिक शिक्षा कार्यक्रम को सशक्त करने/उन्नत करने के एक प्रयास हेतु रु.65.00 करोड़ अनुमोदित किए गए हैं। यह योजना 12वीं पंचवर्षीय योजना में कार्यान्वयन हेतु अनुमोदित कर दी गई है।

15.6 सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान का विकास

1. सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान शिक्षा का मानकीकरणः

- मंत्रालय द्वारा 10 वर्गों में अध्ययन पाठ्यक्रमों के मानकीकरण का कार्य प्रारम्भ किया गया है जोकि चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी, डायलेसिस प्रौद्योगिकी, चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी, विकिरण विज्ञान, विकिरण चिकित्सा, ऑपरेशन कक्ष प्रौद्योगिकी, भौतिक चिकित्सा, अस्थिविज्ञान एवं कृत्रिमांग विज्ञान, नेत्रविज्ञान, चिकित्सा अभिलेख प्रौद्योगिकी वाक एवं श्रवण भाषा विकृति विज्ञान तथा स्वच्छता हैं।
- प्रत्येक व्यवसाय के लिए पाठ्यचर्या पुनः अभिकल्पित करने हेतु एवं मानकीकरण हेतु कार्यबल तथा पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या की समीक्षा करने और उसे अंतिम रूप देने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पुनरीक्षण समिति का गठन किया जा चुका है।
- पाँच पाठ्यक्रमों अर्थात् चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी, विकिरण विज्ञान, विकिरण चिकित्सा तथा ऑपरेशन कक्ष प्रौद्योगिकी की पाठ्यचर्या के मानकीकरण से संबंधित कार्य अंतिम अवस्था में है।

2. सरकार ने सम्बद्ध स्वास्थ्य शिक्षा के मानकीकरण हेतु 'राष्ट्रीय सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान बोर्ड' की स्थापना की प्रक्रिया भी प्रारम्भ की है।

3. सरकार ने एक राष्ट्रीय सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संस्थान (एन.आई.ए.एस.एस.) तथा आठ (8) क्षेत्रीय सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संस्थान (आर.आई.ए.एच.एस) की स्थापना हेतु एक केंद्रीय प्रायोजित योजना प्रारम्भ करने की प्रकिया शुरू करने हेतु कदम उठाए हैं।

   योजना का उद्देश्य देश भर में कुशल सम्बद्ध स्वास्थ्य कार्मिकों की आपूर्ति बढ़ाना तथा ऐसी शिक्षा/पाठ्यक्रमों के मानकीकरण द्वारा उनके प्रशिक्षण को प्रोत्साहित करना है। यह क्षमता निर्माण योजना निम्नलिखित हेतु मार्गदर्शन करेगीः–

- सम्बद्ध स्वास्थ्य व्यावसायिकों की उपलब्धता में क्षेत्रीय असन्तुलन में कमी।
- नए/अग्रणी विषयों में पाठ्यक्रमों की प्रस्तावना।

- योजना, अनुवीक्षण, मूल्यांकन आदि हेतु क्षमता को बढ़ाना
- सेवाकालीन प्रशिक्षण, कार्य–अनुसंधान, ऑनसाईट समर्थन आदि द्वारा गुणवत्ता सुनिश्चित सेवाओं का प्रावधान।

4. 'फार्मेसी संस्थानों एवं संकाय तथ व्यवसायरत भेषज विज्ञानियों हेतु सतत् शिक्षा कार्यक्रम का सशक्तीकरण/उन्नतिकरण' नामक अन्य योजना में सरकार फार्मेसी संस्थानों के साथ–साथ व्यवसायरत भेषज विज्ञानियों हेतु संकाय विकास कार्यक्रम एवं प्रशिक्षण को सशक्त/उन्नत करने हेतु उपाय कर रही है।

5. भावी योजनाः

- एक राष्ट्रीय सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संस्थान तथा 8 क्षेत्रीय सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संस्थानों की स्थापना।
- सरकारी मेडिकल कॉलेजों में राज्य स्तरीय सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान पाठ्यक्रमों की स्थापना।
- सरकारी मेडिकल कॉलेजों में राज्य स्तरीय फार्मेसी संस्थानों की स्थापना।
- सम्बद्ध स्वास्थ्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण की गुणवत्ता को उनके पाठ्यचर्या के मानकीकरण द्वारा प्रोत्साहित करना।

15.7 भारतीय नर्सिंग परिषद् (आई.एन.सी.)

भारतीय नर्सिंग परिषद्, भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत एक स्वायत्तशासी निकाय है। भारतीय नर्स परिषद् अधिनियम, 1947 द्वारा अधिनियमित इसको पूरे भारतवर्ष में नर्सिंग शिक्षा के एकीकृत मानकीकरण एवं विनियमन बनाए रखने हेतु सांविधिक शक्तियां प्रदान की गई हैं।

इसका प्राथमिक उत्तरदायित्व संगत विधायी फ्रेमवर्क के विस्तार में शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा व्यवहार हेतु प्रतिमानक एवं मानक स्थापित करना है।

1. निरीक्षण

कार्यक्रमों के कैलेंडर के अनुसार प्रस्ताव की प्राप्ति पर भारतीय नर्सिंग परिषद द्वारा निर्धारित किसी नर्सिंग कार्यक्रम को शुरू करने के लिए प्रथम निरीक्षण संचालित किया जाता है। गुणवत्ता शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों को मॉनीटर करने के लिए आवधिक निरीक्षण संचालित किए जाते हैं। किसी भी नर्सिंग कार्यक्रम को प्रारम्भ करने के लिए भारतीय नर्सिंग परिषद द्वारा प्रथम निरीक्षण संचालित किया जाता है। संस्थानों के आवेदन के अनुसार तथा सीटों में बढ़ोतरी हेतु भी पुनर्निरीक्षण संचालित किए जाते हैं। विधिमान्यता/नवीकरण जारी के संबंध में भारतीय नर्सिंग परिषद के मानकों का पालन सुनिश्चित करने हेतु मॉनीटर के लिए आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। यदि संस्थानों द्वारा 70 प्रतिशत तक मानदंड पूरे कर दिए जाते हैं तो विधिमान्यता/नवीकरण की अनुमति दी जाती हैं। यदि संस्थानों द्वारा मानदंड पूरे नहीं किए जाते हैं, तो संस्थानों को कमी के बारे में सूचित किया जाता है और उन्हें कमियों का तीन माह के भीतर दूर करने हेतु कहा जाता है। जिन संस्थानों को अनुमति प्रदान की जाती हैं उनके नाम वेबसाइट पर मान्यता प्राप्त संस्थानों के अंतर्गत प्रदर्शित किए जाते हैं।

2. आय

नर्सिंग शिक्षा संस्थानों से दिनांक 01.04.2014 से 24.12.2014 तक निरीक्षण/संबंधन शुल्क एवं प्रकाशन हेतु रु. 8,55,00,000/– की राशि प्राप्त की गई है। परिषद ने भारतीय स्टेट बैंक चालान के माध्यम से वार्षिक शुल्क एकत्रित करना प्रारंभ कर दिया है। इसके अलावा जो संस्थान बकायादार हैं, उनके नाम परिषद की वेबसाइट पर डाल दिए गए हैं।

3. भारतीय नर्सिंग परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान

दिनांक 31.10.2014 तक मान्यता प्राप्त नर्सिंग संस्थानों की पाठ्यक्रमवार संख्या निम्नानुसार हैः–

क्रम.सं.	कार्यक्रम	कुल
1	एएनएम	1938
2	जीएनएम	2968
2	बी.एससी (नर्सिंग)	1700
3	पीबीबी,सी (नर्सिंग)	755
4	एम. एससी (नर्सिंग)	582
5	पोस्ट बेसिक डिप्लोमा कार्यक्रम	264

4. पंजीकृत नर्सों एवं प्रसूति सहायकों (मिडवाइफ) की संख्या

विभिन्न राज्य नर्सिंग परिषदों के पास दिनांक 31 दिसम्बर, 2013 तक 16,24,476 नर्सें, 7,36,262 एएनएम तथा 55,689 स्वास्थ्य निरीक्षक पंजीकृत किए जा चुके हैं। नर्स पंजीकरण ट्रैकिंग सिस्टम परियोजना पर विचार किया जा चुका है और वित्त वर्ष 2014–15 में लागू किया जाएगा।

5. नर्सिंग में पीएचडी हेतु राष्ट्रीय सह–संघ

भारतीय नर्सिंग परिषद द्वारा विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा समर्थित एवं राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के सहयोग से नर्सिंग में विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए नर्सिंग में पीएचडी हेतु राष्ट्रीय सह–संघ का गठन कर दिया गया है। राष्ट्रीय सह संघ के अंतर्गत नर्सिंग में पीएचडी हेतु कुल 228 छात्र पंजीकृत किए जा चुके हैं। वर्ष 2013–14 के दौरान, 17 छात्रों को राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की जा चुकी है।

6. अन्य पहल

भारतीय नर्सिंग परिषद द्वारा वर्ष 2011 में प्रमाणित राष्ट्रीय नोडल केंद्र, कोलकाता ने प्रत्येक छः सप्ताह की अवधि वाले पांच प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए।इन प्रशिक्षणों में छः विभिन्न राज्यों– बिहार, हरियाणा, जम्मू एवं कश्मीर, मध्य प्रदेश, ओडिशा तथा राजस्थान से 48 शिक्षकों को एसबीए, ईएनबीसी, एसटीआई/आरआईटीएस, आईपीपी,एफपी एवं प्रभावी शिक्षण कौशलों में दक्षता प्राप्त करने हेतु प्रशिक्षित किया गया है। भारतीय नर्सिंग परिषद द्वारा इन प्रशिक्षणों पर रु. 14,47,320/–व्यय किए जा चुके हैं।

15.8 नर्सिंग सेवाओं के विकास की वर्तमान योजना

नर्सिंग सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए वर्ष 2013–14 के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम लागू किए जा चुके हैं।

नर्सिंग शिक्षा/सेवाओं का सशक्तीकरणः सरकार ने निम्नलिखित केंद्रीय प्रायोजित/केंद्रीय क्षेत्र की योजनाओं के द्वारा नर्सिंग शिक्षा एवं सेवाओं के सशक्तीकरण एवं उन्नतिकरण हेतु उपाय किए हैं:

(i) नर्सिंग सेवाओं का उन्नतिकरण/सशक्तीकरण तथा एएनएम/जीएनएम की स्थापना।

(ii) नर्सिंग सेवाओं का विकास

प्रथम योजना के अंतर्गत, 29 राज्यों में 127 एएनएम तथा 137 जीएनएम स्कूलों की स्वीकृति दी जा चुकी है और अब तक राज्यों को रु.704 करोड़ की कुल राशि जारी की जा चुकी है। एएनएम, जीएनएम, बीएससी, एमएससी तथा पीबीबीएससी पाठ्यक्रम करवाने वाले संस्थानों की कुल क्षमता 279033 (भारतीय नर्सिंग परिषद के अनुसार) है। गत तीन वर्षों में प्रति वर्ष 12 प्रतिशत की औसत दर पर सीटों की संख्या में बढ़ोतरी हो चुकी है। उपर्युक्त योजना के तहत मुख्य गतिविधियों में से एक गतिविधि के रूप में अभिज्ञात डोमेन/विषयों में नर्सिंग कार्मिकों को प्रशिक्षण भी प्रदान किया जा रहा है।

नर्सिंग कार्मिक हेतु राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगगेल पुरस्कारः भारत के माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा दिनांक 12.05.2014 को 35 नर्सों को देश में नर्सिंग व्यवसाय में उल्लेखनीय सेवाओं हेतु उत्कृष्ट सम्मान के रूप में राष्ट्रीय फ्लोरेंस नाइटिंगगेल पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रत्येक पुरस्कार में एक योग्यता प्रमाणपत्र एवं रु. 50,000/– का नकद पुरस्कार होता है।

राष्ट्रीय नर्सिंग एवं मिडवाइफरी पोर्टलः नर्सिंग एवं मिडवाइफरी पोर्टल राज्य नर्सिंग परिषदों एवं मिडवाइफरी कैडर हेतु एक ऑनलाईन संसाधन केंद्र है। पोर्टल का उद्देश्य सभी पणधारियों को उपयोगी सूचना प्रदान करते हुए नर्सिंग एवं मिडवाइफरी सेवाओं में सुधार करना है।

वर्ष 2015–16 हेतु योजना

- देश भर में 15 नर्सिंग उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना।
- देश में नर्सिंग शिक्षा की उच्च गुणवता प्रदान करने के लिए भारतीय उन्नत नर्सिंग संस्थान (आईआईएएन) की स्थापना।

15.9 राजकुमारी अमृत कौर (आरएके), नर्सिंग महाविद्यालय, नई दिल्ली

राजकुमारी अमृतकौर नर्सिंग महाविद्यालय की स्थापना नर्सिंग शिक्षा में मॉडल कार्यक्रमों के विकास के लक्ष्य के साथ 67 वर्ष पहले की गई थी। कॉलेज चार नियमित कार्यक्रम अर्थात बीएससी (ऑनर्स) नर्सिंग, मास्टर ऑफ नर्सिंग, एम फिल तथा नर्सिंग में पीएचडी जारी करता है। इसके अतिरिक्त, कॉलेज अल्प–अवधि क्रमिक शिक्षा पाठ्यक्रमों का भी संचालन करता है। संस्थान स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, अस्पतालों, स्वास्थ्य केंद्रों तथा सम्बद्ध एजेंसियों के साथ निकट सहयोग से कार्य करता है।

प्रवेश एवं स्नातक: बीएससी (ऑनर्स) नर्सिंग तथा मास्टर ऑफ नर्सिंग तथा नर्सिंग में एम फिल में प्रवेश दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित चरण परीक्षा में योग्यता के आधार पर किया जाता है।

छात्रवृत्ति एवं वित्तीय सहायता: 77 बीएससी नर्सिंग छात्रों को अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति/अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार द्वारा योग्यता छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

बजट: वर्ष 2013–14 हेतु गैर–योजना में बजट प्रावधान रु.70,00,00,00/– (रु. सात करोड़ केवल) तथा योजना स्कीम में रु.10,80,00,000/– (दस करोड़ अस्सी लाख रुपए मात्र) है।

शिक्षा तथा अनुसंधान: कॉलेज में शैक्षिक वर्ष 2014–15 से दिल्ली विश्वविद्यालय के निर्देशानुसार सैमिस्टर प्रणाली के तहत बीएससी (ऑनर्स) नर्सिंग कार्यक्रम हेतु संशोधित पाठ्यक्रम कार्यान्वित किया गया है। बीएससी (ऑनर्स) नर्सिंग तथा मास्टर ऑफ नर्सिंग कार्यक्रम सूची के अनुसार संचालित किए गए।

सतत् शिक्षा: राष्ट्रीय स्तर के दो अल्प अवधि पाठ्यक्रम ''इनोवेटिव एप्रोचेस इन नर्सिंग एजुकेशन'' तथा अन्य ''इफैक्टिव नर्सिंग मेनजमेंट फक्शंसः थ्योरी एंड प्रैक्टिस'' का संचालन किया गया। इन कार्यशालाओं में कुल 62 नर्सिंग कार्मिकों ने भाग लिया।

ग्रामीण क्षेत्रीय शैक्षिक केंद्र, छावला: ग्रामीण शैक्षिक केंद्र की स्थापना वर्ष 1950 में छात्रों को उद्देश्य उन्मुख ग्रामीण सामुदायिक स्वास्थ्य अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी। इसमें सात गांव तथा लगभग 52,000 की जनसंख्या आती है तथा यह कॉलेज से 32 किमी दूर स्थित है। छात्रों तथा आरएचटीसी, नजफगढ़ के स्टाफ के सहयोग से ग्रामीण एकक के स्टाफ द्वारा एमसीएच सेवाओं, परिवार नियोजन टीकाकरण, परिवार कल्याण सेवाएं, पोषण, किशोर बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों पर बल दिया जाता है।

15.10 केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा संचालित 15 प्रतिशत अखिल भारतीय यूजी सीट 2014 में प्रवेश हेतु अखिल भारतीय प्रि–मेडिकल/प्रि–डेंटल परीक्षा (यूजी) 2014

अखिल भारतीय प्रि–मेडिकल परीक्षा, 2014 में एमबीबीएस तथा बीडीएस की 15% अखिल भारतीय सीटों की तरह प्रतिभागी राज्यों के राज्य कोटा सीट हेतु केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) द्वारा दिनांक 04 मई, 2014 को संचालन किया गया। इस परीक्षा में कुल 523701 उम्मीदवारों ने भाग लिया जिसमें से 53951 उम्मीदवारों को परीक्षा में योग्य घोषित किया गया। परीक्षा परिणाम दिनांक 7 जून, 2014 को घोषित किया गया जिसमें से कल 18116 उम्मीदवारों को 15% अखिल भारतीय कोटा सीटों हेतु काउंसलिंग में भाग लेने के लिए योग्य घोषित किया गया। 148 सरकारी चिकित्सा कॉलेजों तथा 32 डेंटल कॉलेजों में क्रमानुसार 3084 एमबीबीएस सीट तथा 297 बीडीएस सीटों का आवंटन किया गया।

शैक्षिक वर्ष 2014–15 हेतु सफल उम्मीदवारों को कॉलेज तथा कोर्स का आबंटन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय द्वारा तीन राउंड के ऑन–लाइन काउंसलिंग का संचालन करके उनकी श्रेणी के अनुसार किया गया। एमबीबीएस/बीडीएस सीटों के 15% अखिल भारतीय कोटा हेतु संपूर्ण प्रवेश प्रक्रिया दिनांक 05/09/2014 को सफलतापूर्वक पूर्ण हो गई।

15.11 एनबीई, नई दिल्ली द्वारा संचालित 50% अखिल भारतीय पीजी सीट 2014 में प्रवेश हेतु अखिल भारतीय स्नातकोत्तर प्रवेश चिकित्सा परीक्षा 2014

माननीय सर्वोच्च न्यायालय, भारत के निर्देशों के अनुपालन में राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा अखिल भारतीय आधार पर अखिल भारतीय पीजी प्रवेश परीक्षा का संचालन करता है।

प्रवेश परीक्षा दिनांक 25 नवम्बर – 6 दिसंबर, 2013 को देश के 38 बड़े शहरों में आयोजित की गई। एमडी/एमएस/डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु परीक्षा में कुल 70073 उम्मीदवार उपस्थित हुए। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित 2014 हेतु प्रोस्पैक्टस के अनुसार पूरे भारत के 143 मेडिकल कॉलेजों में योग्यता/प्रतीक्षा सूची उम्मीदवारों हेतु सीटों के आबंटन को सक्रिय करने हेतु 27 जनवरी, 2014 को परिणाम घोषित किए गए। शैक्षिक वर्ष 2014–15 हेतु 50% अखिल भारतीय पीजी कोटा के तहत एमडीएमएस तथा डिप्लोमा पाठ्यक्रम में 5579 पंजीकृत/मान्यता प्राप्त सीटें थी। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार में स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय द्वारा ऑन–लाइन काउंसलिंग के माध्यम से सफल उम्मीदवारों को सीटों का आबंटन किया गया। 50% अखिल भारतीय पीजी कोटा काउंसलिंग 2014 की संपूर्ण आबंटन प्रक्रिया दिनांक 04/07/2014 को सफलता पूर्वक पूर्ण हुई।

15.12 अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा संचालित एमडीएस पाठ्यक्रम में 50% अखिल भारतीय कोटा–2014 में प्रवेश हेतु अखिल भारतीय दंत स्नातकोत्तर परीक्षा–2014

भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुपालन में, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली 50% अखिल भारतीय कोटा आधार के तहत एमडीएस पाठ्यक्रमों अखिल भारतीय पीजी प्रवेश परीक्षा का संचालन करता है।

प्रवेश परीक्षा दिनांक 25/01/2014 को 36 केंद्रों में आयोजित की गई। एमडीएस पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु परीक्षा में कुल 9363 उम्मीदवार उपस्थित हुए। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित 2014 हेतु प्रौसपेक्टस के अनुसार पूरे भारत में 32 दंत कॉलेजों में योग्यता/प्रतीक्षा सूची उम्मीदवारों हेतु सीटों के आबंटन को सक्रिय करने हेतु 5 फरवरी, 2014 को परिणाम घोषित किए गए। शैक्षिक वर्ष 2014–15 हेतु 50% अखिल भारतीय पीजी कोटा के एमडीएस पाठ्यक्रमों में 212 पंजीकृत/मान्यता प्राप्त थी। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार में स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय द्वारा ऑन–लाइन परामर्श के द्वारा सफल उम्मीदवारों को आबंटन किया गया। 50% अखिल भारतीय पीजी काउंसलिंग–2014 की पूर्ण आबंटन प्रक्रिया दिनांक 04/07/2014 को सफलता पूर्वक पूर्ण की गई।

15.13 केंद्रीय पूल द्वारा मेडिकल/दंत सीटों का आबंटन

एमबीबीएस तथा बीडीएस सीटें: मेडिकल कॉलेजों वाले विभिन्न राज्यों तथा कुछ अन्य आयुर्विज्ञान शिक्षा संस्थानों से स्वैच्छिक योगदान प्राप्त करके स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा एमबीबीएस तथा बीडीएस का एक केंद्रीय पूल बनाया गया है। शैक्षिक वर्ष 2014–15 में राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों तथा चिकित्सा संस्थानों द्वारा 227 एमबीबीएस तथा 28 बीडीएस सीटों का योगदान दिया गया। यह सीटें केंद्रीय पूल के लाभार्थियों अर्थात राज्य/संघ शासित राज्य, जिनके कि अपने चिकित्सा/दंत कॉलेज नहीं हैं, रक्षा मंत्रालय (रक्षा कार्मिकों के बच्चों हेतु (गृह मंत्रालय (अर्धसैनिक बल कार्मिक तथा आतंकवादी पीड़ित नागरिक के बच्चों हेतु) मंत्रिमंडल सचिवालय, विदेश मंत्रालय (राजनयिक/ द्विपक्षीय प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए तथा विदेशों में भारतीय मिशन में सेवारत भारतीय कर्मचारियों के बच्चे), मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(तिब्बती शरणार्थियों हेतु) तथा भारतीय बाल कल्याण परिषद (राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चों हेतु) आबंटित की गई।

एमडीएस सीटः उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा केंद्रीय पूल में 4 एमडीएस सीटों का योगदान दिया गया जोकि रोटेशनल आधार पर एमडीएस शिक्षण सुविधा के बिना राज्यों/संघ राज्यों द्वारा प्रायोजित सेवारत डॉक्टरों को आवंटित हुई। शैक्षिक सत्र 2014–15 के लिए, लाभार्थी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा एक योग्य सेवारत डॉक्टर को प्रायोजित की गई।

विदेशी छात्रों हेतु स्नातकोत्तर मेडिकल सीटें: एक कैलेंडर वर्ष में विदेशी छात्रों हेतु आरक्षित चिकित्सा विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी में 5 पी.जी. मेडिकल सीटें हैं। इन सीटों पर विदेश मंत्रालय के परामर्श पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा विदेशी छात्रों को नामित किया जाता है। शैक्षिक वर्ष 2014–15 के दौरान कोई विदेशी छात्र नामित नहीं किया गया।

15.14 राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड (एनबीई)

राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी की एक शाखा के रूप में, वर्ष 1975 में अस्तित्व में आया था और वर्ष 1976 से राष्ट्रीय स्तर पर स्नातकोत्तर चिकित्सा परीक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा में शिक्षण की पद्धति का अखिल भारतीय आधार पर आधुनिक चिकित्सा के क्षेत्र में उच्च मानक स्नातकोत्तर परीक्षाओं के संचालन के लिए पात्रता की बुनियादी प्रशिक्षण आवश्यकताओं को तैयार करने और विकसित करने के उद्देश्य से सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत 01.03.1982 से प्रभावी स्वतंत्र स्वायत्त शासी संगठन के रूप में पंजीकृत किया गया।

बोर्ड वर्ष में दो बार प्राथमिक तथा अंतिम परीक्षाएं आयोजित करता है। वर्ष 2013–14 के दौरान, भारत के 12 केंद्रों में 49 विशिष्टताओं में लिखित परीक्षाएं आयोजित की गईं। राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड द्वारा प्रदान की गई राजनयिक योग्यता को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर डिग्री तथा पोस्ट डॉक्टरेल स्तर की योग्यता के बराबर कर दिया गया है। बोर्ड ने 15 उप–विषयों में फैलोशिप कार्यक्रम का भी आयोजन किया है। समीक्षा वर्ष के दौरान, 58214 में से 41127 उम्मीदवारों ने सीईटी परीक्षा पास की तथा 6056 में से 3605 उम्मीदवारों ने अंतिम परीक्षाएं पास की।

बोर्ड की प्रत्यायन समिति बोर्ड परीक्षाओं की अर्हता प्राप्त करने के लिए उम्मीदवारों के प्रशिक्षण के उद्देश्य हेतु संस्थानों/अस्पतालों को मान्यता देता है। समीक्षा वर्ष की रिपोर्ट के दौरान, विभिन्न विषयों में 237 छात्रों को एक वर्ष में भर्ती की क्षमता के लिए विभिन्न अस्पतालों के 99 नए विभागों हेतु प्रत्यायन समिति ने मान्यता देने की सिफारिश की। इसके अतिरिक्त, मान्यता प्राप्त संस्थानों/अस्पतालों के 209 विभागों के 657 सीटों का नवीकरण किया गया।

एनबीई को भी एमडी/एमएस/स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु अखिल भारतीय स्नातकोत्तर मेडिकल प्रवेश परीक्षा (एआईपीजीएमईई) के संचालन की जिम्मेदारी सौंपी गई। वर्ष के दौरान एनबीई ने देश भर के 71 केंद्रों पर कम्प्यूटर पर आधारित परीक्षा का आयोजन किया। एआईपीजीएमईई ऑनलाइन परीक्षा में कुल 70073 उम्मीदवार परीक्षा में सम्मिलित हुए, जिसमें से 44239 अभ्यर्थी उत्तीर्ण हुए।

15.15 राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान परिषद (भारत)

राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान परिषद, नई दिल्ली को चिकित्सा विज्ञान में योग्यता के प्रोत्साहन तथा बढ़ावा देने के उद्देश्य से जैव–चिकित्सा वैज्ञानिकों की एक गैर–सरकारी संस्था के रूप में स्थापित किया गया। अकादमी की फैलोशिप ने विज्ञान, शिक्षा, सेवाओं इत्यादि में उत्कृष्ट उपलब्धियों की मान्यता में विशेष योग्यता का प्रतिष्ठित हॉलमार्क बन गया है। अकादमी द्वारा वर्ष 1981 से क्रमिक आयुर्विज्ञान शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रमों को भी लागू किया गया है।

2. यह एक अनूठा संस्थान है जो चिकित्सा और सामाजिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अपने संसाधन के रूप में प्रोत्साहन तथा अकादमिक उत्कृष्टता का प्रयोग करता है। इन वर्षों में अकादमी ने चिकित्सा तथा संबद्ध विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों की उत्कृष्ट उपलब्धियों को मान्यता दी तथा फैलोशिप एवं सदस्यता से सम्मानित किया। दिनांक 31.03.2014 से अकादमी की अपनी भूमिका 3 मानद फैलो, चिकित्सा अकादमी (एफएएमएस) के 844 फैलोशिप,

मास्टर ऑफ एसोसिएटिड मेडिकल साइंसिज (एमएनएएमएस) के 1727 तथा राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी (एमएनएएमएस) के 4040 सदस्य।

3. देश में विभिन्न चिकित्सा संस्थानों/व्यावसायिक निकायों से प्राप्त सीएमई प्रस्तावों में से, अकादमी ने वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल, 2013 से 31 मार्च, 2014 के दौरान 9 बाह्य (आंशिक धन) तथा 10 आंतरिक सीएमई/संगोष्ठी कार्यक्रमों के आयोजन के लिए वित्तीय सहायता स्वीकृत की है। 1 अप्रैल 2013 से 31 मार्च, 2014 के दौरान बाह्य सीएमई तथा आंतरिक सीएमई/संगोष्ठी कार्यक्रमों पर कुल स्वीकृत व्यय रु.13,06,711/– है।

4. रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, मंत्रालय ने राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली को योजना के तहत 63.00 लाख रु. तथा गैर–योजना के तहत 55.54 लाख रुपए का सहायता अनुदान प्रदान किया।

15.16 अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की स्थापना सन 1956 में संसद के एक अधिनियम के द्वारा राष्ट्रीय महत्व के एक संस्थान के रूप में की गई थी। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की व्यापक प्रशिक्षण सुविधा के साथ आधुनिक चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट केंद्र होने की कल्पना की थी। यह 1946 में भोरे समिति द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसरण में किया गया था।

संस्थान का मुख्य उद्देश्य स्नातकपूर्व तथा स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा में इसकी सभी शाखाओं में शैक्षिक पैटर्न विकसित करना, भारत में चिकित्सा शिक्षा का एक उच्च स्तरीय निदर्शन करना, स्वास्थ्य कार्य–कलापों की सभी महत्वपूर्ण शाखाओं में कार्मिकों के प्रशिक्षण हेतु सर्वोच्च स्तर की शैक्षिक सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध कराना तथा स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में रेजीडेंट डॉक्टरों, नर्सों, सहयोगी स्टाफ, वैज्ञानिकों तथा अन्य स्टाफ की एक बड़ी संख्या के द्वारा समर्थित 750 से अधिक संकाय–सदस्यों सहित 10,000 से अधिक कार्मिक शक्ति है।

अब तक, संस्थान की 5760 विशिष्टताओं की डिग्री से सम्मानित किया गया है। इस वर्ष 20 अक्तूबर, 2014 को आयोजित वार्षिक दीक्षान्त समारोह के दौरान कुल 562 प्रदान की गई डिग्री निम्नानुसार हैं:

- एमडी–157, एमएस–26, एमडीएस–14, एमएचए–5
- अति–विशिष्टता डीएम–39/एमसीएच–28,
- पीएच.डीएस–71, एमबीबीएस–71,
- स्नातकोत्तर (एम.एससी एवं एम.बायोटेक.)–46,
- बीएससी (ऑनर्स.) नर्सिंग–60, बीएससी नर्सिंग (पोस्ट सर्टिफिकेट)–23,
- बीएससी (ऑनर्स.) ऑफथेल्मिक टेक्नोलॉजी–14 तथा
- बीएससी (ऑनर्स.) मेड.टेक. इन रेडियोग्राफी–8

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान क्रमिक आयुर्विज्ञान शिक्षा, सम्मेलनों तथा कार्यशालाओं के माध्यम से अपने ज्ञान तथा विशेषज्ञता को साझा करने में सक्रिय है।

यहां विदेशों के तथा भारत में विभिन्न संगठनों के छात्रों तथा कर्मचारियों के अल्प–अवधि, दीर्घ अवधि तथा वैकल्पिक प्रशिक्षण का प्रावधान है। वर्ष 2013–14 के दौरान विभिन्न प्रशिक्षण पाने वाले व्यक्तियों का विवरण नीचे दिया गया है:

क्र.सं.	प्रशिक्षण	प्रशिक्षुओं की संख्या
1	वि.स्वा.सं. फैलो–विदेशी नागरिक	**70**
2	वैकल्पिक प्रशिक्षण (स्नातकपूर्व)– विदेशी नागरिक	**37**
3	स्नातकोत्तर प्रशिक्षण – विदेशी नागरिक	**26**
	कुल	**133**

पिछले वर्ष के दौरान संस्थान के संकाय तथा वैज्ञानिकों ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं, में लिखित पुस्तकों तथा मोनोग्राफ के बारे में 1800 अनुसंधान पेपर प्रकाशित किए तथा पुस्तकों में अध्यायों की भी बड़ी संख्या में योगदान दिया। 508 अनुसंधान परियोजनाएं कार्य प्रगति पर है तथा संस्थान ने रू. 69 करोड़ की बाह्य निधि प्राप्त की जिसमें पिछले वर्ष की निधि से 25% की वृद्धि हुई है। इस वर्ष संस्थान में नए ज्ञान तथा उपयोगी अनुसंधान डाटा लाने के लिए 211 अनुसंधान परियोजनाओं को सफलता पूर्वक पूर्ण किया गया। रु. 5 करोड़ की संस्थान निधि को 58 नई अनुसंधान परियोजनाओं में सम्मिलित नए क्षेत्र जैसे हृदविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, स्टेम कोशिका अध्ययन, दवा डिजाइनिंग, प्रोटीन अनुसंधान, आनुवांशिक तथा प्रतिरक्षा विज्ञान को शुरू करने के लिए युवा संकायों में वितरित किया गया।

कंवर्जेंस केंद्र के निर्माण पर कार्य जोकि हमारे संकाय, विद्वानों तथा छात्रों को अनुसंधान करने के लिए आधुनिकतम टेक्नोलॉजी पर आधारित सभी आधुनिक प्लेटफॉर्म का केंद्र होगा जिसमें तीव्र गति से कार्य चल रहा है। शीघ्र ही यह हमें अनुसंधान के क्षेत्र में हमारी क्षमता को बढ़ाने के लिए हमारे बृहद नैदानिक सामग्री तथा अनुसंधान डाटा को रखने तथा प्रबंध करने में सहायता करेगा जोकि ज्ञान का केंद्र होगा।

आयुर्विज्ञान शिक्षा

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में स्नातक–पूर्व, स्नातकोत्तर तथा पीएचडी कार्यक्रम सहित विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम चल रहे हैं। इन विभिन्न पाठ्यक्रमों हेतु प्रवेश एवं चयन, वर्ष 2014 में विभिन्न पाठ्यक्रमों में किए गए प्रवेश का विवरण नीचे दिया गया है:

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	वर्ष 2014 के दौरान भर्ती छात्रों/रेजीडेंट की संख्या
1.	एमडी/एमएस/एमडीएस/एमएचए	118
2.	डीएम/एम.सीएच	42
3.	पीएचडी	44
4.	सीनियर रेजीडेंट (गैर–शैक्षिक)	201
5.	जूनियर रेजीडेंट (गैर–शैक्षिक)	163
6.	एमएससी कोर्स	19
7.	एम. बायोटेक्नोलॉजी	15
8.	एमएससी नर्सिंग	24
9.	एमबीबीएस (एम्स, नई दिल्ली) एमबीबीएस (6 नए एम्स)	72 600
10.	बीएससी (ऑनर्स) नर्सिंग (एम्स, नई दिल्ली) बीएससी (ऑनर्स) नर्सिंग (6 नए एम्स)	77 360
11.	बीएससी (नर्सिंग) पोस्ट–सर्टिफिकेट	24
12.	बीएससी (ऑनर्स) ऑफथेल्मिक टेक्नीक्स	19
13.	बीएससी (ऑनर्स) रेडियोग्राफी में चिकित्सा प्रौद्योगिकी	9
	कुल	**1787**

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान द्वारा जुलाई, 2014 में नए एमबीबीएस छात्रों हेतु विभिन्न उन्मुखीकरण कार्यक्रमों सहित एकीकृत आत्म संवर्धन उन्मुखीकरण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इस वर्ष अनुसंधान तथा रोगी उपचार में विशेष रूप से तैयार किए गए उन्मुखी कार्यक्रमों सहित नए रेजीडेंट डॉक्टरों तथा सहायक आचार्यों को संचार और सॉफ्ट कौशल अधिग्रहण भी प्रस्तुत किए गए।

इसके अतिरिक्त, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान 6 नए एम्स के लिए एमबीबीएस तथा बीएससी (ऑनर्स) नर्सिंग के

लिए प्रवेश परीक्षा तथा अंतिम चयन हेतु काउंसलिंग में अग्रणी रहा है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में महत्वपूर्ण उपलब्धियों तथा नवीन सुविधाओं संबंधी केंद्र/विभागवार सूचना

शरीर रचना विज्ञान विभागः शरीर रचना विज्ञान विभाग की स्थापना स्टेट ऑफ दि आर्ट ई–लर्निंग के रूप में हुई जिसको कि सभी विभागों द्वारा उपयोग किया जाता है। यह स्टेट ऑफ आर्ट शव तथा संलेपन सुविधा के रूप में है जिसका तंत्रिका शल्य चिकित्सा, नाक, कान एवं गला रोग विभाग तथा अस्थि रोग विभाग में राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं तथा प्रदर्शन हेतु विभिन्न नैदानिक विभागों द्वारा प्रयोग किया जाता है। विभाग अत्याधुनिक आनुवांशिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए मानव कोशिकानुवंशिकी तथा आणविक प्रजनन और आनुवंशिक सुविधा है तथा विभिन्न अंतःस्राविकी विज्ञान, स्त्रीरोग विज्ञान, नेत्र तथा रूधिर रोग विज्ञान विकारों हेतु आनुवांशिक नैदानिक सेवाएं प्रदान करता है। विभाग में फ्लूरोसिस नैदानिक प्रयोगशाला है तथा कई प्रयोगशालाएं तंत्रिका एवं विकासात्मक जैव–विज्ञान में कार्य कर रही हैं। विभाग में समस्या पर आधारित तथा शिक्षण लर्निंग मोड्यूल है जो प्रभावी लर्निंग तथा दिलचस्प बनाने के लिए एकीकृत किया गया है। संकाय सदस्यों ने उच्च प्रभावकारी पत्रिकाओं में 50 से अधिक लेख प्रकाशित किए, 50 से अधिक व्याख्यान दिए। संकाय सदस्यों को अन्य विश्वविद्यालयों तथा मेडिकल कॉलेजों में सीएमई के लिए आमंत्रित किया गया।

जैव रसायन विज्ञान विभागः जैव रसायन विभाग में समस्या पर आधारित सीखने सहित अभिनव शिक्षण कार्यक्रमों सहित एमबीबीएस छात्रों हेतु विषय उन्मुखी छोटे चर्चा समूह हैं जोकि गहन स्रोत तथा विश्लेषण में छात्रों की क्षमता को विकसित करने हेतु है। विभाग द्वारा बीपी के आईएचएस, धरन, नेपाल से 4 स्नातकोत्तर (एमडी एवं एमएससी) छात्रों को अल्प–अवधि प्रशिक्षण प्रदान किया गया। विभाग को आईसीएमआर, डीएसटी, डीबीटी, डीआरडीओ, सीएसआईआर तथा इंडो–केनेडियन, यूकेआईईआरआई तथा कुछ अन्य अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों से लगभग रु.12 करोड़ की अनुसंधान निधि राशि प्राप्त की। विभाग में वर्तमान में 32 वित्त–पोषित अनुसंधान परियोजनाएं जारी हैं। विभाग के प्रतिष्ठित राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में कई प्रकाशन हैं। भारत तथा विदेश में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में संकाय–सदस्यों द्वारा विभिन्न आमंत्रित वार्ता/व्याख्यान दिए। विभिन्न राष्ट्रीय सम्मेलनों में 9 पीएचडी छात्रों ने पुरस्कार प्राप्त किए। एक पीएचडी छात्र ने नैदानिक अनुसंधान में श्रेष्ठ कार्य के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त किया। एक पीएचडी छात्र ने 6 माह के लिए इंडो–जर्मन डीएएडी फैलोशिप प्राप्त की।

विभाग द्वारा फ्लोसाइटोमीटरी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

जैव सांख्यिकी विभागः संस्थान में कई अनुसंधान परियोजनाएं हैं जों विभिन्न केंद्रों/विभागों के साथ अधिकतर सहयोगपूर्ण प्रकृति की हैं।

संकाय सदस्य एवं वैज्ञानिकः संस्थान में विभिन्न प्रशासनिक तथा वैज्ञानिक समितियों में सेवा की, आईसीएमआर, डीबीटी, डीएसटी, आयुष, टीईआरआई, एनआईआरएच तथा एनआईएमएस की विभिन्न वैज्ञानिक समितियों के आमंत्रित सदस्य रहे; विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय नैदानिक परीक्षणों के डाटा सेफ्टी मॉनीटरिंग बोर्ड (डीएसएमबी) पर कार्य किया; अनुसंधान विधि विज्ञान तथा जैव सांख्यिकी पर विभिन्न कार्यशालाओं के दौरान पूरे देश में आमंत्रित व्याख्यान दिए।

जैव भौतिकी विभागः जैव भौतिकी विभाग द्वारा अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया, तर्कसंगत संरचना आधारित दवा डिजाइन के आण्विक आधार निर्धारित करने और नए विशिष्ट बायोमार्कर की खोज के साथ संबंधित है। ट्रिपटिक पायन और पेट में इसकी कार्यात्मक महत्व द्वारा उत्पादित गोणातीय लैक्टोफेरिन के आधा सी–टर्मिनल की संरचना को निर्धारित किया गया है। सीओएक्स, एलओएक्स, पी38बी तथा पी38ए एंजाइम्स की अभिव्यक्ति विभिन्न जगहों तथा उपचार के प्रभाव में कैंसर विज्ञान की अवस्थाओं के साथ जोड़ा गया है। हेपरिन बाध्यकारी कार्बोक्सपेम्टीडेज ई–प्रोटीन मानव वीर्य में जीवाणुरोधी गतिविधि प्रदर्शन के लिए दिखाया गया है। फ्लाइट मास स्पैक्ट्रोमीटरी की मेट्रिक्स सहायता प्राप्त डिसोर्पशन

आयोनाइजेशन समय का उपयोग प्रोटीन की प्रोफाईलिंग द्वारा नैदानिक माइक्रोबैक्टीरियल आइसोलेट्स की पहचान पूर्ण हो चुकी है। विभाग ने बीआईएकोर के साथ बाइंडिग अध्ययनों का प्रयोग करके प्रोटीन तथा छोटे अणु क्रिस्टल, मेडिकल बायो–इन्फोरमेटिक्स, प्रोटीन सिकवैंसिग तथा पैप्टाइड सिंथेसिस, प्रोटियोमिक्स, डायनैमिक लाइट स्कैटिरिंग तथा काइनेटिक पैरामिटरों का डाटा एकत्र करने की सुविधा प्रदान की है।

रक्ताधान सेवाएं: अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के हृद तंत्रिका केंद्र में भर्ती रोगियों को 24 घंटे हृद तंत्रिका केंद्र की रक्ताधान सेवाएं जैसे एकत्रित करना, रक्त तथा रक्त संघटकों की सुरक्षित तथा गुणवत्ता प्रदान करता है। इन गतिविधियों में आंतरिक एवं बाह्य रक्त एकत्र करना, रक्तदान हेतु प्रेरित करना तथा रक्तदान से पहले एवं रक्तदान के बाद परामर्श, रक्त संघटक तैयार करना तथा विभिन्न तथा विभिन्न सीरम विज्ञानी जाँच सम्मिलित हैं। संघटक जैसे रेड सेल्स, प्लाज्मा, फ्रेश फ्रोजन प्लाज्मा, प्लेटलेट रिच प्लाज्मा, प्लेटनेट कंसन्सट्रेट, क्रायोप्रिसिपिटेट, ल्यूकोडेपलेटिड रेड सेल्स तथा प्लेटलेट पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। एफिरिसिस प्रक्रियाओं तथा ऑटोलोगस दान हेतु सुविधा उपलब्ध है।

विभाग में अपने उत्पादन जैसे रक्त, रक्त संघटकों, यंत्रो प्रक्रियाओं तथा सेवाओं को रखने हेतु स्थान में गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली हैं। विभाग के कम्प्यूटरीकरण की प्रक्रिया जारी है। रक्त कोष सॉफ्टवेयर को एनआईसी तथा एम्स के कम्प्यूटर सुविधा विभाग के सहयोग से अनुकूलित किया गया है। दवा एवं औषधि अधिनियम के तहत निर्धारित रक्त कोष लाइसेंस को बनाए रखने के लिए सभी नियामक आवश्यकताओं का पालन किया जा रहा है। दो वर्ष की अवधि के लिए दिसम्बर, 2013 में स्टेट ब्लड ट्रांसफ्यूजन काउंसिल ऑफ दिल्ली के सदस्य के रूप में नामित किया गया।

- **सहयोगी परियोजनाएं–8**

हृद–संवेदनाहरण विज्ञान विभाग : फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के सहयोग से ''एरोटिक वॉल्व पुनःस्थापन करवा रहे रोगियों में डिसफ्लूरेंस बनाम टीआईवीए के पश्चात तंत्रिकाविज्ञानी बायोमार्कर'' डॉ. पूनम मल्होत्रा तथा जॉर्ज मायचेसक्यू

हृद–विकिरण विज्ञान विभाग :

इस वर्ष के दौरान संवहनी विकिरण विज्ञान में डीएम कार्यक्रम स्वीकृत कर लिया है। विभाग के संकायों ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक बैठकों में 20 व्याख्यान दिए तथा 2 कार्यशालाओं का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त, यह अनेकों वैज्ञानक परियोजनाओं हेतु समीक्षक तथा संपादकीय मंडल के सदस्य हैं। विभाग अस्पताल के विभिन्न विशिष्ट विभागों से रेफर रोगियों को हृद संवहनी इमेजिंग तथा संवहनी हस्तक्षेप उपचार सेवाएं प्रदान कर रहा है।

हृदवक्ष एवं वाहिका शल्य चिकित्सा विभाग: हृद वक्ष एवं वाहिका शल्य चिकित्सा विभाग रोगी देखभाल, शिक्षण तथा अनुसंधान के क्षेत्र में सबसे अग्रणी रहा है। बाह्य रोगी विभाग में 44791 रोगी देखे गए तथा सभी आयु वर्ग सभी प्रकार के हृद वाहिका एलिमेंट्स की 4043 शल्य चिकित्सा उत्कृष्ट परिणाम के साथ निष्पादित की गईं। विभाग में 15 राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान परियोजनाएं जारी हैं। विभाग एओर्टिक विच्छेदन पर कार्यशाला के अतिरिक्त, बेंटल प्रक्रिया पर मिट्रल वॉल्व रिपेयर तथा वेट लेब सत्र पर सफलतापूर्वक लाइव ऑपरेटिव कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दंत शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र: दंत शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र को ''मुख स्वास्थ्य संवर्धन'' पर विश्व स्वास्थ्य संगठन सहयोगी केंद्र के रूप में अनुमोदित किया गया था।

एक अभिनव, अल्प–लागत टेक्नोलॉजी ''सील बायो'' वयस्कों में संक्रमित नॉन–वाइटल स्थाई परिपक्व के दांतों के उपचार हेतु स्वदेशी विकसित हुए हैं जोकि आस्ट्रेलियाई पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान की गई थी।

नैदानिक तंत्रिका मनोविज्ञान विभाग: पिछले एक वर्ष में अलग से विशेष क्लीनिकः ''संज्ञानात्मक विकार एवं स्मृति क्लीनिक ('सीडी' एवं 'एम' क्लीनिक) (तंत्रिका विज्ञान तथा नैदानिक तंत्रिका मनोविज्ञान विभाग द्वारा) औपचारिक रूप से शुरू कर दिया गया है।

त्वचा एवं रतिजरोग विज्ञान विभागः प्रो.वी.के. शर्मा ने अंतर्राष्ट्रीय त्वचा एवं रतिजरोग विज्ञान हेतु आजीवन समर्पण तथा योगदान हेतु इंटरनेशनल लीग ऑफ डर्मेटोलॉजिकल सोसाइटीज पुरस्कार दि आईएलडीएस 2014 ''प्रशंसा प्रमाण–पत्र प्राप्त किया। विभाग द्वारा विटिलिगो तथा सोरिएसिस पर अनुसंधान जारी है। विभाग द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान, यू.एस.ए द्वारा वित्तपोषित इंडो.यूएस सहयोगी परियोजना (आईसीएमआर) द्वारा आनुवांशिकी अनुसंधान चलाए जा रहे हैं। परियोजना के तहत 2000 सोराइसिस रोगियों एवं 2000 नियंत्रित व्यक्तियों के संघ का जीनोम संबंधी विस्तृत अध्ययन किया गया। कुछ विशिष्ट एमएचसी (मुख्य हिस्टोकंपेटिबिलिटी) की प्रारंभिक जाँच कर टीएनआईपी एवं आईएल 12बी तथा नॉन एमएचसी लॉबी (यूएलकेआई) की पहचान की गई जिनमें चिकित्सा संबंधी जटिलताओं की संभावना हो सकती थी। डॉ.वी.के.शर्मा को अंतर्राष्ट्रीय त्वचारोग समिति का उपाध्यक्ष चुना गया। आचार्य एम. रमन को त्वचारोग एवं रतिजरोग विज्ञान के भारतीय प्रकाशन का मुख्य संपादक चुना गया। डॉ. सोमेश गुप्ता, अपर आचार्य ने नैदानिक खंड में एम्स द्वारा उत्तम लेख प्रस्तुति हेतु पुरस्कार प्राप्त किया। विभाग द्वारा 3 पीएचडी और 17 एमडी त्वचारोग और रतिजरोग विज्ञान विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। विभाग द्वारा विशेष सेवाओं के तहत विटिलिगो सर्जरी, जन्म चिह्नों को जैसे पोर्टवाइन स्टेन निवस ऑफ ओटा एंड सीओटू को हटाने के लिए लेजर एवं आंशिक लेजर का प्रयोग, पूवा (पीयूवीए) एवं नैरो बैंड थेरेपी जैसी सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। आईएडीवीएल सदस्यों के लिए त्वचारोग विज्ञान के क्षेत्र में 4 छात्रवृत्तियाँ संचालित की गई है।

ई.एन.टी. विभागः– विभाग द्वारा प्रदान की जा रही शल्यक प्रशिक्षण के तहत रेजीडेंट एवं प्रतिनिधियों को टेम्पोरल बॉन लैब सुविधा की उच्चतम स्तरीय सेवा प्रदान की जा रही है तथा टेम्पोरल बॉन पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। विभागीय संकाय द्वारा 8 बाह्येत्तर एवं 2 आतंरिक अनुसंधान–1 परियोजना सहित नॉर्थ ईस्टर्न यूनिवर्सिटी एवं हार्वर्ड मेडिकल स्कूल, यूएसए, सीएसआईआर, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टॉक्सिकोलॉजी रिसर्च, लखनऊ एवं एम्स के साथ इंडो–यूएस संयुक्त परियोजना चलाई जा रही है।

न्यायिक चिकित्सा एवं विषविज्ञान विभाग : चिकित्सा एवं विषविज्ञान विभाग द्वारा वैधानिक मामलों जैसे चोट, यौन–उत्पीड़न, विषाक्तता के लिए चौबीस घंटे सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। विभाग द्वारा आयु आकलन, जनन क्षमता, डीएनए, अंगुलीछाप (फिंगरप्रिंट्स), चिकित्सा परीक्षण इत्यादि मामले जो न्यायालय, सीबीआई एवं अन्य जाँच एजेन्सियों द्वारा निर्दिष्ट मामलों की जाँच की जाती है। इस अवधि के दौरान 603 ऐसे मामलों का निपटान किया गया। विभाग द्वारा दक्षिण दिल्ली के मेडिको–लीगल ऑटोप्सी मामलों तथा अनुसंधान उद्देश्यों के लिए हिस्टोपेथोलॉजी सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। विभाग द्वारा एमएलसी मामलों (पोस्टमार्टम मामले) के लिए शव–संलेपन सुविधा प्रदान की जा रही है।

राष्ट्रीय औषध निर्भरता उपचार केंद्रः वर्तमान में केंद्र स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन, संयुक्त राष्ट्र औषध एवं अपराध क्षेत्रीय कार्यालय (यूएमओडीसी) दक्षिण एशिया, वि.स्वा.सं. (भारत) एवं वि.स्वा.सं. (सीरो) के राष्ट्रीय संसाधन केंद्र के तौर पर कार्य कर रहा है। केंद्र को वि.स्वा.सं. के ससटेंस 15 यूज डिसआर्डर (वि.स्वा. इन्ड. (95) के सहयोगी केंद्र के क्षेत्रीय अधिगम केंद्र तथा एड्स, तपेदिक एवं मलेरिया के विरूद्ध जारी संघर्ष के वैश्विक निधि के क्षेत्रीय तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र के तौर पर निर्दिष्ट किया गया है।

केंद्र में 50 बिस्तरों की सुविधा है तथा बाह्य रोगी एवं अंतरंग–रोगी सेवाओं द्वारा औषधि निर्भर रोगियों को नैदानिक उपचार सुविधा प्रदान की जाती है तब तीन विशिष्ट निदानालय–तंबाकू प्रयोग अवसान, किशोरावस्था में ड्रग्स का प्रयोग तथा दोहरा निदान (सब्सटेंस यूज डिसआर्डर एवं मनोविकार रुग्णता) क्लीनिक चलाए जा रहे हैं। केंद्र के संकाय सदस्य अन्य संगठनों यथा राष्ट्रीय एवं मलेरिया (जी एफएटीएम) से संघर्ष हेतु वैश्विक निधि, चाइल्डलाइन, भारत इत्यादि द्वारा संचालित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में रिसोर्स पर्सन के तौर पर कार्य कर रहे हैं। प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में सस्सटेंस एब्यूज मैनेजमेंट के क्षेत्र

में आधिकारिक तौर पर जारी 9 हस्तलिखित/पुस्तकों का प्रयोग संसाधन सामग्री के तौर पर किया जा रहा है। एनडीडीटीसी 14 सहयोगी अनुसंधान परियोजनाओं पर लगातार कार्य कर रहा हैं जिनमें से 2 परियोजनाओं को अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सहायता प्राप्त हैं।

तंत्रिका शल्य किया विभागः तंत्रिका सर्जन्स (एफआईएसटी, डीएसटी के तहत) के प्रशिक्षण हेतु सूक्ष्म तंत्रिका शल्यक्रिया दक्षता प्रयोगशाला का संचालन किया गया। वर्ष के दौरान कई अन्य क्रमिक आयुर्विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम तथा माइकोन्यूरोसर्जरी, पेरीफेरल नर्व सर्जरी, न्यूरोट्रामा, कॉम्पलैक्स स्पाइनल ट्रामा, फंक्शनल न्यूरोसर्जरी एवं न्यूरो ऑनकोलोजी के क्षेत्र में कार्यशालाएं आयोजित की गई। गामा नाइक केंद्र ने नवीन समर्पित एमआरआई मशीन प्राप्त की तथा उसके प्रयोग द्वारा 3700 से अधिक रोगियों का उपचार किया, जिनमें से 563 रोगियों का पिछले वर्ष उपचार किया गया था। तंत्रिका शल्य क्रिया (न्यूरोसर्जरी) विभाग ने कपाल तथा मेरूदंड शल्यक्रिया के लिए नया इंडोस्कोप प्राप्त किया तथा इंडोस्कोपिकली 200 से अधिक प्रक्रियाएं निष्पादित की गईं।

तंत्रिका संवेदनाहरण विभागः 22 अनुसंधान परियोजनाएं (05 वित्त–पोषित, 16 विभागीय तथा 01 सहयोगी) जारी हैं।

तंत्रिका विज्ञान विभागः प्रथम बार आघात (स्ट्रोक) एवं संज्ञात्मक हानि के अस्पष्ट कारणों को सुलझाने भविष्यसापेक्ष अध्ययन प्रारंभ किया गया; 8 वर्षों के लिए लगभग 31 करोड़ रु. की सुरक्षित वित्तपोषित योजना द्वारा डीबीटी फंडिड इंडो उच्च सहयोगी परियोजना के तौर पर कास–कल्चरल परिप्रेक्ष्य का प्रारंभ किया गया। आघात से पीड़ित रोगियों के बीच नए वास्कुलर घटनाक्रम के निवारण में पॉजीटिव एयरवे प्रेशर चिकित्सा पर प्रथम यादृच्छिक नियंत्रण परीक्षण को पूर्ण किया गया। सेरिबेलर एटोक्सिस के विशिष्ट नैदानिक तथा मॉलीक्यूलर मार्कर की पहचान हेंड सीएसआईआर, आईसीएमआर, एवं डीबीटी द्वारा वित्तपोषित परियोजनाएं चलाई जा रही हैं। आघात रोगियों में डीएनए हेतु विस्तृत बायोरिपोसिट्री की स्थापना की गई है तथा उसे यूके–इंडिया शिक्षा एवं अनुसंधान द्वारा नियंत्रित किया गया है। आघात, मूवमेंट डिसआर्डर, अपस्यार तंत्रिका संबंधी संक्रमण पर जारी कई परियोजनाओं को स्रोत सीमित एपिलेप्टिक निदान के द्वारा फोन एप से प्रमाणित अथवा परीक्षित किया गया है। अप्रैल, 2014 में अमेरिकन एकेडमी ऑफ न्यूरोलॉजी की 66वीं बैठक का आयोजन किया गया।

तंत्रिका विज्ञान एवं हृद रोग विज्ञान के सहयोगात्मक प्रयास से हृदय एवं आघात संबंधी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। मिर्गी रोगियों में उपचार हेतु अशिक्षित कार्मिकों की कमी के कारण वैधीकृत एवं नर्स–लेड एपिलेप्सी का फॉलोअप नैदानिक प्रोटोकॉल प्रकाशित किया गया। हमारे तंत्रिका शरीर क्रिया प्रयोगशाला, जो ग्रामीण क्षेत्रों बियावरा (म.प्र.), नक्सलबाड़ी (पं.बं.), छतरपुर (ओडिशा), अनूपपुर (छत्तीसगढ़), झांसी (उ.प्र.), बाड़ी (कर्नाटक), कारड (महाराष्ट्र) एवं दालमू (उ.प्र.) में स्थित है, में क्वांटिरोटिव सूडोमोटर एक्सोनल रिफ्लेक्स टेस्ट (क्यूएसएआरटी) की सुविधा प्रारंभ की गई है। जहाँ लाइफलाइन एक्सप्रेस के प्रयोग द्वारा अपस्मार की नैदानिक जाँच एवं अपस्मार संबंधी शिक्षा प्रदान की गई है।

तंत्रिका विकिरण विज्ञान विभागः विभाग में उच्चतम स्तरीय तकनीक के तहत बाप्लेन फलैट् पैनल डीएसए सिस्टम संस्थापित किया गया। इस सिस्टम में संस्थापित द्वितीय बाईप्लेन डीएसए सुविधा सहित समस्त उन्नत न्यूरोवस्कुलर एप्लीकेशन के साथ इंट्राऑपरेटिव सीटी सुविधा भी सम्मिलित है। संस्थान का तंत्रिका विकिरण विज्ञान विभाग पहला ऐसा विभाग है जिसमें दो अत्याधुनिक बाईप्लेन डीएसए सुविधा है। नवीनतम अत्याधुनिक 1.5 टी एमआरआई को जीके सुविधा सहित संस्थापित किया गया जिसे पूरी तरह से नैदानिक बनाया गया है एवं तंत्रिका विज्ञान के रोगियों के लिए जीके नाइफ प्लांनिग सुविधा उपलब्ध है। इस सिस्टम को शीघ्र ही रोगियों की सुविधा तथा सहयोग के अनुसार ध्वनिरहित बनाया जाएगा।

एन.एम.आर. विभागः विभाग द्वारा प्रिक्लीनिकल हेतु अत्याधुनिक उच्च क्षेत्र एनिमल एमआरआई सिस्टम (7टी) को संस्थापन द्वारा उपलब्ध कराया गया तथा अन्य जैव–चिकित्सीय अनुसंधान हेतु छोटे जानवरों का प्रयोग किया गया। विभाग द्वारा एमआरआई एवं एमआर स्पैक्ट्रो–स्कोपी के प्रयोग द्वारा सामान्य लैक्टेटिंग वक्ष ऊतक द्वारा प्रमुख मेलीग्नेंट वक्ष उत्तक की पद्धति का विकास किया गया। विभागाध्यक्ष को नवीन गठित मॉलीक्यूलर इमेजिंग सोसायटी ऑफ इंडिया (एमआईएसआई) का उपाध्यक्ष चुना गया।

बाल शल्यक्रिया विभागः संस्थान के बाल शल्य चिकित्सा विभाग ने न केवल सामान्य बाल शल्यक्रिया में रोगी उपाचर क्षेत्र में उच्च स्तरीय सुविधा प्रदान की है बल्कि नवजात शिशु शल्यक्रिया, मूत्ररोग विज्ञान सहित इंटरसेक्स रोग, थोरोसिक शल्यक्रिया, अर्बुदविज्ञान जंठरात्रीय शल्यक्रिया एवं 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों में तंत्रिका शल्य क्रिया क्षेत्र में उच्च स्तरीय सुविधा उपलब्ध कराई है। विभागीय संकाय, जन्मजात विकृति तथा मॉलीक्यूलर जैवविज्ञान के क्षेत्र में कैंसर एवं स्टेम सेल अनुसंधान संबंधी विभिन्न आंतरिक एवं बाह्य अनुसंधान परियोजनाओं में सक्रिय तौर पर संलग्न है। रोगी उपचार, अनुसंदान तथा शिक्षण एवं प्रशिक्षण में अग्रणी होने के कारण विभाग को भारत तथा विदेशों से विभाग में आने तथा बाल शल्य क्रिया तथा इसके उप–विशिष्ट क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्ति हेतु अत्यधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं। विभागीय संकाय को नियमित तौर पर उनकी शैक्षिक उत्कृष्टता एवं वैज्ञानिक योगदान के लिए मान्यता, पुरस्कार सम्मान तथा पदक प्राप्त हुए हैं विशेषतः हाल ही में आचार्य डी.के. गुप्ता को सर्वसम्मति से तीन वर्षों 2014–16 के लिए वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ एसोसिएशन ऑफ पीडिएट्रिक सर्जन्स का अध्यक्ष चुना गया है।

शरीर क्रिया विज्ञान विभागः शरीर क्रिया विज्ञान विभाग द्वारा फाइब्रोमाइलेगिया से पीड़ित रोगियों में वस्तुनिष्ट पद्धतियों द्वारा दीर्घकालिक दर्द के लक्षणों के सम्पूर्ण परीक्षण के बाद डोरसो लेटरल प्रिफंटल कॉटैक्स एटीएमएस प्रदान किया जा रहा है। टीएमएसएफ एक सुरक्षित, किफायती, गैर–शल्यक तकनीक है। वर्ष के दौरान इस तकनीक द्वारा 40 रोगियों में उनके लक्षणों का उपचार किया गया है।

किसी भी रोगी में कोई स्थाई तंत्रिकाजन्य विकृति नहीं पाई गई। किसी भी प्रकार के असत्य सकारात्मक तथा असत्य नकारात्मक मामले नहीं पाए गए।

विकिरण निदान विभागः संस्थान के पास सुसज्जित बहु–रुपरेखा कला विकिरण निदान विभाग है जो अत्यधिक उच्च स्तरीय सुविधायुक्त है। पिछले वर्ष ही विभाग में एक अत्यधिक उच्च स्तरीय डिजिटल सब्ट्रैक्शन एंजियोग्राफिक मशीन को उन्नत विशिष्टताओं सहित संस्थापित किया गया है ताकि विभिन्न विकिरण विज्ञान संबंधी अनुसंधान किए जा सके। वर्तमान विकिरण–विज्ञान सूचना प्रणाली एवं पीएसीएस को डाटा रिपोर्टिंग एवं रिकार्ड के लिए सुरक्षित रखने के लिए अपग्रेड किया गया। स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए 'रीसेंट एडवांस इन एप्लाइड फिजिक्स' पर आधारित क्रमिक आयुर्विज्ञान शिक्षा कार्यक्रण का आयोजन किया गया। विभाग द्वारा इंडियन एसोसिएशन ऑफ रेडियो लॉजिकल टेक्नोलॉजिस्ट्स की 11वीं राष्ट्रीय सभा का आयोजन किया गया जिसमें राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संकाय वर्ग एवं प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। वर्तमान में विभाग द्वारा 100 से अधिक परियोजनाएं चलाई जा रही हैं जिनसे उम्मीद है कि वो इस विभाग को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगी।

प्रजनन जैव विज्ञान विभागः सीआरआईए यूनिट सुविधा के तहत विभिन्न (25 से अधिक पैरामीटर्स) नवीन परीक्षण जैसे हार्मोन, विटामिन्स, ट्यूमर मार्कर, इत्यादि (मानकीकरण के तहत) किए गए। जारी एफआईएसएच (फ्लूरोसेंट इन सिटू हाईडारडाइजेशन) सेवाओं के अलावा एसटीआर/माइक्रोसेटैलाइट मार्कर्स के मॉलीक्यूलर साइटोजेनेरिक तकनीक में प्रयोग किया गया।

स्टेम सेल सुविधाः विभिन्न रोगों जैसे मायोकर्डियल इन्फैक्ट, आघात, लिंब इस्चेमिया, मेरूदंड की चोट, दृष्टि–संबंधी रोग, रेटिनाइटिस पिगमेंटोसा, विटिलिगो इत्यादि में नवीन नैदानिक परीक्षणों के लिए आईसीएमआर डीबीटी के अनुसार निजी एमपी सुविधा की स्थापना का सूत्रपात किया गया। मेसनकेमाइल स्टेम सेल्स के विभेदीकरण के लिए विभिन्न ऊत्तक स्रोतों जैसे अस्थिमज्जा, मोटापा संबंधी उत्तक, तंत मज्जा, इत्यादि सहित विभिन्न उत्तकों की कोशिकाओं का प्रयोग किया गयाः

- न्यूरोनल सेल्स, विशेषतया डोपामिनर्जिक न्यूरॉन्स
- कार्डियोमायोसाइट्स

डकेन्स मस्कूलर डिस्ट्रॉफी जैसी विभिन्न रोगों के जैव–विज्ञान एवं रचनातंत्र को समझने के लिए इंड्यूज्ड प्लूरिपोटेंट स्टेम सेल (आईपीएससीएस) का प्रयोग किया गया। एमब्रायोनिक स्टेम सेल्स के संवर्धन की स्थापना, न्यूरॉन एवं कार्डिएक लाइनेज के विभेदीकरण तथा दोनों के जैविक एवं रचनातंत्र को समझने के लिए की गई।

स्टेम सेल्स एवं उत्तक प्रौद्योगिकीः

- लॉंग बोन सेग्मेंटल विकार में अनुमानित मेसेनकाइमल स्टेम सेल्स सहित बायोकंपोजिट

स्केफोल्ड की संभावित संरचनात्मक स्थापना।

- खरगोश मॉडलों में दृष्टि संबंधी पुनर्निर्माण में पॉलीकार्पोलेक्टॉन स्केफोल्ड का प्रयोग।

जनसंपर्क शिक्षा के तहत लोकसभा टीवी चैनल के लिए नाभि रज्जु के क्षतिग्रस्त स्टेम सेल्स के क्रायोप्रिजर्वेशन पर आधारित पैनल वार्ता में हिस्सा लिया। केंद्रीय औषध मानक नियंत्रण संगठन, भारत सरकार की उच्च प्राधिकार समिति द्वारा स्टेम सेल एवं सेल आधारित उत्पाद (एससीसीपीएस) हेतु सहायक गाइडलाइन ड्राफ्ट की गई।

15.17 जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (जिपमेर) पुदुचेरी

जिपमेर– शिक्षा, रोगी आधारित विशेष अनुसंधान, जनसमुदाय स्वास्थ्य एवं सेवा उत्कृष्टता द्वारा भारत में स्वास्थ्य प्रणाली में आदर्श स्थापित करना चाहता है। उसका उद्देश्य, शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों के माध्यम से, दयालु, नैतिकता से परिपूर्ण स्वास्थ्य पेशेवर को विकसित करना तथा स्वास्थ्य उपचार के क्षेत्र में सर्वोच्च स्तर की सेवा प्रदान करना है। बुनियादी विज्ञान और रोगी उन्मुख खोजों में मूल अनुसंधान, सुरक्षित, प्रभावी, जवाबदेह और पारदर्शी रोगी केंद्रित सुविधाओं द्वारा संगठन में नैदानिक परिवर्तन को बढ़ावा मिलेगा। इसके द्वारा गुणवत्ता और महत्व पर अधिक बल दिया गया है। संस्थान द्वारा सामाजिक, आर्थिक असमानताओं पर ध्यान देने के साथ–साथ समुदाय के कल्याण और सार्जनिक स्वास्थ्य के लिए अनुकूल आदर्शों एवं पक्ष समर्थन की साझेदारी पर जोर दिया गया है।

शैक्षिक उपलब्धियाँ:

- विभिन्न सर्वेक्षणों में चिकित्सा विद्यालय क्रम में तीसरा एवं चौथा स्थान।
- वर्ष 2014 के दौरान जिपमेर की शिक्षा अनुसंधान के लिए ''बीएमजे इंडिया अवार्ड'' से सम्मानित किया गया।
- एमबीबीएस पाठ्यक्रम की 150 सीटों के लिए 90,000 से अधिक आवेदन प्राप्त किए गए तथा प्रवेश परीक्षा में 58103 उम्मीदवार सम्मिलित हुए।
- स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में 200 सीटों में वृद्धि की गई।
- विशिष्ट पाठ्यक्रमों में 28 सीटें थी तथा पोस्टडॉक्टरल छात्रवृत्ति पाठ्यक्रम में 13 सीटें थीं।
- प्रवेश परीक्षा के अलावा आवेदनों को जमा करवाने तथा भर्ती के लिए वर्ष 2014 में ऑनलाइन प्रणाली का प्रयोग किया गया।
- एम.एस.सी (नर्सिंग) पाठ्यक्रम में 5 विषयों को रखा गया जिसमें 25 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।
- शैक्षिक वर्ष 2013–14 के दौरान 4 विद्यार्थियों की बी. एस.सी. संबद्ध आयुर्विज्ञान पाठ्यक्रम में हृद प्रयोगशाला तकनीकी तथा नाभकीय चिकित्सा तकनीकी पाठ्यक्रम में भर्ती किया गया।
- स्थाई शैक्षिक समिति ने दिनांक 15.03.2013 को आयोजित अपनी 5वीं बैठक में नाभिकीय चिकित्सा, अंतः स्त्राविकी पाठ्यक्रम में एमडी पाठ्यक्रम आरंभ करने की अनुमति दे दी तथा सामुदायिक प्रतिरक्षा विज्ञान में मौजूदा डी.एस. पाठ्यक्रम में क्षमता बढ़ाने की अनुमति भी दी।
- आपात चिकित्सा के तहत नर्सिंग एवं एमडी पाठ्यक्रमों में 7 विशिष्ट क्षेत्रों में एक वर्षीय बी.एस.सी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम तथा शल्यक अर्बुदविज्ञान में एम. सी.एच. पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जा चुका है।
- वर्ष 2014 के कैलेण्डर वर्ष के दौरान हमारे स्वर्ण जंयती समारोह के तौर पर फरवरी 2014 में आपातकालीन चिकित्सा एवं अभिघात (आईएसईएमटी 2014) पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें भारत तथा विदेशों के लगभग 90 संकाय सदस्यों ने हिस्सा लिया, 800 से अधिक प्रतिनिधियों के लिए आ.शि.कार्यकम, कार्यशालाएं एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण का संचालन किया गया।
- एम.बी.बी.एस के छठवें और सातवें सत्र में मॉड्यूलर शिक्षण तथा आम नैदानिक समस्याओं से संबंधित

पाठ्यक्रम पर बल दिया गया। प्राथमिक चिकित्सा एवं संपर्क नीति को उद्घटित किया गया।

- 4 विद्यार्थियों को एम.एस.सी, एमएलटी सूक्ष्मजैवविज्ञान, साइटोविकृति विज्ञान एवं एम.एस. सी. चिकित्सा शरीर क्रिया विज्ञान पाठ्यक्रमों में प्रवेश दिया गया।

- जनवरी, 2014 में 30 विद्यार्थियों के लिए जन समुदाय पर आधारित मास्टर ऑफ पब्लिक हेल्थ–संबंधी दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। इसके अलावा हमारे संस्थान के संकाय सदस्यों एवं विभिन्न संकाय सदस्यों को अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों जैसे पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड की तरह हमारे राष्ट्रीय कार्यक्रम जैसे एनआईई (चैन्नई) एवं वीसीआरएस (पुदुच्चेरी) ने पहले से ही अतिथि/सहायक सदस्य के तौर पर एमपीएच पाठ्यक्रम में शिक्षा प्रदान करने हेतु सहयोजित किया गया है। जिपमेर के राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र के शिक्षकों की क्षमता निर्माण के लिए एवं राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के साथ संरेखित करने के लिए शिक्षण नवाचारों में विस्तार किया गया है।

- जिपमेर के पुस्तकालय में 2 कम्प्यूटर लैब 'भावी कक्षा' की स्थापना की है, वाई–फाई कनेक्टिविटी और अतिरिक्त प्रकाशन का खर्च 1.25 करोड़ रुपये हैं। प्रिंट ऑनलाइन प्रकाशन के लिए 4 करोड़ का कुल वार्षिक बजट तथा पुस्तकों के लिए 1 करोड़ रुपये का बजट आबंटित किया गया है। ऑनलाइन पुस्तकालय संसाधन विस्तार हेतु जिपमेर द्वारा कंसोर्टिया द्वारा प्रत्यक्ष विज्ञान शुल्क का विस्तार किया गया।

अनुसंधान संबंधी उपलब्धियां:

संकायाध्यक्ष (अनुसंधान) की अध्यक्षता में तथा वरिष्ठ आचार्य एवं प्रभारी अधिकारी प्रकाशन द्वारा सभी स्तरों पर अनुसंधान गतिविधियों के प्रोत्साहन के उद्देश्य से निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं: (क) अनुसंधान क्षमता का सुदृढ़ीकरण (ख) राष्ट्रीय/वैश्विक स्वास्थ्य योजना/कार्यक्रम से प्रेरित नई जानकारी का सृजन एवं विस्तार। इसका उद्देश्य उच्च प्राथमिकता संबंधी मुख्य क्षेत्रों जैसे: राष्ट्रीय महत्व की समस्याओं को संपूर्ण स्तर पर सुलझाना और दीर्घ अवधि तक प्रभावी रहने वाले नैदानिक निर्णयों तथा नीति निर्माण करना।

नैदानिक उपलब्धियाँ:

हालांकि जिपमेर अस्पताल को कभी भी राष्ट्रीय बहुविशिष्टता वाले अस्पतालों में सम्मिलित नहीं किया गया था, किंतु राष्ट्रीय अस्पतालों के सभी प्राइवेट/पब्लिक सेक्टर के बीच यह क्रमशः तीसरे और 7वें स्थान पर है। जिपमेर के बाह्य रोगी एवं आपातकालीन कक्ष में रोगियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है तथा अब प्रतिदिन 6500 रोगी बाह्य ओपीडी में तथा वार्षिक तौर पर 18.80 लाख रोगी यहां आते हैं। हम 73000 से अधिक रोगियों को भर्ती करते हैं तथा 38.80 लाख से अधिक जांच प्रतिवर्ष करते हैं। वर्ष के दौरान 36000 से अधिक शल्यक्रिया की गई। गत वर्ष के दौरान हमारे ग्रामीण एवं शहरी स्वास्थ्य केंद्रों एवं आउटरीच केंद्र कराईकल में 50000 बाह्य रोगी इलाज हेतु आए। इन आउटरीच कार्यक्रमों एवं जांच शिविर द्वारा जनसमुदाय को प्रतिरक्षण, नवजात उपचार, एनसीडी की जांच हेतु व्यापक श्रृंखलाबद्ध सेवाएं प्रदान की जा रही हैं तथा तृतीयक विशेषज्ञों को जनसमुदाय तक पहुंचाया जा रहा है। हमारे टेलीमेडिसिन कार्यक्रमों में वृद्धि के द्वारा हमारी परिकल्पना पूर्ण हो रही है जिसे हम विकेंद्रीकृत उपचार तथा सलाहकार तृतीयक सेवाओं के द्वारा जनसमुदाय स्तर तक पहुंचा रहे हैं।

स्वास्थ्य उपचार गुणवत्ता एवं रोगी सुरक्षा में जिपमेर की योग्यताओं के विस्तार को देखते हुए संस्थान ने नवंबर 2013 में रोगी सुरक्षा पर एक कार्यशाला और क्रमिक आयुर्विज्ञान शिक्षा कार्यक्रम का संचालन किया, जिसमें जिपमेर क्वालिटी कौंसिल के 100 से अधिक सदस्यों सहित विदेशों के संगठनों ने भी हिस्सा लिया। इस गुणवत्ता सेल ने सभी विभागों के प्रतिनिधियों से समझौता किया है और कई डोमेन में महान प्रगति कर रहा है। पिछले दो वर्षों के दौरान संस्थान ने संपूर्ण बहुअंगों के प्रत्यारोपण कार्यक्रम की दिशा में इमारत ब्लॉकों का निर्माण कार्य शुरू कर दिया है। इसमें मृतक दाता अंश को जीवितदाता वृक्क प्रत्यारोपण कार्यक्रम के साथ जोड़ा गया है तथा अस्थिमज्जा प्रत्यारोपण सेवाओं का विस्तार किया गया है।

अन्य उपलब्धियां

जिपमेर द्वारा 2014 में स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन किया गया। जिपमेर द्वारा वर्ष 2014 में प्रति माह अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम को कार्यान्वित करने की योजना है। 26 सितम्बर, 2014 को आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह की महत्वपूर्ण विशेषता भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी की मुख्य अतिथि के तौर पर गरिमामयी उपस्थिति थी, जिन्होंने स्वर्ण जयन्ती समारोह में संबोधन प्रस्तुत किया। सम्मानीय अतिथियों में डॉ. हर्षवर्धन, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, केंद्रीय मंत्री, ले. जनरल ए.के. सिंह, उप–राज्यपाल, पुद्दुचेरी, श्री एन. रंगास्वामी, मुख्यमंत्री, पुद्दुचेरी, श्री लव वर्मा, सचिव (एचएफडब्ल्यू) एवं डॉ. एम.के. भान, अध्यक्ष, जिपमेर मौजूद थे।

भविष्य योजनाः

जिपमेर के अगले वर्ष के प्राथमिक क्षेत्र इस प्रकार हैं–

1. श्रेष्ठ विशिष्ट ब्लॉक एनेक्सी को पूरा करना;
2. चिकित्सा जांच ओपीडी/ वृद्धावस्था चिकित्सा खण्ड/ दन्त विंग/ एमआरडी बल्क को चालू करना;
3. परिसर दीवार, स्टाफ एवं फैमिली क्वार्टरों का कार्य पूर्ण करना;
4. बिजली का 110 केवीए सब–स्टेशन बनाकर तथा अक्षय ऊर्जा समाधान अर्थात सोलर पावर आदि से विद्युत आपूर्ति में वृद्धि करना; और
5. स्वीमिंग पूल सहित स्टाफ स्वस्थता केंद्र।

जिपमेर न केवल पुद्दुचेरी के लोगों को बल्कि तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल एवं आन्ध्र प्रदेश जैसे पड़ोसी राज्यों के लोगों को भी तृतीयक उपचार चिकित्सा संस्थान के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान करता है। यद्यपि यह एक स्नातकोत्तर संस्थान के रूप में निर्दिष्ट है, फिर भी यह लम्बवत तथा अनुप्रस्थ रूप से समेकित स्वास्थ्य सिस्टम है, जो प्राथमिक उपचार से चतुष्क उपचार एवं सामुदायिक उपचार तक सेवाओं का पूर्ण स्पैक्ट्रम प्रदान करता है। इसे ग्रामीण एवं शहरी केंद्रों को जिपमेर के हब अस्पताल से जोड़कर प्राप्त किया गया है। इस प्रकार हमने भारत के लिए वैश्विक स्वास्थ्य उपचार (यूएचसी) हेतु आदर्श के रूप में अपना स्थान बनाया हुआ है। आगे, इस उपचार में गरीबों एवं जरूरतमंदों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और रोगियों एवं उनके परिवारों हेतु कम से कम व्यय तक प्रभावी कमी की जाती है। स्वास्थ्य उपचार नवीनताओं एवं स्वास्थ्य सेवा अनुसंधान के माध्यम से यूएचसी की यह अनिवार्यता ''जिपमेर इंटरनेशनल स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ'' नामक एक प्रकार के जन स्वास्थ्य विद्यालय को विकसित करने हेतु मजबूती प्रदान करेगी।

जिपमेर रोगियों के उपचार को प्रथम मानते हुए उपचार में पूर्णता प्राप्त के लिए प्रयास करेगा और मानव क्षमता को काम में लाकर लोगों के जीवन में परिवर्तन लाएगा। जिपमेर का लक्ष्य गुणवत्ता एवं मूल्यों द्वारा वहनीय लागत पर जनता को बेहतर स्वास्थ्य देना/ निरोग बनाना है।

सुविधा से वंचित और नए ज्ञान का निर्माण जिपमेर डीएनए के दो मुख्य गुण हैं–

15.18 स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, (पीजीआईएमईआर), चंडीगढ़

स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चण्डीगढ़ की स्थापना 01 अप्रैल, 1967 से प्रभावी संसद के एक अधिनियम (1966 का अधिनियम 51) द्वारा स्वायत्त निकाय के रूप में ''राष्ट्रीय महत्व का संस्थान'' के रूप में पंजाब सरकार द्वारा 1962 में हुई थी। यह संस्थान स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के तहत स्वायत्त निकाय के रूप में कार्य कर रहा है। संस्थान के मुख्य लक्ष्य निम्नानुसार हैं–

- औषधियों की सभी शाखाओं में स्नातकोत्तर छात्रों को प्रशिक्षित करना।
- उच्चतम श्रेणी के अनुसंधान संचालित करना तथा
- उच्च गुणवत्ता की रोग उपचार सुविधा प्रदान करना।

संक्षेप में, संस्थान की गतिविधियों संबंधी वार्षिक रिपोर्ट निम्नानुसार हैः–

चिकित्सा शिक्षाः संस्थान द्वारा पोस्ट ग्रेजुएट तथा पोस्ट डॉक्टरल मेडिकल पाठ्यक्रम संचालित किए गए हैं। स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के प्रथम बैच ने 15 अप्रैल, 1963 को संस्थान में प्रवेश लिया। वर्ष 2013–14 के दौरान विभिन्न

परीक्षाओं में 530 उम्मीदवारों ने सफलता प्राप्त की तथा 31 मार्च, 2014 के अनुसार 742 एमडी/ एमएस विद्यार्थी ऑन द रोल थे।

संपूर्ण देश में विज्ञापन के बाद मेरिट के आधार पर संस्थान द्वारा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु कड़ी प्रक्रिया अपनाई गई।

शैक्षिक एवं अनुसंधान गतिविधियां– संस्थान अनुसंधान के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है तथा वर्ष के दौरान चिकित्सकों एवं बेसिक वैज्ञानिकों के 1113 लेख प्रकाशित किए गए तथा 134 वैज्ञानिकों को छात्रवृत्तियों, व्याख्यान हेतु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। गत वर्ष संस्थान के विभिन्न विभागों ने डीएसटी, डब्ल्यूएचओ, डीबीटी, आईसीएमआर एवं अन्य बाह्य एजेंसियों द्वारा 193 अनुसंधान परियोजनाएं वित्तपोषित की तथा 612 अनुसंधान परियोजनाओं को राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय एवं पीजीआई अनुसंधान फंड द्वारा संचालित किया गया।

अन्य गतिविधियां– संस्थान द्वारा मेडिकल टेक्नोलॉजी में एमएससी, एमडीएस, एमएचए, एमपीएच, पैरामेडिकल पाठ्यक्रम, डीएम/ एमसीएच पाठ्यक्रम, पीएचडी पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। 31.03.2014 के अनुसार इन पाठ्यक्रमों में संस्थान के रोल के अनुसार 803 विद्यार्थी थे।

अस्पताल सेवाएं– स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़ द्वारा राज्य से सटे हुए प्रदेशों के अलावा सुदूरवर्ती राज्यों जैसे पश्चिम बंगाल और बिहार के राज्यों से आए रोगियों के लिए तृतीयक उपचार के तहत चिकित्सा एवं श्रेष्ठ विशिष्टता उपचार, सुविधा प्रदान की जा रही है। वर्ष 1963–64 के दौरान वार्षिक बाह्य रोगी उपस्थिति संख्या 125163 तथा भर्ती रोगियों की संख्या 3328 थी जो आंकड़ा बढ़कर वर्तमान में 2061911 बाह्य रोगी एवं 78568 भर्ती रोगी संख्या तक पहुंच गया है।

आपात सेवाएं– आपातकालीन कॉम्पलैक्स द्वारा एक ही जगह समस्त चिकित्सा एवं शल्यक सेवाओं सहित जांच एवं आपरेशन की सुविधा प्रदान की गई है।

वर्ष 2013–14 के दौरान आपातकालीन बाह्य रोगी के तौर पर 70756 रोगी देखे गए तथा 37535 रोगियों को भर्ती किया गया। आपातकालीन शल्यक कक्षों में कुल 16155 आपरेशन किए गए जिनमें 13486 बड़े आपरेशन तथा 2669 छोटे आपरेशन किए गए।

पुस्तकालय– संस्थान का पुस्तकालय संकाय सदस्यों, रेजीडेन्ट्स, अनुसंधान सदस्यों, स्टाफ तथा सदस्यों के लिए उल्लेखनीय भूमिका निभा रहा है। वर्तमान में पुस्तकालय में नैदानिक तथा मूल विज्ञान एवं सामान्य पुस्तकों की कुल 45897 पुस्तकें उपलब्ध हैं। अनुसूचित जाति/ जनजाति के विद्यार्थियों के लिए बुक बैंक की भी व्यवस्था है। पुस्तकालय में 57,810 बाउंड जरलन हैं तथा यह प्रिन्ट फार्म में 167 अन्तर्राष्ट्रीय चालू जरनलों का ग्राहक है। परीक्षा के दौरान पुस्तकालय (अप्रैल से नवम्बर तक) 15 से 17 घंटे खुला रहा, जिसमें रविवार एवं अवकाश दिवस भी शामिल है।

वित्त वर्ष 2013–14 के दौरान प्रकाशन, ऑनलाइन मेडिकल डाटाबेस तथा पुस्तकों के शुल्क हेतु 4,24,29,193 रुपए खर्च किए गए।

सराय– वर्तमान में पीजीआई में स्वयं की चार सराय है जिसमें कॉमन स्नानागार सहित 72 अलग–अलग कमरे हैं। 8 कमरों में स्नानागार उपलब्ध हैं तथा 156 बिस्तर जो शयनशाला में है उनके लिए कॉमन स्नानागार सुविधा उपलब्ध है, जो रोगियों से पूरी तरह भरे हुए हैं। इसके अलावा, 72 अन्य कक्ष है जिनमें से कुछ नेहरू सराय में है जिन्हें विभिन्न एनजीओ/ ठेकेदारों को उनके कार्यालय के काम के लिए उपलब्ध कराया गया है और कुछ की मरम्मत की जा रही है।

कुल कार्य की सूची– वित्त वर्ष अप्रैल 2013 से मार्च 2014 तक वास्तविक व्यय का विवरण निम्नानुसार है:

योजना	:	6866.64 लाख रुपए
गैर–योजना	:	5711.83 लाख रुपए
सामान्य योजना	:	157.01 लाख रुपए

क. उपर्युक्त वर्णित वर्ष के दौरान, संस्थान ने निम्नलिखित बड़े निर्माण कार्यों को पूरा किया:

1. ट्रॉमा–ए का नवीकरण (पुरानी इमरजेंसी)
2. छात्रावासों का नवीकरण कार्य

3. निवेदिता छात्रावास के समीप स्टाफ सदस्यगण हेतु कार स्कूटर पार्किंग

4. संस्थान सड़क की मरम्मत और

5. उन्नत नेत्र केंद्र (चरण II)

ख. निम्नलिखित निर्माण कार्य पूर्ण होने के कगार पर हैं–

1. उन्नत हृद केंद्र

2. पीजीआई गृहों का नवीकरण (सैक्टर 12 तथा 24, चण्डीगढ़)

ग. निम्नलिखित निर्माण कार्य प्रगति पर हैं–

1. 250 बिस्तरों वाले अस्पतालों का निर्माण कार्य (नेहरू अस्पताल का विस्तार)

2. संगरूर में सेटेलाइट केंद्र निर्माण

3. औषध डी–व्यसन केंद्र चरण–II

4. 11 केवी सब–स्टेशन डॉक्टर छात्रावास का संवर्धन और

5. नेहरू अस्पताल एवं अनुसंधान, खण्ड 'क' तथा 'ख' का आधुनिकीकरण

बजटः वित्त वर्ष 2013–14 के दौरान, मंत्रालय ने सहायता अनुदान (योजना) के अंतर्गत 150.00 करोड़ रुपए तथा सहायता अनुदान (गैर–योजना) के अंतर्गत 484.50 करोड़ रुपए जारी किए।

15.19 लेडी हॉर्डिंग चिकित्सा महाविद्यालय तथा श्रीमती एस.के.अस्पताल, नई दिल्ली

लेडी हार्डिंग चिकित्सा महाविद्यालय, नई दिल्ली की स्थापना वर्ष 1916 में केवल 14–16 छात्रों की मामूली संख्या के साथ हुई थी। कुछ वर्षों में यह संस्थान, एमबीबीएस महिला छात्रों हेतु आयुर्विज्ञान शिक्षा के लिए एक पथप्रदर्शक संस्थान के रूप में पूर्ण विकसित हो गया। वर्ष 1970 में स्नातक पूर्व दाखिलों की संख्या बढ़कर 130 हो गई। केंद्रीय शैक्षिक अधिनियम, 2006 के अनुसार अ.पि.व. आरक्षण के क्रियान्वयन हेतु इस संस्थान में इसकी संख्या आगे बढ़कर 200 और विभिन्न विशिष्टताओं में संख्या 142 स्नातकोत्तर छात्र हो गई। वर्ष 1949 से दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध यह कॉलेज पूरे भारत तथा विदेशों से छात्रों को प्रवेश देता आ रहा है। दिल्ली की बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 1958 में एक अलग बहिरंग रोगी ब्लॉक आरंभ किया गया।

वर्ष 2014–15 की अवधि (आज की तारीख तक) के अस्पताल के आंकड़े निम्नलिखित हैं–

बिस्तरों की संख्या	:	877
ओपीडी में उपस्थिति	:	438200
अंतरंग दाखिले	:	23565
बंध्यीकरण	:	784
बेड आक्यूपेंसी	:	74%
निष्पादित की गई शल्य चिकित्साएं	:	
बड़े	:	5345
छोटे	:	6043
कुल	:	**11388**
की गई प्रसूतियां	:	8611

इस संस्थान को सर्वेक्षण/ अनुसंधान आधारित श्रेणी में दिनांक 11.12.2014 को हैल्थकेयर एचीवर्स अवार्ड, 2014 के प्रथम संस्करण के दौरान सर्वश्रेष्ठ द्वितीयक उपचार अस्पताल, उत्तरी क्षेत्र का पुरस्कार प्रदान किया गया। हैल्थकेयर एचीवर्स अवार्डस का आयोजन टाइम्स ऑफ इंडिया तथा न्यू इंडिया एश्योरेंस द्वारा किया गया।

एचएससीसी (आई) लि. (परियोजना परामर्शदाता) के पर्यवेक्षण में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा नियुक्त वास्तुशिल्पी परामर्शदाता द्वारा एक व्यापक पुनर्निर्माण योजना तैयार की गई थी, जिसे चरणों में क्रियान्वित किया जाएगा। चरण I के अंतर्गत, यह विचार किया गया था कि केंद्रीय शैक्षिक संस्थान अधिनियम–2006 के अंतर्गत 27% अतिरिक्त स्नातक–पूर्व तथा स्नातकोत्तर दाखिलों हेतु आवश्यक अतिरिक्त आधारभूत संरचना को अनिवार्य रूप से सृजित किया जाए और यह प्रक्रियाधीन है।

i. आवासीय इमारतें (स्नातकोत्तर छात्रों हेतु छात्रावास, टाइप III क्वार्टर और टाइप प्ट क्वार्टर) का निर्माण किया जा चुका है और संस्थान द्वारा इसे अधिकार में ले लिया गया है।

ii. रेडियोथेरेपी (अर्बुदविज्ञान) खण्ड और स्नातक–पूर्व

छात्रावास का निर्माण तैयार है और आंतरिक सेवाओं और सुसज्जित करने का कार्य प्रगति पर है। ओपीडी खण्ड, आईपीडी खण्ड, दुर्घटना एवं आपातकालीन खण्ड एवं शैक्षिक खण्ड का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

iii. एचएससीसी द्वारा रेडियोथेरेपी मशीनों के प्रापण हेतु दिनांक 17.07.2014 को उच्च एवं चिकित्सीय उपकरणों के प्रापण, निविदाओं को जारी किया गया था और एचएससीसी द्वारा दिनांक 11.11.2014 को तकनीकी बोली खोली गई थी। तकनीकी बोली के मूल्यांकन के बाद, वित्तीय बोली जल्दी ही खोली जाएगी।

दमा तथा मधुमेह में ऑटोनोमिक फंक्शन के संबध में व्यापक अनुसंधान आरंभ हो चुका है। रजोनिवृतिपश्चात महिलाओं पर संपूर्ण योगा के प्रभावों का मूल्यांकन भी किया जा रहा है। विभाग द्वारा अनुसंधान एवं रोगी उपचार हेतु प्रारंभ इवोक्ड पोटेन्शियल, नर्व कन्डक्शन की रिकॉर्डिंग हेतु तंत्रिका शरीर क्रिया विज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना की गई है। विभाग द्वारा प्रभावी स्नातक–पूर्व एमबीबीएस शिक्षण हेतु उपकरणों एवं माइक्रोस्कोप को भी उन्नत किया गया है। सभी संकाय–सदस्यों ने पूर्व अस्पताल अभिघात उपचार तकनीशियन पाठ्यक्रम हेतु पाठ्यक्रम एवं अध्ययन सामग्री में योगदान दिया। विभाग द्वारा नैदानिक मामलों एवं आधारभूत शरीर क्रिया विज्ञान पर आधारित ग्राफों और चार्टों हेतु व्यवहारिक शरीर क्रिया विज्ञान एवं माड्यूलों के लिए प्रोटोकॉल बनाने के लिए कार्य प्रारंभ किया गया है।

रोगी उपचार हेतु नैदानिकों के रूप में बढ़ाई गई सुविधाएं–

- लिक्विड बेस्ड साइटोलॉजी (एलबीसी)
- स्वैच्छिक रक्तदान में वृद्धि और
- बहिरंग रक्तदान शिविरों की संख्या में वृद्धि

त्वचा रोग विज्ञान विभाग एवं एसटीडी में उपलब्धियां, सफल वृतांत एवं नई उपलब्धियां निम्नलिखित हैं–

1. विभाग में जरा–चिकित्सा क्लीनिक को रविवार में प्रातः 9.30 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक आरंभ किया गया है;

2. त्वचा शल्य चिकित्सा में कुछ नई प्रक्रियाएं आरंभ की गई हैं और

3. राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान में राष्ट्रीय किशोर सुरक्षा कार्यक्रम हेतु संकाय सदस्यों ने मास्टर प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण में भाग लिया।

विभाग द्वारा नवीनतम पूर्णतः ऑटोमेटिड एनालाइजर सहित नैमिक एवं 24x7x365 दिन आपातकालीन नैदानिक प्रयोगशाला सेवाएं तथा हार्मोन लैब और आण्विक जैव–विज्ञान प्रयोगशाला चलाई जाती है। जैव रसायन विभाग द्वारा केएससीएच नैदानिक जैव रसायन प्रयोगशाला को अधिकार में ले लिया गया है। इस वर्ष नैदानिक जैव रसायन प्रयोगशाला में की गई जांचों की कुल संख्या 8 लाख से अधिक थी।

- विशेष जैव रसायन प्रयोगशाला, स्थापित किए जाने की प्रक्रिया में है।
- आरंभिक जांच सूची में सीरम इंसुलिन, विटामिन बी12, फॉलिक एसिड एवं विटामिन डी सम्मिलित होगी। एसएसकेएच के अंतर्गत केएससीएच जैव रसायन विभाग लाने की नई पहल। इस समय तक केएससीएच जैव रसायन पद रिक्त है।
- एसएसकेएच प्रयोगशाला ने अन्य जारी हॉर्मोनों/जांचों के अतिरिक्त एसएसकेएच में रोगी उपचार हेतु सीरम पीएसए और बीटा एचसीजी को जोड़ा गया।
- एनएबीएल तथा एमसीआई अनुमोदित राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण में सभी संकाय सदस्यों का प्रशिक्षण।
- सर्विकल कार्सिनोमा के कारण उच्च जोखिम पर महिलाओं में माइक्रो न्यूक्लियर सर्विकल साइटोलॉजिकल अपसामान्यताओं का अध्ययन।
- वयस्क मानव लीवर में ऊतकविज्ञानी आयु संबंधी परिवर्तन।
- वयस्क भारतीय जनसंख्या में मिडल सेरिब्रल आर्टरी का माइक्रोएनाटोमिकल एवं एंजियोग्राफिक अध्ययन।
- वयस्क मानव शव के फेफड़ो में श्वास नली, श्वसनिका और उनका फेफड़ों की धमनी के संबंध तथा तुलनीय आयु समूहों के रोगियों में सीटी इमेजिंग का मॉर्फोमिट्रिक अध्ययन।

- वयस्क मानव शव के मस्तिष्क में सबथैलेमिक न्यूक्लियस का हिस्टोमॉपर्फोमिट्रिक अध्ययन और तुलनीय आयु समूहों में रोगियों की एमआर इमेजिस के साथ सह–संबंध।

- मानव वयस्क के अस्थि पंजरों और उनकी विविधताओं का मानव शरीर के नाप से संबंधित अध्ययन।

विभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन, सीएमई, जन–जागरुकता कार्यक्रम।

लेडी हार्डिंग चिकित्सा महाविद्यालय के प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान विभाग के संकाय सदस्य तथा एसएसके अस्पताल द्वारा वर्ष 2014 में निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए:

एलएचएमसी के प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान विभाग में दिनांक 11 जुलाई, से 24 जुलाई, 2014 तक **जनसंख्या स्थिरता पखवाड़ा** अथवा परिवार कल्याण सेवा प्रावधान पखवाड़े का आयोजन किया गया। डॉ. जोशी, सीडीएमओ, एनआरएचएम, नई दिल्ली जिला को आमंत्रित किया गया। इसमें दिनांक 14 से 17 जुलाई 2014 तक जन–शिक्षा मंच का आयोजन था। स्वास्थ्य वार्ता में महिलाओं की सहभागिता लगभग 200 महिलाएं प्रतिदिन थीं।

विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर दिनांक 11 जुलाई, 2014 को **''कॉन्ट्रासेप्टिव्स अपडेट'' पर एक प्रश्नोत्तरी** का आयोजन किया गया। डॉ. सरस्वती दास, निदेशक, नैदानिक सेवाएं एवं प्रशिक्षण (एफपी), जेएचपीआईजीओ तथा डॉ. मिनाती रथ, वरिष्ठ नैदानिक अधिकारी को आमंत्रित किया गया। कुछ अन्य केंद्रों से स्नातकोत्तर छात्रों, वरिष्ठ रेजीडेन्ट और एएनएम ने भी भाग लिया। विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर दिनांक 12 जुलाई, 2014 पर पीपीआई यूसीडी एवं आईयूएस इन्सरशन पर ''हैन्ड्स ऑन इन्हान्सिंग स्किल्स कार्यशाला''।

दिल्ली गाइनीक्लोजिकल इंडोस्कोपिस्ट्स सोसाइटी तथा एलएचएमसी द्वारा इंडिया हैबीटैट सेन्टर में दिनांक 3 तथा 4 अगस्त, 2014 को **''गाइनी इंडोस्कोपिक सर्जरी''** पर **वार्षिक सम्मेलन और लाइव कार्यशाला** का आयोजन किया गया। एसएसके अस्पताल में लाइव कार्यशाला का आयोजन किया गया, श्रेष्ठ राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संकाय सदस्यों ने लैप्रोस्कोपिक तथा हिस्ट्रोस्कोपिक ऑपरेशन निष्पादित किए। इसमें दिल्ली तथा रा.रा.क्षे. से स्त्री रोग विज्ञानियों एवं स्नातकोत्तर छात्रों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।

एसजे ऑडिटोरियम, कैफेटेरिया, एलएचएमसी में दिनांक 19 नवम्बर को **मधुमेह की जांच एवं उपचार पर एक क्रमिक आयुर्विज्ञान शिक्षा** कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अन्य प्रतिष्ठित संस्थानों से वरिष्ठ संकाय सदस्यों को आमंत्रित किया गया। सगर्भता में मधुमेह के उपचार में साक्ष्य आधारित प्रैक्टिस और संस्तुतियों पर बहु–विषयक व्याख्यानों एवं समूह चर्चा का आयोजन किया गया। सर्गभता में मधुमेह पर जन जागरुकता अभियान दिनांक 20–21 नवम्बर को आयोजित किया गया था। चार्ट एवं सक्रिय बातचीत के माध्यम से मधुमेह के लिए जांच की महत्ता, प्रसव–पूर्व जांच के बारे में सूचना दी गई और शिशु पर प्रभावों के बारे में स्पष्ट किया गया।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के निदेशों के अनुसार विभाग द्वारा दिनांक 7, 10, 11, 12 नवम्बर, 2014 को आयोजित गाइनीक्लॉजिकल कैंसर की जांच एवं रोकथाम पर जन–जागरुकता अभियान के माध्यम से स्त्री रोग विज्ञानी कैंसर के बारे में आम लोगों के मध्य जागरुकता उत्पन्न करने के लिए प्रयास किए गए।

एलएचएमसी में दिनांक 29 नवम्बर, 2014 को **''माता–पिता से बच्चे में एचआईवी के संचरण की रोकथाम'' पर एक सीएमई** का आयोजन किया गया जो कि काफी सूचनाप्रद थी और जिसकी सभी ने बहुत प्रशंसा की। स्त्री रोग विज्ञान ओपीडी में विश्व एड्स दिवस के अवसर पर दिनांक 1 तथा 2 दिसम्बर को एक जन–जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया। रोगियों को एचआईवी जांच करवाने की आवश्यकता के बारे में सूचित किया गया। विभाग में स्वास्थ्य चिकित्सकों की शिक्षा प्रशिक्षण हेतु एक कौशल प्रयोगशाला (स्किल लैब) विकसित की जा रही है।

वि.स्वा.सं. एसईएआरओ परियोजना के अंतर्गत नवजात प्रसव–पूर्व आंकड़ों का अनुरक्षण किया गया।

विभाग में सैलमोनेला हेतु राष्ट्रीय फेज टाइपिंग केंद्र पूर्ण रूप से क्रियाशील है और पूरे देश से सैलमोर्नला आइसोलेट्स प्राप्त करना जारी है। वर्तमान में, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद नें ''स्टडी ऑफ जीनोटाइपिक डाइवर्सिटी ऑफ एस एन्टीरिका सेर. टाइफी इन इंडिया बाय पल्स पिल्ड जेल इलैक्ट्रोफेरेसिस'' शीर्षक वाली परियोजना को स्वीकृति प्रदान की है। परियोजना भारत से इन आइसोलेट्स की जीनोटाइप विविधता पर बहुमूल्य आंकड़े प्रदान करने हेतु कार्यरत है।

15.20 कलावती सरन बाल अस्पताल, नई दिल्ली

कलावती सरन बाल अस्पताल (एएससीएच) राष्ट्रीय महत्व का एक प्रमुख रैफरल बाल अस्पताल है। अस्पताल ने 18 वर्ष की आयु तक के बाल रोगियों को विशेष रूप से चिकित्सा उपचार सेवा प्रदान करने के लिए वर्ष 1965 में कार्य करना आरंभ किया। वर्तमान में, इसमें 380 बिस्तर हैं। केएससीएच (जेआईसीए) की को उन्नत करने हेतु योजना के अंतर्गत इस अस्पताल की बिस्तर संख्या को 500 तक बढ़ाया जा रहा है।

कलावती सरन बाल अस्पताल देश में व्यस्ततम बाल अस्पतालों में से एक है और दिल्ली एवं पड़ोसी राज्यों से रोजाना 800–1000 बच्चों को ओपीडी में देखा जाता है और रोजाना 80–100 नए दाखिले किए जाते हैं। अस्पताल पोलियो, टेटनस और खसरा हेतु प्रहरी केंद्र है। इसमें विशिष्ट विभेदन किया गया है, जिसमें अलग बाल आपातकालीन है जहां रोगी सीधे ही पहुंच सकते हैं। इस अस्पताल में अतिसार (डायरिया) प्रशिक्षण एवं उपचार एकक भी है, यह देश में इस प्रकार का प्रथम एकक है जिसे वि.स्वा.सं. तथा भारत सरकार की ओर से अतिसार रोगों हेतु प्रशिक्षण केंद्र के रूप में मान्यता भी प्रदान की गई है। अस्पताल द्वारा एआरआई, यूआईपी एवं अन्य राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों हेतु प्रशिक्षण केंद्र के रूप में भी सेवाएं प्रदान की गई हैं।

अस्पताल के नवजात खण्ड, जिसमें 80 बिस्तर हैं और प्रतिवर्ष 15000 प्रसव प्रबंधन किया जाता है। यह देश में सबसे बड़ा नवजात एकक है और समय पूर्व प्रसव वाले एवं बीमार नवजात बच्चों को वेन्टीलेटर उपचार सहित अद्यतन सेवाएं प्रदान कर रहा है। यह संस्थान वास्तव में एक अति विशिष्टता अस्पताल है, जिसमें पूर्ण रूप से विकसित उप विशिष्टताओं जैसे तंत्रिका विज्ञान, वृक्क विज्ञान, जठरांत्र रोग विज्ञान एवं पोषण, रुधिर विज्ञान, पुल्मनोलॉजी एवं अंतःस्रावि‍की विज्ञान उपलब्ध हैं।

कलावती सरन बाल अस्पताल का इंडो–जापान मैत्री खण्ड का निर्माण हो गया है, जिसमें इमारत एवं अस्पताल के विभिन्न खण्डों हेतु नवीनतम उपकरणों के लिए 54 करोड़ रुपए का व्यय किया गया है, इससे संस्थान की अपर्याप्त स्थान एवं प्रौद्योगिकीय उन्नयन की समस्या को कम करने में सहायता मिली है।

अस्पताल द्वारा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुमोदन से तथा यूनीसेफ की सहायता से ''राष्ट्रीय पौषणिक पुनर्वास संसाधन एवं प्रशिक्षण केंद्र'' की स्थापना की गई है। केंद्र में गंभीर तीव्र कुपोषण (एसएएम) के उपचार हेतु 12 बिस्तर हैं। केंद्र में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुरोध पर दो राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण आयोजित किए गए हैं।

कलावती सरन बाल अस्पताल, सुविधा आधारित नवजात उपचार के लिए राष्ट्रीय नोडल केंद्र के रूप में नामित है।

आईवाईसीएफ के प्रयोग को सुदृढ़ करने के लिए कलावती सरन बाल अस्पताल में शिशु तथा छोटे बच्चों के लिए फिडिंग परामर्श केंद्र आरंभ किया गया था। अस्पताल में स्वपरायणता मूल्यांकन प्रकोष्ठ आरंभ किया गया था। भौतिक चिकित्सा एवं पुनर्वास विभाग में प्रत्येक महीने के पहले बुधवार (दोपहर) को हीमोफीलिया फोलो अप क्लिनिक लगाई जाती है। लिम्फोमा और ल्यूकिमिया हेतु उपचार किए गए बच्चों के फोलो अप हेतु चिकित्सा के पूर्ण होने के बाद माह में एक बार एसीटी क्लिनिक प्रत्येक महीने के पहले सोमवार में आरंभ किया गया था।

वर्ष 2013–14 के अस्पताल आंकड़े निम्न प्रकार से हैं–

1.	अस्पताल का नाम	:	केएससी अस्पताल
2.	बिस्तरों की संख्या	:	380
3.	बिस्तरों का वितरण	:	ईडब्ल्यू)
			आईसीयू) 45
			सीसीडब्ल्यू)
			यूनिट I 54
			यूनिट II 60
			यूनिट III 63
			यूनिट III विस्तारित वार्ड
			एनएनवार्ड 50
			शल्यक 36
			अस्थि रोग 10
			डीटीटीयू 10
			टीडीसीसी 12
			नर्सरी 30
			पीएमआर 05

4. अस्पताल से छुट्टी की संख्या : 28704

5. दाखिलों की संख्या :

पुरुष (बालक)	महिला (बालिका)	कुल
18996	9787	28783

6. बिस्तर अधिभोग दर : 112%

7. ओपीडी में उपस्थिति :

पुरुष (बालक)	महिला (बालिका)	कुल
171587	92393	263980

8. आपातकालीन :

बालक	बालिका	कुल
31794	17120	48914

9. प्रतिरक्षण हेतु टीका लगाए गए रोगियों की संख्या : 65040

10. शल्यक आपरेशन की कुल संख्याः

बड़े	छोटे	कुल
1604	2052	3656

11. एक्स–रे परीक्षण कि कुल संख्या : 49418

12. नैदानिक प्रयोगशाला परीक्षणों की कुल संख्या : 437129

13. जैव–रसायन परीक्षण की कुल संख्याः 2060324

14. सूक्ष्म जैव विज्ञान परीक्षण की कुल संख्या : 33139

15. आईसीयू में भर्ती रोगियों की संख्या : 1414

16. नवजात एवं नर्सरी उपचार : 9267

17. क) ईसीजी : 1460

ख) ईईजी : 1616

ग) बेरा (बीईआरए) : 682

घ) ईएमजी : 55

18. पीएमआर विभाग में देखे गए रोगी : 58255

19. सकल मृत्यु दर : 4.5%

20.

(आंकड़े हजार रुपए में)

बजट	आबंटन	वास्तविक व्यय
योजना 2210	268000	248497
गैर योजना 2210	304550	301119
योजना 4210	53000	48325

15.21 महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान सेवाग्राम, महाराष्ट्र

महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (एमजीआईएमएस) सेवाग्राम भारत का प्रथम ग्रामीण चिकित्सा महाविद्यालय है। यह महात्मा गांधी की *कर्मभूमि* पर बसा हुआ है जिसे गांधी शताब्दी वर्ष परियोजना के रूप मं 1969 में डॉ. सुशीला नायर द्वारा स्थापित किया गया था। इस वर्ष, यह संस्थान डॉ. सुशीला नायर की जन्म शताब्दी को मना रहा है। कस्तूरबा हैल्थ सोसाइटी द्वारा एमजीआईएमएस का प्रबंधन किया जाता है और इसे चलाया जाता है। एमजीआईएमएस के व्यय में भारत सरकार, महाराष्ट्र सरकार और कस्तूरबा हैल्थ सोसाइटी की 50:25:25 अनुपात में हिस्सेदारी है। एमजीआईएमएस, कस्तूरबा अस्पताल से संबद्ध है, जिसे देश में एकमात्र ऐसा अस्पताल होने का सम्मान प्राप्त है, जिसे स्वयं महात्मा गांधी ने आरंभ किया था।

एमजीआईएमएस, आयुर्विज्ञान शिक्षा के समेकित पैटर्न को विकसित करके व्यावसायिक श्रेष्ठता प्राप्त करने के लक्ष्य हेतु प्रतिबद्ध है और यह प्राथमिक रूप से सुविधा से वंचित ग्रामीण समुदायों को आसानी से सुलभ एवं सस्ता स्वास्थ्य उपचार प्रदान करने का प्रयास करता है।

गुणवत्तायुक्त आयुर्विज्ञान शिक्षा

एमजीआईएमएस को प्रायोगिक आदर्श संस्थान बनाने के लिए डीजाइन किया गया था, जहां ग्रामीण क्षेत्रों की आवश्यकताओं के अनुसार आयुर्विज्ञान छात्रों को संवेदनशील बनाने के लिए आयुर्विज्ञान शिक्षा का पुनर्विन्यास किया गया है। इसकी स्थापना के 45 वर्षों में, एमजीआईएमएस ने उच्च नैदानिक क्षमता, व्यावसायिक प्रवृत्ति और नैतिक व्यवहार वाले चिकित्सक प्रदान करने का प्रयास किया है। संस्थान का मानना है कि गांधी जी के मूल्य और सिद्धांत आज भी संगत हैं और ये मानवीय भावों को खोए बिना आयुर्विज्ञान शिक्षा की उन्नति के लिए प्रखर रूप से प्रतिबद्ध हैं।

पाठ्यक्रम में नवीनता:– एमजीआईएमएस में देश के सभी भागों से छात्र आते हैं और सभी प्रकार की सामाजिक पृष्ठिभूमि से होते हैं। एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए प्रवेश परीक्षा में गांधीवादी विचारधारा पर अलग अर्हक परीक्षा सम्मिलित होती है। चिकित्सा छात्रों को पाठ्यक्रम में नवीनता जैसे अभिविन्यास शिविर, समाज सेवा शिविर, आरओएमई शिविर और सकी ग्रामीण नियोजन योजना के माध्यम से वास्तविक ग्रामीण भारत से परिचित कराने का प्रत्येक प्रयास किया जाता है। छात्र उसी प्रकार के वातावरण में रच बस कर ही सीखते हैं, जिसमें उन्हें भविष्य में सेवाएं प्रदान करनी होती हैं। सेवाग्राम में गांधी आश्रम (बापू कुटी) में आयोजित अभिविन्यास शिविर में छात्रों को एमजीआईएमएस आचरण–संहिता से परिचित कराया जाता है, जैसे–हाथ से बनी *खादी* पहनना, *श्रमदान* में भाग लेना और सभी धार्मिक प्रार्थनाओं में भाग लेना, मांसाहारी भोजन, शराब और तंबाकू का सेवन न करना। समाज–सेवा शिविर के दौरान, छात्र दत्तक गांव में 15 दिन व्यतीत करते हैं, जहां उन्हें 4–5 परिवार आबंटित किए जाते हैं, जिनका वे एमबीबीएस पाठ्यक्रम समाप्त होने तक फोलोअप करते हैं। इस प्रशिक्षण अवसर को आरओएमई शिविर तक विस्तारित किया जाता है, जहां अंतिम वर्ष के छात्र स्वास्थ्य उपचार डिलीवरी सिस्टम के बारे में प्रथम अनुभव प्राप्त करते हैं। स्नातक छात्रों को ग्रामीण क्षेत्रों में दो वर्ष सेवाएं प्रदान करनी होती है। एमजीआईएमएस में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हेतु आवेदनस करे के लिए यह एक अनिवार्य योग्यता मापदण्ड होता है। इन पाठ्यक्रम नवीनताओं को राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन द्वारा सराहा गया है और आयुर्विज्ञान शिक्षा संबंधी टास्क फोर्स की रिपोर्ट में एमजीआईएमएस सेवाग्राम की पहल और आयुर्विज्ञान शिक्षा तथा ग्रामीण क्षेत्र में नियोजन के अनुभव को गृहण करने की आवश्यकता के बारे में कहा गया है। संस्थान को नेशनल एसेसमेंट एण्ड एक्रेडटैशन काउंसिल (एनएएसी) द्वारा ग्रेड ए प्रमाणन भी प्रदान किया गया है। संस्थान द्वारा 19 स्नातकोत्तर विषयों और सात विभागों में पीएचडी में एमसीआई से मान्यता प्राप्त डिग्री और डिप्लोमा प्रदान किए जाते हैं।

आयुर्विज्ञान शिक्षा एकक: संस्थान में एक कार्यात्मक आयुर्विज्ञान शिक्षा एकक है जो विभिन्न शिक्षण अध्ययन मॉड्यूल, अनुसंधान कार्य पद्धति, संप्रेषण कौशल आदि पर संकाय सदस्यों, स्नातकोत्तर छात्रों, प्रशिक्षुओं एवं छात्रों को इन हाउस प्रशिक्षण प्रदान करता है। अंतर्राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान की उन्नति हेतु फाउंडेशन (एफएआईएमईआर) से नौ संकाय सदस्यों को फैलोशिप प्रदान की गई और कुछ अन्य को एनटीटीसी पांडिचेरी एवं अन्य केंद्रों में प्रसिक्षण प्रदान किया गया है। वर्ष 2014 में, आयुर्विज्ञान शिक्षा यूनिट द्वारा चिकित्सकों की शिक्षा पर छठा राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों के इतिवृत लेने, शारीरिक परीक्षण, संप्रेषण एवं अंतःवैयक्तिक कौशलों के नैदानिक कौशल को सिखाने एवं उनका मूल्यांकन करने के लिए एक केंद्रीयकृत कौशल प्रयोगशाला विकसित की गई है। प्रयोगशाला द्वारा छात्रों को सिक्यूलेटर्स पर नैदानिक तकनीकों को सिखाने के लिए सुरक्षित वातावरण में अवसर प्रदान किए जाते हैं।

एमजीआईएमएसः आंकड़े	
शिक्षण एवं अनुसंधान विभाग	24
प्रदान की गई स्नातकोत्तर विशिष्टताएं	20
एमसीआई से मान्यता प्राप्त विशिष्टताएं	19
शिक्षण सुविधा	159
प्रकाशित पत्र	125
वित्तपोषित अनुसंदान परियोजनाएं	29
आयोजित शैक्षिक गतिविधियां	49
एमजीआईएमएस के साथ कार्यरत ग्रामीण एनजीओ	79
प्रवेश प्राप्त स्नातक–पूर्व	100
प्रवेश प्राप्त स्नातकोत्तर (डिग्री,डिप्लोमा, डीएनबी)	82

ग्रामीण स्वास्थ्य उपचार

कस्तूरबा अस्पताल में आने वाले रोगियों में लगभग तीन चौथाई रोगी ग्रामीण पृष्ठभूमि के होते हैं। हमारे पास आने वाले रोगी न केवल महाराष्ट्र के विदर्भ से होते हैं बल्कि वे तेलंगाना, सिमंधरा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के संलग्न भागों से भी होते हैं। कस्तूरबा अस्पताल एक ग्रामीण संस्थान है परन्तु यहां किसी भी आधुनिक स्वास्थ्य उपचार सुविधाओं की कमी नहीं है और यह सस्ती लागत पर स्वास्थ्य उपचार प्रदान करने में सक्षम है। यह सहानुभूति स्वास्थ्य उपचार के साथ आधुनिक तकनीक की सुविधाएं प्रदान करता है।

कस्तूरबा अस्पतालः कस्तूरबा अस्पताल में 660 अध्यापन बिस्तर हैं। समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से 100 सर्विस बिस्तर तथा 20 प्राइवेट कमरे जोड़े गए जिससे बिस्तरों की कुल संख्या बढ़कर 780 बिस्तर हो गई। गत वर्ष अस्पताल में बहिरंग रोगियों के रूप में 685634 रोगियों को देखा गया तथा विभिन्न रोगों हेतु कुल 44853 रोगियों को भर्ती किया गया। अस्पताल में अति आधुनिक सघन उपचार एक काय–चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, प्रसूति एवं स्त्री रोग विज्ञान तथा बाल चिकित्सा विज्ञान में हैं, जो कि गंभीर उपचार उपलब्ध करवाते हैं। वृक्कपात वाले रोगियों के लिए एक सुसज्जित हीमोडायलेसिस यूनिट उपलब्ध है। सत्य साईं दुर्घटना एवं आपात एकक ट्रॉमा रोगियों के लिए सहायता उपलब्ध कराता है। संस्थान में एक रक्त संघटक एकक भी है जोकि न केवल कस्तूरबा अस्पताल, बल्कि आस–पास के प्राइवेट अस्पतालों के रोगियों हेतु भी अवयव उपलब्ध कराता है। सी.टी.स्कैन, एम.आर.आई., मैमोग्राफी, डिजिटल सबट्रैक्शन एंजियोग्राफी तथा ब्रैकीथेरेपी हेतु सुविधाएं उपलब्ध हैं। संस्थान द्वारा अपनी आर्मामेन्टेरियम के लिए एक लिनियर एक्सलेटर जोड़ा गया है जोकि कैंसर रोगियों के उपचार हेतु प्रयोग किया जाता है। मद्य एवं औषध व्यसन उपचार केंद्र ऐसे रोगियों का पुनर्वास करता है जोकि औषध एवं मद्यपान के व्यसनी हैं। विकृतिविज्ञान, सूक्ष्म जैव विज्ञान तथा जैव रसायन प्रयोगशालाओं में विभिन्न नैदानिक परीक्षण–माला संचालित करने के लिए आंतरिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। अस्पताल के सभी विभाग एक विकसित अस्पताल सूचना तंत्र द्वारा आपस में जुड़े हुए हैं और वाई–फाई सुविधायुक्त हैं।

कस्तूरबा अस्पतालः आंकड़ें	
कुल बिस्तर	780
ओपीडी उपस्थिति	577486
दूरस्थ रोगी जांचे गए	106371
अंतरंग रोगी	44853
जांच (विकृतिविज्ञान,जैव–रसायन, सूक्ष्मजैव विज्ञान)	647579
विकिरणविज्ञानात्मक जांच (एक्स. रे, यूएसजी, सीटी, एमआरआई)	111378
निष्पादित प्रमुख शल्यचिकित्साएं	29193
रक्तदान कैंप	43
जारी रक्त बैग (संपूर्ण	7861
रक्त, पीआरसी, पीसी, एफएफपी)	60076

मैनेजमेंट इन्फोर्मेशन सिस्टम (एमआईएस)

पूर्ण स्वचालित अस्पताल इन्फोर्मेशन सिस्टम वर्तमान में मैनेजमेंट इन्फोर्मेशन सिस्टम का स्रोत सिद्ध हो चुकी है क्योंकि इसके कारण अस्पताल से संबंधित सभी आंकड़े माउस को क्लिक करते ही उपलब्ध हो जाते हैं। सिस्टम को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित संकलनों को बनाया गया है।

- एचआईएस ने वर्ष 2012–13 के दौरान एक देशी आई पैड एप्लीकेशन को विकसित किया है जो चिकित्सकों के हाथों में पुनर्रचना प्रयोक्ता अनुभव सहित अद्यतन टेबलेट प्रौद्योगिक प्रदान करता है। अब स्वास्थ्य देखरेख कार्यकता उपचार के विषय पर आई पैड का प्रयोग करके जांचों का आदेश दे सकते हैं, दवाइयां निर्धारित कर सकते हैं, रोगी जांच परिणामों को पुनः प्राप्त कर सकते हैं, रेडियोलॉजिकल इमेजों को देख सकते हैं तथा मेडिकल रिकार्डों की जांच कर सकते हैं।

- बाह्य रोगी विभाग में अब इलेक्ट्रॉनिक क्यू मैनेजमेंट सिस्टम है जिसमें रोगी के ओपीडी में दिखाने के लिए आने पर डिजिटल नंबर दिया जा रहा है। क्यू मैनेजमेंट सिस्टम ने ओपीडी प्रतीक्षा हॉलों में भीड़ को कम करने में मदद की है, यह सुनिश्चित किया है कि रोगी पंक्ति में ही रहें एवं प्रतीक्षा कर रहे रोगियों के संतुष्टि स्तर में सुधार किया है।

जनजातीय स्वास्थ्य परियोजना उतोली, मेलघाटः मेलघाट अमरावती जिले में एक जनजातीय क्षेत्र है जो सेवाग्राम से 250 किमी उत्तर–पश्चिम में स्थित है। इसकी तीन–चौथाई जनसंख्या जनजातीय है यहां कुरकु आदिवासी बसे हुए हैं। अधिकतर लोग गरीब, अनपढ़ एवं अपने जीवन–निर्वाह के लिए संघर्षरत हैं। ये अंधेरे युग में रह रहे हैं। इन्हें स्वास्थ्य सुविधाओं, शिक्षा व संचार माध्यमों की जानकारी नहीं है। विशेष नवजात उपचार को प्राप्त करने के लिए अधिकतर लोगों को कठिन एवं पहाड़ी इलाकों में 160 किमी की यात्रा करनी पड़ती है।

यह संस्थान पिछले 15 वर्षों से मेलघाट में दो संकाय सदस्यों के साथ इसके जनजातीय स्वास्थ्य अनुसंधान परियोजना के भाग के रूप में एक ओपीडी एवं 6 बिस्तरों वाला अस्पताल

का संचालन कर रहा है, यद्यपि उच्च मातृत्व एवं शिशु मृत्यु दरों को दृष्टि में रखते हुए यह निर्णय लिया गया थ कि इस आरंभ को आगे बढ़ाया जाए। वर्ष 2012 में कस्तूरबा हेल्थ सोसाइटी ने उठावली, धरनी के जनजातीय क्षेत्र में महिलाओं एवं बच्चों के लिए एक नए 30 बिस्तर वाले अस्पताल को आरंभ किया है। प्रसूति रोग–स्त्रीरोग विज्ञानी, बाल चिकित्सक, संवेदनाहरण विज्ञानी, मेडिकल अधिकारी, इंटर्न, प्रशासनिक स्टाफ एवं नर्सें उटावली अस्पताल में चौबीसों घंटे कार्य कर रहे हैं एवं आपात, बाह्य रोगी एवं अंतरंग रोगियों का उपचार कर रहे हैं। आवर्तन के आधार पर एमजीआईएमएस के संकाय एवं रेजीडेंट मेलघाट कैम्पस में तैनात हैं। पिछले वर्ष सामान्य ओपीडी में 9646 रोगी देखे गए थे एवं विशेष ओपीडी में 11876 रोगी देखे गए। अस्पताल के वार्डों में 948 रोगियों को भर्ती किया गया था। 174 शिशुओं का जन्म हुआ इनमें से 61 सिजेरियन ऑपरेशन से हुए थे। कुल 309 शल्य चिकित्साएं की गईं जिनमें से 208 प्रमुख शल्य चिकित्साएं थीं, मेडिकल अधिकारियों द्वारा समुदाय में 1980 रोगियों को देखा गया था।

कार्डिक कैथेटराइजेशन लैब एवं आईसीसीयू: नए निर्मित मेडिसिन परिसर में 5000 स्कै.फिट कार्डियोलॉजी ब्लॉक का निर्माण किया गया है। इस ब्लॉक में सीलिंग–माउंटिड कैथ लैब हैं। इसके अतिरिक्त पेंडेंट्स, सेंट्रल ऑक्सीजन,सेंट्रल सेक्शन, सेंट्रल कार्डिएक मॉनीटरिंग स्टेम पेसमेकर्स, डिफीब्रीलेटर्स, रेडियोलॉजिक इमेजों को दर्शाने (पीएसीएस) एवं अस्पताल इन्फोर्मेशन सिस्टम द्वारा मॉनीटर्ड सिस्टम से सुसज्जित 10 बिस्तर का गहन कोरोनरी उपचार एकक को कैथ लैब में जोड़ा गया है।

कंप्यूटरीकृत रेडियोथेरेपी सिस्टम संस्थापित: पोर्टल, सिमुलेशन सत्यापन एवं डोसीमेट्री/गुणवत्ता आश्वासन हेतु एक समाधान वाले कंप्यूटरीकृत रेडियोथेरेपी सिस्टम को कस्तूरबा अस्पताल में स्थापित किया गया है। यह सिस्टम बहुविध उपचार मशीनों, सिमुलटर्स, एचडीआर ब्रैकीथेरेपी आदि को सहायता प्रदान करता है एवं लंबी प्रतीक्षा अवधि को कम करता है।

शहरी स्वास्थ्य केंद्र कैम्पस में बहुविशिष्टता ओपीडी आरंभ हुई: फरवरी 2014 में शहरी स्वास्थ्य केंद्र, राम नगर, वर्धा के कैम्पस में एक बहुविशिष्टता ओपीडी आरंभ हुई। शल्यचिकित्सा, कायचिकित्सा, प्र/स्त्री, बाल चिकित्सा एवं नेत्ररोग विज्ञान विभाग के चिकित्सक प्रतिदिन अपनी ओपीडी चलाते हैं जबकि ईएनटी, ओर्थोपेडिक्स एवं त्वचारोग विज्ञान के चिकित्सक सप्ताह में दो बार अपनी ओपीडी चलाते हैं।

स्वास्थ्य बीमा योजना: समाज में स्वास्थ्य जागरूकता का निर्माण करने के लिए स्वास्थ्य बीमा योजना ने अनेक पुरस्कार जीते हैं। कोई भी ग्रामीण वर्ष में रू. 350 देकर अपना एवं अपने परिवार का बीमा करा सकता है एवं बदले में वह ओपीडी तथा आंतरिक बिलों में 50% की छूट प्राप्त करता है। पिछले वर्ष सेवाग्राम के आस–पास 17292 परिवारों (78853 सदस्य) ने अपनी इच्छा से अस्पताल से स्वास्थ्य बीमा प्राप्त किया। इसके समान ही इस योजना के तहत कुछ 40 ग्रामों ने एवं 67116 ग्रामीण व्यक्तियों ने बीमा कराया था।

राजीव गांधी जीवनदायी योजना (आरजीजेएवाई): महाराष्ट्र सरकार ने गरीब रोगियों में बेहतर स्वास्थ्य की पहुंच के लिए आरजीजेएवाई को आरंभ किया है। इस योजना के तहत 972 शल्य चिकित्साएं एवं चिकित्सीय प्रक्रियाएं 121 फॉलों अप पैकेजों के साथ 30 मेडिकल एवं शल्यक विशिष्टताएं उपलब्ध होंगी।

क्लीनिकल फोरेन्सिक मेडिसिन यूनिट (सीएफएमयू) एवं फोरेन्सिक मेडिकल सॉफ्टवेयर: एमजीआईएमएस एवं कस्तूरबा अस्पताल ने आपात में एक विशिष्ट फोरेन्सिक मेडिसिन यूनिट (सीएफएमयू) की स्थापना की है जिसकी अध्यक्षता अदालती चिकित्सा एवं विषविज्ञान विभाग द्वारा की जा रही है। यह यूनिट दुर्घटना एवं आपात केंद्र के साथ मिलकर कार्य करता है एवं सभी मेडिकोलीगल केसों को अदालती चिकित्सा विभाग के विशेषज्ञों की प्रत्यक्ष निगरानी में संभाला जा रहा है। पूर्व में इस केंसों की देखरेख आपात मेडिकल अधिकारियों या क्लीनिकल विभागों के डॉक्टरों द्वारा की जा रही थी जिन्हें इस क्षेत्र में कोई विशेषज्ञता नहीं थी जिसका परिणाम खराब गुणवत्ता की रिपोर्ट थी। न्यायिक प्रक्रिया को लाभ मिलने के साथ ही साथ यह विकास अदालती चिकित्सा के छात्रों के लिए भी वरदान सिद्ध हुआ है क्योंकि वह फारेंसिक शिल्पकारिता में कुशल हुए हैं।

वर्तमान में न्यायतंत्र ने लीगल रिपोर्ट में डॉक्टरों की अस्पष्ट हस्तलिपि के कारण न्याय होने में बाधाओं पर कटु आलोचना

की है। इस बाधा से निपटने के लिए एमजीआईएमएस ने अदालती चिकित्सा सॉफ्टवेयर विकसित किया है जो मुद्रित एवं व्यवस्थित रिपोर्ट उत्पन्न करती है। हमारे संकाय सदस्यों में से एक द्वारा दायर जनहित मुकदमा के आधार पर महाराष्ट्र सरकार ने एक निर्देश जारी किया है कि केवल मुद्रित पोस्टमोर्टम रिपोर्ट ही जारी करें। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के नेतृत्व में एमजीआईएमएस द्वारा तैयार रिपोर्ट पर आधारित अन्य पीआईएल में केंद्र को देश में आपात चिकित्सा सेवाओं को उन्नत करने के लिए कहा गया है।

एमजीआईएमएस में स्वीकृत मोडल मातृत्व एवं शिशु स्वास्थ्य विंगः स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने एमजीआईएमएस सेवाग्राम में व्यापक प्रजननीय, मातृत्व, नवजात शिशु एवं किशोर स्वास्थ्य हेतु 100 बिस्तरों का मॉडल मातृत्व एवं शिशु स्वास्थ्य (एमसीएच) की व्यवस्था को स्वीकृति प्रदान की है। महाराष्ट्र सरकार के द्वारा प्रस्तुत परियोजना प्रस्ताव की अनुमानित लागत रू. 20 करोड़ है। एमसीएच विंग में ओपीडी, एंटीनेटल एवं पोस्टनेटल वार्ड, ऑपरेशन थियेटर, बीमार, नवजात गंभीर एकक, दक्षता प्रयोग एवं अन्य इस प्रकार के क्षेत्र सम्मिलित हैं। इस परियोजना का निर्माण आरंभ हो चुका है।

अनुसंधान

संस्थान का मुख्य ध्यान समाज आधारित चिकित्सा अनुसंधान पर है। गुणवत्ता अनुसंधान इस ग्रामीण संस्थान का प्रमाण चिह्न है एवं विभिन्न विभागों को प्रदान किए गए असंख्य वित्तपोषण परियोजनाएं अनुसंधानकर्ताओं की क्षमता का प्रमाण हैं। संस्थान को आईसीएमआर, डीएसटी, डीबीटी, डब्ल्यूएचओ, यूनिसेफ, पाथ (यूएसए), कैनेडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ रिसर्च, फोगार्टी एड्स अनुसंधान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम यूएसए एवं राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान से निधियन प्राप्त किया है। इसके सेवाग्राम में स्थित होने के कारण निधियों या सुविधाओं को प्राप्त करने में कभी कोई बाधा नहीं आई क्योंकि संकाय के जोश एवं समर्पण ने सभी प्रकार की रूकावटों को दूर किया है। संस्थान ने जर्नल ऑफ एमजीआईएमएस नामक अपनी स्वयं की द्विवार्षिक वैज्ञानिक पत्रिका प्रकाशित की है। पत्रिका इस वर्ष ऑनलाइन हो गई एवं इसके प्रकाशन के कार्य को वोल्टर्स क्लुवर हेल्थ एंड मेडनो पब्लिकेशन्स को देकर बाह्य स्रोत कर दिया है। यह ईबीएससीओ पब्लिशिंग्स इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस, जिनमिक्स जर्नलसीक, ग्लोबल हेल्थ, इंडमेड, मेनटिस, राष्ट्रीय विज्ञान पुस्तकालय, इंडियन साइंस एब्सट्रेक्ट्स, इंडेक्स कोपरनिक्स, हिनेरी एवं अन्य के साथ क्रमबद्ध हैं।

समाज सेवा

समाज के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता प्रसिद्ध है। समुदाय चिकित्सा ग्रामीण समुदायों में स्वास्थ्य उपचार सेवाओं को बढ़ाने के लिए समाज–आधारित कार्यक्रमों को लागू कर रहा है। इसने अपने प्रशासनिक नियंत्रण के तहत चार पीएचसीएस; अंजी, गौल, खरांगना एवं 120,000 से अधिक जनसंख्या वाले तेलगांव को गोद लिया है एवं समाज–आधारित संस्थाओं एवं पंचायती राज संस्थानों के माध्यम से ग्राम स्तर पर विकेंद्रीकृत स्वास्थ्य उपचार आपूर्ति का एक मॉडल विकसित किया है। इसने गोद लिए हुए गांवों में 227 स्व–सहायता समूह, 12 **किसान विकास मंच** एवं 88 **किशोरी पंचायतों** का निर्माण किया है जो व्यवहार परिवर्तन संचारण संदेश को प्रसारित करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह ग्रामीण जन समुदाय में आरोग्यकर स्वास्थ्य उपचार पहुंचाने के लिए 24 गांवों में समाज दूरस्थ क्लीनिक्स का संचालन करता है। सभी गांवों में नवीन नीतियों के द्वारा स्कूलों एवं घरों में किशोर लड़कियों को परिवारिक जीवन शिक्षा दी जाती है, यह विभाग विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के साथ सहभागिता से समुदाय आधारित स्वास्थ्य अनुसंधान में सक्रिय रूप से

ग्रामीण एवं शहरी स्वास्थ्य केंद्रों में देखे गए रोगीः आंकड़ें

शहरी स्वास्थ्य केंद्र वर्धा	8032
ग्रामीण क्लीनिक्स, आंजी पीएचसी क्षेत्र	13183
ग्रामीण क्लीनिक्स, गॉल पीएचसी क्षेत्र	2299
ग्रामीण क्लीनिक्स, तेलगांव पीएचसी क्षेत्र	4909
ग्रामीण क्लीनिक्स, खरन्गना गोड	1017
अंजी में गए विशेषज्ञ	826
कुल	**30266**

सम्मिलित है। अनुसंधान के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य उपचार आपूर्ति के विकेंद्रीकृत मॉडल को विकसित करना, सुरक्षित मातृत्व एवं शिशु बचाव एवं जीवन–शैली विकार सम्मिलित हैं।

एमजीआईएमएस यूनिवर्सल इम्यूनाइजेशन प्रोग्राम (यूआईपी), संशोधित राष्ट्रीय तपेदिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम, एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम, एकीकृत शिशु विकास सेवा, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम, राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम एवं आपात प्रसूति उपचार (ईएमओसी) जैसे जारी राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लेता है।

देश में जन स्वास्थ्य के शिक्षण एवं प्रशिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2002 की प्रतिक्रिया में वर्ष 2007 में **डॉ. सुशीला नायर स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ** (डीएसएनपीएच) का आरंभ किया गया था। यह केंद्र प्रतिभावान व्यक्तियों एवं संस्थानों के साथ कार्य करता है जिससे कि प्रधान्य जन स्वास्थ्य मुद्दों पर पक्षसमर्थन एवं नीति अनुसंधान को आरंभ किया जा सके। सीमान्त एवं पददलित क्षेत्र में स्वास्थ्य उपचार की पहुंच एवं उपलब्धता को सुधारने के लिए यह स्कूल हेल्थ सिस्टम के सहयोग के साथ भी कार्य करता है।

डीएसएनपीएच को समुदाय आधारित मातृत्व, नवजात एवं शिशु स्वास्थ्य में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण हेतु डब्ल्यूएचओ सहयोगी केंद्र के रूप में तैयार किया गया है। यह नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक कार्पोरेशन एंड चाइल्ड डेवलेपमेंट नई दिल्ली के साथ एमओयू सहित महाराष्ट्र राज्य में आईसीडीएस की मानीटरिंग एवं पर्यवेक्षण के लिए राज्य स्तर का केंद्र है। महाराष्ट्र के चार (नांदेड़, जालना, गढ़चिरोली, एवं गोंडिया) अति कमजोर जिलों में आईसीडीएस का सहयोगी स्वतंत्र मूल्यांकन किया गया था। बीस आंगनवाड़ी केंद्रों का मूल्यांकन किया गया था।

एमजीआईएमएस इस तथ्य से अवगत है कि चिकित्सा शिक्षा को 'गुणवत्ता, मात्रा एवं निष्पक्षता' के शाश्वत त्रिकोण में उचित संतुलन को बनाने की आवश्यकता है। संपूर्ण एकाकार की चिरस्थायी की खोज के लिए संस्थान को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि इन तीनों पक्षों में मतभेद न हो एवं निष्पक्षता को क्षणिक विराम नहीं दिया जा सकता है।

महात्मा गांधी ने कहा था, ''गरीब एवं कमजोर व्यक्ति का चेहरा याद करो एवं अपने आप से पूछो कि जो कदम आप उठा रहे हैं वह इनके किसी काम का है''। यही विचार भविष्य के लिए हमारा दृष्टिकोण निर्मित करता है। स्वास्थ्य के लक्ष्य में संस्थान यह मानता है कि हमारे लोगों के स्वास्थ्य के स्तर को सुधारने के लिए एक आविष्कारी पहुंच की आवश्यकता है। दीर्घ काल में संस्थान को व्यक्तियों को स्वयं सशक्त बनाकर देशीय समस्या का समाधान करने के दृष्टिकोण के साथ अधिक लचकदार पद्धतियों के निर्माण की आवश्यकता होगी। परिवर्तन लाने के लिए प्रतिकूल परिस्थिति में पूर्ण विश्वास के साथ मात्र दृढ़ता एवं उत्साह की आवश्यकता है।

सारांश आंकड़े (लिंग विशेष) :

भर्ती छात्र

	पुरूष	महिला	% :महिला
मेडिकल छात्र			
यूजीएस–100	53	47	47.00%
पीजीएस–61	41	20	32.78%
नर्सिंग छात्र			
कस्तूरबा नर्सिंग स्कूल	—	40	100%

कस्तूरबा अस्पताल में उपस्थित रोगी

	कुल मरीज	पुरूष	महिला	%महिला
अंतरंग	44853	21067	23786	53-03%
ओपीडी	577486	284277	293209	50.77%

कर्मचारियों की कुल सं.

कुल कर्मचारी	पुरूष	महिला	% (महिला)
1028	564	464	45.1%

सारांश आंकड़े (लिंग विशेष):

15.22 राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी), नई दिल्ली

यह संस्थान महानिदेशक स्वास्थ्य सेवा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रत्यक्ष प्रशासनिक नियंत्रण में है। निदेशक जो कि केंद्रीय स्वास्थ्य सेवा के पब्लिक हेल्थ सबकैडर का एक अधिकारी है इस संस्थान का प्रशासनिक एवं तकनीकी अध्यक्ष है। संस्थान का दिल्ली में अपना मुख्यालय है एवं इसकी 8 शाखाएं अलवर (राजस्थान), बंगलुरू (कर्नाटक), कोजीकोड (केरल), कूनूर (तमिलनाडु), जगदलपुल (छत्तीसगढ़), पटना (बिहार), राजहमुंद्री (आंध्र प्रदेश) एवं वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में स्थित है। संस्थान के मुख्यालय के अनेक तकनीकी प्रभाग हैं अर्थात सेंटर फॉर एपिडिमियोलॉजी एंड पैरासिटिक डिसीज (जानपदिक रोग विभाग, परजीवी रोग विभाग), सूक्ष्मजैव विज्ञान विभाग, डिवीजन ऑफ जूनोसिस, सेंटर फॉर एचआईवी/एड्स एवं संबंधित केंद्र,सेंटर फॉर मेडिकल ऐंटोमोलॉजी एंड वेक्टर मैनेजमेंट, डिवीजन ऑफ मलेरियालॉजी एंड कोर्डिनेशन, डिवीजन ऑफ बायोकॅमिस्ट्री एंड बायोटेक्नोलॉजी।

प्रत्येक प्रभाग में विभिन्न संचरणीय रोगों से निपटने के लिए अनेक अनुभाग एवं प्रयोगशालाएं हैं। प्रभाग में आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशालाएं हैं जो नवीनतम तकनीक का प्रयोग करके जांच करने में सक्षम हैं। प्रत्येक प्रभाग की गतिविधियों का पर्यवेक्षण प्रभारी अधिकारी द्वारा होता है एवं मेडिकल तथा गैर मडिकल वैज्ञानिकों, अनुसंधान अधिकारियों एवं अन्य तकनीकी तथा पैरामेडिकल स्टाफ द्वारा सहायता प्रदान की जाती है। फील्ड अध्ययन, प्रशिक्षण गतिविधियों एवं अनुसंधान का निष्पादन करने के लिए यह शाखाएं भी सुसज्जित एवं कर्मचारियों से परिपूर्ण हैं।

क. एकीकृत रोग निगरानी परियोजना (आईडीएसपी):

एकीकृत रोग निगरानी परियोजना (आईडीएसपी) को नवंबर, 2004 में विश्व बैंक की सहायता के साथ आरंभ किया गया था, परियोजना में गैर–संचरणीय रोग जोखिम कारकों के साथ–साथ संचरणीय रोग की संख्या के आंकड़ों को एकत्रित करने पर विचार किया परन्तु बाद में अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय विशेषज्ञों की संस्तुति पर 2007 में जानपदिक जनित रोगों पर ही ध्यान केंद्रित किया। परियोजना को मार्च 2012 तक 2 वर्ष के लिए बढ़ाया गया। यह परियोजना रू. 640 करोड़ के खर्च पर सभी राज्यों के लिए एनआरएचएम के तहत एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम के रूप में घरेलू बजट के साथ 12वीं योजना में जारी रहीं। वर्ष 2014–15 के लिए वार्षिक खर्च रू.63 करोड़ को स्वीकृत मिल गई है। 70 करोड़ के संशोधित अनुमान को वर्ष 2014–15 के लिए प्रस्तावित कर दिया गया है।

परियोजना संघटकः–

- केंद्र, राज्य एवं जिला सतर पर निगरानी एककों की स्थापना करके निगरानी, गतिविधियों का एकीकरण एवं विकेंद्रीकीरण।
- मानव संसाधन विकास– रोग निगरानी के सिद्धांतों पर राज्य निगरानी अधिकारियों, जिला निगरानी अधिकारियों, शीघ्र प्रतिक्रिया दल एवं अन्य मेडिकल एवं परामेडिकल स्टॉफ का प्रशिक्षण।
- आंकडे के संग्रहण, कोलेशन, समेकन, विश्लेषण एवं प्रसारण के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग।
- जन स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं को सशक्त बनाना।

आईडीएसपी कार्यान्वयन का वर्तमान स्तर

निगरानी एककों को सभी राज्य एवं जिला मुख्यालयों (एसएसयूएस, डीएसयूएस) में निगरानी एककों को स्थापित किया गया है। राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी), दिल्ली में केंद्रीय निगरानी एकक (सीएसयू) एकीकृत है।

मानव संसाधन एवं प्रशिक्षण

जिला एवं राज्य स्तर पर जानपदिकरोग विज्ञान, सूक्ष्म जैव विज्ञान एवं इंटोमोलॉजी विज्ञान के क्षेत्र में स्वास्थ्य चिकित्सकों की गैर–उपलब्धता को विचार से रखते हुए स्वास्थ्य मंत्रालय ने रोग निगरानी एवं प्रतिक्रिया पद्धति को

सशक्त बनाने के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य विज्ञान (एनआरएचएम) के अधीन प्रशिक्षित चिकित्सकों की भर्ती की स्वीकृति प्रदान की है जिससे एक जानपदिकारोग विज्ञानी राज्य/जिला मुख्यालय, एक सूक्ष्म जैव विज्ञानी एवं इंटोमोलॉजी राज्य मुख्यालयों में रखा जाए। अप्रैल, 2014 तक आईडीएसपी के अधीन 411 जानपदिक विज्ञानी 108 सूक्ष्म जैव विज्ञानी एवं 22 इंटोमोलोजिस्ट की भर्ती की गई है, उनमें से अधिकांश को इंडक्शन प्रशिक्षण दिया गया है। राज्य/जिला निगरानी टीम (प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण) एवं शीघ्र प्रतिक्रिया दलों (आरआरटी) का प्रशिक्षण सभी 35 राज्यों/ यूटीएस में पूर्व कर दिया है।

राज्य स्तर सहभागियों के लिए प्रशिक्षण का मुख्य केंद्र रोग निगरानी, जानपदिक विज्ञान संकल्पानाएं एवं आंकड़े प्रबंधन के आधार पर है जबकि जिला प्रशिक्षण का मुख्य ध्यान आंकड़ों के सही संचयन, समेकन एवं रिपोर्टिंग तथा आउटब्रैक प्रतिक्रिया पर है। जिला निगरानी अधिकारियों के लिए आवश्यकता आधारित विशेष दो–सप्ताह का रोग निगरानी प्रशिक्षण कार्यक्रम (एफईटीपी) को आरंभ किया गया है, इस विशेष 2 सप्ताह एफईटीपी में 606 जिला निगरानी अधिकारियों को पहले ही प्रशिक्षण दिया गया है।

आईटी नेटवर्क

टेरेस्टोरियल एवं सेटेलाइट के संपर्क को प्रदान करने के लिए नेशनल इंफोर्मेटिक्स सेंटर (एनआईसी) एवं इण्डियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाइनेशन (आईएसआरओ) की मदद से आंकड़े प्रविष्टि, आंकड़े स्थानांतरण, विश्लेषण एवं विडियों कांफेरेसिंग के लिए 776 स्थानों (सभी राज्य/यूटीएस एवं जिला मुख्यालयों, मेडिकल कॉलेजों, संक्रामक रोग अस्पतालों (आईडीएच) एवं अग्रणी स्वास्थ्य संस्थानों से संबंधित) में आईटी नेटवर्क की स्थापना की गई है। यद्यपि सितंबर, 2010 से सेटेलाइट संपर्क उपलब्ध नहीं है। वर्तमान में इससे बैंडविड्थ आंवटित की है एवं सेटेलाइट संपर्क को पुनः आरंभ करने के लिए नेटवर्क को जीएसएटी–3 जीएसएटी–12 करके नेटवर्क का स्थानांतरण आरंभ किया है। 367 स्थापित स्थानों में से 130 स्थानों को सितंबर, 2013 तक स्थानांतरित कर दिया है।

आईडीएसपी ने प्रशिक्षण सामग्री, गाइडलाइन, रोग निगरानी सें संबंधित स्वास्थ्य कार्मिक के लिए परामर्श देने जैसे निःशुल्क संसाधनों, प्रवृद्धि विश्लेषण एवं आंकड़े पहुंच एवं प्रसारण के लिए वन स्टाप पोर्टल (http://www.idsp.nic.in) को आंरभ किया है। टोल फ्री टेलीफोन नंबर (1075) पर रोग एलर्टान को प्राप्त करने के लिए फरवरी 2008 में एक 24x7 काल सेंटर की स्थापना की गई थी। इससे प्राप्त जानकारी को जांच एवं प्रतिक्रिया के लिए राज्य/ जिला निगरानी एककों को प्रदान किया गया था। वर्ष 2009 में एच1एन1 इंफ्लुएंजा महामारी एवं वर्ष 2010 में दिल्ली में डेंगू के प्रकोप के दौरान कॉल सेंटर का बहुतायत से प्रयोग किया गया था। आरंभ से लेकर 31 मार्च 2014 (01 जुलाई 2012 से 31 अक्टूबर 2012 की अवधि को छोड़कर) लगभग 3.4 लाख कॉल को सुना गया था जिनमें से 37 हजार कॉलस इंफ्लुएंजा एच1एन1 से संबंधित एवं 183 अलर्ट कॉलें थीं।

आकड़े प्रबंधन

आईडीएसपी के अधीन सप्ताहिक आधार (सोमवार–रविवार) पर महामारी जनित रोगों पर आंकड़े एकत्रित किए जाते है। इस जानकारी को तीन विशिष्ट रिपोर्टिंग फोर्मेट पर एकत्रित किया जाता है अर्थात् ''एस'' (सस्पेक्टिड केस), ''पी'' (प्रीजम्पटिव केस) एवं ''एल'' (लेबोरेटरी सिद्ध केस), इन्हें क्रमशः स्वास्थ्य कर्मचारी, क्लिनिसएन एवं प्रयोगशाला स्टाफ द्वारा भरा जाता है। साप्ताहिक आंकड़े रोगों के मौसम तत्व एवं प्रवृत्ति पर सूचना देते हैं। जब कभी किसी क्षेत्र में बीमारी बढ़ जाती है तो इसके प्रकोप को कम एवं नियंत्रण करने के लिए रैपिड रिस्पोंस टीम (आरआरटी) द्वारा जांच की जाती है। संबंधित राज्य/जिला निगरानी एककों द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया जाता है तथा इस पर कार्रवाई की जाती है। वर्तमान में प्रमुख अस्पतालों से निगरानी आंकड़ों की रिपोर्टिंग पर जोर दिया जाता है। वर्तमान में देश

में लगभग 90% जिले ई–मेल या पोर्टल के द्वारा महामारी वाली बीमारियों पर साप्ताहिक निगरानी आंकड़े भेजे जाते है।

इसके अतिरिक्त, राज्यों एवं जिलों को कहा गया है कि वे महामारी फैलने के संबंध में तुरंत ही सिस्टम को सूचित करें। औसतन 30–35 बीमारी के प्रकोप के संबंध में प्रत्येक सप्ताह केंद्रीय निगरानी एकक (सीएसयू) में रिपोर्ट की जाती है वर्ष 2008 में आईडीएसपी के द्वारा कुल 553 महामारी वाले रोग के प्रकोप के बारे में रिपोर्ट किया गया था, 2009 में 799 बीमारी का प्रकोप, 2010 में 990 बीमारी का प्रकोप, 2011 में 1675 बीमारी का प्रकोप, 2012 में 1584 बीमारी का प्रकोप एवं 2013 में 1964 बीमारी का प्रकोप सूचित हुए थे। वर्ष 2014 में 12 अक्टूबर तक 1243 महामारी प्रकोप सूचित हुए थे। पूर्व में राज्यों/यूटी द्वारा देश में बीमारी का प्रकोप सूचित हुए थे।

आईडीएसपी के तहत जुलाई 2008 में सत्यापन एवं प्रतिक्रिया के लिए संबंधित राज्यों/जिलों के साथ मीडिया एलर्ट्स को खोजने एवं बांटने के लिए मीडिया स्कैनिंग एवं सत्यापन प्रकोष्ठ की स्थापना किया गया था। जुलाई 2008 से अक्टूबर 2014 तक कुल 2976 मीडिया एलर्ट के बारे में रिपोर्ट दी गई थी। अधिकांश एलर्ट डायरिया, भोजनजनित एवं वेक्टर जनित रोगों के संबंध में थे।

प्रयोगशालाओं को मजबूत बनाना

महामारी जनित रोगों के निदान के 50 चिन्हित जिला प्रयोगशालाओं को मजबूत किया जा रहा है। अभी तक 29 राज्य अर्थात 42 प्रयोगशालाओं को कार्यशील किया गया है इन लैबों में प्रशिक्षित कार्मिक हैं जो रिएजेंट्स एवं उपभोज्य के लिए प्रति वर्ष प्रति लैब रू. 4 लाख के वार्षिक अनुदान सहित लैब की व्यवस्था देखते हैं।

मेडिकल कॉलेजों एवं राज्यों में अन्य प्रमुख केंद्रों में विद्यमान कार्यशील लैबों को उपयोग करके 9 राज्यों में (गुजरात, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश एवं पश्चिम बंगाल) में रेफरल लैब नेटवर्क की स्थापना की गई है एवं उन्हें महामारी के फैलने कदौरान महामारी वाले रोग के लिए नैदानिक सेवाओं को प्रदान करने के लिए साथ वाले जिलों से जोड़ा गया है। बिहार, असम, उड़ीसा, त्रिपुरा, केरल, हरियाणा, जम्मू व कश्मीर तथा मणिपुर में 23 परिचित मेडिकल कॉलेज लैबों को वर्ष 2012–13 में प्रयोगशाला नेटवर्क में सम्मिलित किया गया था। वर्ष 2013–14 में 3 राज्यों (झारखंड, छत्तीसगढ़ एवं मध्य प्रदेश) में 8 और अधिक संस्थानों को राज्य आधारित रेफरल लेब नेटवर्क के अधीन सम्मिलित किया गया है।

इसके अतिरिक्त, देश में इंफ्लुएंजा निगरानी के लिए 12 प्रयोगशालाओं को विकसित किया गया था। यह प्रयोगशालाएं देश के विभिन्न क्षेत्रों में इंफ्लुएंजा ए एच1एन1 के क्लिनिक नमूनों की जांच कर रही हैं।

12वीं योजना हेतु प्रस्ताव

- केवल घरेलू बजट से रू. 640 करोड़ के खर्च के साथ आईडीएसपी 12वीं योजना में जारी रहेगा;
- वर्तमान में चल रही सभी गतिविधियां जारी रहेंगी;
- सभी एसएसयू एवं डीएसयू की आंकड़ों को संग्रहित एवं उसका प्रबंध करने की एंव महामारी के प्रकोप के प्रति प्रतिक्रिया देने की क्षमता होगी;
- पोर्टल के माध्यम से सभी जिलों से आंकड़े को एकत्रित किए जाएंगे। प्रमुख अस्पतालों से आंकड़ों को संग्राहित करने पर जोर दिया जाएगा।
- लगभग 190 चिकित्सा कॉलेजों को 300 जिला पब्लिक स्वास्थ्य लैबों से जोड़ा जाएगा जिससे महामारी के प्रकोप के दौरान निदान को सहायता दी जा सके।

ख. राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र का उन्नयनः

- कैबिनेट कमेटी ऑफ इकोनॉमिक अफेयर्स (सीसीईए) ने कुल रू. 382.41 करोड़ के अनुमानित लागत पर दिसंबर, 2010 में ''अपग्रेडशन ऑफ एनसीडीसी'' हेतु प्रस्ताव को अनुमोदित किया है;

- एचएससीसी को डीपीआर के रूप में सेवाओं के लिए एनबीसीसी सिविल कार्य एवं सेवाओं के निर्माण के लिए एग्जीवयूटिंग एजेंसी के रूप में व्यस्त है;
- एमसीडी से बिल्डिंग योजनाओं पर अति अनुमोदन को प्राप्ति के पश्चात फरवरी, 2013 के प्रथम सप्ताह में निर्माण कार्य आरंभ हुआ। माननीय एचएफएम ने 28.08.2013 को नीव रखी;
- अभी तक फेज–I के तहत 65% कार्य पूर्ण हुआ। परियोजना की अवधि 24 माह है एवं अभी तक रू. 129.80 करोड़ एनबीसीसी को भुगतान कर दिया गया है;
- परियोजन को 3–स्टार गृह रेटिंग के लिए आदर्श के साथ पंजीकृत कर दिया गया है।
- वर्ष 2014–15 हेतु अनुमानित बजट में 75.00 करोड़ रू. स्वीकृत किए गए हैं। 103 नए वैज्ञानिक एवं तकनीकी पदों में से 29 पद भर दिए गए हैं और 11 प्रशासनिक पदों में से 2 पद भर दिए गए हैं।

ग. एनसीडीसी की मौजूदा शाखाओं का सशक्तीकरण एवं 27 नई शाखाओं की स्थापनाः

- 12वीं पंचवर्षीय योजना के तहत, योजना आयोग ने 400.00 करोड़ रूपए के परिव्यय सहित एक नई गतिविधि ''एनसीडीसी की मौजूदा शाखाओं का सशक्तीकरण एवं 27 नई शाखाओं की स्थापना'' को स्वीकृति प्रदान की।
- एनसीडीसी की 35 शाखाओं की स्थापना हेतु व्यापक ईएफसी तैयार कर ली गई है और स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रस्तावित आवश्यक परिवर्तन शामिल करने के पश्चात्, ईएफसी को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को सौंप दिया गया है।

घ. परजीवी रोग प्रभागः

(i) याज उन्मूलन कार्यक्रम (वाईपी): याज उन्मूलन कार्यक्रम को ओडिशा के कोरापुट जिले में वर्ष 1996–97 में केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना के रूप में शुरू किया गया था, जिसे बाद में दस राज्यों (आंध्र प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, झारखंड, असम और गुजरात) में सभी 51 याज स्थानिक जिलों को शामिल करने के लिए विस्तारित किया गया था। कार्यक्रम का लक्ष्य देश के दुर्गम आदिवासी क्षेत्रों तक पहुंच बनाना था। इस कार्यक्रम की योजना, निगरानी और मूल्यांकन के लिए राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र को नोडल एजेंसी के रूप में चिह्नित किया गया था। यह कार्यक्रम राज्य स्वास्थ्य निदेशालयों द्वारा मौजूदा स्वास्थ्य परिचर्या प्रणाली के माध्यम से क्रियान्वित किया जाता है। 1996 से 2004 तक की अवधि के दौरान सूचित मामलों की संख्या 3751 से घटकर शून्य हो गई है और उसके बाद सितंबर, 2013 तक किसी भी राज्य से किसी मामले की सूचना प्राप्त नहीं हुई है।

कार्यक्रम में निम्नलिखित कार्यनीतियों के माध्यम से अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने की परिकल्पना की गई हैः

- केस पहचानः सक्रिय केस खोज, निष्क्रिय निगरानी, निराधार रिपोर्टिंग
- केसों और संपर्कों का उपचार
- जनशक्ति विकास
- आईईसी क्रियाकलाप
- बहु–क्षेत्रीय पहल
- 1–5 वर्ष के बच्चों में सीरम–सर्वेक्षण

इस रोग को 19 सितंबर, 2006 को विलुप्त घोषित कर दिया गया था। रोग के उन्मूलन के पश्चात् 1–5 वर्ष के बच्चों में याज के लिए सीरम सर्विलांस वर्ष 2009 से 2011 के दौरान पूरा कर लिया गया है। स्थानिक स्थानिक क्षेत्रों में याज संक्रमण के संचरण का अवरोध सूचित करते हुए, आरपीआर प्रणाली द्वारा सभी नमूनों की जांच नकारात्मक रही। तथापि, रोग उन्मूलन की स्थिति की प्राप्ति हेतु लगातार मासिक निगरानी, सक्रिय खोज प्रचालन, निराधार रिपोर्टों का सत्यापन और स्वास्थ्य शिक्षा चलाए जा रहे हैं। वाईईपी के तहत क्रियाकलाप शुरू करने के लिए प्रचालनात्मक लागत हेतु राज्यों को ''सहायता अनुदान'' के रूप में धन उपलब्ध

कराया जा रहा है।

(II) गिनी कृमि उन्मूलन कार्यक्रम (जीडब्ल्यूईपी):

वर्ष 1983–84 में, भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा गिनी कृमि उन्मूलन कार्यक्रम (जीडब्ल्यूईपी) की योजना, समन्वयन, मार्गदर्शन और मूल्यांकन के लिए राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (पूर्व में: राष्ट्रीय संचारणशील रोग संस्थान) को नोडल एजेंसी बनाया गया था। वर्ष 1984 में कार्यक्रम की शुरूआत में, सात स्थानिक राज्यों अर्थात् आंध्रप्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के 89 जिलों में 12, 840 गिनी कृमि स्थानिक गांवों में लगभग 40,000 गिनी कृमि के मामले सूचित किए गए थे। तमिलनाडु राज्य 1982 से गिनी कृमि रोग से मुक्त रहा है।

भारत में अंतिम गिनी कृमि मामला जुलाई 1996 में राजस्थान के जोधपुर जिले से सूचित किया गया था। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने फरवरी 2000 में भारत को गिनी कृमि रोग मुक्त राष्ट्र घोषित किया। तथापि, रोग के वैश्विक रूप से उन्मूलन होने तक नेमी सर्विलांस जारी रखा जा रहा है।

(ड.) पशुजन्य रोग प्रभाग:

इस प्रभाग का उद्देश्य, देश में पशुजन्य रोग एवं उसके नियंत्रण के क्षेत्र में इसके फैलने की जांच हेतु तकनीकी सहायता प्रदान करना, प्रचलनात्मक शोध करना और प्रशिक्षित जनशक्ति का विकास करना है। राज्य सरकारों को जन स्वास्थ्य महत्व के पशुजन्य संक्रमणों के प्रयोगशाला निदान हेतु नैदानिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है।

इस प्रभाग की प्लेग हेतु संदर्भ प्रयोगशाला है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा इसे रेबीज हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोगी केंद्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। वर्तमान में निम्नलिखित पशुजन्य रोगों पर कार्य किया जा रहा है: प्लेग, रेबीज, काला अजार, अर्बोवायरल संक्रमण (डेंगू, जेई व चिकुनगुनिया), और टोक्सोप्लास्मोसिस, ब्रूसेलोसिस, लेप्टोस्पायरोसिस, रिकेटसियोसिस, हाइडेटीडोसिस और एंथ्रेक्स। इस प्रभाग की प्रमुख भूमिका और क्रियाकलाप निम्नलिखित हैं:

क्रम सं	राज्यों को प्रदान की जाने वाली रेफरल नैदानिक सेवाएं		जांचे गए नमूने की संख्या (01.04.2014–31.03.2014)
1.	रेबीज	(क) नेग्री बोडी, एफएटी, बीटी द्वारा पशु मस्तिष्क नमूनों में मरणोत्तर निदान	04
		(ख) हाइड्रोफोबिया मामलों में निदान	07
		(ग) एलिसा टेस्ट द्वारा एंटीबॉडी की जांच	
		(i) मानव	76
		(ii) पशु	शून्य
2.	काला–अजार	(क) लेप परीक्षण व संवर्धन द्वारा परजीवीपरक निदान	25
		(ख) आईएफए परीक्षण द्वारा सीरमी निदान	121
3.	टोक्सोप्लाज्मा	आईएफए द्वारा सीरमी निदान	329
4.	ब्रूसेलोसिस	ट्यूब समूहन परीक्षण द्वारा सीरमी निदान	105
5.	रिकेटसिसोसिस	वील फेलिक्स टेस्ट, एलिसा द्वारा सीरमी निदान	476
6.	हाइडेटीजेसिस	एलिसा द्वारा सीरमी निदान	17
7.	अर्बोवायरल रोग	(क) जापानी मस्तिष्कशोध हेतु आईजीएम एलिसा परीक्षण द्वारा सीरमी निदाने	257
		1. मानव सीरम नमूने	
		2. मानव सीएसएफ	370
		(ख) डेंगू के लिए आईजीएम एलिसा	248
		(ग) चिकुनगुनिया के लिए आईजीएम एलिसा	53
8.	प्लेग	(क) कृन्तकप्राणी सीरम में पीएचए और पीएचआई द्वारा सीरमी निदान	1066
		(ख) कृन्तकप्राणी अंगो से वाईपेस्टिस पार्थक्य हेतु संवर्धन	3456
9.	लेप्टोस्पायरोसिस	एलिसा द्वारा सीरमी निदान	229
10.	एंथ्रेक्स		
11.	वायरल पार्थक्य	चिकुनगुनिया	शून्य
		डेंगू	शून्य
		रेबीज	2
		एईएस/जेई	67
12.	एलिसा द्वारा लाइम्स रोग		14
13.	एलिसा द्वारा हांटा वायरस		1
14.	एलिसा द्वारा सिस्टीसिरोसिस निदान		24

12वीं पंचवर्षीय योजना (2012–17) के तहत तीन नई पहल

1. राष्ट्रीय रेबीज नियंत्रण कार्यक्रम :

मानव घटक

- 11 राज्यों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए
- कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु प्रचलनात्क दिशा–निर्देश विकसित करने के लिए विशेषज्ञ बैठक आयोजित की गई।
- 17 राज्यों द्वारा नोडल अधिकारियों की पहचान की गई।
- पशुदंश प्रबंधन व रेबीज प्रोफाइलैक्सिस पर राष्ट्रीय दिशा–निर्देश एनसीडीसी वेबसाइट पर डाल दिए गए हैं।

पशु घटक

- एडब्ल्यूबीआई के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।
- 2013–14 के दौरान, 70 लाख को पशु घटक के तहत विभिन्न गतिविधियों को करने के लिए एडब्ल्यूबीआई में स्थानांतरित किया गया ।

2. लेप्टोस्पायरोसिस के निवारण एवं नियंत्रण कार्यक्रम :

- 5 राज्यों के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किए गए।
- कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु प्रचलनात्क दिशा–निर्देश विकसित करने के लिए विशेषज्ञ बैठक आयोजित की गई।

3. पशुजन्य रोगों के निवारण एवं नियंत्रण हेतु अंतर्क्षेत्रीय समन्वय का सुदृढ़ीकरण :

- कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु प्रचलनात्क दिशा–निर्देश विकसित करने के लिए विशेषज्ञ बैठक आयोजित की गई
- 2014–15 के दौरान, 2 करोड़ आवंटित किए गए।

च. एड्स एवं संबंधित रोग केंद्र :

केंद्र द्वारा अप्रैल 2014 से अक्टूबर, 2014 तक शुरू किए गए नेमी क्रियाकलापों का विवरण :

राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला

- एसआरएल और उनके आईसीटीसी से प्राप्त वे सभी नमूने जो अनिश्चित या विरोधात्मक परिणाम–13 दर्शा रहे हैं, उनकी एचआईवी सीरम स्थिति की पुष्टि;
- एचआईवी/एचबीवी/एचसीवी नैदानिक किटों का मूल्यांकन किया गया।

नैदानिक किट (एचआईवी रेपिड टेस्ट किटों के 08 बैच, एचसीवी एलिसा टेस्ट किटों के 03 एचबीवी रेपिड 03 बैच और 06 एचआईवी एलिसा) के कुल 20 बैचों का विश्लेषण किया गया । इस विश्लेषण में कुल लगभग 10,000 परीषण किए गए।

सीरम विज्ञान/आईसीटीसी प्रयोगशाला

- गैर–एसआरएल प्रयोगशालाओं या अस्पतालों (निजी व सरकारी दोनों) से प्राप्त नमूनों की एचआईवी–स्थिति की पुष्टि–50;
- 7 राज्यों–दिल्ली, पंजाब, चंडीगढ़, हरियाणा, राजस्थान, जम्मू और कश्मीर व हिमाचल प्रदेश के एआरटी केंद्रों के माध्यम से भेजे रोगियों की एचआईवी–2 पुष्टि–29;
- गैर एसआरएल के गुणवत्ता नियंत्रण के तहत जांचे गए नमूने–216;
- आईसीटीसी जाने वाले रोगियों का एचआईवी परीक्षण–360 और
- एसआरएल, एमएएमसी दिल्ली द्वारा अप्रैल माह में एचआईवी सीरम विज्ञान हेतु ईक्यूएएस में आईसीटीसी ने भाग लिया। परिणामों में 100% सामंजस्य था।

प्रतिरोधक क्षमता प्रयोगशाला

- लिंक एआरटी केंद्र/पीपीटीसीटीसी से भेजे गए एचआईवी पॉजीटिव रोगियों में सीडी4/सीडी3 काउंट–2594 नमूने।

एसटीआई/अवसरवादी संक्रमण

- सिफिलिस हेतु गुणतापरक आरपीआर : 52
- अर्ध गुणतापरक आरपीआर : 07
- टीपीएचए–86

छ. सूक्ष्मजीवविज्ञान प्रभाग :

सूक्ष्मजीवविज्ञान प्रभाग द्वारा की जा रही नेमी गतिविधियों का विवरण। प्रभाग की मुख्य गतिविधियां :

- वायरल, बेक्टीरियल और मायकोटिक रोगों के लिए नेमी और रेफरल निदान सेवाएं। पोलियो सर्विलांस (एएफपी) और पूरक सिर्विलांस हेतु राष्ट्रीय प्रयोगशाला (मलमूत्र);
- प्रकोप अन्वेषणों के लिए प्रयोगशाला सहायता;
- आईडीएसपी हेतु प्रयोगशाला सहायता;
- पर्यावरणीय नमूनों का सूक्ष्म जीव विज्ञानी विश्लेषण;
- प्रयोगशाला पहलुओं पर प्रशिक्षण;
- देश में विभिन्न संगठनों और संस्थानों में सहयोगी प्रयोगशालाओं के तंत्र हेतु प्रकोप अन्वेषणों के सहयोग के रूप में अभिकर्मकों, संवर्धन माध्यम, नैदानिक किटें और अन्य सामग्री तैयार करना और उसकी आपूर्ति।
- अंजान रोगजनकों हेतु प्रकोप अन्वेषण।

प्रभाग की उपलब्धियां

- 100 नमूने/प्रतिदिन से अधिक परीक्षण कर रही विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रत्यायित राष्ट्रीय पोलियो प्रयोगशाला;
- आईडीएसपी के तहत 12 प्रयोगशालाएं इंफ्लुएंजा सर्विलांस कर रही है;
- विभिन्न विषयों पर लगभग 10 अनुसंधान परियोजनाएं/एमडीशोध/पीएचडी किए गए हैं और
- एंटी माइक्रोबियल प्रतिरोध हेतु इंडो–स्वीडिश सहयोग।

12वीं पंचवर्षीय योजना (2012–2017) के तहत दो नई पहलें

(i) एंटी–माइक्रोबियल प्रतिरोध समावेशन पर राष्ट्रीय कार्यक्रम

कार्यालय ज्ञापन सं. टी–14018/02/2013–पीएच–II तारीख 23 अक्टूबर, 2013 के तहत 30 करोड़ रु. के आवंटित बजट सहित 12वीं पंचवर्षीय योजना (2012–2017) के लिए एसएफसी को स्वीकृति प्रदान की गई।

शुरू की जाने वाली गतिविधियां

- विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध के समावेशन हेतु सर्विलांस;
- एंटीबायोटिक्स का मुक्तिपरक उपयोग;
- राष्ट्रीय संक्रमण नियंत्रण दिशा–निर्देशों का विकास व क्रियान्वयन;
- संगत क्षेत्रों में पेशेवरों का प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण;
- एंटीबायोटिक्स के तार्किक उपयोग के विषय में सूचना के प्रसार हेतु आईईसी और
- जीवाणु संबंधी विकृति/संवर्धन के राष्ट्रीय निदान का विकास।

मौजूदा स्थिति

- कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु डीजीएचएस की अध्यक्षता में दो अलग समूहों अर्थात् विशेषज्ञ कार्यशील समूह और संचालन समिति का गठन किया गया है।
- कार्यक्रम के प्रथम चरण में 10 मेडिकल कॉलेज प्रयोगशालाओं की पहचान की गई है और इन कॉलेजों और एमसीडीसी के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं जिसके पश्चात् स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के आईएफडी से निधि स्थानांतरित की जा रही है।
- विभिन्न संक्रामक रोगों के उपचार के लिए एकसमान एकीकृत राष्ट्रीय उपचार दिशा–निर्देशों को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया चल रही है, जो सभी अस्पतालाओं को अपने दिशा–निर्देश तैयार करने में मार्गदर्शक का काम करेगी जिसके आधार पर फिजीशियनों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इस विषय पर फरवरी और मार्च महीनों में विशेषज्ञ कार्य–समूह की दो बैठकें आयोजित की गई हैं।

- जागरूकता दिशा–निर्देश तैयार किए जा रहे हैं।
- प्रयोगशाला नेटवर्क को चरणबद्ध रूप में विस्तारित किया जाएगा ताकि अन्य 20 मेडिकल कॉलेज प्रयोगशालाओं को शामिल किया जा सके।

(2) भारत में वायरल हेपेटाइटिस के निवारण एवं नियंत्रण पर राष्ट्रीय कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अंतर्गत क्रियाकलाप निम्नलिखित हैं;

- विभिन्न भौगोलिक स्थानों में विभिन्न प्रकारों के वायरल हेपेटाइटिस (ए,बी,सी,डी,ई) के सही भार की पहचान करने के लिए वायरल हेपेटाइटिस की निगरानी शुरू कर दी गई है। अस्पताल में सर्विलांस करने के लिए 10 प्रयोगशालाओं का नेटवर्क स्थापित किया जा रहा है। 4 मेडिकल कॉलेजों (एसकेआईएमएस, श्रीनगर व एमएमसी, चेन्नई, पटना मेडिकल कॉलेज, बिहार, जिपमेर पुडुचेरी) द्वारा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं और सर्विलांस गतिविधियों को अन्य 6 और कॉलेजों में विस्तारित करने की प्रक्रिया चल रही है। इस सर्विलांस गतिविधि का अनुभव अन्य मेडिकल कॉलेजों में विस्तारित करने में मदद करेगा।
- वायरल हेपेटाइटिस हेतु निवारण, नियंत्रण और उपचार दिशा–निर्देश विशेषज्ञ कार्य दल द्वारा तैयार कर लिए गए हैं और विकास के अंतिम स्तर पर हैं। विकसित हो जाने पर ये हेपेटाइटिस बी और सी हेतु विशेष रूप से सही प्रकार उपचार देने के लिए स्वास्थ्य परिचर्या प्रदाता की मदद करेंगे।
- वायरल हेपेटाइटिस पर सुरक्षित इंजेक्शन पद्धतियों पर पुस्तिका विशेषज्ञ कार्य दल द्वारा विकसित की गई। यह स्वास्थ्य परिचर्या प्रदाताओं में रक्त संचारित रोगजनित जैसे हेपेटाइटिस बी और सी, एचआईवी आदि के निवारण पर जागरूकता बढ़ाने में सहायता करेगी और हेपेटाइटिस बी और सी के निवारण और नियंत्रण में मददगार होगी।
- एनसीडीसी ने हेपेटाइटिस ए, बी, सी और ई पर तथ्य पत्र भी तैयार कर लिए हैं जिन्हें सुरक्षित इंजेक्शन पद्धति दिशा–निर्देशों की पुस्तिका के साथ एनसीडीसी की सरकारी वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है।

- **चल रही परियोजनाएं**

1. कलावती सरन शिशु अस्पताल से एमडी बालरोग हेतु शोध ''श्वसनिकाशोध के साथ दाखिल किए गए बच्चों में वायरल हेतु और क्लीनिकल पाठ्यक्रम का अध्ययन''।
   - रासायनिक वायरल विज्ञान वास्तविक समय और परंपरागत पीसीआर द्वारा इंफ्लुएंजा, आरएसवी, पैराइंफ्लुएंजा जैसे रोगजनकों हेतु वायरल हेतु के लिए रासायनिक वायरल विज्ञान प्रयोगशाला गले/नासा स्वाब का संसाधन कर रहा है।
2. डॉ. बी.आर अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा से एमडी बालरोग हेतु ''तीव्र मस्तिष्कशोध संलक्षण सहित बच्चों में हृदपेशीशोध के हेतु, क्लीनिकल जानपदिक रोगविज्ञानी प्रोफाइल और संगठन का अध्ययन''।
   - बहुविध वास्तविक समय पीसीआर द्वारा विभिन्न वायरल रोगजनकता जैसे– ईबीवी, सीएमवी, एवी, एचएसवी–I, एचएसवी–2, वीजेडवी, ईवी, पीवी, एचएचवी–6, एचएचवी–7, बी–19 हेतु सीएसएफ नमूनों का संसाधन।
   - सीएसएफ में वायरस पार्थक्य और
   - खसरे, कनफेड़, कोक्साकी–बी, रूबेला हेतु सीरम परीक्षण।
3. ''एनसीडीसी में दिल्ली से इंफ्लुएंजा जैसे रोग सहित रोगियों में इंफ्लुएंजा वायरसों की आणविक पहचान और लक्षण वर्णन करना''।
   - अध्ययन अवधि के दौरान दिल्ली में एक पीडीएम इंफ्लुएंजा ए (एच1एन1) महामारी की पहचान की गई थी, जो इस तथ्य को मजबूत करता है कि परिसंचारित विकृतियों के बारे में सूचना उपलब्ध कराने के लिए समुदायों में इंफ्लुएंजा वायरसों का सर्विलांस महत्वपूर्ण है।

नई पहल (अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परियोजना)

एनसीडीसी की प्रस्तावित गतिविधियां (रासायनिक वायरस विज्ञान प्रयोगशाला)

1. वैश्विक स्वास्थ्य के लिए कार्यदल ने, जेफरी मोडल फांउडेशन, सेंटर्स फॉर डिसीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन, अटलांटा और डब्ल्यूएचओ जेनेवा के साथ सहयोग से प्रतिरक्षा–विहीन वेक्सीन व्युत्पन्न पोलियो वायरस पर एक बहुकेंद्रित वैश्विक अध्ययन की शुरूआत की गई है। अध्ययन का उद्देश्य मौखिक पोलिया वेक्सीन पिलाने के बाद दीर्घ उत्सर्जन के साथ जुड़े, बी सेल प्रतिरोधक दोष सहित रोगियों में पोलियो वायरस उत्सर्जन की व्याप्तता का पला लगाना। चिह्नित विषय दीर्घावधि पोलियो वायरस उत्सर्जन के उपचार हेतु एंटीवायरल एजेंट या एजेंटों के लिए बाद के शोध हेतु भी मूल्यांकन होंगे। एनसीडीसी पोलियो प्रयोगशाला अध्ययन का हिस्सा होगी। प्रतिरोध विहीन बच्चों में पोलियो वायरस उतसर्जन की व्याप्तता का पता लगाने के लिए अध्ययन किया जाएगा।
2. एनसीडीसी कई वर्षों से खसरे के लिए परीक्षण करता रहा है। अब एनसीडीसी डब्ल्यूएचओ के सहयोग से खसरा उन्मूलन परियोजना का भाग होने जा रहा है, चूंकि इस परियोजना के लिए एनसीडीसी की रासायनिक वायरल विज्ञान प्रयोगशाला को अनुमोदन दिया गया है। स्टाफ को खसरा के नमूनों की जांच के लिए चेन्नई में प्रशिक्षित किया जा चुका है। एनसीडीसी दिल्ली में और उसके आस–पास दिसंबर, 2014 से खसरे के प्रकोप की निगरानी शुरू कर दी है।
3. एनसीडीसी पहले से ही राष्ट्रीय पोलियो सर्विलांस परियोजना (एनपीएसपी) का भाग है। वर्तमान में एनसीडीसी पोलियो वायरस पृथक्करण और पोलियो वायरस का अंतर–प्रकट विभेदन कर रहा है। पोलियो वायरस के जीनोमिक अनुवर्तन हेतु ईआरसी, मुम्बई भेजे जाते हैं। जल्द ही पोलियोवायरस पृथक्करण के जीनोमिक अनुवर्तन विश्लेषण प्रयोगशाला में शुरू किए जाएंगे। इसके लिए प्राइमर/प्रोब और प्रोटोकॉल तक कर लिए गए हैं।

इस प्रभाग की विभिन्न प्रयोगशालाओं में किए गए कार्य का विवरण

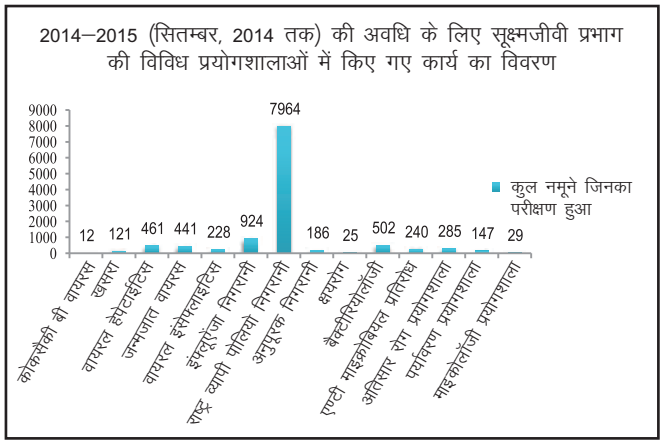

इसके साथ–साथ खसरे, पीलिया,मस्तिष्कशोध और अतिसारीय रोग प्रकोप में सहायता की और अनुप्रयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं का आयोजन किया।

छ. जैव प्रौद्योगिकी का प्रभाग :

यह प्रभाग महामारी और प्रकोप के दौरान रोग निदान, प्रचलनात्मक अनुसंधान, जनशक्ति विकास, सलाहकारी भूमिका और वृहद जन स्वास्थ्य महत्व के महामारी संभावित रोग के सोपान के निवारण एवं नियंत्रण की दिशा में अन्य विविधतायुक्त गतिविधियों में सक्रिय रूप से व्यस्त रहता है। यह प्रभाग एनसीडीसी के विभिन्न प्रभागों और संगठन/संस्थाओं से बाहर के साथ सहयोग कर रहा है।

प्रभाग का वृहद अधिदेश :

(i) महत्वपूर्ण जानपादिक–संभावित रोगों के जीनोमिक्स के क्षेत्र में रेफरल आणविक नैदानिक सहायता जिसमें निम्नलिखित शामिल है :

- रोगजनक की पुष्टि हेतु सुस्पष्ट आणविक नैदानिक सहायता;
- उभरते/पुनः उभरते रोगों के संक्रमण के उद्गम और स्रोत का पता लगाना;
- रोगजनक संचरण के मार्गों का पता लगाना;
- संचरण संपोषित करने वाले स्थलों की पहचान करना;

- नए, उभरते और पुनः उभरते रोगजनकों की पहचान करना;
- विकृतियों का जीन प्ररूपण एवं उप–प्रकारण;
- दवा–रोधी विकृतियों का वर्गीकरण;
- विभिन्न रोगजनक को स्थानिक और महामारी के साथ जोड़ना;
- टीकाकरण कार्यक्रमों के प्रभाव की निगरानी;
- रोग नियंत्रण गतिविधियों की प्रगति की निगरानी और
- महत्वपूर्ण रोग के रोगाणुओं के ''जीन–बैंक'' का रखरखाव।
- डेंगू वायरस का आणविक उपचार सीपीआरई–एम जीन क्षेत्र को निशाना बनाने से अलग करता है : राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के संभावित नमूनों की डेंगू वायरस के सीपीआरई–एम जीन क्षेत्र के लिए जांच की गई थी। कुछ नमूने डेंगू वायरस के लिए पॉजीटिव पाए गए।
- **हेपेटाइटिस सी वायरस का आणविक वर्गीकरणः** जम्मू और कश्मीर के अनंतनाग जिले में एचसीवी संक्रमण के प्रकोप की सूचना मिली थी। यह प्रकोप एचसीवी जीनोटाइप 3ए में शामिल था।
- **चिकुनगुनिया वायरस का आणविक अध्ययनः** दिल्ली में रोग का घटता रुझान पाया गया था।

(ii) **विशेष प्रयोजन के लिए प्रशिक्षण**

विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे अनेक छात्रों और भारतीय विज्ञान अकादमी के नामित व्यक्तियों के विशेष प्रयोजन हेतु प्रशिक्षण दिया गया।

क. विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों से पी.एचडी डिग्री कर रहे 5 विद्यार्थी और

ख. जीजीएसआईपी विश्वविद्यालय, दिल्ली से एमपीएच पाठ्यक्रम कर रहे छात्रों का प्रशिक्षण और शिक्षण।

iii) महत्वपूर्ण जानपादिक–संभाव्य रोगों के जीनोमिक्स में **अनुप्रयुक्त अनुसंधान** ।

- **2009 विश्वमारी एच1एन1 वायरस को विशेष संदर्भ सहित इंफ्लुएंजा ए के परिसंचरणीय उपभेदों का क्रम–आधारित जीनोमिक वर्गीकरणः** इंफ्लुएंजा ए के एचए और एनएस जीन का डीएनए अनुक्रमण किया गया और वर्धित वायरस उग्र रुग्णता, गंभीर संक्रमण और दवा प्रतिरोध से संबंधित घटकों के लिए डाटा का विश्लेषण किया गया। परिसंचरणीय उपभेदों की जाति जानने के लिए विभिन्न जैव सूचना विज्ञान साधनों द्वारा अनुक्रमणन से उत्पन्न डेटा का भी विश्लेषण किया गया।
- **गर्भधारण के समय पर 'वायरलप्रोटीन यू' (वीपीयू)द्वारा जारी एचआईवी का अभिकलनात्मक और आणविक विश्लेषण :** गर्भधारण के समय एचआईवी के वीपीयू प्रोटीन के ट्रांसमेम्ब्रेन और साइटोप्लास्टिक डोमेन का जेनेटिक वर्गीकरण किया गया। साथ ही गर्भधारण के समय और मृत्यु के पश्चात् हमने बीएसटी–2 एम–आरएनए अभिव्यंजन का भी अध्ययन किया ।
- **एचआईवी–1 प्रभेदक उपप्रकार सी से बी के ईएनवी जीन के अति–परिवर्तनशील क्षेत्र (वी3–वी5) का जेनेटिक वर्गीकरण :** एचआईवी–1 के आवरण जीन के अति–परिवर्तनशील क्षेत्र (वी3–वी5) का आणविक वर्गीकारण और उप प्रकार सी परिवर्तनशील जेनेटिक वर्गीकरण का पता लगाने के लिए डाटाबेस से प्राप्त उपप्रकार की अनुक्रमों के साथ उनकी तुलना जो उसकी उच्च रोगाणुपरकता के लिए उत्तरदायी हो सकता है।
- **डीएफ प्रकोप के दौरान *सीपीआरई–एम* और *ईएनवीएनएस* 1 जीन क्षेत्र को लक्षित करने से, डेंगू वायरस का आणविक वर्गीकरण पृथक करता है** : राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के नमूनों के लिए आणविक वर्गीकरण और जीनोटाइपिंग की गई। डीईएनवी–1 जीनोटाइप III और डीईएनवी–3 जीनोटाइप III, जिन्हें रोग की गंभीरता और डीईएनवी–2 जीनोटाइप IV के परिचालन की शर्तों

पर तुलनात्मक रूप से कम विकृति रूप माना जाता है, हाल के वर्षों में सूचित किए गए थे।

iv) **बैठक / सम्मेलन** : इस प्रभाग के संकाय सदस्यों ने महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्षों को प्रस्तुत करने के लिए संक्रामक रोगों पर संगत वैज्ञानिक सम्मेलनों में भाग लिया।

I. मलेरिया विज्ञान एवं समन्वयन प्रभाग :

- प्रकोप अन्वेषणों हेतु तकनीकी सहायता प्रदान करना, प्रचलनात्मक अनुसंधान करना और देश में मलेरिया रोग व उसके नियंत्रण के क्षेत्र में प्रशिक्षित जनशक्ति विकसित करना;
- मलेरिया संक्रमण की प्रयोगशाला निदान हेतु राज्य सरकार को चिकित्सीय सहायता उपलब्ध कराना;
- एनसीडीसी में उच्चाधिकारियों / प्रतिनिधिमंडलों के दौरों का समन्वयन और
- मेडिकल,नर्सिंग और होमियोपैथिक स्नातक और परास्नातक छात्रों के लघु अवधि के अभिमुखी / प्रशिक्षण दौरों का समन्वयन।

1. कुल 737 (1 अप्रैल, 2014 से 12 नवंबर, 2014 तक) रक्त स्लाइडों की जांच की गई थीं और 71 पॉजीटिव पाई गईं (पीवी–69 और पीएफ–02)। 527 स्लाइडें सरकारी अस्पतालों से प्राप्त हुई थीं और 198 निजी अस्पतालों से। 12 स्लाइडें एनसीआर क्षेत्र से प्राप्त हुई थीं (गाजियाबाद, सोनीपत, बागपत, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और फरीदाबाद)।

वर्ष 2014–15 में दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से मलेरिया क्लीनिक में बी / एस परीक्षण किए गए।

प्रभाग की मुख्य गतिविधियाँ :

महीना	बी / एस	पॉजीटिव मामले	पीवी	पीएफ	दिल्ली	एनसीआर
अप्रैल, 2014	64	01	01	00	स.48;पी1600	
मई, 2014	62	00	00	00	स.56;पी04यूपी–02	
जून, 2014	43	05	05	00	स.32;पी10यूपी–01	
जुलाई, 2014	120	06	06	00	स.95;पी23जी–02	
अगस्त, 2014	139	22	21	01	स.92;पी45अन्य–2	
सितंबर, 2014	125	14	13	01	स.87;पी34यूपी–4	
अक्टूबर, 2014	132	21	21	00	स.78;पी53यूपी–1	
नवंबर, 2014 (12 नवंबर, 2014 तक)	52	02	02	00	स.39;पी1300	
कुल	**737**	**71**	**69**	**02**	**स.527;पी198**	**यूपी–08; स.–02 अन्य–02**

स–सरकारी, नि–निजी, जी–गाजियाबाद, यूपी–उत्तर प्रदेश

2. यह प्रभाग दौरे पर मेडिकल, नर्सिंग और होमियोपैथिक स्नातक और परास्नातक छात्रों को नियमित लघु अवधि अभिमुखी / प्रशिक्षण प्रदान करता है। विभिन्न संस्थानों अर्थात् अस्पतालों, पशुचिकित्सा आर्मी अधिकारी, आर्मी के एमबीबीएस छात्र, एएफएमसी के मेडिकल अधिकारी, बीएसएफ के वरिष्ठ मेडिकल अधिकारी, एमडी (सीएचए)एवं डीएचए अंतिम वर्ष के छात्र, एमफिल, एमपीएच और पीएचडी छात्र,मेडिकल कॉलेजों के सामुदायिक चिकित्सा के परास्नातक छात्र, ''स्वास्थ्य वर्धन शिक्षा में डिप्लोमा'' के प्रशिक्षु एवं परास्नातक–डीसीएचसी, सीजीएचएस एवं सीएचएस अधिकारी, बीएचएमएस छात्र और डीएनबी के कुल 313 छात्रों को निम्नानुसार लघु अवधि

निम्नलिखित लघु अवधि प्रशिक्षण प्रदान किए गए : –

क्र.स.	माह	दिनांक	छात्रों की सख्यां	छात्रों का वर्ग	संस्थान का नाम
1	अप्रैल	15.04.14 एवं 16.04.14	30	एमपीएच	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में उभरते क्षेत्रों हेतु. विश्वविद्यालय/संस्थान, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ
		25.04.14	65	निदेशक स्टाफ सहित एयर वॉरियर्स	एएफआईएनबीसी (पी) एयरफोर्स स्टेशन अर्जनगढ़ नई दिल्ली
		30.04.014	7	एमडी (सीएचए)	एनआईएचएफडब्ल्यू, नई दिल्ली
2.	मई	21.05.14	80	एमबीबीएस अंतिम वर्ष संस्थान, एनएच 24, अनवरपुर,	चिकित्सा विभाग, सरस्वती आयुर्विज्ञान हापुड़, (उ.प्र)
3	जुलाई	28.07.14	11 अंतिम वर्ष	पीएचई (एमएससी) (आईसीएमसआर), इंदिरा नगर,	पुडुचेरी वेक्टर नियत्रण अनुसधान केंद्र विभाग
4	अगस्त	07.08.14	20	पेशेवर विकास पाठ्यक्रम	प्रबधन, जन स्वास्थ्य एव स्वास्थ्य सेवाए सुधार, डीएमओएस, एनआईएचएफडब्ल्यू , नई दिल्ली
5	सितंबर	03.09.14	66	नर्सिंग (बीएससी एवं एमएससी)	आर.ए.के. कॉलेज ऑफ नर्सिंग, लाजपत नगर, नई दिल्ली
		15.09.14	26	नर्सिंग (बीएससी)	नासिक नर्सिंग कॉलेज, डॉ. बालाभाई नानावती अस्पताल, महाराष्ट्र आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, नासिक
		16.09.14 व 17.09.14	92	बीएचएमएस	नेहरू होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज व अस्पताल, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
		22.09.14	10	परास्नातक प्रशिक्षु चिकित्सा अधिकारी	एएफएमसी, पुणे
		29.09.14 व 30.09.14	78	जीएनएम प्रथम वर्ष और बीएससी नर्सिंग	रुफैदा नर्सिंग कॉलेज,जामिया हमदर्द, हमदर्द नगर, दिल्ली
6	अक्टूबर	09.10.14	62	बीएचएमएस	बेकसन होमियोपैथिक कॉलेज, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर, यूपी
		20.10.14	46 एवं एमएससी)	नर्सिंग (बीएससी अस्पताल ट्रस्ट, मुम्बई	बॉम्बे अस्पताल नर्सिंग कॉलेज, बॉम्बे
7	नवंबर	12.11.14	25	एम.फिल, एमपीएच और पी.एचडी	सामाजिक चिकित्सा एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज–।।, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,नई दिल्ली

ज. चिकित्सा कीटविज्ञान एवं वेक्टर प्रबंधन केंद्र :

चिकित्सा कीटविज्ञान एवं वेक्टर प्रबंधन केंद्र को, अनुसंधान करने, तकनीकी सहायता प्रदान करने और वेक्टर जनित रोगों और उनके नियंत्रण के क्षेत्र में प्रशिक्षित जनशक्ति विकसित करने के लिए, एक राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र के रूप में विकसित करने हेतु पुनर्गठित किया जा रहा है। यह केंद्र वेक्टर–जनित रोगों और उनके नियंत्रण के प्रकोप अन्वेषणों एवं कीट विज्ञान सर्विलांस पर विभिन्न राज्यों और संगठनों

को तकनीकी मार्गदर्शन, सहायता और सुझाव प्रदान करता है। प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित हैं : –

प्रमुख उपलब्धियाँ

1 दिल्ली में डेंगू वेक्टर्स की कीटविज्ञान सर्विलांस और वेक्टर मच्छरों में डेंगू वायरस की पहचान के आधार पर संभावित प्रकोप के निवारण के लिए समुचित सुधारात्मक उपाय करने के लिए नगरपालिका स्वास्थ्य अधिकारी, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली को पूर्व चेतावनी संदेश जारी कर दिए गए हैं।

2 दिल्ली नगर निगमऔर एनवीबीडीसीपी को कार्रवाई हेतु उच्च जोखिम क्षेत्रों की सूची बता दी गई थी। साथ ही, यह रिपोर्ट माननीय स्वास्थ्य मंत्री, दिल्ली सरकार की बैठक में और एनवीबीडीसीपी द्वारा आयोजित कार्य–योजना बैठक में प्रस्तुत की गई थी।

3 डॉ. आर.एस. शर्मा और डॉ. रूप कुमारी ने यूएनईपी, जिनेवा में 10–12 नवंबर, 2014 को आयोजित डीडीटी विशेषज्ञ समूह की बैठक में भाग लिया।

4 डॉ. आर.एस. शर्मा और डॉ. रूप कुमारी डेंगू कार्यदल के सदस्य हैं जो दिल्ली में डेंगू के निवारण और नियंत्रण हेतु तकनीकी मार्गदर्शन करते हैं।

5 विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर, 7 अप्रैल, 2014 को डॉ. रूप कुमारी ने ''भारत में जापानी एंसेफालाइटिस नियंत्रण पर आईवीएम हेतु विकल्प'' पर प्रस्तुतीकरण दिया।

6 डॉ. आर.एस. शर्मा ने बाढ़ के कारण जोखिम मूल्यांकन के लिए 19–25 अक्टूबर,2013 को ओडिसा का दौरा किया।

7 डॉ. एल.जे. कान्हैकर ने प्रभारी अधिकारी के रूप में एनसीडीसी के देखरेख करने के लिए जगदलपुर का दौरा किया। साथ ही वाईईपी के संबंध में डेटा एकत्रीकरण हेतु छत्तीसगढ़ के जिले का दौरा किया।

8 गोवा, अमृतसर, कांडला और विशाखापट्टनम में अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्टों/सीपोर्टों में भी *एडिस* सर्विलांस किया गया है।

9 गोवा एयरपोर्ट/सीपोर्ट के स्टाफ के क्षमता निर्माण हेतु वेक्टर सर्विलांस एवं नियंत्रण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

10 आईएसएमओसीडी व आईएई, गोवा में 10–12 अक्टूबर, 2014 तक अनुसंधान पत्र प्रस्तुत किए गए।

चल रही अनुसंधान परियोजनाएं

1 कीटविज्ञान सर्विलांस और दिल्ली में डेंगू के प्रकोप हेतु पूर्व चेतावनी संदेशों की पहचान हेतु अधिकारिक विवरण तैयार करना;

2 भारत में कुछ स्थानिक क्षेत्रों में रोगवाहक मच्छरों में डेंगू/जेई विषाणु की उपस्थिति का अध्ययन तथा

3 अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डों तथा समुद्र बंदरगाहों में डेंगू तथा चिकनगुनिया मच्छरों, पीले बुखार के रोगवाहक की कीट (विज्ञान संबंधी निगरानी)।

प्रकाशित शोध–पत्र 2013–14

1 रूप कुमारी, आर.एस. शर्मा, वीके रैना, एलएस चौहान, ''जापानी मस्तिष्क की सूजन/लक्षण (जेई/एईएस) तीव्र सूजन के निवारण एवं नियंत्रण हेतु एकीकृत रोगवाहक प्रबंधन की भूमिका–एक समीक्षा'', संक्रामक रोगों के प्रकाशन 2014; 46(1) : 93–108 ।

2 आर.एस शर्मा, रूप कुमारी, पीके श्रीवास्तव, के.बरूआ, ''भारत में डेंगू समस्या का उद्भव–जन स्वास्थ्य की चुनौती'' संक्रामक रोगों के प्रकाशन 2014; 46 (2) : 17–45 ।

3 रूप कुमारी, कौशल कुमार, एनके यादव तथा लखबी सिंह चौहान। ''राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, भारत के शहरी क्षेत्रों में जापानी मस्तिष्कशोध का पहला स्वदेशी संचरण''। *ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड इंटरनेशनल हेल्थ 2013 की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका;* 18(6):743–749 ।

सम्मेलनों में प्रस्तुत/सार प्रस्तुति : 2014

1 रूप कुमारी, आर एस शर्मा और एल एस चौहान, भारत में जापानी मस्तिष्कशोध स्थिति और उसका निवारण व नियंत्रण। दिल्ली में 24–25 नवंबर, 2014 तक पशुचिकित्सीय जन स्वास्थ्य पर राष्ट्रीय कांग्रेस।

2 रूप कुमारी , आर एस शर्मा और एल एस चौहान। ''डेंगू प्रकोप हेतु पूर्व चेतावनी संदेशों की पहचान'' । संयुक्त वार्षिक सम्मेलन, आईएसएमओसीडी एंड आईएई, 2014 गोवा।

3 आर. एस. शर्मा, रूप कुमारी, एल जे कान्हेकर व एल. एस. चौहान। ''वेक्टर नियंत्रण : भारत में मौजूदा स्थिति और चुनौतियां'' । संयुक्त वार्षिक सम्मेलन, आईएसएमओसीडी एंड आईएई, 2014 गोवा ।

4 वेद प्रकाश, रूप कुमारी, शर्मा आर एस, थोमस टी जी,मो. मुजिब, एल जे कान्हेकर, प्रभा अरोड़ा, मंडल ए के, चौहान एल.एस. अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियमन की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए गोवा के एयरपोर्ट व सीपोर्ट में और आसपास पीत ज्वर, डेंगू, चुकिनगुनिया और मलेरिया के वेक्टरों हेतु सर्विलांस। संयुक्त वार्षिक सम्मेलन, आईएसएमओसीडी एंड आईएई, 2014 गोवा ।

5 बिष्ट बबीता, रूप कुमारी, रावत एके. (2014) । डेंगू के संचरण के निवारण हेतु दिल्ली के शहरी क्षेत्र के स्कूलों में डेंगू वेक्टर के संभावित प्रजनन क्षेत्रों का अध्ययन। *संयुक्त वार्षिक सम्मेलन, आईएसएमओसीडी एंड आईएई, 2014 गोवा* ।

6 एल.एस चौहान और रूप कुमारी *''वेक्टर जनित रोग–भारत में उद्गमन और पुनरुत्थान''*। अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन कीटविज्ञान, पटियाला, फरवरी 21–23, 2014।

झ. जानपदिक रोगविज्ञान प्रभाग :

i. प्रभाग की गतिविधियां :

1. प्रशिक्षित स्वास्थ्य जनशक्ति विकसित करने के लिए जानपदिक रोगविज्ञान में प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का संगठन और समन्वयन। रोग सर्विलांस पर मोड्यूल, मैनुअल आदि जैसी पाठन सामग्री तैयार करना और महामारी संभाव्य संचारणशील रोगों का प्रकोप अन्वेषण ;
2. ज्ञात/अज्ञात हेतु विज्ञान के रोगों के प्रकोप का अन्वेषण और देश में राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को इसके निवारण एवं नियंत्रण हेतु संस्तुत उपाय; रोग के प्रकोपो की जांच एवं नियंत्रण हेतु राज्य सरकार को तकनीकी सहायता का प्रावधान
3. संस्थान की 3, शाखाओं अर्थात् अलवर (राजस्थान), जगदलपुर (छत्तीसगढ़) और कुन्नूर (तमिलनाडु) के लिए प्रशासनिक एवं तकनीकी पर्यवेक्षण का प्रावधान;
4. विभिन्न घटकों/सूचकों के नियंत्रण, जनशक्ति विकास, विश्लेषण हेतु विकासशील दिशा–निर्देशों के रूप में विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की तकनीकी सहायता का प्रावधान;
5. मासिक बूलेटिन ''सीडी अलर्ट'' के प्रकाशन हेतु निदेशक की सहायता और
6. संचारी रोगों के विभिन्न पहलुओं पर क्षेत्रीय अनुसंधान करना।

ii. अन्वेषण किए गए प्रकोप/त्वरित स्वास्थ्य मूल्यांकन : इस अवधि के दौरान, जानपदिक रोग विज्ञान प्रभाग के अधिकारियों ने देश में प्रकोपों का अन्वेषण किया और प्राधिकारियों को समावेशन उपाय बताए। जानपदिक रोग विज्ञान प्रभाग के अधिकारियों ने ईआईएस प्रभाग के अधिकारियों द्वारा की गई प्रकोप जांचों को परामर्श दिया।

iii. जनशक्ति विकास : राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) दिल्ली जानपदिक रोग विज्ञान और प्रशिक्षण हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन का सहयोगी केंद्र है। जानपदिक रोग विज्ञान प्रभाग प्रत्येक वर्ष नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम और अनेक अन्य लघु–अवधि प्रशिक्षण क्रियाकलाप आयोजित करता है। इन प्रशिक्षण काग्रक्रमों की पाठ्यक्रम विषय–सूची, स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए आवश्यकता आधारित

कौशल को विकसित करने के लिए देश के विभिन्न राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों से भागीदार आते हैं। इसके साथ–साथ, कुछ पड़ोसी देशों जैसे नेपाल, भूटान, श्रीलंका, थाइलैण्ड, तिमोरलेस्टे, मालदीव और इंडोनेशिया से भी कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी प्रशिक्षु भाग लेते हैं।

iv सूचित अवधि के दौरान आयोजित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमः

1. दक्षिण पश्चिम एशियाई क्षेत्र के कार्मिकों के लिए त्रैमासिक प्रादेशिक क्षेत्र महामारी प्रशिक्षण कार्यक्रम 21 जुलाई, से 17 अक्टूबर, 2014 में शुरू किया गया। प्रशिक्षण में दो देशों के कुल 6 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

2. दक्षिण पश्चिम एशियाई क्षेत्र के पेरामेडिकल कर्मियों के लिए एक मासिक संचारी रोगों के निवारण और नियंत्रण पर प्रादेशिक प्रशिक्षण कार्यक्रम 28 अक्टूबर, से 24 नवंबर, 2014 शुरू किया गया। प्रशिक्षण में दो देशों के 9 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

3. एमपीएच (एफई) के 10 वें बैच का उद्घाटन 01 अगस्त, 2014 को किया गया था जिसमें 2 छात्रों ने प्रवेश लिया।

4. भारत ईआईएस का तीसरा बैच 16 सितंबर, 2014 को शुरू किया गया वर्तमान में तीसरे बैच में कुल 13 अधिकारी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है।

v. वैश्विक रोग खोज–भारत केन्द्रः वैश्विक रोग खोज–भारत केन्द्र सीडीसी एटलांटा के सहयोग से वर्ष 2012 में एनडीसीडी में चलाया गया। जीडीडी भारत केन्द्र का लक्ष्य है पनपने और पुनः पनपने वाले संक्रामक रोगों की प्रतिक्रिया और पता लगाने के लिए महामारी विज्ञान संबंधी व प्रयोगशाला क्षमता का निर्माण करना। मानव संसाधन विकास, महामारी विज्ञान व प्रयोगशाला पर ध्यान रखा जाएगा और पनपते संक्रमण की प्रतिक्रिया और पता लगाने हेतु उत्तम प्रयास साझा करना, जहां आवश्यक हो दोनों पर ध्यान रखा जाएगा।

vi. महामारी निगरानी सेवाएं (ईआईएस): भारत ईआईएस प्रशिक्षण का तीसरा समूह सूत्रपात में ईआईएस प्रशिक्षु के लिए भारत के एक माह के प्रारंभिक पाठ्यक्रम के साथ 16 सितंबर से 15 अक्टूबर, 2014 को एनसीडीसी में आयोजन के साथ–साथ हुआ। यह यूएस रोग नियंत्रण केन्द्र, अटलंटा और भारत सरकार के सहयोग की पहल है। कुल 20 अधिकारियों ने (7 ने दूसरे समूह और 13 ने तीसरे समूह में) प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

vii. सीडी चेतावनीः राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र, दिल्ली ने संचारी रोग नियंत्रण की सूचना को तीव्र प्रसार हेतु आवश्यक उपकरण पर एक पत्रक प्रकाशित किया। यह देश के विभिन्न भागों में विभिन्न राज्यों के स्वास्थ्य सेवा निदेशालयों, जिलों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, कालेजों व वैयक्तिकों को व्यापक रूप में परिचालित किया गया। भारतीय ज्ञान प्रसार आयुर्विज्ञान संस्था द्वारा कई बार सीडी चेतावनी में शामिल महत्वपूर्ण विषय आंशिक या पूरे भाग पुनः छापे गए। पहला अंक रोगों के पनपने और पुनः के विषय पर अगस्त 1997 में प्रकाशित हुआ था तथा अब तक कुल 75 अंक प्रकाशित हो चुके है। सामान्य ज्ञात विषयों पर अंक प्रकाशित होते है जो समय–समय पर अद्यतन भी किए जाते है। सीडी अलर्ट वैश्विक परिदृश्य भारतीय परिदृश्यों तथा हमारे देश में विशेष रोग की नैदानिक सुविधाओं सहित रोग के आंतरिक विचार देता है। सीडी अलर्ट तीव्र प्रतिक्रिया दल के लिए प्रादुर्भाव/महामारी स्थितियों में प्रबंधन और रोकथाम के लिए सुविधाजनक उपकरण बन गया।

viii. एनसीडीसी समाचार पत्रः यह राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र का तिमाही प्रकाशन है और इसका पहला अंक माननीय सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 04 अक्टूबर, 2012 को जारी किया गया था। इस समाचार पत्र का उद्देश्य है कि प्रादुर्भावों पर जानकारी एनसीडीसी पर विभिन्न विभागों में से कार्यक्रम सूचनाएं तथा तकनीकी और क्षमता निर्माण एवं चयनित दस्तावेजों और दिशा–निर्देशों, आगामी सम्मेलनों, विश्व दिवसों और रोग प्रवृति की निगरानी पर सूचना को साझा करना। अब तक सफलतापूर्वक आठ अंक प्रकाशित हो चुके है और व्यापक रूप से परिचालित किए गए है।

15.23 लेडी रिडींग हेल्थ स्कूल (एलआरएचएस), दिल्ली

लेडी हेल्थ स्कूल, (एलआरएचएस), दिल्ली की अग्रणी संस्थानों में से एक माना जाता है और यह स्वास्थ्य–आगंतुकों के प्रशिक्षण के लिए अपनी तरह का पहला संस्थान है। इसकी स्थापना वर्ष 1918 को काउंतीस ओफ डूफ्फेरीन फंड के तहत एमसीएच सेवा कार्यक्रम के लिए नर्सकर्मियों के प्रशिक्षण हेतु हुई। वर्ष 1931 में यह इंडियन रेडक्रास सोसाइटी (मातृत्व एवं शिशु कल्याण ब्यूरो) के प्रशासनिक नियंत्रण में आ गया था। वर्ष 1952 में भारत सरकार ने स्कूल को अपने अधीन ले लिया तथा रामचंद लोहिया एमसीएच केन्द्र को इससे जोड़ दिया। इस स्कूल में भारत भर से 24 स्वास्थ्य–आगंतुक प्रशिक्षुओं की क्षमता थी बल्कि इस समय इतने प्रशिक्षु उपलब्ध ही नहीं थे। इस पाठ्यक्रम की अवधि मैट्रिक पास व्यक्तियों के लिए डेढ़ वर्ष की थी जो मिड़वाइफ के योग्य थे जिन्होंने वर्ष 1954 में स्वास्थ्य आगंतुकों हेतु ढाई वर्ष का एकीकृत पाठ्यक्रम किया था।

स्कूल का लक्ष्य है समुदाय स्वास्थ्य के साथ–साथ एमसीएच तथा परिवार कल्याण सेवाओं में नर्सिंग कार्मिकों की विभिन्न श्रेणियों के लिए संबद्ध राम चंद लोहिया एमसीएच व परिवार कल्याण केन्द्रों के माध्यम से प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान कराया जाना।

संस्थान वर्तमान में निम्नलिखित पाठ्यक्रम प्रदान करता है–

(i) सहायक नर्स–कम–मिडवाइफ पाठ्यक्रमः यह पाठ्यक्रम भारतीय नर्सिंग परिषद के तहत है तथा इसके लिए योग्यता मापदंड 12वी कक्षा उत्तीर्ण है। सत्र 2014–16 के लिए इस वर्ष 40 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। कुल विद्यार्थियों की संख्या 80 है अर्थात 2013–15 व 2014–16 प्रत्येक हेतु 40 विद्यार्थी।

(ii) बहु–उद्देश्य कार्यकर्ता योजना के तहत स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रमः–

इस पाठ्यक्रम की अवधि छः माह है। वर्ष में दो बार विद्यार्थी प्रवेश लेते है अर्थात प्रत्येक बैच में 20 की दाखिल क्षमता के साथ प्रत्येक वर्ष जनवरी व जुलाई में प्रवेश लेते है। 11 विद्यार्थी जनवरी, 2014 से जून, 2014 के लिए चयन किए गए। 9 विद्यार्थी जून 2014 में उत्तीर्ण हुए। जुलाई, 2014 से दिसंबर, 2014 बैच के लिए 30 अभ्यर्थी चुने गए जिनमें से 29 ने पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया।

(iii) पोस्ट बेसिक बी.एस.सी. (नर्सिंग):– इस संस्थान में पोस्ट बेसिक बीएससी (नर्सिंग) पाठ्यक्रम चलाने हेतु मंत्रालय का प्रशासनिक अनुमोदन स्वीकृत किया गया है।

छात्रावास सुविधाः

वर्तमान में, प्रशिक्षण ले रहे कुल 80 एएनएम विद्यार्थियों को छात्रावास सुविधा की आवश्यकता है। संस्थान में और कमरे बनाए जाने है तथा 24 घण्टे छात्रावास में विद्यार्थियों की देखभाल हेतु वार्डन की भी आवश्यकता है।

कार्मरत्त स्टॉफः

नियोजित पद (पीएनओ), पीएचएन (वरिष्ठ), ट्यूटर तथा अन्य गैर–शैक्षणिक पदों को गैर–नियोजित पदों में से एएनएम के रूप में परिवर्तित करने का प्रस्ताव मंत्रालय के विचाराधीन है। स्कूल इन पदों को जारी रखने के लिए प्रतिवर्ष स्वीकृति लेता है। एएनएम पाठ्यक्रम इस संस्थान की 1985 से नियमित गतिविधि है तथा जो कर्मचारी इस पाठ्यक्रम में कार्यरत हैं वे नियोजित पदों पर पिछले 20 वर्षों से कार्य कर रहे है। अतः इन पदों को गैर नियोजित पदों में परिवर्तित किए जाने की आवश्यकता है।

चिकित्सकीय अनुभव

विद्यार्थियों को चिकित्सकीय अनुभव हेतु ग्रामीण और शहरी स्वास्थ्य केन्द्रों, विभिन्न अस्पतालों जैसे दिल्ली में सफदरजंग, आरएमएल अस्पताल, लेडी हारडिंग मेडिकल कॉलेज और कलावती सरल बाल अस्पताल और दिल्ली से बाहर के अस्पतालों में भेजा जाता है।

विद्यार्थियों को ग्रामीण क्षेत्र में अनुभव हेतु ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केन्द्र, नजफगढ़ और ग्रामीण क्षेत्र प्रशिक्षण केन्द्र छावला मे भी नियुक्त किया जाता है। विद्यार्थियों को स्कूल की 2 किमी. की परिधि में दिल्ली नगर निगम के विभिन्न एमसीएच केन्द्रों में भेजा जाता है।

रामचंद लोहिया एमसीएच तथा परिवार कल्याण केन्द्र

यह विद्यार्थियों को शहरी स्वास्थ्य अनुभव हेतु क्षेत्रीय अभ्यास प्रदान करवाता है। यह 40,000 जनसंख्या को एकीकृत मातृत्व और बाल स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सेवाएं देता है। साप्ताहिक क्लिनिक आयोजित किए जाते है जैसे प्रसव पूर्व परिचर्या, स्वास्थ्य शिशु टीकाकरण, परिवार नियोजन क्लिनिक, हमारे छात्रों और स्टाफ द्वारा समुदाय में घर–घर सेवाएं भी दी जाती है। समुदाय में टीकाकरण की स्थिति और लक्षित जोड़ों की संख्या पता लगाने हेतु लेडी हार्डिंग स्वास्थ्य स्कूल को रामचन्द्र लोहिया मातृत्व एवं बाल स्वास्थ्य नवजात शिशु कल्याण केन्द्र के अधीन नियमित सर्वेक्षण जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। अवधि के दौरान पता लगाए गए जोड़े 7054 थे जिसने परिवार नियोजन का लगभग 70% कवरेज दी तथा सभी टीकाकरणों की 100: कवरेज पाई गई।

अन्य गतिविधियां

स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम स्कूल के साथ समुदाय में केन्द्र में विभिन्न उपागमों द्वारा आयोजित किया गया अर्थात फिल्म प्रदर्शन, बाल प्रदर्शन, जादूगर प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कठपुतली प्रदर्शन, भूमिका नाटक के पश्चात समूह प्रदर्शनी, भाषण प्रतियोगिता।

पल्स पोलियो कार्यक्रम

हमारे विद्यार्थियों और स्टाफ ने दिल्ली में आयोजित पल्स पोलियो कार्यक्रम, प्रजनन बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम तथा संपूर्ण स्वास्थ्य मेला आदि में भाग लिया।

एसएनए गतिविधियां

एलआरएचएस में पाठ्यंतर गतिविधियों के रूप में नियमित एसएनए गतिविधियां की।

बजट

वर्ष 2014–15 के लिए संस्थान एवं कल्याण स्टाफ के लिए कुल बजट 3,55,00,000 रूपये (तीन करोड़ पचपन लाख) है।

15.24 पाश्चर इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पीआईआई कुनूर

पाश्चर इंस्टीट्यूट आफ इंडिया, कुनूर ने 6 अप्रैल 1907 को पास्तेर इंस्टीट्यूट ऑफ सायरन इंडिया के रूप में कार्य करना शुरू किया और संस्थान का नामकरण पास्तेर इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, कूनूर (पीआईआईसी) (सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अधीन सोसाइटी के रूप में पंजीकृत) के रूप में किया गया। 10 फरवरी, 1977 से स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त निकाय के रूप में कार्य करना आरंभ किया, संस्थान के मामले शासी निकाय द्वारा निपटाए जाते हैं।

वर्तमान गतिविधियाँ :–

- डीपीटी तथा टीशूकल्चर एंटीरेबीज (टीसीएआर) टीका उत्पादन में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा सस्पेंशन के रीवांकेशन उत्पादन के लाइसेंस के साथ अनुपालन किया जाता है। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान, यूआईपी को डीपीटी टीके की 84 लाख खुराक की आपूर्ति की गई।
- सीजीएमपी (करेंट गुड मैनुफैक्चरिंग प्रैक्टिस) डीपीसी वैक्सीन प्रयोगशाला के अनुरूप की स्थापना प्रक्रिया में है।
- अकादमी कार्यक्रम जैसे पीएचडी सूक्ष्मजीव विज्ञान, जीव रसायन तथा जैव प्रौद्योगिकी (अंशकालिक व पूर्णकालिक भरथिहार विश्व विद्यालय, कोयम्बटूर से

संबद्ध दस विद्यार्थी पीएचडी कर रहे है। विभिन्न महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों से विद्यार्थियों को टीका उत्पादन व टीकाकरण प्रक्रिया आदि में निर्माण के लिए वैज्ञानिक ज्ञान एवं जानकारी दिलाने के लिए औद्योगिक दौरे आयोजित किए गए। संयंत्र प्रशिक्षण के अतिरिक्त भी महाविद्यालय विद्यार्थियों के लिए परियोजनाएँ चलाई गई।

- प्रयोगात्मक उद्देश्य जैसे डीपीटी समूह और टीसीएआर टीके की गुणवत्ता नियंत्रण हेतु चूहों और गिनी सुअरो समूहों का प्रजनन कराया जाता है।
- संस्थान के पास सामान्य लोगों की आवश्यकता पूर्ति के लिए रेबीज़ नैदानिक प्रयोगशाला और रेबीज़ विरोधी उपचार केन्द्र है। लगभग 969 रोगियों को रेबीज़ विरोधी उपचार केन्द्र लाया गया तथा टीसूकल्चर रेबीज़ विरोधी टीका दिया गया। रेबीज़ संक्रमण की रोकथाम हेतु टीकाकरण के पश्चात सेरा रूपांतरण आकलन हेतु रेबीज़ न्यूट्रलाइजिंग एंटीबाडी जांच के लिए लगभग 128 सीरम नमूने प्राप्त किए।

डीपीटी टीका उत्पादन हेतु ग्रीन फील्ड मेन्युफेक्चरिंग जीएमपी केन्द्र को स्थापित करने के संबंध में की गई कार्रवाई–

- मंत्रालय ने डीपीटी समूह टीका निर्माण हेतु पीआईआईसीएचएलएल लाइफ केयर लिमिटेड पर ग्रीन फील्ड जीएमपी केन्द्र बनाने के लिए प्रस्ताव रखा। तिरुअनन्तपुरम अनुमानित व्यय 149.16 करोड़ रूपये की परियोजना आरंभ करने में व्यस्त है।
- अपेक्षित मुख्य उपकरण अनुकूल हेतु विशेषताओ का अंतिम रूप दिया गया है। उपकरणो की खरीद हेतु तकनीकी निविदा मूंल्याकन चल रही है।
- नया केन्द्र उपकरण प्रतिष्ठापन और प्रक्रिया मान्यकरण के पश्चात वार्षिक आधार पर 130 मिलियन खुराक (डीपीटी–60एमएलडी, टीटी–55 एमएलडी, डीटी–15एमएलडी) की आपूर्ति करेगा।

15.25 अखिल भारतीय भौतिक चिकित्सा एवं पुनर्वास संस्थान (एआईआईपीएमआर), मुंबई

अखिल भारतीय भौतिक चिकित्सा एवं पुनर्वास संस्थान की स्थापना वर्ष 1955 में हुई थी। यह भौतिक चिकित्सा एवं पुनर्वास के क्षेत्र में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन शीर्षस्थ संस्थान है।

उद्देश्यः

- न्यूरो मुसकलो–स्केलेटल (लोकोमोटर) रोग से पीड़ित लोगों के लिए जोड़ व हड्डी उपकरण के प्रावधान सहित आवश्यकता के अनुसार चिकित्सा पुनर्वास सेवाएं प्रदान करना।
- चिकित्सा तथा पैरा–चिकित्सा पाठ्यक्रमों के स्नातक व स्नातकोत्तर को सुयोग्य व कर्मठ संकाय के माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण प्रदान करना। स्वास्थ्य परिचालकों को भी समुदाय स्तर पर प्रशिक्षित किया जाता है।
- भौतिक चिकित्सा एवं पुनर्वास (पीएमआर) के क्षेत्र में अनुसंधान आयोजित करना तथा
- अक्षय ग्रामीणों के लिए अक्षयता निवारण एवं पुनर्वास हेतु समुदाय आधारित कार्यक्रमों का प्रचार एवं प्रदानगी करना।

पुनर्वास व्यवसायियों का प्रशिक्षणः चिकित्सा और पैरा–चिकित्सा में स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों को सुयोग्य व कर्मठ दल द्वारा दिया जा रहा है। स्वास्थ्य परिचालकों को भी समुदाय स्तर पर प्रशिक्षित किया जाता है। संस्थान के पास अनुसंधान व शिक्षण के लिए व्यापक संकाय है। पुनर्वास तथा संबद्ध विज्ञान क्षेत्र में एआईआईपीएमआर को अनेक प्रकाशनों व प्रस्तुतीकरण करने में अग्रणी रहने का श्रेय जाता है। समय–समय पर पुनर्वास सेवाओं को निरूपित करने, सुधार करने तथा निगरानी हेतु सरकार व गैर– सरकारी संगठनों के साथ सहयोग व समन्वय किया गया है।

वार्षिक आंकड़े (अप्रैल 2013–मार्च, 2014)

- **चिकित्साः**

I) बाह्य रोगी विभागः

निपटाई गई सेवाएंः बाह्य रोगी द्वारा पी डब्ल्यू डी की संख्याः

पंजीकृत अक्षमता वाले नए व्यक्ति	–	11328
पीडब्ल्यूडी जांच	–	18350
पीडब्ल्यूडी की कुल संख्या	–	29678
जारी किए अक्षमता प्रमाण पत्रों की संख्या	–	842
जारी की गई रेलवे रियायत	–	1291
बाह्य चालन प्रमाणन की संख्या	–	884
विशेष प्रमाण पत्रों की संख्या	–	26
सीपी क्लिनिक की संख्या	–	466
जीएंडओ क्लिनिक की संख्या	–	426
मधुमेह क्लिनिक की संख्या	–	72
जांचों की संख्यान	–	16
मामलों के सम्मेलनों की संख्या	–	66

II. आंतरिक रोगी सेवाः

1.	पुनर्संरचना– शल्य चिकित्सा तथा आंतरिक रोगी पुनर्वास हेतु वार्ड मे प्रवेश	–	846
2.	व्यापक पुनर्संरचना शल्य चिकित्सा प्रकरण	–	537
3.	लघु शल्य चिकित्सांय	–	3248

III. ध्वनि विज्ञान एवं वाक्–चिकित्सा विभागः

क)	विभाग में वाक् एवं भाषा रोग हेतु पंजीकृत पीडब्यूडी की संख्या	–	991
ख)	ऑडियोमेट्री व अन्य सुनने की जाचों की संख्या	–	153
ग)	गृह अभ्यास कार्यक्रम व परामर्श	–	173
घ)	चिकित्सीाय उपचार वाले मामले	–	1280

IV. जोड़ व हड्डी संबंधी कार्यशालाः

क)	पीडब्ल्यूडी हेतु हड्डी संबंधी उपकरणों की आपूर्ति का पंजीकरण	–	3549
ख)	पीडब्ल्यूडी हेतु जोड़ संबंधी उपकरणों की आपूर्ति का पंजीकरण	–	406
ग)	जोड़ व हड्डी संबंधी उपकरणों को देखभाल और सेवाएं	–	3955

V. भौतिक चिकित्सां विभागः

क)	नए रोगी	–	6380
ख)	पुराने रोगी	–	9892

VI. व्यावसायिक थैरैपी विभागः

पीडब्ल्यूडी की कुल संख्या – 15784

प्रदान किए गए गतिशील उपकरण/सहायता –3382

VII. व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यशालाः

क)	स्वयं तथा मुख्य रोजगार हेतु सहायता दिए गए अभ्यार्थियों की संख्या	–	135
ख)	रोजगार हेतु वातावरण मूल्यांकन तथा अनुकूलता के लिए शारीरिक अक्षम व्यक्तियों की संख्या	–	80
ग)	विभिन्न ट्रेडों में व्यावसायिक प्रशिक्षण हेतु नामांकित शारीरिक अक्षमों की संख्या	–	21
घ)	नई दिल्ली से गैर–सरकारी संगठनों तथा स्थानीय रोजगार कार्यालय की सहायता से विभिन्न निजी क्षेत्रों में पीडब्ल्यूडी को रोजगार दिलाया गया	–	25

VIII. चिकित्सा सामाजिक कार्य विभाग :

क)	व्यक्तिगत व औद्योगिक कार्यालयों से प्राप्त कुल दान राशि	–	2,50,005
ख)	गरीबी रेखा से नीचे के रोगियों पर खर्च की गई राशि	–	47,000
ग)	अस्पताल में भर्ती के दौरान चिकित्सा खर्चों के लिए संस्थान निधि समाज कल्याण निधि द्वारा वित्तीय सहायता निःशुल्क व उपकरण, अर्थात् विशेष सी.पी.कुर्सी, व्हील चेयर, बैसाखी, वॉकर व रोलेटर आदि प्रदान किए गए पीडब्ल्यूडी की संख्या	–	25

IX. रेडियोलोजी विभाग :

(क)	डीजिटल एक्स–रे जांच की संख्या	– 7764
(ख)	पीडब्ल्यूडी के लिए एक्सी–रे की संख्या	– 6975
(ग)	यूएसजी तथा कलर डोपलर की जांच की संख्या	– 955

X. चिकित्सकीय रोगविज्ञान विभाग

1.	क्लीनिकल पैथोलोजी में जांच	– 9860
2.	बायो रसायन में जांच	– 11180
3.	सेरोलीजी में परीक्षण	– 2380
4.	पैथोलोजिकल परीक्षणों की कुल संख्या	– 23420
5.	प्रतिदिन परीक्षणों की औसत संख्या	– 84

क्षमता बढ़ाना

- **भौतिक चिकित्सा तथा पुनर्वास (पीएमआर)**
- पीएमआर विभाग, आंतरिक व बाह्य रोगी, स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षण व अनुसंधान आयोजन में शामिल है।
- **जोड़ व हड्डी संबंधी विभाग**
- कस्टम मोल्डीड हिंज्ड नी ओरथोसिस फॉर ओस्टियो–आराथेरिटिक नीः घुटने के जोड का आस्टियो– आर्थराइटिस कमजोरी लाने वाला विकार है जो मोटापे व जीवनशैली परिवर्तन से जुड़ा है और इससे घुटने के जोड़ों में अपक्षयी परिवर्तन होता है।

  यह एक यांत्रिक समस्या है जिसे ओरथोसिस के रूप में यांत्रिक समाधान किए जाने की आवश्यकता है जो मुख्य रूप से घुटने के जोड़ को पुनर्निर्माण द्वारा क्षतिग्रस्तक भाग को हटाने की आवश्यकता होती है। बाजार में उपलब्ध मौजूदा जोड़ संबंधी उपकरण काफी महंगे और आम जनता की पहुंच से बाहर है। अतः उपलब्ध स्थानीय सामग्री से बिना गुणवत्ता और संरचना विशेषताओं से समझौता किए बिना एक नया डिजाइन बनाने का प्रयास किया गया था। आशाजनक परिणामों से यह डिजाइन क्रियान्वित हुआ था तथा संस्थान ने उस संस्थान में आने वाले रोगियों के लिए मानक रूपों का नुस्खा दिया।

- **टोन रीड्यूसिंग ऐंकल फूट ओरथोसिस (टीआरए–एफओ):** पक्षाघात रोगी स्पास्टिसिटी के कम और घातक स्तीरों के साथ सामान्यतः या सख्त ऐंकल एएफओ या फिर आरटीक्यून लेटेट एएफ ओके साथ सज्जित होते है जो टखनों व पैरों की अवांछनीय गति को नियंत्रित करता है और इस प्रकार घुटनों का गति–विज्ञान बदलता है। ये आर्थोसेस जोड़ों के उपकरण तथा सोलेपस के साथ पैरो की आंतरिक मांस–पेशियों में स्पास्टिलिटी को कम करने में किसी प्रकार सहायता नहीं करना है। पैरों में प्री–फेबिकेटेड मॉडल की सहायता से टोन–रीड्यूसिंग एएफओ निर्माण का प्रयास किया था। डिजाइन वैज्ञानिक रूप से जांचा गया था और स्पास्टिलिटी को घटाने में बहुत प्रभावकारी पाया गया था। अतः संस्थान ने इसकी नियमित रूप से सिफारिश की है।

सेन रिड्यूसिंग एंकल फूट आर्थोसिस (टीआर–एएफओ)

- **कृत्रिम अंगों का रोटेशन–प्लारस्टीथ** फेमोरल शाफ्ट में फोड़े के साथ अनेक ओस्टीओ–सारकोमा मामलों की रोटेशन प्लाकस्टीय के साथ शल्यक

चिकित्सा–की जाती है। तथापि इन रोगियों को कृत्रिम अंग लगाने में कठिनाई आती है। इन रोगियों की व्यक्तिगत आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए नियमित रूप से पारंपरिक डिजाइन के कृत्रिम अंग लगाए जा रहे हैं।

- **भौतिक चिकित्सा विभाग**
- **चाल व गतिशीलता विश्लेषण प्रयोगशाला**
- विषयों के मूल्यांकन की कुल संख्या –58
- **इसोकाइनेटिक मूल्यांकन तथा मांसपेशी निष्पादन**

प्रशिक्षण कुल लाभार्थियों की संख्या – 111

संतुलन मूल्यांकन तथा प्रशिक्षण स्थिर व गतिशील संतुलन का मूल्यांकन क्लिनिकल जांच बैट्रियों के उपयोग से किया जाता है, जो सूचक क्रियाकलाप है।

लाभार्थियों की संख्या –374

क्षमता निर्माण की दिशा में संस्थान पहल करते हुए जिला अस्पतालों में सैटेलाइट केन्द्र के माध्यम से आधारभूत संरचना व मानवशक्ति का सृजन कर रहा है, तांकि अधिक से अधिक विकलांग व्यक्तियों तक पहुंच स्थापित की जा सके।

पेशंट लिफ्टिंग होइस्ट

वैज्ञानिक प्रकाशन एवं अनुसंधान

		स्टाफ निर्देशित अनुसंधान				
क्र.सं.	**विभाग**	**प्रस्तुत शोध-पत्र**	**प्रकाशित शोध-पत्र**	**पूर्ण शोध निबंध**	**आमंत्रित व्याख्याता**	**भाग लिए गए कार्यशाला / संगोष्ठी/ सम्मेलन**
1	चिकित्सा क) पीएमआर	03	02	-	-	10
	ख) रेडियोलोजी	-	-	--	-	01
2	भौतिक चिकित्सा विभाग	04	--	12	--	04
3	व्यावसायिक थैरेपी	03	01	07	--	--
4	जोड़ एवं हड्डी संबंधी	12	--	11	-	07

15.26 अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान (एआईआईएसएच), मैसूर

अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान (एआईआईएसएच) मैसूर देश में संप्रेषण विकारों के विषय में प्रशिक्षण, अनुसंधान चिकित्सीय परिचर्या तथा जन शिक्षा, हेतु अग्रणी संगठन है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्थान के रूप में वर्ष 1965 में इसकी स्थापना हुई । एआईआईएसएच पिछले 49 वर्षों से सफलतापूर्वक अपनी गतिविधियां चला रहा है। संस्थान द्वारा पहली अप्रैल से तेरह सिंतबर तक चलाई गई गतिविधियां निम्नलिखित हैं:–

1. **अकादमिक गतिविधियां:** संस्थान 16 अकादमिक कार्यक्रम का संचालन करता है तथा विभिन्न कार्यक्रमों में 531 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। बीएससी (वाक् एवं श्रवण), स्नातकोत्तर (ध्वनि–विज्ञान) तथा स्नातकोत्तर (एसएलपी) में विद्यार्थियों के प्रवेश हेतु राष्ट्रीय स्तर पर प्रवेश परीक्षाएं

आयोजित की गईं। उक्त अवधि के दौरान गतिविधियां आयोजित की गईं जैसे–विख्यात विद्वानों द्वारा अतिथि व्याख्यान, अभिमुखी/लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम, सुनने व बोलने के रोगों के विभिनव पहलुओं पर कार्यशाला/संगोष्ठी सुनने और बोलने के रोगों के क्षेत्र में इसके प्रयासों के रूप में मानव क्षमता वृद्धि निर्माण के लिए चार वर्ष का ध्वनि विज्ञान स्नातक तथा वाक् भाषा निदान कार्यक्रम आयोजित करने हेतु जवाहरलाल स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, पुदुचेरी, क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान संस्थान, (आरआईएमएस), इंफाल तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस चिकित्सा महाविद्यालय (एनएससीबीएमसी), जबलपुर के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किया गए ।

2. **निष्पादित अनुसंधान** : उक्त, अवधि के दौरान संस्था्न में कुल 13 वित्त पोषित अनुसंधान परियोजना आरंभ की गई । विभिन्न विभागों में भी 37 परियोजनाएं भी चल रही हैं। परियोजनाओं का वित्त पोषण संस्थान द्वारा वित्त पोषण के अतिरिक्त विज्ञान व तकनीकी विभाग, भारत सरकार और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परषिद संगठनों द्वारा किया गया।

आईआईटी, गुवाहाटी के साथ अनुसंधान सहयोग के लिए कटे तालू वाले लोगों के जीवन को सुधारने के लिए प्रौद्योगिकी निर्माण हेतु समझौता–ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गये थे। निगलने के विकार संबंधी प्रयोगशाला को अत्याधुनिक उपकरणों के साथ नैदानिक व प्रबंधन प्रकरण में सहायता हेतु खोला गया था। यह कार्य निगलने की बीमारी वाले व्यक्तियों के लिए विशेषीकृत सहायता का प्रारंभिक प्रयास है।

इस अवधि के दौरान संग्रहालय में आने वाले बधिर व्यक्तियों के लिए सहायक उपकरण की शुरूआत की गयी। यह उपकरण टेली कॉयल प्रणाली सहित संस्थान में ही विकसित और डिजाइन किया गया था जिसे ऐसे व्यक्तियों द्वारा आसानी से प्रयोग में लाया जा सकता है जो कम, मामूली, अधिक गंभीर या अति गंभीर श्रवण की समस्या से पीड़ित हैं।

3. **क्लीनिकल सेवाएं** : उक्त अवधि के दौरान संस्थान ने श्रवण व वाक् रोग वाले कुल 32740 लोगों को व्यापक क्लीनिकल सेवाएं प्रदान कीं। क्लीनिकल सेवाओं में वाक् संबंधी मूल्यांकन व पुनर्वास, भाषा व श्रवण रोग, श्रवण व वाक् रोगों से जुड़े मनोवैज्ञानिक व ओटोर्हिनोलरिंगोंलोजिकल रोग शामिल हैं। इसके अतिरिक्त विस्तार और वैकल्पिक संचार, वैकल्पिक उपकरण, ऑटिज्म स्पैक्ट्रम विकार, कटे होंठ तालु और क्रनियोफेसियल, विसंगति, अबाध बोलना, अध्ययन अक्षमता, श्रवण प्रशिक्षण, मोटर वाक रोग विकार, तंत्रिका मनोविज्ञान विकार, पेशेवर वाक् परिचर्या और वर्टिगो में सुधार करने के लिए विशिष्ट नैदानिक सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

नवजात से 2.5 वर्ष के आयु वाले विशेष आवश्यकता वाले बच्चे के समग्र विकास की दिशा में उक्त अवधि के दौरान माता–पिता शिशु कार्यक्रम आरंभ किया गया। कार्यक्रम का लक्ष्य था माता पिता के सहयोग से बच्चों के शारीरिक संवाद, ज्ञान संबंधी, संप्रेषण, सामाजिक/भावनात्मक कौशल को सुधारना।

01 अप्रैल से 13 सितंबर, 2014 के दौरान नैदानिक सांख्यिकी जानकारी निम्नलिखित है :

नैदानिक सेवाएं	जांचे गए रोगियों की संख्या	थैरेपी सत्र/शल्य चिकित्सा
वृद्धि कने वाला तथा वैकल्पिक संप्रेषण	16	18
ऑटिज्म स्पैक्ट्रम विकार रोग	179	179
वाक विकार वाले वयस्क तथा वृद्ध	10	–
कान, नाक गला जांच	18803	–
प्रवाह मूल्यांकन	307	1885
श्रवण मूल्यांकन	7529	
अध्ययन अक्षमता मूल्यांकन	15	–
श्रवण प्रशिक्षण	1565	6593
कर्णावर्त तंत्रिका का प्रत्यारोपण	–	70

चिकित्सा विशेषज्ञता	885	–
मोटर स्पीच विकार	31	88
तंत्रिका मनोविज्ञान जांच	10	63
भौतिक चिकित्सा	327	3128
प्री–स्कूल सेवाएँ	205	–
मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन	3620	–
वाक् तथा भाषा मूल्यांकन	4824	18426
संरचनात्मक क्रनिओफेसियल असंगति मूल्यांकन	84	249
निगलने संबंधी रोग मूल्यांकन	3	3
वर्टिगो मूल्यांकन	82	–
ध्वनि रोग मूल्यांकन	229	–

4. बाह्य नैदानिक सेवाएँ : संस्थान की 31 बड़ी बाह्य गतिविधियाँ उक्त अवधि में की गई जिनमें विभिन्न अस्पतालों तथा औद्योगिक जांच में बाह्य नैदानिक केन्द्रों पर नैदानिक सेवाएं, टेली क्रियाकलाप सेवा तथा संप्रेषण रोगों के लिए नवजात जांच शामिल हैं।

5. जन शिक्षा गतिविधियां: संप्रेषण रोगों के विषय पर अनेकों जन शिक्षा गतिविधियां चलाई गई जैसे रोग के विभिन्न पहलुओं पर छः सार्वजनिक व्याख्यान आयोजन, संप्रेषण रोगों पर ग्यारह जांच शिविर तथा लिखित व इलेक्ट्रॉनिक रूप में संप्रेषण रोग के निवारण व नियंत्रण से संबंधित जन शिक्षा सामग्री का निर्माण तथा प्रचार–प्रसार शामिल है।

6. अन्य गतिविधियाँ तथा कार्यक्रम: संस्थान को 2014 में स्थापित हुए 50 वर्ष पूरे हो गए हैं तथा संस्थान में 9 अगस्त, 2014 को स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित किया गया।

डा. ए.के. पांडा, आईएएस, अपर सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने आयोजन की अध्यक्षता की थी। प्रो. सुदेश मुखोपाध्याय, अध्यक्ष, भारतीय पुनर्वास परिषद तथा प्रो. गौतम बिस्वास, निदेशक, आईआईटी, गुहावाटी आयोजन के दौरान मुख्य अतिथि रहे। संस्थान को हिंदी में श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु कार्यालय ज्योति स्मृति चिह्न से पुरस्कृत किया गया। 15–19 सितंबर, 2014 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। समारोह के भाग के रूप में हिंदी व्याकरण पर एक लिखित प्रश्नोत्तरी, पिक–एन–स्पीक, वन मिनट गेम, हिंदी फिल्म संगीत में समूहगान जैसी कई नई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं तथा 'प्रतिदिन हिंदी में एक शब्द लिखने' का आयोजन किया गया।

7. वित्तीय स्थिति

इस अवधि के दौरान संस्थान की वित्तीय स्थिति निम्नवत् है:

लाख रूपये में

अनुदान का प्रकार	वर्ष 2014–15 लिए आबंटित राशि	जारी राशि
योजना		
सहायता अनुदान सामान्य	1976.00	954.88
सहायता अनुदान पूंजीगत	7004.00	3121.10
सहायता अनुदान वेतन	479.00	0.00
गैर योजना		
सहायता अनुदान सामान्य	633.00	400.60
सहायता अनुदान वेतन	908.00	631.39
कुल	**11000.00**	**5107.97**

15.27 केंद्रीय मनश्चिकित्सा संस्थान (सीआईपी), रांची

केंद्रीय मनश्चिकित्सा संस्थान (सीआईपी), रांची स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय तथा स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के तत्वावधान में कार्य करता है। वर्ष 1918 में लगभग एक सदी पूर्व ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित इस अस्पताल का मूल नाम रांची यूरोपियन ल्यूनेटिक एसाईलम था। इसमें केवल यूरोपीय रोगियों की देखभाल की जाती थी और यह अस्पताल बिहार सरकार द्वारा संचालित था। आरंभ में कुल बिस्तर क्षमता 174 मरीजों (92 पुरूष और 82

केंद्रीय मनश्चिकित्सा संस्थान (सीआईपी), रांची

महिला) की थी। वर्ष 1922 में इसका प्रबंधन एक न्यासी बोर्ड को सौंप दिया गया था जिसमें विभिन्न भागीदार सरकारें शामिल थी तथा अस्पताल का काम पुनः बदल कर यूरोपियन मेंटल अस्पताल रख दिया गया था।

उसी वर्ष, अस्पताल के मनोवैज्ञानिक चिकित्सा परीक्षा वें डिप्लोमा के लिए लंदन विश्वविद्यालय से संबद्ध किया गया जिससे यह भारत में मनःचिकित्सा में स्नातकोत्तर प्रशिक्षण प्रदान करने कला प्रथम संस्थान बना। भारत के आजादी प्राप्त करने के बाद (1948 में) इस अस्पताल का नाम बदल कर अंतर–प्रांतीय मानसिक अस्पताल कर दिया गया जिसे 1952 में पुनः बदल कर मानसिक रोग अस्पताल कर दिया गया। न्यासी बोर्ड को 1954 में भंग कर दिया गया, अब इसका प्रबंधन स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है। 1950 में संस्थान में एक बाल मार्गदर्शन क्लीनिक शुरू किया गया था और 1975 में एक स्वतंत्र 50 बिस्तर वाला बाल मनश्चिकित्सा यूनिट शुरू किया गया था । वर्ष 1977 में अस्पताल को एक संस्थान का दर्जा प्रदान किया गया और बाद में इसे इसका वर्तमान नाम केंद्रीय मनश्चिकित्सा संस्थान दिया गया ।

इस संस्थान का कैम्पस 210 एकड़ के विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी वर्तमान क्षमता 643 बिस्तरों की है। कुछ बिस्तर ऐसे मरीजों के लिए आरक्षित हैं जो केंद्र सरकार, कुछ राज्य सरकारों, कोल इंडिया और रेलवे द्वारा प्रायोजित हैं। इसमें कुल 15 वार्ड (9 पुरुष वार्ड और 6 महिला वार्ड) हैं, एक आपातकालीन वार्ड तथा एक फेमिली यूनिट है। प्रत्येक वार्ड एक दूसरे वार्ड से उपयुक्त दूरी पर है और ये अच्छी तरह बनाए गए उद्यानों और उत्तम सड़कों से घिरे हुए हैं। मरीजों को बंद करके नहीं रखा जाता और वे अस्पताल के भीतर घूम सकते हैं। दवाओं से उपचार, इस उपचार का केवल एक भाग है जो विभिन्न प्रकार की साइकोथेरेपियों, व्यवहारथेरेपी, समूहथेरेपी उपागम भी अपनाया जाता है–रोगी वार्ड के संचालन में भाग लेते हैं और अन्य मरीजों की देखभाल में सहायता करते हैं। मानसिक स्वास्थ्यके साथ–साथ, शारीरिक फिटनेस पर भी बल दिया जाता है–रोगी अपने–आप को शारीरिक रूप से चुस्त–दुरूस्त रखने के लिए नियमित शारीरिक व्यायाम योग, आउटडोर और इनडोर खेलों में नियमित रूप से भाग लेते हैं। मरीजों की देखभाल, अनुसंधान तथा जनशक्ति विकास संस्थान के मुख्य उद्देश्य रहे हैं। यह संस्थान गंभीर रूप से बीमार मनोरोगियों के लिए सेवाएं प्रदान करता है, जिसमें वे रोगी शामिल हैं जिन्हें समवर्ती चिकित्सीय विकारों के लिए देखभाल की जरूरत है। यह यूनिट बाल एवं किशोर मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में रेजीडेंट डॉक्टरों और स्नातकोत्तर छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह सायकोटिक बच्चों, विकास संबंधी विकारग्रस्त बच्चों और मानसिक रूप से पिछड़े बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। माता–पिता से अपेक्षा की जाती है कि वे उपचार के दौरान अपने बच्चों के साथ रहें। 4738 बाल रोगी(1333 नए मामले और 3405 अनुवर्ती मामले) आउटपेशेंट डिपार्टमेंट (ओपीडी) में उपचार के लिए आए। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान इस श्रेणी के अंतर्गत कुल 116 मरीज दाखिल किए गए और 115 को अस्पताल से छुट्टी दी गई।

संस्थान में एक आधुनिक ''एस.एस. राजू सेंटर और एडिक्शन सायकियाट्री'' संस्थान है जिसमें शराब तथा नशीले द्रव्यों की समस्या से ग्रस्त व्यक्तियों के उपचार हेतु 60 मरीजों के लिए बिस्तरों की क्षमता है। यह शराब एवं नशीले द्रव्यों के क्षेत्र में जनशक्ति प्रशिक्षण तथा अनुसंधान के क्षेत्र में पूर्वी भारत का नोडल केंद्र भी है। नशामुक्ति क्लीनिक में ओपीडी में 662 रोगियों को देखा गया 450 रोगियों को नशा–मुक्ति केंद्र में भर्ती किया गया जबकि 427 को छुट्टी दे दी गई।

बहिरंग रोगी आधार पर देखे गए मुल मामले 43,677 थे (15,868 नए मामले और 27,809 अनुवर्ती मामले) इनमें सभी मनोचिकित्सा मामले (व्यस्क और बाल), स्टाफ ओपीडी, विस्तार क्लीनिक, चर्म क्लीनिक एवं मनो–सामाजिक ओपीडी मामले शामिल हैं, कुल 8864 नए मनोचिकित्सा मामले देखे गए (6105 पुरुष एवं 2759 महिला) जबकि इस अवधि के दौरान 26527 मनोचिकित्सा अनुवर्ती मामले (19609 पुरुष एवं 6918 महिला) देखे गए।

संस्थान विस्तार क्लीनिक संचालित करता है जिनमें पश्चिमी बोकारो, हजारीबाग, चंदन क्यारी, बोकारो स्थित सामान्य मनोचिकित्सा क्लीनिक, स्कूल मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, दीपशिखा क्लीनिक एवं दीपशिखा रांची स्थित एपिलेप्सी क्लीनिक शामिल हैं। इन विस्तार क्लीनिकों पर शिक्षकों एवं माता–पिता के साथ नियमित शिविर, जागरूकता कार्यक्रम कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं। आउटरीच कार्यक्रम के माध्यम से दो स्कूलों में स्कूल मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। विस्तार क्लीनिकों में 1194 मामले देखे गए।

यह संस्थान अनेक विशेष क्लीनिक संचालित करता हैः क्रोनिक सिजोफ्रेनिया क्लीनिक, चर्म एवं यौन क्लीनिक, तंत्रिका विज्ञान क्लीनिक, निद्रा क्लीनिक, एपिलेप्सी क्लीनिक, स्टाफ ओपीडी, सिरदर्द क्लीनिक, नशामुक्ति क्लीनिक, बाल दिशा–निर्देश क्लीनिक, स्वभाव क्लीनिक एवं औब्सेसिव–कम्पल्सिव डिसऑर्डर (ओपीडी) क्लीनिक। इन विशेष क्लीनिकों में कुल 12466 मरीज आए।

संस्थान का चिकित्सा मनोविज्ञान विभाग भारत का सबसे पुराना स्वतंत्र चिकित्सा मनोविज्ञान विभाग है। 1962 में चिकित्सा मनोविज्ञान में एक शिक्षण पाठ्यक्रम–चिकित्सा एवं सामाजिक मनोविज्ञान में डिप्लोमा शुरू किया गया था (यह पाठ्यक्रम अब चिकित्सा मनोविज्ञान में एम. फिल के नाम से जाना जाता है)। चिकित्सा मनोविज्ञानमें पी.एच.डी. पाठ्यक्रम 1972 में शुरू किया गया था। वर्तमान में एम.फिल. (चिकित्सा मनोविज्ञान)में 12 सीटें तथा पीएच.डी. (चिकित्सा मनोविज्ञान) में 4 सीटें हैं। विभागीय संकाय में 6 सहायक प्रोफेसर, 1 चिकित्सा मनोविज्ञानी, 2 सहायक मनोविज्ञानी और 1 प्रयोगशाला सहायक हैं। चिकित्सा मनोविज्ञान प्रयोगशाला (देश की पहली), में विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों, रोटिंग स्केलों उपकरणों तथा उपस्करों की सुविधा उपलब्ध है जो रोगियों के निदान एवं मूल्यांकन में सहायक होते हैं। यह विभाग मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में आकादमिक एवं शोध कार्यकलापों में सक्रिय रूप से लगा हुआ है।

विभाग का एक पृथक बहिरंग रोगी यूनिट है जिसे मनो–सामाजिक इकाई (पीएसयू) कहा जाता है। पीएसयू में या तो संस्थान के सामान्य ओपीडी से रेफर किए गए मामले आते हैं या कोई व्यक्ति सीधे ही पीएसयू में आ सकता है और अपनी मनोविज्ञानिक समस्याओं के लिए मदद प्राप्त कर सकता है। पीएसयू उन रोगियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है जो बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्याओं से ग्रस्त हैं और जिनका प्रबंधन परामर्श, व्यवहार थेरेपी, बायोफीडबैक, रिलैक्सेशन थेरेपी आदि जैसी मनोवैज्ञानिक पद्धतियों से अनन्य रूप से किया जा सके।

मनोचिकित्सा सामाजिक कार्य विभाग 1950 के दशक में अस्तित्व में आया, यद्यपि पारिवारिक मनोचिकित्सा का कार्य 1922 से किया जा रहा था। संस्थान ने वर्ष 1970 में मनोचिकित्सा सामाजिक कार्य में डिप्लोमा (डीपीएसडब्ल्यू) पाठ्यक्रम शुरू किया था। 1985 में इस पाठ्यक्रम को मनोचिकित्सा सामाजिक कार्य में एम.फिल.के रूप में स्तरोन्नत कर दिया गया। वर्तमान में, एम.फिल प्रशिक्षुओं के लिए 12 सीटें उपलब्ध हैं। यह विभाग मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में अकादमिक एवं शोध कार्यकलापों में सक्रिय रूप से लगा हुआ है।

नर्सिंग सेवा विभाग, भर्ती मरीजों के साथ–साथ बहिरंग रोगियों को गुणवत्तापरक नर्सिंग सेवा प्रदान करता है । संस्थान का नर्सिंग शिक्षा अनुभाग पर नर्सों को मनोचिकित्सा नर्सिंग में डिप्लोमा (डीपीएन) प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करे तथा विजिटिंग नर्सों को क्लीनिक नर्सिंग अनुभव प्रदान करने की जिम्मेदारी है। प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विजिटिंग नर्सों की संख्या निम्नवत् हैः–

- मनोचिकित्सा नर्सिंग में एम.एससी – 21
- सामान्य नर्सिंग एवं मिदवाइफरी (जीएनएम)/एएनएम –381
- बी.एससी. नर्सिंग – 137

संस्थान साथ ही भर्ती किए गए ऐसे व्यस्कों, बच्चों और किशोरों को ऑक्यूपेशनल थेरेपी (ओटी) प्रदान करता है जो या तो गंभीर मनोचिकित्सीय बीमारी से अथवा गंभीर और चिरस्थायी मानसिक स्वास्थ्य समस्या से ग्रस्त हों। भर्ती किए गए रोगी मध्याह्न भोजन के पूर्व एवं बाद के सत्रों में प्रतिदिन ऑक्यूपेशनल थेरेपी के लिए उपस्थित होते हैं। उन्हें उनकी योग्यताओं एवं अमिरुचियों के अनुसार विभिन्न सैक्श्नों में कार्य का आवंटन किया जाता है। लगभग 50 पुरुष रोगी एवं 35 महिला रोगी प्रतिदिन ऑक्युपेशनल थेरेपी के लिए उपस्थित होते हैं।इस विभाग में एक सुसज्जित एवं आधुनिक फिजियोथेरेपी यूनिट भी है। ऑक्यूपेशनल थेरेपी विभाग मनोचिकित्सा रेजीडेंटों, चिकित्सा मनोवैज्ञानिकों मनोचिकित्सा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं तथा मनोचिकित्सा नर्सों जैसे मेडिकल एवं गैर–मेडिकल प्रोफेशनलों को ऑक्यूपेशनल थेरेपी एवं पुनर्वास के विभिन्न पहलुओं के संबंध में प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान केंद्र की स्थापना आरंभ में 1948 में हुई थी, तब इसे इलैक्ट्रो इनसिफलोग्राफी (ईईजी) विभाग के रूप में जाना जाता था। ईईजी विभाग में आरंभ में एक 6 चैनल की और फिर एक 8 चैनल की इलैक्ट्रो इनसिफलोग्राफ मशीन थी। अब इसे संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान केंद्र कहा जाता है। वर्तमान में केंद्र में दो अनुभाग हैं– एक चिकित्सा अनुभाग और एक अनुसंधान अनुभाग । चिकित्सा अनुभाग में एक 21 चैनल का पेपर इलैक्ट्रो इनसिफलोग्राफ, एक 32 चैनल का मात्रात्मक इनसिफलोग्राफ और एक 40 चैनल का वीडियो इलैक्ट्रो इनसिफलोग्राम तथा इलैक्ट्रोमायोग्राम (ईएमजी), नर्व कंडक्शन वेलोसिटी (एनसीवी), ब्रेनस्टेमऑसियोटरी इवोक्ड रिस्पोंस (वीएईआर) तथा गैल्वेनिक स्किन रिस्पोंस (जीएसआर) की रिकॉर्डिंग के लिए उपकरण उपलब्ध हैं। अनुसंधान अनुभाग में डेंस अरे ईईजी अधिग्रहण प्रणालियों (64,128 और 192 चैनल), इवोक्ड रिस्पोंस पोटेंशियल (ईआरपी) अधिग्रहण यूनिट (40 चैनल), एक 40 चैनल का पॉलीसोमनोग्राफी (पीएसजी) यूनिट और एक दोहराव ट्रांसक्रेनियल मैग्नेटिक स्टिम्युलेशन (आरटीएमएस) यूनिट उपलब्ध इलैक्ट्रिकल सोर्स एनालिसिस (बीईएसए) आदि जैसे उन्नत संकेत प्रोफेसिंग सॉफ्टवेयर अधिप्राप्त किए हैं।

पैथेलॉजी एवं जैवरसायन विभाग में क्लीनिकल पैथेलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी, बैक्टीरियोलॉजी, बायोकैमिस्ट्री, सीरोलोजी एवं इम्यूनोलॉजी के परीक्षण करने के साधन उपलब्ध हैं। यह केंद्र क्लीनिकल एवं अनुसंधान, दोनों प्रयोजनों परीक्षण करता है। कुल 108215 जांच की गई थीं।

रांची शहर में प्रथम एक्स–रे मशीन इसी संस्थान में लगाई गई थी। इस विभाग में 16 स्लाइस सीटी स्कैन,300 एमए डिजिटल एक्स–रे, क्रेनियल डॉप्लर तथा अल्ट्रासाउंड मशीन है। एक बहुत आधुनिक विकिरण विज्ञान विभाग है जिसमें जटिल प्रमस्तिष्कीय एंजियोग्राफी, न्यूरोएनसिफलोग्राफी, एयर वेंट्रोक्युलोग्राफी, मायेलोग्राफी आदि के लिए सुविधाएं हैं। कुल 2035 जांच की गई थीं।

16–स्लाईस होल बॉडी सीटी स्कैनर में सीटी स्कैन कराते हुए एक रोगी

संस्थान की ओपीडी में 24 घंटे आपातकालीन सेवा उपलब्ध है। आपातकालीन वार्ड की बिस्तर क्षमता16 मरीज (8 पुरुष बिस्तर और 8 महिला बिस्तर) की है। कुल 2059 मरीजों ने आपातकालीन सेवाएं प्राप्त की।

संस्थान वर्ष 2001 से एक टोल–फ्री टेलीफोन परामर्श सेवा सीआईपी हैल्पलाइन संचालित कर रहा है। संस्थान ई–परामर्श सेवा भी प्रदान करता है। रिपोर्ताधीन अवधि के दौरन, 574 सामान्य हैल्पलाइन कॉल, 09 आत्महत्या हैल्पलाइन कॉल तथा 108 ई–मेल प्राप्त हुईं और उन पर कार्रवाई की गई।

वर्ष 2014 में उपलब्धियां

- 210 बिस्तर वाला पुरुष हॉस्टल एवं विवाहित रेजीडेंटों के लिए 15 फ्लैट शामिल किए गए और आबंटित किए गए।
- संस्थान में भूमिगत विद्युत केबलों के संस्थापन एवं उद्यानों का विकास तेजी से किया जा रहा है।
- 302 मुद्रित पत्रिकाएं, 655 ई–पत्रिकाएं मंगवाई जाई हैं और पुस्तकों की खरीद का कार्य प्रगति पर है।
- पुस्तकालय के ई–बुक्स डाटाबेस में, उक्त अवधि के दौरान, 83 नई ई–बुक्स शामिल की गई हैं।
- पुस्तकालय के रिप्रोग्राफिक अनुभाग में रंगीन फोटोकॉपीयर–सह–स्कैनर–सह–प्रिंटर शामिल किया गया है।
- पैथेलॉजी एवं बायोकैमिस्ट्री विभाग में एलिटो–मैच–हीमेटोलॉजी
- एनालाइज एवं केमिलुसेंट एनालाइजर लगाए गए हैं। सीआईपी कैम्पस के लिए मास्टर प्लान और नए अस्पताल के लिए आर्किटेक्चरल ड्रांईग स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय/स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय को अनुमोदनार्थ प्रस्तुत की गई है।
- रोगी देखभाल सेवाओं के लिए आरटीएमएस हेतु न्यूरोनेवीगेशनल सिस्टम लगाया गया है।
- '' बर्डन ऑफ सिजोफ्रेनियाः स्टिग्मा एंड चैलेंजेस'' विषय पर दिनांक 17 मई 2014 (स्थापना दिवस) को सीएमई आयोजित किया गया।
- मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन हेतु सतत् कार्यक्रमों के तहत 21 से 23 जुलाई 2014 तक '' आत्महत्याः शीघ्र पहचान एवं रोकथाम'' विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई ।
- 21 से 25 जुलाई 2014 तक नर्सिंग स्टाफ एवं वार्ड अटेंडेंटों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- 15.08.2014 को बाल एवं किशोर मनोचिकित्सा विभाग में प्ले थेरेपी एवं मल्टीसेंसरी स्टिमुलेशन कक्ष शामिल किए गए।
- केंद्रीय मनोचिकित्सा संस्थान में 19 अगस्त से 28 अगस्त 2014 तक चतुर्थ ''दुर्व्यसन विकारों के संबंध में डॉक्टरों के लिए राष्ट्रीय क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें भाग लेने वाले पश्चिम बंगाल एवं बिहार राज्यों के सरकारी डॉक्टर थे।
- ''स्कूल जाने वाले बच्चों में मनोवैज्ञानिक समस्याओं की शीघ्र पहचान एवं रोकथाम'' विषय पर स्कूल शिक्षकों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 22 अगस्त 2014 को किया गया था। इस कार्यशाला में 148 शिक्षकों ने भाग लिया।
- छात्रों के लिए दिनांक 28 अगस्त 2014 को '' मानसिक स्वास्थ्य एवं खुशहाली'' विषयक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 150 छात्रों ने भाग लिया।
- इस वर्ष चंदन क्यारी, बोकारो में एक नया विस्तार क्लीनिक शामिल किया गया ।
- संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा 1.9. 2014 से 15.9.2014 तक ''हिंदी पखवाड़ा'' मनाया गया।
- स्टाफ नर्स एवं वार्ड अटेंडेंटों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम 22 से 26 सितंबर, 2014 तक आयोजित किया गया।
- 2 अक्तूबर 2014 से स्वच्छ भारत अभियान (कैम्पेन क्लीन इंडिया) शुरू किया गया।
- 10 अक्तूबर 2014 को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस, विषयवस्तुः लिविंग विद सिजोफ्रेनिया। ''सिजोफ्रेनिया की शीघ्र पहचान एवं उपचार'' विषय पर देखभाल कर्त्ताओं तथा रोगियों के लिए ओपीडी में जागरूकता कार्यक्रम (लगभग 250 प्रतिभागी)।

- ओडिसा, बिहार, पश्चिम बंगाल एवं झारखंड के डॉक्टरों एवं नर्सों के लिए 23 से 25 जून 2014 तक आरटीटीसी, सीआईपी, सूची में पुनश्चर्या प्रशिक्षण।
- अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 21 शोध–पत्र प्रकाशित हुए।
- अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सम्मेलनों में 12 शोध–पत्र प्रस्तुत किए गए।
- भारतीय मनश्चिकित्सा सोसायटी के वार्षिक सम्मेलन में दो पदक जीते थे।
- भारतीय मनश्चिकित्सा सोसायटी, झारखंड राज्य शाखा के वार्षिक सम्मेलन में एक पदक जीता।

15.28 केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (सीआईई), कसौली

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, की स्थापना 3 मई, 1905 को पूर्वोत्तर भारत के लिए पाश्चयर संस्थान के रूप में हुई थी । यह भारत के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय का अधीनस्थ कार्यालय है। वर्तमान में यह संस्थान (i) बैक्टिरियल और आयॅरन वैकसीन तथा सीरा का बड़े पैमाने पर उत्पादन (ii) प्रतिरोधकता विज्ञान और वैक्सीनोलॉजी तथा सीरा का बड़े पैमाने पर उत्पादन (iii) शिक्षण और प्रशिक्षण (iv) वैकसीन और सीरा का गुणवत्ता नियंत्रण में संलग्न है।

कर्मचारियों की संख्याः सीआरई, कसौली में 725 संस्वीकृत पद हैं । समूह क, ख एवं ग के संस्वीकृत पद क्रमशः 51, 86 और 588 हैं । निवर्तमान कर्मचारियों की कुल संख्या 516 है। निवर्तमान क, ख और ग के क्रमशः 15, 74 और 401 कर्मचारी हैं।

वर्तमान वर्ष के दौरान कार्य निष्पादन

मौजूदा सुविधा केन्द्रों में डिप्थीरिया – पेरूटुसिस टिटनेस (डीपीटी) समूह के टीकों का विनिर्माण आरंभ कर दिया गया है।

आरम्भ किए गए बैच, विनिर्मित मात्रा, प्राप्त और जारी की गई मात्रा का ब्यौरा निम्नानुसार हैः–

वर्तमान वर्ष के दौरान उपलब्धियां

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने 49.83 करोड रूपये की लागत से सीआरआई, कसौली के डीपीटी सुविधा केन्द्र को सीजीएमपी के अनुरूप बनाने हेतु उसके पुनर्निर्माण और उन्नयन के लिए मैसर्स एचएलएल को लगाया है। मैसर्स एचएलएल लाईफ केयर लि. द्वारा सीआरआई, कसौली को डीपीटी सुविधा केन्द्र के सीजीएमपी के अनुरूप अद्यतन कर दिया गया है। टीटी वैकसीन का उत्पादन आरम्भ हो गया है।

टीका और एंटी सीरा का उत्पादन, मांग और आपूर्ति

(करोड़ रूपए में)

क्र स.	टीका एवं एंटी सीरा	अधिष्ठापित	उत्पादन	% उत्पादन	मांग	आपूर्ति	% आपूर्ति
1	डीपीटी	255	17.05	16.35	81.7	10.7	13.097
2	डीटी	200	0	0.00			
3	टीटी	300	34.83	47.89	12.6	10.5	83.333
4.1	वाईएफवी (सीआरआईके)	0.35		0.00			
4.2	वाईएफवी (आईएमपीओआर)		1.28	2.91	0.57	0.61	107.018
							(मात्रा लाख वायल में)
5	एआरएस	2.5	0.16	5.82	0.33	0.24	72.727
6	एएसवीएस	3	0.02	0.67	0.2	0.021	10.500
7	डीएटीसी	0.8	0.0398	4.98	0.05	0.022	44.000
8	एनएचएस	0.004	0	0.00	0.0041	0.0001	2.439
9	डीआर	2.75	0.44	16.00	0.5	0.48	96.000

15.29 वल्लभभाई पटेल चेस्ट संस्थान (वीपीसीआई), दिल्ली

वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीच्यूट (वीपीसीआई) एक अनोखा पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान चेस्ट रोग और संबंधित विज्ञान के अध्ययन के लिए समर्पित है।

कार्यशाला / सेमिनार / सम्मेलन / सीएमई कार्यक्रम / पब्लिक लेक्चर आदि

1. ''सीओपीडी में पुलमोनरी रिहेबलिटेशन'' 4 अप्रैल, 2014 को वी.पी. चेस्ट संस्थान द्वारा आयोजित सिम्पोसियम।
2. सोलहवां प्रो. रमन विश्वनाथन वक्तव्य प्रो. शंकर, ऐमीरीटस प्रो. मेडिस, राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्विद्यालय द्वारा 65 वें स्थापना दिवस पर दिनांक 6 अप्रैल,2014 को आयोजित किया गया ।
3. ''पर्सनालाईज़ड थेरिप्यूटिक्स में लंग कैंसर – द पाथ अहेड'' 16 अप्रैल, 2014 को वीपीचेस्ट संस्थान द्वारा आयोजित किया।
4. सामान्य मेडिसिन एवं रेस्पीरेटरी मेडिसिन के (एमडी / डीएमपी / डीएम / डीटीसीडी) स्नात्तकोत्तर विद्यार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम दिनांक 17 अप्रैल, 2014, को आयोजित किया गया ।
5. अंतर्राष्ट्रीय क्लीनकलट्रायल दिवस 19 मई, 2014 को वीपीसीआई में आयोजित किया गया ।इसे वीपीसीआई क्लीनकल अनुसंधान के लिए भारतीय समिति एवं भारतीय फार्माकोलोजिकल सोसाईटी द्वारा आयोजित किया गया।
6. विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून, 2014 को मनाया गया।
7. ''जीवन शैली को बदले – धूम्रपान न करें'' विषय पर जन जागरूकता कार्यक्रम, विश्व तम्बाकू निषेध दिवस 2014 के अवसर पर तम्बाकू कंट्रोल सोसाईटी के सहयोग से वीपी चेस्ट संस्थान द्वारा दिनांक 6 जून, 2014 को बनाया गया ।
8. एनएससीएलसी पर अद्यतनता 9 जुलाई, 2014 को आयोजित किया गया।
9. फुफुस रोगों में मोलीक्यूलर डाईगोनोसिस के उपकरण पर सीएमई कार्यक्रम दिनांक 11 जुलाई, 2014 को वीपीसीआई में हुआ।
10. क्रोनिक ओबस्ट्रकटिव पुलमोनरी रोग (सीओपीडी) वीपी चेस्ट संस्थान द्वारा तम्बाकू कंट्रोल सोसाईटी के सहयोग से दिनांक 30 जुलाई, 2014 को आयोजित किया गया ।
11. आरएनटीसीपी पर आधुनिकीकरण, वीपी चेस्ट संस्थान में दिनांक 13 अगस्त, 2014 को हुआ।
12. ब्रोंकियल अस्थमा पर कार्यशाला, वीपीचेस्ट संस्थान द्वारा तम्बाकू कंट्रोल सोसाईटी के सहयोग से दिनांक 13–14 सितम्बर, 2014 को आयोजित की गई।
13. दसवां प्रो. अवतार सिंह पेंटल स्मृति व्याख्यान प्रो. फीम, पूर्व प्रो. एवं अध्यक्ष, शरीर क्रिया विज्ञान विभाग, वीसीआई तथा ऐडजंक्ट अनुसंधान प्रो. शरीर क्रिया विज्ञान विभाग, हमदर्द चिकित्सा विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 24 सितम्बर, 2014 को दिया गया ।
14. ब्रोंनियल अस्थमा पर कार्यशाला,दिनांक 18–19 अक्टूबर, 2014 को वीपीसीआई के आयोजित की गई।
15. विज्ञान एवं जन स्वास्थ्य पर अंतक्रियात्मक व्याख्यान वीपीसीआई में दौलतराम कालेज, दिल्ली विश्विद्यालय के साथ मिलकर दिनांक 27 अक्तूबर, 2014 को दिया गया ।
16. ईनफलूऐंज़ा नियंत्रण और महामारी विज्ञान पर कार्यशाला एपीएसीआई के सहयोग से वल्लभभाई पटेल चेस्ट संस्थान में दिनांक 7–8 नवम्बर, 2014 को आयोजित की गई।
17. स्वास्थ्य और धूम्रपान विषय पर जन–व्याख्यान दिनांक 13 नवम्बर, 2014 को वीपी चेस्ट संस्थान द्वारा आयोजित किया गया ।
18. प्रतिरक्षी विज्ञान तथा एलर्जी पर शैक्षिक संगोष्ठी, वीपीसीआई द्वारा अमेरिकन कालेज ऑफ अस्थमा, इम्यूनोलॉजी एवं एलर्जी एवं अमेरिकल ऐसोसिएशन

ऑफ एलर्जीस्टूस एण्ड इम्यूनोलोजिस्टस ऑफ इंडियन ओरिजन, यूएसएतथा तम्बाकू नियंत्रण सोसाईटी, भारत के सहयोग से दिनांक 18 नवम्बर, 2014 को आयोजित किया गया।

वर्ष 2013–14 और 2014–15 के दौरान अनुमोदित बजट

(करोड़ रुपए में)

वर्ष	योजनागत	योजनेत्तर
2013–14	16.94	25.90
2014	16.90	26.50

स्नातकोत्तर अध्यापन एवं प्रशिक्षण

इस समय 6 डीएम विद्यार्थियों (आदमिक सत्र 2012–15, 2013– 16 तथा 2014–17 प्रत्येक सत्र के लिए दो) 22 एमडी विद्यार्थियों (अकादमिक सत्र 2012–15 के लिए 05, 2013–16 के अकादमिक सत्र के लिए 09 तथा अकादमिक सत्र 2014–17 के लिए 08) एवं 10 डीटीसीडी विद्यार्थी (अकादमिक सत्र 2013–15 के लिए 05 तथा 2014–16 के अकादमिक सत्र के लिए 05) शिक्षा ले रहे हैं । इसके अतिरिक्त 29 विद्यार्थियों ने 2013 के दौरान तथा 16 विद्यार्थियों ने 2014–15 (अक्तूबर, 2014 तक) संस्थान के विभिन्न विभागों में प्रशिक्षण लिया । साथ ही 20 शोधार्थी पीएचडी कार्यक्रम में अध्ययनरत हैं।

रोगी प्रबन्धन सेवाएं

विश्वनाथन चेस्ट अस्पताल (वीसीएच) संस्थान का एक अस्पताल विंग है। इसके अलावा संस्थान के निम्नलिखित विभाग / क्लीनिक / केन्द्र / सुविधाएं हैं:–

क. बहिरंगरोगी विभाग

ख. 128 बिस्तरों की भर्ती सुविधा

ग. 24 घंटे श्वसन संबंधी आपात सुविधाएं

घ. 8 बिस्तरों वाली गहन सेवा इकाई (7 वेन्टीलेटर सहित)

ङ. स्लीप लेबोरेटरी

च. नेशनल सेंटर ऑफ रेस्पियरटेरी ऐलर्जी, अस्थमा तथा ईम्यूनोलॉजी (एनसीआरएआई)

छ. तम्बाकू विरीत क्लीनिक

ज. राष्ट्रीय योग थेरेपी केन्द्र

झ. हृद – फुफफुसीय पुनर्वास क्लीनिक

ञ. दृश्य अभिलेख एवं संचार व्यवस्था (पीएसीएस)

ट. ऑक्सीजन प्लांट

ठ. 64 स्लाईस सीटी स्कैनर

अवार्ड

(i) प्रो. राजेन्द्र प्रसाद, निदेशक, वल्लभभाई पटेल चेस्ट संस्थान को विज्ञान गौरव अवार्ड, विज्ञान एवं तकनीकी परिषद्, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए दिनांक 19 जून, 2014 को दिया गया ।

(ii) प्रो. अशोक शाह, श्वसन मेडिसन विभाग, वीपीसीआई को राष्ट्रीय मेडिकलसाइंस अकादमी (भारत) की अवलोकनावृति की गई ।

(iii) श्री विनोद कुमार सिंह तथा सुश्री रूपाली राजपूत, पीएचडी, स्कॉलर, विषाणु विज्ञान विभाग, वीपीसीआई को रिगा, लातविया में हुई । पांचवी ईएसडब्ल्यूआई ईनफलूऐंजा कॉफ्रेस में शोध कार्य को प्रस्तुत करने पर ईएसडब्ल्यूआई द्वारा युवा वैज्ञानिक अवार्ड प्रदान किया गया ।

(iv) श्री दिब्य रंजन पति, एसआरएफ को 19 अगस्त, 2014 को ''मानव इंफ्लुएंजा विषाणु के खिलाफ छोटे हस्तक्षेपक आरएनए और माइक्रो आरएनए की नैनो–थेराप्यूटिक प्रयोज्यता'' के संबंध में अनुसंधान करने के लिए भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा ''वरिष्ठ अनुसंधान अध्येतावृत्ति'' प्रदान की गई।

(v) प्रोफेसर एस.के. बंसल, जैव रसायन विभाग को इंडियन कॉलेज ऑफ एलर्जी एंड एप्लाइड इम्युनोलॉजी की अध्येतावृत्ति प्रदान की गई।

(vi) प्रोफेसर एस.के. बंसल, जैव रसायन विभाग को अनुसंधान उत्कृष्टता विश्वविद्यालय केंद्र, फरीदकोट, पंजाब द्वारा आयोजित 'मेडिसिन एंड हर्बल औषध विकास जैव प्रौद्योगिकी' के संबंध में भारतीय जैव

प्रौद्योगिकी सोसाइटी के सातवें सम्मलेन में विज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, 2014 को पुरस्कार दिया गया।

(vii) डॉ. अनुराधा चौधरी, सहायक प्रोफेसर, चिकित्सा कवक विज्ञान विभाग को अमेरिकी संक्रामक रोग सोसायटी वृत्ति प्रदान की गई है।

संस्थान के संकाय सदस्यों द्वारा प्राधिकृत अनुसंधानात्मक कार्यकलाप/प्रस्तुत किए गए दस्तावेज निम्नलिखित थेः–

(i) एलर्जिक रिनाइटिस प्रदर्शित करने वाले रोगियों में रात्रिकालीन निद्रा में खलल, दिन में नींद आना और निद्रा विशेष जीवन गुणवत्ता के संबंध में नैजल पोलिपोसिस प्रभाव का अध्ययन करना;

(ii) चिरकालिक अवरुद्ध पलमोनरी रोग में उप मेक्सिमल अभ्यास के दौरान कार्डियोस्वसनी अनुक्रिया और गैट लक्षणों में फिनोटिपिकल विभिन्नताएं;

(iii) चिरकालिक अवरुद्ध पलमोनरी रोग से ग्रस्त रोगियों के लिए पलमोनरी पुनर्वास के संबंध में शेष प्रशिक्षण की अतिरिक्तताओं का प्रभाव;

(iv) चिरकालिक अवरुद्ध पलमोनरी रोग और जठरांत्रिय फेफड़े रोग में 6 मिनट के पैदल टेस्ट के दौरान हृद श्वसनी अनुक्रिया का तुलनात्मक मूल्यांकन;

(v) ब्लोमाइसिन इंडियूज्ड पलमोनरी फाइब्रोसिस के प्रोग्रेसन में टॉल जैसे रिसेप्टर–प्ट की भूमिका;

(vi) स्थिरोसाइट कोशिका प्रोटिन की रूपरेखा के संबंध में अध्ययन तथा ब्रोंकियल अस्थमा में रक्त के ऑक्सीडेंट और एंटी–ऑक्सीडेंट की स्थिति;

(vii) स्थिरोसाइट कोशिका प्रोटिनः प्रोटियोमिक्स की अभिव्यक्ति और ब्रोंकियल अस्थमा में उसका महत्व;

(viii) एफएलपी जीनोटाइपिंग, इनविट्रों एंटी–फंगल संवेदनशीलता और तृतीयक परिचर्या वक्ष अस्पताल, दिल्ली से पृथक किए गए 126 नैदानिक एस्परजीलस टेरस स्पीशिज कॉम्पलेक्स के खिलाफ एंफोटेरिसिन–बी, वोरिकोनेजोल और एनिड्यूलाफंगीन के एंटी फंगल यौगिकों का मूल्याकंन;

(ix) माइक्रो सेटेलाइट टाइपिंग क्रिप्टोकोकोसिस से ग्रस्त भारतीय एचआईवी पॉजिटिव रोगियों में क्रिप्टोकोकोस नियोफोरान्स की बहुल जीनोटाइपो वाले मिश्रित संक्रमण दर्शाती है;

(x) फिनोटाइपिंग में कमियां, केनडिडा ऑरिश का निर्धारण और सीएलएसआई–बीएमडी और वीआईटीईके2 (ओरल प्रजेन्टेशन) का इस्तेमाल करके इन्विट्रो संवेदनशीलता की तुलना;

(xi) 65 वर्ष से अधिक आयु के वयस्कों के लिए इंफलुएंजा वैक्सीनेशनों के उपरांत सुरक्षा की एंटीबॉडी अनुक्रिया और अवधि की रुपरेखा;

(xii) विश्वमारी इंफलुएंजा एएच1एन1 (2009) विषाणु से संक्रमित कोशिकाओं द्वारा प्रदत्त हैटरोसब्टाइपिंग प्रतिरक्षा का अध्ययन करने के लिए;

(xiii) इंफलुएंजा ए विषाणु के प्रति चिकित्सीय पादप के रस के एंटीवायरल कार्यकलाप का मूल्यांकन;

(xiv) फेफड़ों के कैंसर में पी–21 के एक्सपरेशन के संबंध में इलाजिक एसिड का प्रभाव (पोस्टर प्रजेन्टेशन);

(xv) फेफड़े के कैंसर में अपोपटोसिस के संबंध में पोलिफिनोलिक एसिटेट का प्रभाव(पोस्टर प्रजेन्टेशन);

(xvi) फेफड़ों के ट्यूमोरीजिनिसिस में उत्प्रेरित जिनों में पोलिफिनोलिक एसिटेट द्वारा कालरेटिकुलिन ट्रांसएसिटाइलेस मिडिएटिड हिस्टोन हाइपर एसिटाइलेसन इंडियूस्ड एपीजेनेटिक मॉड्यूलेशन की भूमिका की जांच करना।

प्रकाशन

- मिडिल लोब सिंड्रोमः ए रेअर प्रजेंटेशन ऑफ एलर्जिक ब्रोंकोपल्मोनरी एस्परगिलोसिस– प्रो. अशोक साह, डिपाटमेंट ऑफ रेस्पायरेट्री मेडिसिन, वीपीसीआई एंड अदर्स
- इमीडिएट हाइरपसेंसीटिवीटी रिएक्शन विद मैंगो– प्रो. अशोक साह, डिपार्टमेंट ऑफ रेस्पायरेट्री मेडिसिन, वीपीसीआई एवं अन्य

- स्पोनटेनीअस रिजोल्यूशन ऑफ पल्मोनरी इन्फ्लेमेट्री सिडोटूमोर– प्रो. अशोक साह, डिपार्टमेंट ऑफ रेस्पायरेट्री मेडिसिन, वीपीसीआई एवं अन्य
- अबनोमर्ल हार्ट रेट रिकवरी एंड क्रोनोट्रोपिक इनकम्पीटेंस ऑन एक्सरसाइज इन क्रोनिक आब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिसीज– डॉ. विशाल बंसल, एसिसटैंट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ रेस्पायरेट्री मेडिसिन, वीपीसीआई एवं अन्य
- प्रोटेक्टिव इम्युनिटी बेस्ड ऑन दि कन्जर्व्ड हेमाग्लूटिनिन स्टाक डोमेन एंड इट्स प्रोस्पेक्टस होर यूनिवर्सल इंफ्लुएंजा वैक्सीन डेवलपमेंट– डॉ. मधु खन्ना, एसोसिएट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ वायरोलॉजी, वीपीसीआई एवं अन्य;
- गेने साइलेंसिंगः ए थेराप्यूटिक एप्रोच टू कंबट इंफ्लुएंजा वायरस इंफेक्शन्स– डॉ. मधु खन्ना, एसोसिएट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ वायरोलॉजी, वीपीसीआई एवं अन्य;
- इंफ्लुएंजा वायरस इंड्यूस्ड साइटोकिन रिस्पोंसेंजः एन इवेल्यूएशन ऑफ होस्ट– पैथोगेन एसोसिएशन– – डॉ. मधु खन्ना, एसोसिएट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ वायरोलॉजी, वीपीसीआई एवं अन्य;
- फेज–डिस्प्ले टैक्नोलॉजी फोर दि प्रोडक्शन ऑफ रिकांबिनेंट मोनोक्लोनल एंटीबॉडीज– – डॉ. मधु खन्ना, एसोसिएट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ वायरोलॉजी, वीपीसीआई एवं अन्य;
- न्यू क्लोनल स्ट्रेन ऑफ कैंडिडा औरिस, दिल्ली, इंडिया– डॉ. अनुराधा चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर,डिपार्टमेंट ऑफ मेडिकल माइकोलॉजी, वीपीसीआई एवं अन्य;
- इमरजेंस ऑफ एजोल रेजिजडेंट एस्परगिलस फ्यूमीगेटस स्ट्रेन्स ड्यू टू एग्रीकल्चर्ल एजोल यूज क्रिएट्स एन इन्क्रीजिंग थ्रीट अू ह्यूमन हैल्थ– डॉ. अनुराधा चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर,डिपार्टमेंट ऑफ मेडिकल माइकोलॉजी, वीपीसीआई एवं अन्य;
- एलर्जिक ब्रोंकोपल्मोनरी माइकोसिस ड्यू टू फंगी अदर दैन एस्परगिलसः ए ग्लोबल ओवरव्यू– डॉ. अनुराधा चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर,डिपार्टमेंट ऑफ मेडिकल माइकोलॉजी, वीपीसीआई एवं अन्य;
- यह संस्थान त्रैमासिक पत्रिका, इंडियन जर्नल ऑफ चेस्ट डिसीज एंड एलाइड साइंसेज प्रकाशित करता रहा है और वक्ष संबंधी रोगों और संबद्ध विज्ञान में हालिया प्रगतियों के प्रचार–प्रसार में अपने प्रयास जारी रखे हुए है। यह बेवसाइट http://www.vpci.org.in और
- वर्ष में दो बार पीवीसीआई न्यूजलैटर

अवसंरचना विकास

(i) वर्ष 2013–14 और 2014–15 के दौरान इस संस्थान ने 12वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत यथा लक्षित स्कीमों की उपलब्धियों के लिए अपने कार्यकलाप जारी रखे हुए है। संस्थान के उन्नयन और आधुनिकीकरण के सतत प्रयासों के भाग के रूप में रोगी परिचर्या और निदान तथा अनुसंधान और विकास से संबंधित अनेक उपस्करों का प्रापण किया गया था।

(ii) स्टाफ के कल्याण के लिए वीपीसीआई में जिम और बैडमिण्टन की सुविधाएं शुरू की गई हैं

(iii) एनेरोबिक प्रयोगशाला का उद्घाटन किया जा चुका है और इसे शुरू किया जा चुका है।

अस्पताल की सांख्यिकी पर आधारित प्रपत्र

	संकेतक	2014.15 नवंबर, 2014
कुल दाखिले (अंतरंग रोगी और बहिरंग रोगी के दाखिले सहित)		
	पुरूष	22429
	महिला	18361
	बच्चे	4632
	कुल	**45422**
	अंतरंग उपस्थिति	
	पुरूष	913
	महिला	600
	बच्चे	08
	कुल	**1521**

15.30 केंद्रीय स्वास्थ्य आसूचना ब्यूरो (सीबीएचआई)

केंद्रीय स्वास्थ्य आसूचना ब्यूरो, जिसकी स्थापना 1961 में की गई, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के अधीनस्थ स्वास्थ्य आसूचना विंग है, जिसका उद्देश्य ''संपूर्ण देश में एक सुदृढ़ स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना प्रणाली'' विकसित करना है। इस राष्ट्रीय संस्था का प्रमुख एक एसएजी स्तर का चिकित्सा अधिकारी होता है, जो केंद्रीय स्वास्थ्य प्रशासन में विशेषज्ञ होता है। उसके कार्य में सहयोग के लिए भारतीय सांख्यिकी सेवाओं तथा सीएचएस के अधिकारी होते हैं। यह संस्था अपने क्षेत्र सर्वेक्षणों एवं प्रशिक्षण इकाईयों के माध्यम से कार्य करती है।

सीबीएचआई का मिशन ''स्वास्थ्य क्षेत्र में साक्ष्य के आधार पर निर्णय लेने हेतु देश के प्रत्येक जिले में स्वास्थ्य केंद्र स्तर तक स्वास्थ्य सूचना प्रणाली को सुदृढ़ करना'' है।

सीबीएचआई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

साक्ष्य के आधार पर नीति निर्धारण करने, योजना तैयार करने तथा अनुसंधान क्रियाकलाप संचालित करने हेतु देश में स्वास्थ्य क्षेत्र से संबंधित आंकडों का संग्रह, विश्लेषण एवं प्रचार–प्रसार करना।

स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार के लिए अभिनव कार्य–व्यवहार की पहचान करके उसका प्रचार–प्रसार करना।

भारत में सरकारी एवं निजी दोनों चिकित्सा संस्थानों में चिकित्सा अभिलेखों के वैज्ञानिक ढंग से रख–रखाव के लिए मानव संसाधन विकसित करना।

भारत में स्वास्थ्य सूचना प्रणाली के प्रभावकारी कार्यान्वयन हेतु आवश्यकता आधारित प्रचालनात्मक अनुसंधान संचालित करना और फैमिली ऑफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन का उपयोग करना।

भारत में फेमिली ऑफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन के कार्यान्वयन हेतु स्वास्थ्य क्षेत्र में मास्टर प्रशिक्षकों को सुग्राही बनाना और उनका एक पूल सृजित करना।

जानकारी उपलब्ध कराने तथा कौशल का विकास करने हेतु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग करना।

स्वास्थ्य संबंधी सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों के लिए संकेतकों का संग्र एवं उनका प्रचार–प्रसार करना।

भारत तथा द.पू. एशिया क्षेत्र (एसईएआर) के देशों में डब्ल्यूएचओ एफआईसी के लिए सहयोग केंद्र के रूप में कार्य करना।

2. संगठन

(क) डीजीएचएस विभाग / भारत सरकार में, निदेशक के नेतृत्व वाले सीबीएचआई में तीन प्रभाग हैं:– (i) नीति, प्रशिक्षण और समन्वय (ii) सूचना और मूल्यांकन तथा (iii) प्रशासन

(ख) सीबीएचआई की छह फील्ड सर्वेक्षण इकाइयां (एफएसयू) भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों यथा बंगलौर, भोपाल, भुवनेश्वर, जयपुर, लखनऊ और पटना में स्थित है। प्रत्येक इकाई के अध्यक्ष उप निदेशक होते हैं, जिनके साथ तकनीकी और सहायक स्टाफ होते हैं; जो वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार) की निगरानी के अंतर्गत कार्य करते हैं।

(ग) सीबीएचआई के मोहाली, पंजाब (चंडीगढ़ के नजदीक) स्थित क्षेत्रीय स्वास्थ्य सांख्यिकी प्रशिक्षण केंद्र, सफरदजंग अस्पताल, नई दिल्ली का सीबीएचआई– एफसीयू एंड मेडिकल रिकार्ड डिपार्टमेंट एंड ट्रेनिंग सेंटर (एमआरडीटीसी) एवं जिपमेर पुदुच्चेरी: विभिन्न सीबीएचआई–इन सर्विस नेशनलट्रेनिंग कोर्सिज का संचालन करता है।

3. सीबीएचआई के प्रमुख क्रियाकलाप

3.1 सीबीएचआई अपने वार्षिक प्रकाशन ''राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफाइल'' जिसमें 6 प्रमुख संकेतकों, अर्थात जनसांख्यिकीय, सामाजिक–आर्थिक, स्वास्थ्य स्तर, स्वास्थ्य वित्त, स्वास्थ्य अवसंरचना एवं मानव संसाधन के तहत अधिकांश स्वास्थ्य सूचना का प्रमुखता से उल्लेख किया जाता है, के माध्यम विभिन्न संचारी एवं गैर–संचारी रोगों, स्वास्थ्य क्षेत्र में मानव संसाधन एवं स्वास्थ्य अवसंरचना के संबंध में स्वास्थ्य सांख्यिकी के रख–रखाव एवं प्रचार–प्रसार के लिए

विभिन्न संरकारी संगठनों/विभागों से प्राथमिक एवं द्वितीयक स्तर के आंकड़ों का संग्रह करता है।

3.2 सीबीएचआई, स्वास्थ्य क्षेत्र नीतिगत सुधार विकल्प डाटाबेस (एचएस–पीआरओडी) [www.hsprodindia.nic.in] के लिए सुधार के प्रयास के संबंध में सूचना एकत्र करता है। यद्यपि भारत के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों ने स्वास्थ्य क्षेत्र में अनेक सुधार शुरू किए हैं तथापि अनेक क्षेत्रों पर ध्यान नहीं दिया गया है अतः उनको प्रलेखित नहीं किया गया है। अतः स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय/ भारत सरकार ने यूरोपीय आयोग द्वारा वित्तपोषित सेक्टर इंवेस्टमेंट प्रोग्राम के अंतर्गत एचएस–पीआरओडी, को विकास एवं अनुरक्षण हेतु सीबीएचआई को सौंप दिया है। यह वेब समर्थित डाटाबेस है जो दस्तावेजीकरण करता है और स्वास्थ्य सेवा प्रबंधन में उत्तम कार्य व्यवहार, खोजों संबंधी सूचना की भागीदारी के लिए मंच तैयार करता है तथा इसकी कमियों को भी उजागर करता है जो राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सभी 35 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र की सरकारों, विकास भागीदारों, गैर सरकारी संगठनों जैसे विभिन्न क्षेत्रों के पणधारियों से 16 प्रमुख प्रबंधन क्षेत्रों में 250 से अधिक पहलें की गई हैं। कृपया सुधारों की प्रतिकृति एवं उपयुक्त उपयोग के लिए इस वेबसाइट पर जाएं। सीबीएचआई राज्य/संघ राज्य क्षेत्र की सरकारों से ऐसे सुधारों, स्वास्थ्य कार्यक्रम प्रबंधकों, शोधकर्ताओं, अध्यापकों और संस्थानों के संबंध में सूचना मंगवाता है ताकि इसे राष्ट्रीय डाटा बेस पर नियमित आधार पर अद्यतित किया जा सके।

एचएस–पीआरओडी जैसे प्रयास में सभी जन–स्वास्थ्य व्यावसायियों में स्वामित्व और गौरव की भावना होनी चाहिए।

3.3 सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य

सीबीएचआई अपने वार्षिक प्रकाशन ''राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफाइल'' में सभी एमडीजी की एक संक्षिप्त सूची और स्वास्थ्य संबंधी एमडीजी अर्थात लक्ष्य–4 (बाल मृत्यु को कम करना) और लक्ष्य–5 (मातृ स्वास्थ्य में सुधार) और लक्ष्य–6 (एचआईवी/एड्स, मलेरिया एवं अन्य रोगों की रोकथाम) की व्यापक सूची प्रकाशित करता है।

3.4 प्रतिवर्ष राष्ट्रीय स्तरीय सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.स.	प्रशिक्षण का नाम	बैच	अवधि	प्रशिक्षण केंद्र
1.	चिकित्सा रिकार्ड अधिकारी	2 (प्रत्येक प्रशिक्षण केंद्र पर)	6 माह प्रोजेक्ट कार्य	1.सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली में चिकित्सा रिकार्ड विभाग एवं प्रशिक्षण केन्द्र 2. जिपमेर, पुदुच्चेरी
2.	चिकित्सा रिकार्ड टेक्नीशियन	2 (प्रत्येक प्रशिक्षण केंद्र पर)	6 माह	1.सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली में चिकित्सा रिकार्ड विभाग एवं प्रशिक्षण केन्द्र 2. जिपमेर, पुदुच्चेरी

3.5 भारत तथा दक्षिण एशिया क्षेत्र में फैमिली ऑफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन (आईसीडी–10 और आईसीएफ) के उपयोग सहित प्रभावकारी स्वास्थ्य सूचना प्रणाली (एचआईएस) के लिए क्षमता निर्माण एवं प्रचालन अनुसंधान को ध्यान में रखकर सीबीएचआई द्वारा आरएचएसटीसी, मोहाली, चण्डीगढ़ में राष्ट्रीय स्तर पर आईसीडी–10 एवं आईसीएफ मास्टर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। यह बड़े सरकारी/निजी अस्पतालों में आईसीडी–10 एवं आईसीएफ पर सुग्राहीकरण कार्यशाला भी आयोजित कर रहा है।

क्र.स.	प्रशिक्षण का नाम	बैच/वर्ष	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण केंद्र
1.	मास्टर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (आईसीडी–10 और आईसीएफ)	8	5 दिन	आरएचएसटीसी, मोहाली
2.	(अधिकारियों हेतु) स्वास्थ्य सूचना प्रबंधन पर प्रबोधन प्रशिक्षण	8	5 दिन	आरएचएसटीसी,मोहाली और 6 एफएसयू
3.	स्वास्थ्य सूचना प्रबंधन पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम गैर–चिकित्सा कार्मिकों के	14	5 दिन	आरएचएसटीसी,मोहाली और 6 एफएसयू
4.	फैमिली ऑफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन पर प्रबोधन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (आईसीडी. 10 एवं आईसीएफ) (गैर–चिकित्सा कार्मिकों के लिए)	14	5 दिन	आरएचएसटीसी,मोहाली और 6 एफएसयू
5.	गैर चिकित्सा कार्मिकों के लिए चिकित्सा रिकार्ड एवं सूचना प्रबंधन पर प्रबोधन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	8	5 दिन	आरएचएसटीसी,मोहाली और 6 एफएसयू

नियमित आधार पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के 52 से ज्यादा बैच प्रत्येक वित्तीय वर्ष में आयोजित किया जाता है जिसमें 1000 से ज्यादा अभ्यर्थियों को कवर किया जाता है। इसके अलावा, राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों तथा आईआरडीए, डब्ल्यूएचओ आदि जैसे विभिन्न संगठनों के अनुरोध पर राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के विशेष बैच भी चलाए जाते हैं।

उक्त सभी पाठ्यक्रमों के लिए प्रशिक्षण संबंधी कैलेंडर, पात्रता मानदंड, दिशा निर्देश और आवेदन पत्र सीबीएचआई की वेबसाइट www.cbhighf.nic.in से डाउनलोड किए जा सकते हैं।

2014–15 के दौरान (07.01.2015) संपूर्ण देश में 608 कार्मिकों को विभिन्न सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों अर्थात चिकित्सा रिकार्ड अधिकारी, चिकित्सा रिकार्ड टेक्नीशियन, अधिकारियों हेतु स्वास्थ्य सूचना प्रबंधन, गैर–चिकित्सा कार्मिकों के लिए स्वास्थ्य सूचना प्रबंधन, गैर–चिकित्सा कार्मिकों के लिए फैमिली आफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन (आईसीडी–10 और आईसीएफ) फैमिली आफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन पर मास्टर प्रशिक्षिकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम (आईसीडी–10 और आईसीएफ) तथा सीबीएचआई प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से चिकित्सा रिकार्ड और सूचना प्रबंधन में प्रशिक्षित किया गया और 31 मार्च, 2015 तक 16 बैचों का प्रशिक्षण कार्यक्रम से आरंभ किया जाना है। 2013–14 में सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में 52 बैचों में 1000 से अधिक सहभागियों को प्रशिक्षित किए जाने की आशा है। इसके अलावा 1160 कार्मिकों को 14 कार्यशालाएं आयोजित करके आईसीडी–10 और आईसीएफ के संबंध में सुग्राही बनाया गया है और 31 मार्च तक अभी 10 कार्यशालाएं और आयोजित की जानी हैं।

3.6 प्रचालनात्मक अनुसंधान और समीक्षा

सीबीएचआई (मुख्या.) और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण / भारत सरकार के बंगलुरू, भुवनेश्वर, भोपाल, जयपुर, लखनऊ और पटना के क्षेत्रीय कार्यालयों में स्थित इसके छः एफएसयू राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों से अभिपुष्ट स्वास्थ्य संबंधी सूचना प्राप्त करने में और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने वाले एककों के क्षमता निर्माण और साथ ही सीबीएचआई के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रचालनात्मक अनुसंधान में भी सहायता करती है। सीबीएचआई सभी एफएसयू और प्रशिक्षण केन्द्रों के कार्यकरण की समीक्षा के लिए नियमित रूप से अर्धवार्षिक बैठकों का आयोजन करता है। वर्ष 2013–14 के दौरान 10–11 जुलाई 2014 को आरएचएसटीसी, मोहाली और आरओएचएफडब्ल्यू, चंडीगढ़ में में 21वीं अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई थी तथा फरवरी, 2014 के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, लखनऊ द्वारा ऐसी 22वीं अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक की जानी है। इन समीक्षा बैठकों के दौरान चर्चा किए गए विभिन्न मुद्दे निम्नलिखित हैं:

(1) तृतीयक स्तर के जरिए अस्पताल से लेकर सीएचसी तक चिकित्सा रिकार्ड विभाग/एककों में संगठन, कामकाज, संभारतत्र और मानव संसाधनों के प्रशिक्षण एवं दक्षताओं सहित मानव संसाधनों के संदर्भ में अवसंरचना का स्थितिजन्य विश्लेषण;

(2) अस्पतालों में चिकित्सीय रिकार्डों के संकलन, विश्लेषण, भंडारण और पुनः प्रापण, रिकार्ड बनाने की मौजूदा प्रणाली का अध्ययन करना;

(3) मुख्य गतिरोधों और व्यवहारिक समाधानों के साथ मृत्यु दर एवं रूग्णता दर संबंधी कोडिंग के लिए आईसीडी–10 के उपयोग का अध्ययन करना;

(4) निम्नलिखित के संबंध में इष्टतम अपेक्षा के संदर्भाधीन चिकित्सा रिकार्ड विभाग को उन्नत बनाने एवं सुदृढ़ बनाने तथा एफआईसी (आईसीडी–10 एवं आईसीएफ) के उपयोग की सिफारिश करनाः (क) मानव संसाधनों और उनकी दक्षताओं संबंधी आवश्यकताओं तथा प्रशिक्षण के संबंध में कार्य, (ख) संगठन (ग) भौतिक स्थल और आईसीटी सहित संभारतत्र और (घ) एमआरडी के प्रभावी कामकाज के लिए प्रशिक्षित कार्मिक शक्ति का पूल तैयार करना।

3.7 सीबीएचआई भारत में रोग, रुग्णता तथा संबंधित स्वास्थ्य पहलुओं एवं स्वास्थ्य उपायों (आईसीडी, आईसीएफ एवं आईसीएचआई) के लिए फेमिली इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन हेतु डब्ल्यूएचओ के सहयोग केंद्र के रूप में कार्य करती है।

सीबीएचआई अधिकारिक रूप से स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के विधिवत अनुमोदन से भारत में रूग्णता–दर, मृत्यु–दर, संबंधित स्वास्थ्य पहलुओं, कृत्य और निःशक्तताओं की एफआईसी के दक्षिण पूर्व एशिया प्रशांत नेटवर्क को सूक्ष्मता से जोड़ते हुए, कोडीकरण करने हेतु सितम्बर, 2008 से फैमिली आफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन (आईसीडी–10, आईसीएफ और आईसीएचआई) संबंधी डब्ल्यूएचओ सहयोग केन्द्र के रूप में कार्य कर रही है।

भारत में अंतरराष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीडी–10 तथा आईसीएफ) के परिवार के संबंध में डब्ल्यूएचओ सहयोगी केन्द्र के रूप में इसके मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं:

(1) रोगों और संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं का अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकी वर्गीकरण (आईसीडी), कार्यकरण, निःशक्तता और स्वास्थ्य का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीएफ) और अन्य व्युत्पन्न और संबंधित वर्गीकरणों सहित डब्ल्यूएचओ फैमिली आफ इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन (डब्ल्यूएचओ–एफआईसी) के विकास और उपयोग को बढ़ावा देना और बहु–पक्षों के समान भाषा के रूप में प्रयोगाश्रित अनुभव के प्रकाश में उनके कार्यान्वयन और सुधार में सहयोग करना।

(2) निम्नलिखित द्वारा देशों के भीतर और दो देशों के बीच तुलना करने के लिए निरंतरता एवं विश्वसनीयता के आधार पर स्वास्थ्य स्तर, उपाय एवं परिणाम की माप को सुविधाजनक बनाने के लिए डब्ल्यूएचओ– एफआईसी के उपयोग हेतु पद्धतियां तैयार करने में योगदान करनाः

(क) डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के सदस्य घटकों के विकास, परीक्षण, कार्यान्वयन, उपयोग, सुधार, अद्यतन करना और संशोदन में डब्ल्यूएचओ सहयोग प्रदान करने हेतु गठित विभिन्न समितियों एवं कार्य समूहों के कार्य में सहयोग प्रदान करना।

(ख) टैक्सोनॉमी, भाषा विज्ञान, शब्दावलियों तथा नामों की विषय–वस्तु की संरचना, निर्वाचन एवं अनुपयोग से संबंदित पहलुओं का अध्ययन।

(ग) उपयोग, प्रशिक्षण एवं आंकड़ा संग्रह के मानकों तथा अनुप्रयोग नियमों के संबंध में डब्ल्यूएचओ–एफआईसी वर्गीकरणों की गुणवत्ता आश्वासन प्रक्रियाओं में भागीदारी।

(3) निम्न के द्वारा डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के वर्तमान और संभावित प्रयोक्ताओं के साथ संपर्क स्थापित करना और संदर्भ केन्द्र के रूप में कार्य करना

क. डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के सदस्य घटकों और अन्य संबंधित सामग्री तैयार करने में डब्ल्यूएचओ मुख्यालय और क्षेत्रीय कार्यालयों की सहायता करना।

ख. डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के सदस्य घटकों के अद्यतनीकरण और संशोधन में सक्रियता से सहयोग करना।

ग. डब्ल्यूएचओ–एफआईसी तथा भारत व एसईएआरओ क्षेत्र में व्युत्पन्न आंकड़ों के मौजूदा व संभावित प्रयोक्ताओं को सहयोग देना। एफआईसी के कार्यान्वयन की स्थिति जानने के लिए एशिया प्रशांत क्षेत्र के अन्य देशों के साथ भी लिंकेज स्थापित किया जाएगा।

(4) डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के कम–से–कम एक संबंधित और/या उससे निर्गत क्षेत्र में कार्यः विशेषज्ञता आधारित अनुकूलन, प्राथमिक परिचर्या

अनुकूलन, उपाय/प्रक्रियाएं, आघात वर्गीकरण (आईसीईसीआई)।

3.8 दो वेबसाइटों का अनुरक्षण

सीबीएचआई ने एनआईसी की सहायता से हाल ही में अपनी दो वेबसाइटों अर्थात (i) www.cbhidghs.nic.in (ii) www.hsprodindia.nic.in की ऑनलाइन डाटा संप्रेषण और आम जनता के अवलोकन हेतु पुनःडिजाइनिंग और फार्मैटिंग की है।

i) सीबीएचआई वेबसाइट www.cbhidghs.nic.in में सीबीएचआई, राष्ट्रीय स्वास्थ्यरूपरेखा, भारत में मृत्यु दर संबंधी आंकड़े (2006), सूचना का अधिकारी अधिनियम, देश में स्वास्थ्य सूचना प्रणाली और आईसीडी–10 के इस्तेमाल के उन्नयन एवं सुदृढ़ीकरण के संबंध में सिफारिशों, मानव स्वास्थ्य संसाधन अपेक्षा के संबंध में सीबीएचआई के केस अध्ययन एवं सिफारिशों, सीबीएचआई के सेवा कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम/कैलेण्डर और आवेदन पत्रों, आईसीडी–10 के संबंध में मॉड्यूल एवं कार्य पूस्तिका, राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों के स्वास्थ्य संबंधी डाटा को सीबीएचआई को भेजने संबंधी रिपोर्टिंग प्रपत्रों आदि के संबंध में सामान्य सूचना है, एवं

ii) सीबीएचआई वेबसाइट www.hsprodindia.nic.in में भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र के नीतिगत सुधार डाटा बेस से संबंधित प्रविष्टियां निहित हैं और उन्हें समय–समय पर अद्यतित किया जा रहा है।

3.9 वर्ष 2014 के दौरान सीबीएचआई के प्रमुख प्रकाशन

(1) राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफाइल 2013 (एनएचपी)

(2) राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफाइल 2014 (एनएचपी) प्रकाशन के अंतिम चरण में है।

3.10 वेबसाइट (www.cbhidghs.nic.in) के माध्यम से सीबीएचआई – आनलाइन डाटा प्रविष्टि प्रणाली

राज्य/संघ राज्य स्थित एचएफडब्ल्यू निदेशालय सीबीएचआई/डीजीएचएस को निधारित प्रपत्र में (i) मासिक संचारी रोग (ii) मासिक गैर–संचारी रोग और (iii) मेडिकल/नर्सिंग /पैरा–मेडिकल शिक्षा व अवसंरचना संबंधी वार्षिक डाटा समय पर और नियमित रूप से भेजने के लिए उत्तरदायी हैं। इस जानकारी के आधार पर सीबीएचआई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रूप से पहचाने जाने वाला वार्षिक प्रकाशन ''नेशनल हेल्थ प्रोफाइल'' भी निकालता है जो देश में स्वास्थ्य संबंधी कार्यकलापों की नीति, आयोजना और मूल्यांकन हेतु राष्ट्रीय संदर्भ दस्तावेज के रूप में कार्य करता है। संसदीय प्रश्नों का उत्तर तैयार करने हेतु सीबीएचआई संकलित और अद्यतित आंकड़े प्रदान करता है।

4. सीबीएचआई लिंकेज और समन्वय

1. भारत के सभी 35 राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश
2. भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण के सभी 20 क्षेत्रीय कार्यालय
3. भारत में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एनआरएचएम) और राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम
4. चिकित्सा, नर्सिंग और पैरामैडिकल परिषद एवं शैक्षिक संस्थान
5. आईसीएमआर और विभिन्न अन्य मंत्रालयों सहित स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के अधीन सार्वजनिक स्वास्थ्य/चिकित्सा देखभाल संगठन और अनुसंधान संस्थान
6. भारत के जनगणना आयुक्त और महापंजीयक
7. योजना आयोग, भारत सरकार
8. सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
9. केन्द्रीय रेल, श्रम, मानव संसाधन विकास, ग्रामीण विकास, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी, जहाजरानी, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, गृह मंत्रालय, रक्षा, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय आदि।
10. भारत में संबंधित क्षेत्र और स्वास्थ्य में गैर–सरकारी संगठन
11. डब्ल्यूएचओ स्वास्थ्य और सामाजिक–आर्थिक विकास से संबंधित संयुक्त राष्ट्र की अन्य एजेंसियां।
12. सभी डब्ल्यूएचओ (विश्व के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (एफआईसी) परिवार के सहयोग केन्द्र, एफआईसी पर एशिया पैसिफिक नेटवर्क और डब्ल्यूएचओ के दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र के देश।

5. सीबीएचआई की नई पहलें

सीबीएचआई अपने अधिदेश प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए हैं:–

स्वास्थ्य सुविधाओं का जीआईएस मैपिंग: पूरे देश के स्वास्थ्य संसाधनों के वास्तविक समय पर जानकारी प्राप्त करने के लिए, सीबीएचआई अभी भौगोलिक दृष्टि से सभी स्वास्थ्य सुविधाओं (सरकार और निजी दोनों) की मैपिंग कराने की प्रक्रिया में है। उपलब्धता, पहुंच और सामर्थ्य के मामले में चार जिलों वेल्लोर (तमिलनाडु), हजारी बाग (झारखंड), डूंगरपुर (राजस्थान), और दीमापुर (नागालैंड), में पायलट परियोजना आरंभ की गई है। इस तत्परता के साथ, नीति और तकनीकी सहायता के संदर्भ में राष्ट्रीय आवश्यकताओं के बीच की खाई को भरा जा सकता है।

"राष्ट्रीय स्वास्थ्य आसूचना संस्थान (एनआईएचआई)" स्थापित करने के लिए प्रस्ताव

सभी स्तरों पर स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं से संबंधित जानकारी का प्रभावी रूप से उपयोग करने में सक्षम होने के लिए 12 वीं पंचवर्षीय योजना (2012–17) के दौरान 'स्वास्थ्य सूचना प्रणाली को मजबूत बनाने' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय स्वास्थ्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली के तहत एक 'राष्ट्रीय स्वास्थ्य आसूचना संस्थान की स्थापना करने का प्रस्ताव है।

राज्य स्वास्थ्य आसूचना ब्यूरो के साथ संपर्क: वर्तमान में राज्य स्वास्थ्य आसूचना ब्यूरो सीबीएचआई से स्वतंत्र रूप से कार्य करता है। अभी सीबीएचआई स्वास्थ्य सूचना के एकीकृत संग्रहण की खाई को पाटने के लिए उन्हें सक्रिय रूप से सहयोग करने की प्रक्रिया में है।

13 नई क्षेत्र सर्वेक्षण इकाइयों की स्थापना: देश में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण के लिए 19 क्षेत्रीय कार्यालय हैं। इनमें से 6 क्षेत्र सर्वेक्षण इकाइयों को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के भुवनेश्वर, बेंगलूरू और पटना में 1982 में तथा जयपुर, भोपाल और लखनऊ में 1986 में स्थापित किया गया था। सीबीएचआई देश के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण के शेष 13 क्षेत्रीय कार्यालयों में नए एफएसयू की स्थापना करने का प्रस्ताव करता है।

सीबीएचआई एक शासी निकाय का गठन करने का भी प्रस्ताव करता है। जिसमें तकनीकी और प्रशासनिक विशेषज्ञ होंगे जो सीबीएचआई के अधिदेश के अनुसार क्षमता निर्माण और निष्पादन में अंतरराष्ट्रीय मानक निर्धारित करेंगे।

सीबीएचआई प्रचालनात्मक अनुसंधान के लिए आगामी स्तर पर ले जाने और एफआईसी के लिए एक सहयोग केंद्र के लिए क्षमता निर्माण हेतु देश के कई मेडिकल कॉलेजों के साथ मिलकर कार्य करता है।

6. बजट

सीबीएचआई को बजट शीर्ष "स्वास्थ्य सूचना और निगरानी प्रणाली' के तहत योजना बजट में वित्त वर्ष 2014–15 के दौरान 1.00 करोड़ रुपये (एक करोड़ रू. केवल) की राशि आवंटित की गई है।

15.31 पूर्वोत्तर इंदिरा गांधी क्षेत्रीय स्वास्थ्य और चिकित्सा विज्ञान संस्थान (निग्रिम्स)

पूर्वोत्तर इंदिरा गांधी क्षेत्रीय स्वास्थ्य और चिकित्सा विज्ञान संस्थान (निग्रिम्स) शिलांग की स्थापना पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र के लोगों को विशिष्ट स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने और प्रशिक्षित चिकित्सा जनशक्ति का निर्माण करने के उद्देश्य से वर्ष 1987 में की गई थी। प्रारंभ में, संस्थान की परिकल्पना अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली और पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ की तर्ज पर पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल इंस्टीट्यूट के रूप में की गई थी। विस्तृत अधिदेश के साथ संस्थान ने 50 छात्रों के वार्षिक नामांकन के साथ वर्ष 2008–09 में एमबीबीएस कोर्स भी शुरू किया था जिसे अब दिनांक 7 नवंबर, 2013 की अधिसूचना के तहत भारतीय चिकित्सा परिषद द्वारा मान्यता दी गई है।

वर्तमान में संस्थान में सभी बेसिक उपस्करों के साथ–साथ आधुनिक उपस्कर जैसे लिथोट्रिप्सी मशीन, सीटी स्कैन, 1.5 टेस्ला एमआरआई और डिजिटल मैमोग्राफी प्रणाली उपलब्ध है। संस्थान द्वारा अद्यतन प्रौद्योगिकी के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए बेहतर विकसित उपस्करों की खरीद की जा रही है ताकि पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र के लोगों के लिए सबसे अच्छी चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की जा सके।

संस्थान द्वारा वर्ष 2013–14 के दौरान 140.00 करोड़ रूपए के बजट आबंटन में से अनुदान सहायता के रूप में 106.25 करोड़ रुपये का व्यय किया गया है।

15.32 राष्ट्रीय जैविक संस्थान (एनआईबी), नोएडा

राष्ट्रीय जैविक संस्थान (एनआईबी), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन स्वायत्त निकाय, जैविक और जैव चिकित्सीय उत्पादनों जिनमें एल्बूमिन, एम्मूनोग्लोबिन, कोएगूलेशन कारक VIII, इंसूलिन और इसके एनालोगस, इरीथ्रोपोइटीन, स्ट्रेप्टोकिनेस, इम्मूनोडायग्नोस्टिक किट (एचआईवी, एचसीवी, एचबीएस एजी) और ब्लड ग्रुपिंग रिएजेन्टस आदि सम्मिलित हैं, का विभिन्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय फार्माकोमिया को अपनाते हुए अपनी विभिन्न अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं और जन्तु गृह में गुणवत्ता मूल्यांकन करता है। संस्थान ने 2013–14 के दौरान विभिन्न जैविकों के 141 किस्मों के 1812 बैचों का गुणवत्ता मूल्यांकन किया है।

हाई प्रोफाइल नोबेल औषधियां जैसे थिरेप्यूटिक मोनोक्लोनल एंटीबॉडीज जिनका उपयोग हेमाटोलोजिकल, इम्मूनोलोजिकल और ओंकोलोजिकल विकारों के लिए किया जाता है, का मूल्यांकन करने के लिए एक नई प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए कदम उठाए गए हैं। इस संबंध में रिटुक्सिमैब का मानकीकरण और वैधीकरण किया गया है। ग्लूकोज टेस्ट स्ट्रीप्स जिनका उपयोग सामान्यतः शुगर स्तर विशेषकर मधुमेह से पीड़ित मानकों में नापने के लिए किया जाता है, की टेस्टिंग भी पूरी कर ली गई है। इम्मूनोडायगनोस्टिक किटों के मूल्यांकन के लिए उपयोग किए जाने वाले सीरा के संदर्भ में पैनलों की भी पुनः विशेषता बताई गई है। न्यूकलेइक एसिड टेस्टिंग (एनएटी) प्रयोगशाला ने मरीजों में वायरल संक्रमण की निगरानी के लिए कुछ किटों का मूल्यांकन कर लिया है।

सीसीआरवी, एमएमआर वैक्सीन, लाइव एटेन्युएटिड मीजल्स वैक्सीन, रुबेला वैक्सीन और सीसीजी वैक्सीन का मानकीकरण एवं वैधीकरण पूरा कर लिया गया है। जेई वैक्सीन, एचपीवी वैक्सीन, क्वाड्रिवेलेंट टाइफाइड अप पोलीसेकराइड जैसे अन्य टीकों का मानकीकरण एवं वैधीकरण प्रक्रियाधीन है।

संस्थान को रिकोंबिनेंट उत्पाद लैब, रक्त उत्पाद लैब एवं बायोकैमिकल किट लैब द्वारा परीक्षित 12 अतिरिक्त जैविक संस्थानों और बायोथेरेप्यूटिकल्स उत्पाद आदि के लिए केंद्रीय औषध प्रयोगशाला (सीडीएल) के रूप में घोषित करने के लिए कदम उठाए गए हैं। इस मामले में प्रारूप अधिसूचना मंत्रालय द्वारा जारी कर दी गई है। एनआईबी और सीडीएल, कसौली के बीच एनआईबी की अधिसूचना के लिए वैक्सीन लैब की अधिसूचना के संबध में खसरा, रुबैला, सीसीआरवी और बीसीजी के प्रत्येक 10 बैचों का समानान्तर परीक्षण की योजना बनाई गई है।

निरंतर अभ्यास के रूप में संस्थान आवश्यकता पड़ने पर स्वदेशी विनिर्माताओं को इंसुलिन के राष्ट्रीय संदर्भ मानक तथा एचआईवी, एचसीवी, एचबीएसएजी के संदर्भ सीरा पैनल की आपूर्ति कर रहा है। संस्थान ने राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला, ऑस्ट्रेलिया के साथ एचआईवी, एचबीएसएजी, एचसीवी तथा सिफिलिस के बाह्य गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रम में सफलतापूर्वक हिस्सा लिया है। संस्थान, क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज (सीएमसी), वेल्लूर, भारत में ग्लूकोज परीक्षण के ईक्यूएएस में नियमित रूप से भाग ले रहा है। जैविक संस्थानों का एनएबीएल प्रमाणन 61 तक पहुंच गया है इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा जैविक संस्थानों पर 27 मोनोग्राम तैयार किए गए हैं और इसे भारतीय फर्माकोपिया, 2014 में शामिल किया गया है।

देश में रक्त और रक्त उत्पादों के प्रयोग के कारण होने वाली विपरीत औषधि प्रतिक्रिया (एडीआर) सूचित करने के लिए संस्थान द्वारा हीमो–विजिलेंस कार्यक्रम शुरू किया गया है। एनआईबी ने तीन हीमो–विजिलेंस न्यूज लैटरके प्रकाशन के अलावा देश भर में 15 सीएमई का आयोजन किया गया है। इसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय हीमो–विजिलेंस नेटवर्क का सदस्य बनने का भी है।

बजटः

संस्थान को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा सहायता अनुदान के रूप में निधि जारी की जाती है। संस्थान का बीई एवं आरई निम्नलिखित है:

करोड़ रु. में

वर्ष	बीई	आरई	व्यय
2013–14	25.00	25.00	25.05
2014–15	31.00	31.00	17.30

नवंबर, 2014 तक

15.33 बीसीजी वैक्सीन प्रयोगशाला, गिंडी

बीसीजी वैक्सीन प्रयोगशाला, गिंडी की स्थापना 1948 में की गई थीद्य संस्थान की मुख्य गतिविधियां निम्नलिखित हैं:–

- शैशवकालीन क्षयरोग के नियंत्रण के लिए बीसीजी वैक्सीन (10 खुराक प्रति वायरल) का उत्पादन करना और विस्तारित कार्यक्रम (ईपीआई) के लिए इसकी आपूर्ति करना।
- कार्सिनोमा यूरिनरी ब्लाडर के कीमोथेरेपी में प्रयोग के लिए बीसीजी थेरेप्यूटिक (40 मिग्री) का उत्पादन

2. स्टाफ संख्याः

- बीसीजी वीएल में कुल स्वीकृत स्टाफ संख्या 113 है। समूह क, ख और ग में स्वीकृत पदों की संख्या क्रमशः 3, 13 और 97 है।

3. बीसीजी वीएल का कार्य–निष्पादन (विनिर्मित मात्र मांग और आपूर्ति)

क्र.स.	विवरण	मात्रा
1.	संस्थापित क्षमता प्रतिवर्ष	800 लाख डोज
2.	विनिर्मित प्रमात्रा	18.0 लाख डोज

4. महत्वपूर्ण उपलब्धियांः स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने 64.43 करोड़ रुपए की लागत से चेन्नई में बीसीजी टीका विनिर्माण सुविधा के उन्नयन के लिए तथा इसे सीजीएमपी के अनुरूप बनाने के लिए द्वारा मै. एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड को नियोजित किया है। अपग्रेडेड सुविधा केंद्र का सिविल कार्य पूरा हो गया है तथा भारतीय आपूर्तियों से मशीनरी और उपकरण प्राप्त हो गए हैं और स्थापना कार्य 2014 तक पूरा किया जाना है। उसके बाद वैधीकरण प्रक्रियाएं आरंभ की जाएंगी। वैधीकरण के बाद ट्रायल बैच शुरू किए जाएंगे। तीन ट्रायल बैचों के सफल समापन के बाद सुविधा केंद्र लगातार बैच लेने का कार्य करने हेतु तैयार हो जाएगा।

15.34 ऑल इंडिया इंस्टीटयूट ऑफ हाइजिन एंड पब्लिक हेल्थ (एआईआईएच एंड पीएच), कोलकाता

ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हाइजिन एंड पब्लिक हेल्थ (एआईआईएच एंड पीएच), कोलकाता, दक्षिण–पूर्व एशिया क्षेत्र में लोक स्वास्थ्य के सबसे पुराने संस्थान, की स्थापना 1932 में की गई थी। यह लोक स्वास्थ्य और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षण और अनुसंधान के प्रति प्रतिबद्ध है।

विजन, मिशन एवं उद्देश्य

विजनः जन स्वास्थ्य क्षेत्र में शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र बनाया जाना है।

मिशन

- जन–स्वास्थ्य शिक्षण एवं प्रशिक्षण में उत्तम कार्य व्यवहार के जरिए सक्षम जन–स्वास्थ्य श्रम–शक्ति का विकास करना।
- समुदाय स्वास्थ्य में सुधार करने तथा सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण जीवन के लिए सर्वोत्तम प्रौद्योगिकी विकासों को ध्यान में रखते हुए क्षमता विकास, जानकारी प्रसार और समुदायों की भागीदारी के आधार पर समाधान करना।
- समुदाय के लिए स्वास्थ्य सेवाओं हेतु मॉडल केंद्र का विकास करना और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा के लिए सार्वजनिक भागीदारी सुनिश्चित करना।

उद्देश्यः

- जन स्वास्थ्य सेवाओं के सभी पहलुओं को शामिल करते हुए उच्च गुणवत्तापूर्ण आवश्यकता आधारित नियमित पाठ्यक्रम का आयोजन
- जन स्वास्थ्य कार्य बल के विस्तार और पूर्ति के लिए आवश्यकता आधारित लघु पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को डिजाइन करना और लागू करना।
- स्वास्थ्य के मामलों के बारे में लोगों को सूचित करना, शिक्षित करना और सशक्त बनाना
- समुदाय में विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं और रोगों के समाधान से संबंधित अनुसंधान करना
- सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र में सर्वोत्तम सेवाओं का विकास करना और मानक स्थापित करना
- व्यक्तिगत और आबादी आधारित स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावशीलता, पहुंच और गुणवत्ता का मूल्यांकन करना
- साक्ष्य आधारित नीतिगत एडवोकेसी के माध्यम से जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाना और
- सामान्य सांविधिक प्रावधानों का अनुपालन करना

संस्थागत ढांचा

संस्थान के कोलकाता में 2 परिसर हैं। इसमें 11 शैक्षणिक विभाग हैं। इनके अलावा, संस्थान की दो फील्ड प्रैक्टिस यूनिटें हैं। एक ग्रामीण और शहरी स्वास्थ्य समस्याओं पर छात्रों को हैंड्स–ऑन–ट्रेनिंग प्रदान करने के लिए क्रमशः एक यूनिट ग्रामीण क्षेत्र (ग्रामीण स्वास्थ्य यूनिट और प्रशिक्षण केंद्र, सिंगूर, जिला हुगली, और दूसरी यूनिट शहरी क्षेत्र (शहरी स्वास्थ्य केंद्र, चेतला, कोलकाता) में है। इन फील्ड प्रेक्टिस यूनिटों का उपयोग अन्य स्वास्थ्य संस्थानों द्वारा अपने फील्ड प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए समुदाय आधारित प्रशिक्षण के लिए भी किया जाता है। संस्थान का पुस्तकालय देश में स्वास्थ्य विज्ञान संबंधी कुछ संदर्भ पुस्तकालयों में से एक है।

अध्यापन और प्रशिक्षण कार्यकलापः

संस्थान अपने नियमित पाठ्यक्रमों और अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से लोक स्वास्थ्य के विभिन्न विषयों में अध्यापन और प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। संस्थान द्वारा आयोजित विभिन्न पाठ्यक्रमों का ब्यौरा नीचे दिया गया हैः

पाठ्यक्रम

क्र.स.	नोडल विभाग*	पाठ्यक्रम
1.	बायोकेमिस्ट्री एंड न्यूट्रीशिन	–एम.एससी. इन एप्लाइड न्यूट्रीशन, डिप्लोमा इन डाइटटिक्स
2.	पर्यावरण संरक्षा और सेनेट्री इंजीनियरिंग	मास्टर ऑफ इंजीनियरिंग (जन स्वास्थ्य)
3.	एपिडेमियोलोजी	मास्टर इन पब्लिक हैल्थ (एपिडेमियोलॉजी)
4.	हेल्थ प्रमोशन एंड हेल्थ एजूकेशन	डिप्लोमा इन हैल्थ प्रोमोशन एंड एजूकेशन
5.	मेटरनिटी एंड चाइल्ड हेल्थ (एमसीएच)	डिप्लोमा इन मेटरनिटी एंड चाइल्ड हेल्थ
6.	माइक्रोबायोलोजी	मास्टर ऑफ वेटरिनरी पब्लिक हेल्थ (एमवीपीएच)
7.	ओक्यूपेशनल हेल्थ	डिप्लोमा इन इंडस्ट्रियल हेल्थ
8.	निवारक और सामाजिक चिकित्सा (पीएसएम)	एमडी (समुदाय चिकित्सा)
9.	पब्लिक हेल्थ एडमिनिस्ट्रेशन	डिप्लोमा इन हेल्थ एजूकेशन (डीएचई)
10.	पब्लिक हेल्थ नर्सिंग	डिप्लोमा इन पब्लिक हेल्थ नर्सिंग
11.	सांख्यिकी	स्वास्थ्य सांख्यिकी में डिप्लोमा

*अन्य विभाग भी पाठ्यक्रम के संचालन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

- संस्थान मास्टर ऑफ वेटरीनरी पब्लिक हैल्थ को छोड़कर सभी पाठ्यक्रमों के लिए पश्चिम बंगाल के स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, कोलकाता से संबद्ध है।

संस्थान द्वारा वर्ष 2014–15 के दौरान कई अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें से कुछ नीचे दिए गए हैं:

- डिपार्टमेंट ऑफ बायोकैमिस्ट्री एंड न्यूट्रिशन, ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हाइजीन एंड पब्लिक हैल्थ, कोलकाता में 11 से 14 नवंबर, 2014 तक राज्य स्तरीय आईडीडी लेबोरेट्री टैक्नीशियन के लिए ''मैनेजमेंट ऑफ लेबोरेट्री मानीटरिंग ऑफ आयोडीन कंटेंट ऑफ आयोडेटेड साल्ट एंड यूरीनरी आयोडीन एक्सक्रिशन'' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- भारत के 17 विभिन्न राज्यों से कुल 24 प्रयोगशाला तकनीशियनों/सहायकों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया;
- आईडीएसपी–24 से 29 मार्च 2014 तक सीएसयू, आई.डी.एस.पी. द्वारा प्रायोजित पूर्वोत्तर राज्यों और पश्चिम बंगाल की राज्य और जिला स्तर के अधिकारियों के लिए टीओटी कार्यक्रम;
- 24 से 29 नवंबर 2014 तक सीएसयू, आई.डी.एस.पी. द्वारा प्रायोजित पूर्वोत्तर राज्यों और पश्चिम बंगाल की राज्य और जिला स्तर के अधिकारियों के लिए टीओटी कार्यक्रम;
- 18 और 19 सितम्बर 2014 को फरक्का बैराज परियोजना अस्पताल, फरक्का के चिकित्सा अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए आई.डी.एस.पी. पर प्रशिक्षण कार्यक्रम;
- 45 फ्रंट लाइन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को स्वास्थ्य संवर्धन और शिक्षा विशेषज्ञों बनाने के लिए प्रशिक्षित किया गया;
- साल्ट लेक स्थित कोलकाता के पश्चिम बंगाल पावर डेवलपमेंट कारपोरेशन में 23.07.2014 को डॉक्टरों और वरिष्ठ प्रबंधकों के लिए व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा पर कार्यशाला आयोजित की गई थी;
- सितंबर 2014 में केएमसी क्षेत्र के स्कूल के शिक्षकों के लिएवेक्टर जनित रोग (वीबीडी)पर लघु कोर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया;
- सांख्यिकी विभाग द्वारा एसपीएसएस, ईपीआई सूचना, आदि जैसे सांख्यिकीय पैकेजों के सांख्यिकी तरीकों और अनुप्रयोग पर लघु पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया और;
- यह जैव सांख्यिकी में स्नातक और स्नातकोत्तर चिकित्सा छात्रों के लिए माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल, एसपीएसएस, ईपीआई सूचना आदि पर कैप्सूल पाठ्यक्रमों का भी आयोजन करता है।

नई पहलें

- अखिल भारतीय स्वच्छता एवं जन स्वास्थ्य संस्थान की स्थापना आठ दशक पहले की गई थी। इन वर्षों में, सार्वजनिक स्वास्थ्य के परिदृश्य में बहुत बदलाव आया है। इस प्रकार, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के मार्गदर्शन में 09.07.2014 से 11.09.2014 तक की अवधि के दौरान आयोजित ''अखिल भारतीय स्वच्छता एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य के उन्मुखीकरण और सुदृढ़ीकरण के लिए रणनीतिक रूप–रेखा'' पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला के माध्यम से भारत में स्वास्थ्य प्रणाली के विजन, मिशन, लक्ष्य और उद्देश्यके संदर्भ में एआईआईएच एवं पीएच की भूमिका की समीक्षा की गई। कार्यशाला की मुख्य विशेषताएं नीचे दी गई हैं।
- संस्थान के विजन, मिशन, मूल्यों और लक्ष्यों को नए सिरे से परिभाषित किया गया।
- संस्थान के उन्मुखीकरण और सुदृढ़ीकरण के लिए एक रणनीतिक कार्य योजना (एसएपी) को अंतिम रूप दिया गया।
- सामरिक कार्य योजना की निगरानी के लिए संचालन समिति का गठन किया गया।
- प्रभावी बाह्य और आंतरिक समन्वय सुनिश्चित करने के लिए समन्वय विंग का गठन किया।
- सांख्यिकी विभाग को सांख्यिकी और स्वास्थ्य सूचना विभाग में बदलने का प्रस्ताव किया गया।

- स्वच्छ भारत मिशन
- संस्थान में एक सफाई अभियान शुरू किया गया। स्थापना दिवस समारोह के दौरान मिशन को गति प्रदान करने के लिए "स्वच्छ भारत – एक स्वच्छता एवं जन स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य' विषय पर एक तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया।
- अनुभव और शिक्षण की साझेदारी
- डॉ. जी.के पाण्डेय निदेशक द्वारा की गई एक नई पहल के रूप में विभिन्न संस्थानों में विभिन्न प्रशिक्षणों के लिए नामित किए गए वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध किया था कि वे दूसरे लोगों के साथ अपने अनुभव और जानकारी को साझा करें ताकि ऐसे प्रशिक्षणों का अधिकतम लाभ उठाया जा सके।
- विधान नगर परिसर में ईको गार्डन का उद्घाटन
- संस्थान और उसके आस–पास के क्षेत्रों में पर्यावरण अनुकूल वातावरण को सुदृढ़ करने के लिए संस्थान के विधान नगर परिसर में एक ईको गार्डन का विकास किया गया है।
- सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाओं और स्वचालित प्रणाली अभियान का सुदृढ़ीकरण
- पुस्तकालय, कम्प्यूटर प्रयोगशाला और अन्य विभागों को सुदृढ़ करने के लिए 47 पीसी, 50 प्रिंटर आदि सहित बड़ी मात्रा में सूचना प्रौद्योगिकी उपकरणों की खरीद की गई।
- क्षेत्रीय इकाइयों में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में स्वचालित प्रणाली अपनाने के लिए एक खाका तैयार किया गया है और सॉफ्टवेयर का निर्माण करने वाले का पता लगाने की प्रक्रिया चल रही है।
- यूएचसी, चेतला में सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाओं और स्वचालित प्रणाली अभियान को सुदृढ़ करने के लिए इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ एलएएन स्थापित किया गया है।
- संस्थान की वेबसाइट का पुनर्निर्माण, मरम्मत और रिडिजाइन करना।
- संस्थान की वेबसाइट का पुनर्निर्माण, मरम्मत और रिडिजाइन किया गया है।
- संस्थान में आईएसओ प्रमाणन की शुरूआत।
- अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुरूप संस्थान में विभिन्नप्रक्रियाओं के मानकीकरण के लिए आईएसओ प्रमाणन के संबंध में एक विचार–विमर्श के सत्र की व्यवस्था की गई थी और मानकों को अपनाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।
- अखिल भारतीय स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान का विस्तार।
- सार्वजनिक स्वास्थ्य गतिविधियों हेतु संस्थागत अवसंरचना को सुदृढ़ करने के लिए उत्तर भारत, दक्षिण भारत और पश्चिम भारत में अखिल भारतीय स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान की नई शाखाएं खोलने का एक प्रस्ताव डीजीएचएस को आगे की कार्रवाई हेतु प्रस्तुत किया गया है।

फरक्का बैराज परियोजना अस्पताल

- संस्थान में सार्वजनिक स्वास्थ्य की गतिविधियों को विस्तार देने तथा उन्हें सुदृढ़ करने के लिए संस्थान में फरक्का बैराज परियोजना अस्पताल शामिल किया गया है।

एनएचएम संबंधी प्रगति, आरएचयू और टीसी, सिंगूर के सेवा क्षेत्र में

- काफी प्रयासों के बाद, वर्तमान वर्ष के दौरान आरएचयू और टीसी, सिंगूर के सेवा क्षेत्र को पश्चिम बंगाल (पीआईपी), एनएचएम में शामिल किया गया है। तद्नुसार, एनएचएम के तहत आने वाले क्षेत्र में पीएचसी और एससी को अबद्ध निधियां प्रदान की जाएंगी। यह राज्य स्वास्थ्य प्रशासन और पीआरआई के बीच अन्य औपचारिक समन्वय में विस्तार लाएगा।
- संस्थान में 3 वर्षीय पाठ्यक्रम वाले एक एमपीएच (महामारी विज्ञान) आरंभ करने की पहल की गई है और डीजीएचएस एमसीआई मानदंडों के अनुरूप इस प्रस्ताव पर विचार करने के लिए सिद्धांत रूप में सहमत हो गया है।

अनुसंधान गतिविधियां और प्रकाशनः संकाय और छात्रों द्वारा जन स्वास्थ्य मुद्दों के विविध पहलुओं से संबंधित कई अनुसंधान किए गए हैं। 28 शोध पत्र प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकशित हुए थे।

एनआरएचएम, पश्चिम बंगाल की निगरानीः पश्चिम बंगाल में एनआरएचएम के क्रियान्वयन की निगरानी मंत्रालय के निर्देशों के अनुसार तिमाही आधार पर की गई थी। निगरानी दल ने राज्य और मंत्रालय में सुधार हेतु विश्लेषण रिपोर्ट और सुझाव प्रस्तुत किए थे। इसने प्रणाली में मौजूद कमियों को कैसे दूर किया जा सकता है, इस संबंध में वास्तविकता को दर्शाकर राज्य स्वास्थ्य प्रणाली को सहयोगी पर्यवेक्षण प्रदान किया था (जैसे दस्तावेजीकरण, एचएमआईएस, वित्तीय पहलू आदि)। इसके कारण शिकायत निवारण प्रणाली, दस्तावेजीकरण, जेएसवाई भुगतान के तरीके, आईईसी आदि में सुधार आया है।

वर्ष के दौरान की गई अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियांः

- जम्मू और कश्मीर तथा आंध्र प्रदेश राज्य में इस संस्थान के कई अधिकारियों द्वारा ईएमआर ड्यूटी की गई;
- 1128 व्यक्तियों को पीत ज्वर टीका दिया गया था;
- पीने योग्य जल के 202 नमूनों की जांच की गई थी जिनमें से 30 को मानव उपभोग के लिए उपयुक्त नहीं पाया गया था। बैक्टीरियोलॉजी विभाग में 234 नमूनों को प्रोसेस किया था।
- आरएचयू और टीसी सेवा क्षेत्र में स्वास्थ्य परिचर्या सेवाएं;
- ये सेवाएं ओपीडी, अंतरंग और फील्ड सेवाओं के माध्यम से हमारे दो केंद्रीय स्वास्थ्य केंद्रों (यूएचसी) द्वारा उपलब्ध कराई जा रही हैं। सामान्य ओपीडी और एमसीएच क्लीनिक को चिकित्सा अधिकारियों द्वारा प्रचालित किया जाता है। प्रतिरक्षण सत्रों को सभी उप–केंद्रों में संचालित किया जाता है। क्षय रोगियों के लिए डॉट्स भी उपलब्ध कराया जाता है;
- स्वास्थ्य परिचर्या सेवाओं को आरएचयूटीसी, सिंगुर में स्थित जन स्वास्थ्य प्रयोगशाला, जैव–रसायन प्रयोगशाला और सैनीटरी इंजीनियरिंग कार्यशाला द्वारा सहयोग दिया जाता है और
- शहरी स्वास्थ्य केंद्र (यूएचसी, चेतला) 1.2 लाख जनसंख्या सहित 3.9 वर्ग किमी के क्षेत्र को कवर करता है। यह केंद्र लाभार्थियों को प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्या सेवाएं और एमसीएच, स्त्री रोग और प्रसव संबंधी पेशेवर स्वास्थ्य, आरएनटीसीपी, एनसीडी, विद्यालय स्वास्थ्य, पोषण और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशाला सेवाओं से संबंधित विशेषज्ञता क्लीनिक सेवाएं भी प्रदान करता है।

राज भाषा का कार्यान्वयन और नीतिः

- राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के भाग के तौर पर संस्थान का हिंदी प्रकोष्ठ संस्थान में हिंदी कार्यशालाएं आयोजित करता है। सितंबर, 2014 में अधिकारियों और अन्य कर्मचारियों के लिए हिंदी पखवाड़े का भी आयोजन किया गया था।

सूचना का अधिकारः

- संस्थान को वर्ष 2014 के दौरान कुल 43 आरटीआई आवेदन प्राप्त हुए हैं।

बजट आवंटन (2014–15)

- वित्तीय वर्ष 2014–15 के लिए बजट आवंटन का ब्यौरा निम्नानुसार हैः

योजना	गैर–योजना	कुल
13.00 करोड़	41.40 करोड़	54.40 करोड़

15.35 केंद्रीय कुष्ठ रोग शिक्षण और अनुसंधान संस्थान (सीएलटी व आरआई), चेंगलपट्टू

क्षेत्रीय कुष्ठ रोग प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान को मूल रूप में भारत सरकार द्वारा वर्ष 1924 में स्थापित लेडी विलिंगटन लेप्रोसी सेनेटोरियम को नियंत्रण में लेते हुए शासी निकाय के अंतर्गत वर्ष 1955 में स्थापित किया था। बाद में भारत सरकार ने 1974 में इसे स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के संबद्ध कार्यालय, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय का अधीनस्थ कार्यालय बना दिया। इसका उद्देश्य कुष्ठ रोगियों को नैदानिक उपचार एवं रेफरल सेवाएं प्रदान

करना, कुष्ठ उन्मूलन/नियंत्रण के प्रशिक्षित जनशक्ति विकास करना और साथ ही कुष्ठ एवं इससे संबंधित विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान करना है। इसमें महामारी विज्ञान और सांख्यिकी, नैदानिक, सर्जिकल और प्रयोगशाला के अलग–अलग खंड हैं। अस्पताल की स्वीकृत क्षमता 124 बिस्तरों की है। इस संस्थान को चिकित्सा अधिकारियों हेतु स्वास्थ्य सांख्यिकी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाने के लिए केंद्रीय स्वास्थ्य आसूचना ब्यूरो (सीबीएचआई), डीजीएचएस भारत सरकार द्वारा नोडल केंद्रों में से एक के तौर पर भी मान्यता प्राप्त है।

उद्देश्य

1. कुष्ठ होने, उसके प्रसार और जटिलता से संबंधित आधारभूत समस्याओं में अनुसंधान की पहल करना
2. एन एल ई पी कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक श्रमिकों को प्रशिक्षित करना
3. कुष्ठरोग के निदान, संक्रमण, पुनः होना और रिंकस्ट्रक्टिव आफ सर्जरी के लिए विशेष सेवाएं उपलब्ध कराना।
4. राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम की मॉनीटरिंग और मूल्यांकन करना।
5. देश में राष्ट्रीय कुष्ठरोधी कार्य को बढ़ावा देने के लिए एक मूलभूत केन्द्र के रूप में कार्य करना

नैदानिक प्रभाग

इसके अंतर्गत पांच वार्ड एवं ओपीडी, नर्सिंग अनुभाग और केंद्रीय पाकशाला है। अस्पताल में जांच वार्ड, मुख्य अस्पताल, रोगी कक्ष एवं महिला अस्पताल हैं। इसका उपयोग मुख्य रूप से लेपरा–रिएक्शन, बीमारी के पुनः होने की जांच/औषधि प्रतिरोध तथा अन्य सामान्य स्वास्थ्य दशाओं, विशेष परिस्थितियों में थैलिसोमाइड का प्रयोग करके लेपरा–रिएक्शन के विशेष उपचार के लिए किया जाता है।

नैदानिक प्रभाग में प्रदत्त रोगी परिचर्या सेवाएं निम्नलिखित हैं:

- बहिरंग रोगी परिचर्या/अंतरंग रोगी उपचार एवं एमडीटी सेवाएं।
- लेपरा–रिएक्शन, पुनः होने/ औषधि प्रतिरोध आदि का विशेषज्ञ द्वारा उपचार।
- प्रशिक्षण क्रियाकलाप और अनुसंधान क्रियाकलाप।
- कुष्ठ में रीलैप्स और लेपरा–रिएक्शन का अध्ययन।

अंतरंग सेवाएं

कुल उपचारित रोगी	8452
कुल भर्ती किए गए	665
कुल डिस्चार्ज किए गए रोगी	676
मौतों की संख्या	003

बहिरंग रोगी

नए कुष्ठ रोगियों की कुल संख्या	96
कुल उपचारित पुराने रोगी	5950
उपचार किए गए कुल मरीज	946

शल्य क्रिया प्रभाग

शल्य क्रिया प्रभाग में आरसीएस के लिए आपरेशन थिएटर, फीजियोथिरेपी अनुभाग , कृत्रिम अंग एवं फुटवियर अनुभाग, एक्स–रे अनुभाग और माइक्रो सेल्यूलर रबर (एमसीआर शीट विनिर्माण इकाइ शामिल हैं। इसके कार्य निम्नलिखित हैं:–

I) रिकन्सट्रक्टिव सर्जरी (आरसीएस), डीपीएमआर क्रियाकलाप
II) प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहयोग
III) तमिलनाडु में शिविर आधारित आरसीएस सर्जरी

रोगी देखभाल क्रियाकलाप: यह प्रभाग विकृतियों और विकृति संभावित दशाओं के क्षेत्र में उपचार उपलब्ध कराता है। विकलांगता की रोकथाम और विकृति को ठीक करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

सीएलटीआरआई ओटी में आरसीएस नहीं किया गया क्योंकि मेजर और माइनर दोनों ओटी पुराने हो गए थे और उनकी मरम्मत की जा रही थी। अब दोनों ओटी की मरम्मत हो चुकी है और नवम्बर, 2014 से उनमें कार्य शुरु हो जाएगा। तमिलनाडु के अरियलुर जिले के तिरुमानपुर ब्लाक पीएचसी में जे.ऐ. शिविर आधारित आरसीएस किया गया।

फिजियोथिरेपी अनुभाग:

इसमें असंवेदनशील हाथ एवं पैर वाले मरीजों को स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करके उन्हें फिजियों सेवाएं उपलब्ध करायी जाती हैं और परामर्श दिया जाता है। यह प्रशिक्षण क्रिया–कलाप में सहयोग प्रदान करता है और फिजियोथिरेपी तकनीशियन प्रशिक्षण में इसकी नोडल भूमिका है।

माइक्रो–सेल्यूलर रबर (एमसीआर) मिल:

माइक्रो–सेल्यूलर रबर (एमसीआर) मिल एक छोटी उत्पादन इकाई है जो कुष्ठ रोगियों के लिए फुटवियर के विनिर्माण में उपयोग किए जाने हेतु आवश्यक मात्रा में एमसीआर शीटों का उत्पादन करती है। एमसीआर उत्पादन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने का काम वर्ष 2012 में शुरु किया गया है। केन्द्रीय चर्म अनुसंधान संस्थान, चेन्नई की मदद से उत्पादन क्षमता के अनुसार डिसपरसन केनिडर संस्थापित किया गया है। संस्थान द्वारा विभिन्न राज्यों कुष्ठ समितियों को एमसीआर शीट उपलब्ध कराए जाते हैं।

एमसीआर शीट उत्पादन	=	810 / वर्ष
उत्पादित एमसीआर फुटवियर	=	875 जोड़े / वर्ष

प्रयोगशाला प्रभाग

इसमें माइक्रोबायोलोजी, माइको बैक्टीरियोलोजी, सीरोलोजी और क्लीनिकल पैथोलोजी, स्किन स्मियर, हिस्टो पैथोलोजी, मोलीक्यूलर बायोलोजी, हिमेटोलोजी, बायोकेमिस्ट्री, इम्यूनोलोजी और एनिमल हाउस हैं। इस प्रभाग को डीएनए के पृथक्करण, पीसीआर संवर्धन और जेल प्रलेखन की मूलभूत सुविधाओं के साथ उन्नत किया गया है। विभिन्न एनिमल कोलोनियों के साथ एनिमल हाउस भी उपलब्ध है जिसमें एम.लेप्री के लिए व्यवहार्यता एवं औषध ग्राहियता परीक्षणों हेतु माउस फूट पैड (एमएफपी) टीकाकरण सहित पशुओं की प्रायोगिक जांच का प्रावधान है।

प्रयोगशाला प्रभाग का वार्षिक निष्पादन

क्लीनिकल पैथोलोजी और स्किन स्मियर	=	6634
हिमेटोलोजी और सिरोलोजी	=	3240
बैक्टीरियोलोजी	=	057
बायोकेमिस्ट्री	=	3342

एनिमल हाउस में पशुओं की स्थिति

बाल्ब / सी माइस इन्ब्रेड स्ट्रेन	=	564
स्विस एल्बिनों माइस इन्ब्रेड स्ट्रेन	=	582

जानपदिक रोग और सांख्यिकी प्रभाग

इस प्रभाग के अंतर्गत तकनीकी, प्रशिक्षण, सांख्यिकी और कम्प्यूटर अनुभाग शामिल हैं। यह प्रभाग प्रचालन अनुसंधान, एनएलईपी की निगरानी एवं मूल्यांकन, निगरानी क्रियाकलाप , सोफ्टवेयर विकसित करने और मेडिकल एवं पेरामेडिकल पेशेवरों को कुष्ठ रोग में प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य करता है।

प्रभाग की मुख्य गतिविधियां

एनएलईपी कार्यकलापों की निगरानी एवं मूल्यांकन

- तमिलनाडु– 8 जिले –अरियलुर, तिरुचिरापल्ली, तिरूवनमलई, विल्लुपुरम, धमारपुरी, कृष्णागिरी, चेन्नई और पुदुकोट्टई।
- सीएलटीआरआई के दल ने स्वास्थ्य कर्मचारियों को रिकोर्ड रखने और रिपोर्ट तैयार करने के संबंध में प्रशिक्षित किया।
- लक्षद्वीप में स्थानीय स्वास्थ्य कर्मचारियों को एनएलईपी गतिविधियों में सशक्त बनाना।

सीएलटीआरआई के दल ने स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं आशा कार्यकर्ताओं को मामले का पता लगाने में प्रशिक्षित किया।

- लक्षद्वीप में सर्वेक्षण

स्थानीय स्वास्थ्य कर्मचारियों की मदद से घर–घर जाकर सर्वेक्षण किया गया और मामलों का पता लगाया गया। चार द्वीपों में 3 एमबी+10 पीबी (7 संदिग्ध मामले)।

प्रशिक्षण:

यह संस्थान राज्य / जिला कुष्ठ अधिकारी (5 दिन), चिकित्सा अधिकारी (5 दिन), स्नातकोत्तर फिजियोथिरेपी तकनीशियन (9 माह),

गैर–चिकित्सा पर्यवेक्षक (2 माह), स्किन स्मियर प्रशिक्षण (5 दिन), स्किन स्मियर रिफ्रेशर प्रशिक्षण (2 दिन), जैव–प्रौद्योगिकी छात्रों, मास्टर जनस्वास्थ्य छात्रों और सीआरआरआई को सक्रिय रुप से प्रशिक्षण उपलब्ध करा रहा है। विभिन्न मेडिकल, पेरामेडिकल और बायोटेक्नोलोजी संस्थाओं के लिए शैक्षणिक दौरे का प्रशिक्षण कार्यक्रम।

क्र स.	सेवा की श्रेणी	2013–14	2014–15 अक्टूबर14 तक)
1	जिला कुष्ठ अधिकारी (5 दिन)	08	04
2	एमडीडीवीएल स्नातकोत्तर (10 दिन)	01	.
3	गैर–चिकित्सा स्वास्थ्य पर्यवेक्षक का प्रशिक्षण कोर्स	64	06
4	फिजियोथिरेपी प्रशिक्षण (9 माह)	03	04
5	स्किन स्मियर तकनीशियन रिफ्रेशर प्रशिक्षण कोर्स (2 दिन)	97	.
6	सीआरआरआई /सरकारी मेडिकल कालेज के हाउस सर्जन	44	30

15.36 क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आरएलटीआरआई), रायपुर

आरएलटीआरआई, रायपुर की स्थापना वर्ष 1979 में की गई थी जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के केन्द्रीय कुष्ठ प्रभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में कुष्ठ रोगियों के लिए प्रशिक्षण, अनुसंधान और उपचार उपलब्ध कराना है।

इस संस्थान में 75 बिस्तरों की अंतरंग रोगी सेवाएं उपलब्ध हैं और यहां दैनिक आधार पर ओपीडी सेवाएं प्रदान की जाती हैं। इसके पास स्किन स्मियर जांच एवं अन्य प्रयोगशाला जांच हेतु सुसज्जित प्रयोगशाला और उस प्रयोगशाला में प्रशिक्षित तकनीकी कर्मचारी भी उपलब्ध हैं। हमारे पास सुसज्जित आपरेशन थिएटर और एक कुशल ओरथोपीडिक सर्जन भी उपलब्ध हैं जहां कुष्ठ संबंधी विकृति को ठीक करने के लिए विभिन्न प्रकार की रिकन्सट्रक्टिव सर्जरी की जाती है। संस्थान द्वारा हमारे अस्पताल में पोलियो की सर्जरी भी की जाती है। आवश्यकता पड़ने पर यह तकनीकी मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराता है।

संस्थान द्वारा कुष्ठ रोग के क्षेत्र में नेमी तौर पर निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं।

1. राष्ट्रीय स्तर पर एसएलओ/डीएलओ /बीएमओ का प्रशिक्षण (1 सप्ताह की अवधि)
2. बीपीटी इन्टर्न प्रशिक्षण (1 सप्ताह की अवधि)
3. कुष्ठ रोग में अंतिम वर्ष के एमबीबीएस छात्रों का अभिमुखीकरण प्रशिक्षण (1 दिन)
4. फिजियोथिरेपिस्ट प्रशिक्षण (1 सप्ताह)
5. स्किन स्मियर तकनीशियन प्रशिक्षण (1 सप्ताह)

संस्थान को छत्तीसगढ़ राज्य के लिए क्षेत्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यालय (आरओएचएफडब्ल्यू) की अतिरिक्त जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं ताकि राज्य और जिले के स्तर पर एनएलईपी सहित विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों और विभिन्न स्तरों पर जेएसवाई, बच्चों की टीकाकरण स्थिति, एएनसी/पीएनसी अनुवर्ती देखभाल, विभिन्न गर्भ निरोधक विधियों का उपयोग करने वाले पात्र दम्पति और आशा (मितानिन) के कार्य की निगरानी की जा सके।

क. आरएलटीआरआई कार्यकलाप

ओपीडी सेवाएं

पता लगाए गए कुष्ठ रोग के नए मामले	**834**
पता लगाए गए नए मामलों में एमबी मामलों की संख्या	**497**
पता लगाए गए नए मामलों में पीबी मामलों की संख्या	**337**
उपचार किए गए पुराने मामलों की संख्या	**4478**
सामान्य मरीज	**2928**
ओपीडी में उपस्थित होने वाले कुल मरीज	**8274**

आईपीडी सेवाएं

आरसीएस और फिजियोथिरेपी के लिए भर्ती किए गए मरीजों की संख्या	**230**
अल्सर के इलाज के लिए भर्ती किए गए	

मरीजों की संख्या	**217**
इएनएल प्रतिक्रिया के उपचार के लिए भर्ती किए गए मरीजों की संख्या	**187**
पीएमआर के लिए भर्ती मरीज	**116**
वार्डो में भर्ती किए गए मरीजों की कुल संख्या	**750**

प्रयोगशाला सेवाएं

की गई माइक्रोबायोलोजिकल जांच की संख्या	**2121**
की गई क्लीनिकल पैथोलोजिकल जांच की संख्या	**2198**
बायोकेमिकल जांच की संख्या	**501**
एमपी	**16**
सिकलिंग	**312**
मलेरिया स्लाइडों की क्रास चेकिंग	**2453**
एचआईवी	**2**
की गई जांच की कुल संख्या	**7603**

फिजियोथिरेपी सेवाएं

वैक्स बाथ थिरेपी दिए गए मरीजों की संख्या	**76**
तेल मालिश, हाइड्रो–आयलिंग–थिरेपी दिए जाने वाले रोगियों की संख्या	**195**
एक्टिव एवं पैसिव व्यायाम दिए जाने वाले रोगियों की संख्या	**553**
इलेक्ट्रिक वाइब्रेटर मसाज दिए जाने वाले रोगियों की संख्या	**0**
शार्ट–वेव डायथर्मी दिए जाने वाले रोगियों की संख्या	**1**
आई.आर दिए जाने वाले रोगियों की संख्या	**9**
अन्य	**38**
फिजियोथिरेपी प्रदान किए जाने वाले रोगियों की कुल संख्या	**872**

आयोजित किए गए प्रशिक्षणः

राष्ट्रीय स्तरीय डीएलओ / बीएमओ / एमओ	4 बैच	29 संख्या (5 दिन)
मेडिकल कॉलेज छात्रों का दिया गया प्रशिक्षण	8 बैच	152 संख्या (1दिन)
बीपीटी इंटर्न छात्रों को गया दिया प्रशिक्षण	19 बैच	62 संख्या (1सप्ताह)
स्कीन स्मियर पर प्रयोगशाला प्रशिक्षण तकनीशियनों का	2 बैच	संख्या 9 (5 सप्ताह)
नर्सिंग छात्रों को दिया गया प्रशिक्षण	5 बैच	145 संख्या (1 दिन)

आरएलटीआरआई, रायपुर में कुष्ठ रोग व पोलियो ग्रसित रोगियों की रीकन्सट्रक्टिव सर्जरीः–

नित्य कर्म में वर्ष 2013–2014 के दौरान आरएलटीआरआई में आयोजित की गई सर्जरियों की संख्या–104

मार्च 2014 में कुष्ठ रोग आरसीएच शिविर – 22 रोगी आरएलटीआरआई, रायपुर में आयोजित की गई कुल पोलियो सर्जरी – 42 रोगी (90 क्रियाविधियां)

मामलों का ब्रेक–अपः

जुलाई–अगस्त 2013 में पोलियो सर्जरी शिविर– 16 रोगी–29 कार्यविधियां (आरएलटीआरआई, रायपुर)

फरवरी 2014 में पोलियो सर्जरी शिविर–26 रोगी–61 कार्यविधियां (आरएलटीआरआई, रायपुर)

आरएलटीआरआई के अंतर्गत विशेष कार्यकलाप

12 जिलों में एनएलईपी का तकनीकी पर्यवेक्षणः एनएलईपी कार्यक्रमों के आकलन हेतु वर्ष के दौरान 12 जिले कवर किरए गए थे तथा दौरे के दौरान सुधार कमियों को दूर करने के लिए सुझाव दिए गए थे।

क्र. स	जिला	डीएच	सीएचसी	पीएचसी	एचएससी	कुल
1	बलोदाबाजार	1	2	2	2	7
2	धमतारी	1	2	4	4	11
3	गरियाबंद	1	2	4	4	11
4	अम्बिकापुर	1	2	4	4	11
5	बलरामपुर	1	2	3	4	10
6	दुर्ग	1	3	4	4	12
7	बलोद	1	3	3	3	10
8	राजनंदगांव	1	3	3	4	11
9	मुगेंली	1	2	4	4	11
10	कोंडागांव	1	3	3	3	10
11	रायगढ़	1	2	3	4	10
12	जंजगीर चम्पा	1	3	5	4	13
	कुल	12	26	42	42	127

15.37 क्षेत्रीय कुष्ठ रोग प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, आस्का

संस्थान की स्थापना वर्ष 1977 में की गई थी। वर्तमान में 67 स्वीकृत पदों में से 36 (ग्रेड ए–2, ग्रेड–सी–21, ग्रेड सी (एमटीएस)–13) स्टाफ पदस्थ है। इसमें 50 बिस्तरों वाला

अस्पताल है और बिस्तर भरे रहने का औसत लगभग 37.86 प्रतिशत है। संस्थान कुष्ठ रोग मामलों तथा रिएक्शन व अल्सर के समस्या जनक, जटिल और इन्टैक्टेबल मामलों का निदान करने में कठिनाई के प्रबंधन हेतु रेफरल केन्द्र के रुप में भी कार्य करता है। पुनः होने वाले दुःसाध्य ईएनएल प्रतिक्रिया मामलों में थैलीडोमाइड भी दिया जाता है। फिजीयोथिरेपी उपाय और एमसीआर चप्पलें भी जरुरतमंद रोगियों को दिए जाते हैं। अंगोच्छेदन और संस्थान कुष्ठ रोग उन्मूलन के कारण हेतु नोडल प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र के रूप में भी कार्य करता है। विभिन्न अन्य शल्य क्रियाएं नियमित रुप से होती रही है और विगत में आरसीएस (रिकसट्रक्टव सर्जरी) कैम्प भी लगाया गया है। संस्थान कुष्ठ उन्मूलन के कारण के लिए नोडल प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्र है।

संस्थान द्वारा की गई संक्षिप्त गतिविधियांः (1 अप्रैल 14 से 31 दिसंबर 14)

- ओपीडी उपस्थिति –1260 (कुष्ठ रोग –953, गैर कुष्ठ रोग 307)
- अस्पताल में कुल भर्ती –159
- उपचार किए गए प्रतिक्रिया मामले –79 (344 रिएक्शन के मामलों में से रोगियों में टाइप–1 के 269, 79 में से टाइप II के 48) पुनः होने वाले इएनएल प्रतिक्रियाओं के 2 रोगियों की थालीडोमाइड दिया गया था।
- प्रमुख शल्यक्रियाएं–11
- डीपीएमआर– कुल उपस्थिति– 117
- प्रयोगशाला कुल जांच –352
- प्रशिक्षणः इस संस्थान के संकाय राज्य के चिकित्सकों एवं पराचिकित्सीय स्टाफों को एनएलईपी का माड्यूलर प्रशिक्षण देने के लिए विशेषज्ञ के रूप में जा रहे हैं। ओडिशा के भिन्न–भिन्न जिलों के कुल 32 एमओ तथा 92 आयुष एमओ को 4 बैचों में ओडिशा सरकार द्वारा आयोजित 3 दिवसीय तथा 2 दिवसीय माड्यूलय प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया गया था। इस संस्थान के संकाय एनएलईपी समीक्षा तथा राज्यों की योजना बैठक तथा आबंटित राज्यों के भिन्न–भिन्न जिलों के एनएलईपी कार्यकलापों की निगरानी में भी भाग लेते हैं तथा साथ ही संयुक्त निगरानी मिशन (जेएमएम) में सदस्य के रूप में भी भाग लेते हैं।

15.38 क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आरएलटीआरआई), गौरीपुर।

क्षेत्रीय कुष्ठ प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान, गोरीपुर बंकुरा अर्थात आरएलटीआरआई, गौरीपुर एक 50 बिस्तर वाला कुष्ठ रोग का अस्पताल है जो 1984 में भारत सरकार द्वारा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के केन्द्रीय कुष्ठ प्रभाग के तहत स्थापित किया गया था और जिसके लक्ष्य व उद्देश्य निम्नलिखित हैंः

(क) विभिन्न भारतीय राज्यों विशेषतः पूर्वोत्तर जोने के राज्यों में कुष्ठ उन्मूलन के लिए एनएलईपी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए प्रर्याप्त प्रशिक्षित जन शक्ति का सृजन (ख) कुष्ठ रोग पर परिचालन अनुसंधान आयोजित करना है। संस्थान गौरीपुर नामक गांव में स्थित है जो बंकुरा जिले(12किमी) कोलकाता शहर (242 किमी), दुर्गापुर नगर (60 किमी) आदि से जुड़ा हुआ है तथा झारखण्ड राज्य से सड़क और रेल से जुड़ा हुआ है।

एनएलईपी प्रबंधन के बदलते परिवेश में, वर्तमान में संस्थान पूरे वर्ष भर कुष्ठ के संबंध में वरिष्ठ अधिकारियों (डीएलओ एवं बीएमओ) के लिए ''प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण''(टीओटी) का आयोजन करता है। इसके अतिरिक्त सप्ताह में 3 दिन ओपीडी सेवाएं चलाता है और कुष्ठ रोगियों के प्रतिकूल प्रतिक्रिया प्रबंध एवं 30 बिस्तारों वाला अस्पताल चलाता है। कठिन मामलों के निदान करने तथा कुष्ठ मामलों में गुणवत्ता देखभाल प्रदान करने हेतु संस्थान में एक प्रयोगशाला, एक एक्सरे इकाई और एक फिजियोथेरेपी इकाई भी है। इसके अतिरिक्त एक फील्ड इकाई है जो वर्ष भर आईईसी गतिविधियां का नियमित रुप से संचालन करती है और इस फील्ड क्षेत्र जो 300000 जनसंख्या को शामिल करता है तथा विरुपता के शीघ्र पहचान और रोकथाम के लिए स्वैच्छिक केस रिपोर्टिंग का कार्य करती है। रिकॉर्ड के अनुसार ओपीडी, आरएलटीआरआई, गोरीपुर में पंजीकृत नए कुष्ठ रोग मामलों में अधिसंख्या संख्या (<60%) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की पाई गई है जो कि इस में इन जातियों की बहुलता तथा इनके सामाजिक स्तर की वजह से है।

टीओटी कार्यक्रम के अलावा, संस्थान में पराचिकित्सक/गैर चिकित्सक कर्मिकों के लिए कुष्ठ रोग के संबंध में लघुकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम देने के लिए उत्कृष्ट व्यवस्था है। वर्ष 2015–16 में उपर्युक्त पाठ्यक्रम को पुनः शुरू करने के लिए प्रयास जारी हैं। अततः, संस्थान के स्थान एवं संसाधनों पर विचार करते हुए इसमें एपीडेमियोलॉजिकल अध्ययन के लिए आदर्श व्यवस्था है।

इस संबंध में कृपया अगले पृष्ठ में निम्नलिखित मुद्रण उद्देश्य के लिए वर्ष 2014–15 हेतु 31 दिसंबर 2014 तक की निष्पादन रिपोर्ट पर ध्यान दें:–

वर्ष 2014–15 की दिसंबर 2014 तक की प्रमुख निष्पादन रिपोर्टें

1. **प्रशिक्षण**– डीएलओ एवं बीएमओ हेतु टीओटी कार्यक्रमः 16 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया गया (ऐसे पाठ्यक्रम के लिए पश्चिम बंगाल के 10 प्रतिभागियों, त्रिपुरा राज्य के 04 प्रतिभागियों, नगालैंड राज्य के 02 प्रतिभागियों ने भाग लिया)। इसके अतिरिक्त, बुर्दवां होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज के बीएचएमएस चतुर्थ वर्ष के 37 छात्रों को कुष्ठ रोग पर एक दिवसीय ओरिएंटेशन प्रशिक्षण दिया गया था। इसके अलावा, जनवरी, 2015 में बीएसएमसीएच, बंकुरा के बीएससी द्वितीय वर्ष के 48 नर्सिंग छात्रों को कुष्ठ रोग पर एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया था।

2. **अंतरंगः** प्रवेश– 132,अल्सर– 117, प्रतिक्रिया– 15, डिस्चार्ज– 142, अल्सर– 121, प्रतिक्रिया– 21

3. **ओपीडी**– नए मामले– 38 संख्या, अन्य मामले– 15, अटेंड किए गए पुराने मामले– 2046, दी गई एमडीटी– 367, आरएफटी– 11, रीलैप्स– 02, उपचारित सामान्य रोगी– 552

4. **फील्ड/आईईसी कार्यकलापः**– की गई सामूहिक चर्चाएं– 392, वितरित की गई पुस्तिकाएं– 2324, किए गए आईईसी कार्यक्रम–78, कवर किए गए गांव– 77, स्कूल सर्वेक्षण– 18, जांच किए गए छात्र– 1224, आशंकित मामले– 28, आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम– 01

5. **प्रयोगशाला इकाईः–**

   स्लिट स्कीन स्मीयर–667

   जैव–रसायन–272

   क) ब्लड शुगर– 202

   ख) ब्लड यूरिया– 70

   क्लीनिकल पैथोलॉजी– 239

   क) नित्य कर्म रक्त जांच– 146

   ख) मूत्र– 92

   ग) एएफबी हेतु बलगम– 01

6. **एक्स–रे यूनिट**– फिलहाल मशीन खराब है।

7. **फिजियोथेरेपी यूनिटः** प्लास्टर किए गए–07, व्यायाम–3807, प्रदत्त मंसल स्टिमुलेशन–139, प्रदत्त मोम थेरेपी–572, प्रदत्त इन्फ्रा रे–25।

विशेष कार्यकलाप

डॉ. बी. सी. मंडल, निदेशक ने एक ऑडियो सीडी एलबम जारी किया है जिसमें उनके द्वारा कंपोज किए गए 10 गीत हैं जिनमें कुष्ठ, टीबी, वेक्टर–जनित बीमारियों, मधुमेह, रक्तदान, साक्षरता संवर्धन, पोलियो, रेबीज आदि से संबंधित गीतों सहित राष्ट्रीय महत्व के स्वास्थ्य एवं सामाजिक महत्व के मुद्दों के गीत शामिल हैं जिनका उद्देश्य सर्वसाधारण के बीच जागृति पैदा करना है।

15.39 राष्ट्रीय मेडिकल लाइब्रेरी (एनएमएल), नई दिल्ली

प्रस्तावना

राष्ट्रीय मेडिकल लाइब्रेरी (एनएमएल) देश में स्वास्थ्य विज्ञान के प्रोफेशनलों को अकादमिक, अनुसंधान एवं क्लिनिकल कार्य में सहयोग देने के लिए मूल्यवान पुस्तकालय सूचना सेवाएं प्रदान करती है। यह देश की स्वास्थ्य देखभाल सूचना सुपुर्दगी प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। एनएमएल द्वारा प्रदत्त महत्वपूर्ण सेवाएं इस प्रकार हैं:

गतिविधियां और सेवाएं

संदर्भ सेवाएं एवं संग्रह वृद्धिः एनएमएल की सबसे बड़ी ताकत इसका पुस्तकों, रिपोर्टों, सीरियलों, पत्रिकाओं के

जिल्दबंद खंडों का समृद्ध संग्रह तथा कम्प्यूटर डाटाबेस है। जैव–चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विज्ञान सूचना के अनमोल खण्ड, जो प्रायः एकमात्र स्रोत है, का उपयोग देश के सभी भागों के प्रोफेशनलों द्वारा व्यापक रूप से किया जाता है। इसमें 1.50 लाख से अधिक (लगभग) पुस्तकों और 6 लाख से अधिक जिल्दबंद पत्रिकाओं का संग्रह है।

यह पुस्तकालय मार्च से अक्टूबर तक प्रातः 9.30 से सांय 08.00 बजे तक और नवंबर से फरवरी (शीतकाल) तक प्रात 9.30 से सांय 07.00 तक वर्ष के 359 दिन खुली रहती है। प्रतिदिन 200 से अधिक उपभोगकर्ता संदर्भ एवं परमर्श, अपेक्षित लेखों की फोटोकॉपियां प्राप्त करने तथा सूचना पुनःप्राप्ति सेवा के लिए पुस्तकालय में आते हैं।

पुस्तकालय में वर्ष भर देश के अलग–अलग भागों से 29045 विजिटर आए और इसने एनएमएल विजिटरों तथा डीजीएचएस एवं स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के स्टॉफ के 2303 संदर्भ प्रश्नों का उत्तर दिया। रिपोर्टधीन अवधि के दौरान 21 नए सदस्यों को एनएमएल पुस्तकालय की सदस्यता दी गई और विजिटरों के 1701 एंट्री पास जारी किए गए। एनएमएल ने 232 पुस्तकें जारी की और 46250 पुस्तकों के संबंध में परामर्श प्रदान किया। इसने अपने उपयोगकर्ताओं को 28 से अधिक अन्तर–पुस्तकालय ऋण प्रदान किए। 1203 पाठकों ने एनएमएल की निःशुल्क इंटरनेट सेवा का उपयोग किया। स्टाफ तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के स्टाफ और डॉक्टरों को 2179 अनापत्ति प्रमाण–पत्र जारी किए गए। पुस्तकालय ने इस अवधि के दौरान जिल्दबंदी के लिए पत्रिकाओं के 6000 से अधिक सैट भेजे।

पुस्तकालय ने देशभर के मेडिकल कॉलेजों में प्रस्तुत छह हजार से अधिक चिकित्सा शोध–प्रबंधों/शोधों का एक डाटाबेस विकसित किया है।

दस्तावेज डिलीवर प्रणाली

सरकारी और निजी फोटोकॉपी काउंटरों के माध्यम से डाक, ई–मेल और फैक्स के जरिये दिल्ली के बाहर से लेखों की फोटोकॉपी के लिए बड़ी संख्या में अनुरोध प्राप्त होते हैं। देशभर के चिकित्सा अनुसंधान अध्येताओं को वार्षिक रूप से लगभग 305000 प्रतियां प्रदान की जाती है। इसमें दिल्ली से बाहर के राज्यों को लेखों की डिलीवरी के लिए डाक खर्च पर शुल्क नहीं लिया जाता।

आवधिक प्रकाशन एवं पुस्तक अधिग्रहण

एनएमएल विविध प्रकार से स्वास्थ्य सूचना का प्रसार करता रहा है जो देश के स्वास्थ्य देखभाल प्रोफेशनलों को सूचना प्रदान किए जाने पर केन्द्रित हैं। एनएमएल पुस्तकों, सीरियलों, रिपोर्टों, मोनोग्राफिक प्रकाशनों और पत्रिकाओं के जिल्दबंद खंडों के समृद्ध संग्रह के लिए जाना जाता है। वर्ष 2014 में, एनएमएल ने 1520 मुद्रित मेडिकल पत्रिकाएं मंगवाई जिन पर 14.22 करोड़ रू. खर्च किए और ग्रेटिस पर 90 पत्रिकाएं प्राप्त की। पुस्तकालय ने 14.15 लाख रू. राशि की 154 पुस्तकें तथा 82 सीरियल अधिप्राप्त किए तथा ग्रेटिस पर 107 पुस्तकें प्राप्त कीं।

लोकल एरिया नेटवर्क (एनएएन) और ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटेलॉग (ओपेक): पुस्तकालय के सर्वर और कंप्यूटर नेटवर्क से जुड़े हुए हैं जो एक समेकित पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर पैकेज–लिबसिस के साथ एक लोकल एरिया नेटवर्क बनाते हैं। अब, पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं द्वारा ओपेक कंप्यूटर खोज के जरिए लगभग 41,850 पुस्तकों का रिकार्ड उपलब्ध है। इंटरनेट सेवाएं, जिनमें पत्रिकाओं के पूर्व पाठ शासिल हैं, प्रदान करने के लिए 2 एमबीपीएक की लीज्ड लाइनें और ब्रॉडबैंड इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है।

ईआरएमईडी–इंडिया ई–जर्नल कंसोर्टियमः वर्ष 2014 में एनएमएल ने 17.30 करोड़ रू. की लागत से 96 संस्थाओं के लिए 6 प्रकाशनों से 289 ई–जर्नल मंगवाए हैं।

प्रशिक्षण

जागरूकता पैदा करने और सिस्टम को अधिक प्रयोक्ता अनुकूल बनाने के लिए निम्नलिखित संस्थाओं में राष्ट्रीय/क्षेत्रीय/राज्य स्तर पर ईआरएमईडी के लिए प्रशिक्षण–सह–प्रबोधन कार्यक्रम संचालित किया गया है, जिसमें नीचे दी गई सूची के अनुसार 32 संस्थानों के 695 प्रतिभागियों ने हिस्सा लियाः–

- राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, सूरत, गुजरात
- राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात
- पी. डी. यू. मेडिकल कॉलेज, राजकोट, गुजरात
- एम. पी. शाह मेडिकल कॉलेज जामनगर, गुजरात
- जेएनएल मेडिकल कॉलेज (एएमयू), अलीगढ़, उत्तरप्रदेश

- इंस्टीट्यूट ऑफ पीजी मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- वैस्ट बंगाल यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ सर्विसेज, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- चित्तरंजन राष्ट्रीय कैंसर संस्थान, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- मद्रास मेडिकल कॉलेज, चैन्नई, तमिलनाडु
- कन्याकुमारी राजकीय मेडिकल कॉलेज, कन्याकुमारी, तमिलनाडु
- यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ सर्विसेज, नासिक, महाराष्ट्र
- नीलरत्न सीकर मेडिकल कॉलेज, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- कलकत्ता राष्ट्रीय मेडिकल कॉलेज, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
- राजकीय मेडिकल कॉलेज, तिरूअनंतपुरम, केरल
- वी. एम. मेडिकल कॉलेज, शोलापुर, महाराष्ट्र
- वी.एस.सी.सी. एवं एस. जे. अस्पताल, नई दिल्ली
- स्टेनली मेडिकल विश्विविद्यालय, चैन्नई, तमिलनाडु
- राजकीय मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, चंडीगढ़, पंजाब
- राजकीय सिद्धार्थ मेडिकल कॉलेज, विजयवाड़ा, आन्ध्र प्रदेश
- गोवा मेडिकल कॉलेज, गोवा
- केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, सोलन, हिमाचल प्रदेश
- आर्म्ड फोर्स मेडिकल कॉलेज, पुणे, महाराष्ट्र
- बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज, सागर, मध्य प्रदेश
- पं. बी. डी. शर्मा पी.जी. मेडिकल कॉलेज, रोहतक, हरियाणा
- गांधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल, मध्य प्रदेश
- एस. जी. पी. जी. आई. लखनऊ, उत्तर प्रदेश
- डॉ. एन. टी. आर. यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंसेज, आन्ध्र प्रदेश
- बी. जे. मेडिकल कॉलेज, अहमदाबाद, गुजरात
- अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान, मैसूर, कर्नाटक
- जे. एल. एन. इंस्टीट्यूट पीजीआईएम एंड आर, पुदुचेरी
- डॉ. एम. जी. आर. मेडिकल कॉलेज, चैन्नई, आन्ध्र प्रदेश

एनएमएल ने ईआरएमईडी के लिए प्रत्येक प्रतिभागी की जागरूकता बढ़ाने हेतु 'यूजर्स मैन्युअल' और ''पोस्टरों'' की भी पर्याप्त संख्या में उपलब्ध कराया है। यह आशा की जाती है कि ईआरएमईडी के संसाधनों का उपयोग करने के लिए उपयोगकर्ताओं का खोज करने का कौशल प्रभावशाली होगा।

पुस्तकालय प्रबंधन हेतु निम्नलिखित अस्पतालों/संस्थानों को परामर्श सेवाएं उपलब्ध कराना:

राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, नई दिल्ली

- मानव व्यवहार एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (आईएचबीएएस), दिल्ली
- वी.एम.एम.सी एवं सफदर जंग अस्पताल, नई दिल्ली
- डॉ. आर. एम. एल. अस्पताल, नई दिल्ली

शाखा पुस्तकालय:

एनएमएल पढ़ने के उद्देश्य से स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के अधिकारियों एवं स्टाफ की पुस्तकालय और सूचना संबंधी जरूरतों को पूरा करने हेतु निर्माण भवन में एन एम एल का शाखा पुस्तकालय चला रहा है।

15.40 राष्ट्रीय तपेदिक एवं श्वसन रोग संस्थान, नई दिल्ली

राष्ट्रीय तपेदिक एवं श्वसन रोग संस्थान (एन आई टी आर डी) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान है। यह संस्थान तपेदिक और श्वसन रोगों के क्षेत्र में निदान, उपचार, शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए शीर्षस्थ संस्थान है। संस्थान में 15 विभाग है।

माइक्रोबायोलॉजी विभाग, जिसमें एक राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला है, लाइन प्रोब ऐस्से, एमजीआईटी सिस्टम, जीन एक्सपर्ट और बीएसएल–III सुविधा जैसी अधुनातन सुविधाएं उपलब्ध करवा कर भर्ती किए गए एवं बहिरंग रोगियों दोनों को गुणवत्तापरक नैदानिक देखभाल सेवा प्रदान करता है और इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) एवं ग्लोबल लैबोरेटरी इनीशिएटिव (जीएलआई) द्वारा डब्ल्यूएचओ/जीएलआई टीबी सुप्रानेशनल रिफरेंस लैबोरेटरी नेटवर्क के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान की है। बाल रोग, रेस्पायरेटरी क्रिटिकल केयर एवं थोरेसिक सर्जरी जैसे अन्य विभाग बच्चों, गंभीर एवं थोरेसिक सर्जरी के जरूरतमंदों को क्रमशः टीबी एवं श्वसन तंत्र संबंधी बीमारियों के प्रबंधन को सुसाध्य बनाते हैं।

यह संस्थान टीबी एवं विभिन्न श्वसन तंत्र संबंधी गैर–तपेदिक रोगों के निदान हेतु प्रतिदिन एक ओपीडी संचालित करता है। संस्थान टीबी और मल्टी–ड्रग रेजिस्टेंट (एमडीआर) टीबी के प्रबंधन में क्रमशः डॉट्स एवं ड्रग रेजिस्टेंट टीबी की कार्यक्रमगत प्रबंधन (पीएमडीटी) कार्यनीतियों का कार्यान्वयन करता रहा है। संस्थान का जन स्वास्थ्य विभाग 8 नामोदिष्ट माइक्रोस्कोपिक केन्द्रों के जरिए दक्षिणी दिल्ली में 8 लाख की आबादी में क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम (आरएनटीसीपी) चलाता है। निद्रा क्लिनिक फेफड़ों के कैंसर क्लिनिक, थोरासिक सर्जरी क्लिनिक, एलर्जी क्लिनिक, तंबाकू मुक्ति क्लिनिक, पलमोनरी पुनर्वास क्लिनिक और लेजर थैरेपी क्लिनिक तथा संवेदनाहरण पूर्व क्लिनिक जैसे विशेष क्लिनिक विभिन्न गैर ट्यूबरकूलर श्वसनीय रोगों पर फोकस करते है। यह संस्थान वार्डों और आईसीयू में 470 पलंगों के जरिए क्षय रोग और श्वसनीय रोगों के गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों को अंतरग उपचार प्रदान करता है। 24 घंटे श्वसनीय आपातकालीन सुविधाओं की उपलब्धता से इन रोगियों के लिए गहन परिचर्या प्रदानगी सुगम बनाती है। पलमोनरी फंक्शन टेस्ट प्रयोगशाला, ब्रोंकोस्कोपी प्रयोगशाला और स्लिप लैब के अलावा माइक्रोबायोलॉजी, पैथोलॉजी, जैव रसायान और रेड़ियोलॉजी विभागों द्वारा नैदानिक सेवाएं मुख्य तौर पर प्रदान की जाती है। इस संस्थान में देश के और विदेशों के प्रशिक्षार्थी को क्षय रोग और श्वसनीय रोगों के विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए अवंसरचना मौजूद है। यह वर्ष 1999 से स्नातकोत्तर डीएनबी (श्वसनीय रोग) डिग्री कोर्स के लिए अभिज्ञात केन्द्र है और प्रति वर्ष 14 डीएनबी विद्यार्थियों को प्रवेश देता है। संस्थान ने नियमित रूप से अध्यापन और अनुसंधानात्मक कार्यकलाप किए जाते हैं।

अप्रैल 2014 से दिसंबर 2014 की अवधि के दौरान प्रति दिन 157 नए पंजीकरणों की औसत के साथ एनआईटीआरडी–ओपीडी में कुल 35278 नए वक्ष सिम्पटोमेटिक्स आए। कुल ओपीडी उपस्थिति 1.29 लाख थी जिसका औसत प्रतिदिन 577 रोगी था। 6036 रोगियों में टीबी पाया गया और उन्हें एनआईटीआईडी–ओपीडी से एनआईटीआरडी–डॉट्स केन्द्रों (18 प्रतिशत) अथवा दिल्ली में वक्ष क्लिनिक (53 प्रतिशत) अथवा पड़ोसी राज्यों (29 प्रतिशत) में भेजा गया। कवक विज्ञान विभाग द्वारा कुल 57183 स्मियर माइक्रोस्कोपिक टेस्ट किए गए। 3341 पलमोनरी तथा 2159 एक्सट्रा पलमोनरी स्पेसिमैन के लिए कन्वेन्शनल कल्चर हेतु आवेदन किया गया जबकि 6192 पलमोनरी और 1135 एक्सट्रा पलमोनरी स्पेसिमैन के लिए एमजीआईटी लिक्विड कल्चर हेतु आवेदन किया गया। कुल 307 और 1749 जांचों में क्रमशः कन्वेन्शनल और एमजीआईटी पद्धतियों द्वारा 1 और 2 लाइन औषधों संबंधी औषध सुग्राहिता जांच की गई। 3955 नमूनों के संबंध में प्रतिरोधी क्षय रोग के तत्काल आण्विक निदान के लिए लाइन प्रोब एस्से किया गया।

संस्थान में रोगियों के उपचार और अस्पताल में भर्ती किए जाने के संबंध में ब्यौरा निम्नलिखित था।

- 5551 इंडोर प्रवेश (95 प्रतिशत फ्री और 5 प्रतिशत भुगतान वाले)
- 7388 रोगी इमरजेंसी वार्ड में आए
- 460 आईसीयू दाखिले
- क्षय रोग और श्वसनी विकृतियों से पीड़ित विभिन्न रोगियों की 436 बड़ी थौरासिक शल्य चिकित्साएं की गई थी।
- एआरटी केन्द्रों में पंजीकृत वाले रोगियों में से 700 रोगी एंटीरिट्रोवायरल थैरेपी पर जिंदा हैं।

उपलब्धियाः

आईएमए, साउथ दिल्ली के सहयोग से प्रैक्टिसरत डॉक्टरों और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए 23 अगस्त, 2014 को संस्थान में ''क्षय रोग एवं एमडीआर/एसडीआर टीबी में नवीन प्रबंधन कार्यविधियां'' के संबंध में सीएमई आयोजित किया गया। इसी प्रकार 20 सितंबर, 2014 को नर्सिंग अनुभाग द्वारा संस्थान में ''वायु जनित संक्रमण पर नियंत्रण'' संबंधित सीएमई आयोजित किया गया। दिल्ली के विभिन्न अस्पतालों की 60 नर्सों ने सीएमई में भाग लिया। गीनी विलियम्स, टीबी प्रोजेक्ट निदेशक, अंतरराष्ट्रीय नर्स परिषद मुख्य अतिथि थे। भारतीय उपचर्या परिषद के 30 मुख्य प्रशिक्षकों ने दिनांक 19 सितंबर, 2014 को हुई कार्यशाला के भाग के रूप में संस्थान का दौरा किया।

10 नवंबर, 2014 को एक नए एआरटी केन्द्र का उद्घाटन किया गया और थौरासिक सर्जरी विभाग को सुपर विशेषज्ञता प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए डिप्लोमेट राष्ट्रीय बोर्ड द्वारा मान्यता प्रदान की गई एवं संस्थान में तीन वर्षीय अध्यापन कार्यक्रम अनुमोदित किया गया।

अनुसंधान और प्रकाशनः

अप्रैल, 2014 से दिसंबर 2014 की अवधि के दौरान संस्थान में श्वसनी रोगों की विभिन्न उप विशेषज्ञताओं के संबंध में नियमित रूप से अनुसंधान परियोजनाएँ चलाई गई। इसमें डीएनबी और संस्थान के संकाय द्वारा किए गए अनुसंधान भी शामिल थे। संस्थान के संकाय के 12 से ज्यादा प्रकाशन विभिन्न प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नलों अथवा पुस्तकों में प्रकाशित हुए। संस्थान ने नियमित रूप से त्रैमासिक न्यूज पत्र प्रकाशित करना जारी रखा।

शिक्षण और प्रशिक्षण

यह संस्थान आरएनटीसीपी के अंतर्गत कार्यनीतियों के कार्यान्वयन में हमारे देश के अन्य राज्यों से विभिन्न चिकित्सा और परा चिकित्सा कार्मिकों के प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से लगा हुआ है। यह संस्थान विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर (एमडी/पी.एचडी) पाठ्यक्रमों को शिक्षण और प्रशिक्षण सुविधाएं भी प्रदान करता है। राजकुमारी अमृतकौर नर्सिंग कॉलेज के नर्सिंग छात्रों और नई दिल्ली क्षय रोग केन्द्र के प्रशिक्षार्थी स्वास्थ्य आगंतुकों को क्षय रोग के उपचार में प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है। अप्रैल, 2014 से दिसंबर 2014 की अवधि के दौरान स्वास्थ्य परिचर्या के विभिन्न क्षेत्रों के 700 से अधिक प्रतिभागियों ने संस्थान में होने वाले प्रशिक्षण में भाग लिया (नर्सिंग विद्यार्थियों सहित)। इसमें यूनियन द्वारा अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण भी शामिल था। क्षय रोग और श्वसनी रोग के विषय में अधिकाधिक जानकारी और दक्षता हासिल करने के लिए चार संकाय सदस्य विदेश भी गए।

15.41 राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (निम्हांस), बेंगलुरु.

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान का पंजीकरण 1974 में कर्नाटक मानसिक अस्पताल और अखिल भारतीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थान के एकीकरण से हुआ था। केन्द्र सरकार और कर्नाटक राज्य सरकार ने संयुक्त रुप से वित्तपोषण किया है। संस्थान को 2012 में ''राष्ट्रीय महत्व का संस्थान'' घोषित किया गया था। संस्थान में एक सांस्थानिक निकाय है जिसके अध्यक्ष केन्द्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, भारत सरकार है। इस निकाय की सहायता सांस्थानिक निकाय, स्थायी वित्त समिति, शैक्षिक समिति, स्थायी चयन समिति एवं आयोजना तथा मॉनीटरिंग बोर्ड द्वारा की जाती है।

निम्हांस मनश्चिकित्सा, तंत्रिका विज्ञान और तंत्रिका शल्य चिकित्सा क्षेत्रों एवं इसके संबद्ध क्षेत्रों में एक तृतीय परिचर्या अस्पताल और संस्थान के मुख्य ध्यान दिए जाने वाले क्षेत्र शिक्षण, अनुसंधान और समुदाय उन्मुखी कार्यकलाप हैं। इस संस्थान का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान की वृद्धि और विकास को बढ़ावा देना तथा मुख्य उद्देश्य सेवाओं में बहुविषयक दृष्टिकोण लाना है। वर्ष के दौरान संस्थान ने 4.6 लाख रोगियों से अधिक में चिकित्सा परिचर्या प्राप्त की। इस संस्थान में कैजुएलटी और आपातकालनी सेवाओं के लिए अनन्य रूप से 908 पलंग और 118 पलंग है।

निम्हांस का अधिदेश विभिन्न स्वास्थ्य परिचर्या प्रदानगी प्रणाली में मानव संसाधन विकास के क्षमता निर्माण और

सुदृढ़ीकरण को सुविधाजनक बनाना है। देश की आवश्यकताओँ की पूर्ति के लिए आवश्यक दक्षताओं को बढ़ावा देने एवं रोजगार योग्य कार्मिक शक्ति तैयार करने के लिए निम्हांस चिकित्सीय, परा चिकित्सीय और नर्सिंग व्यावसायिकों को उन्नत तकनीकी जानकारी प्रदान करने हेतु सक्रिय रूप से प्रतिबद्ध है। मौजूदा वर्ष के दौरान दिसंबर, 2014 तक निम्हांस में 3,80,384 रोगियों का मूल्यांकन किया गया है।

नई पहलेः

- निम्हांस ने राष्ट्रीय सूचना केन्द्र, बंगलुरू के सहयोग से एक व्यापक कंप्यूट्रीकृत ऑन लाइन ई–अस्पताल समाधन सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है। ऑन लाइन कार्यकलापों (जांच के लिए आदेश देना, प्रयोगशाला की रिपोर्ट तैयार करना, रोगियों का सारांश तैयार करना आदि) के अलावा ई–अस्पताल रोगी पंजीकरण और बिलिंग मॉड्यूल (प्रिशिक्रपशन मॉड्यूल और फार्मेसी कार्यकलापों से जुड़ा हुआ) पेश करता है जो इसे सार्वजनिक क्षेत्र में अपनी तरह का पहला स्नातकोत्तर चिकित्सा संस्थान बनाता है।
- मौजूदा नर्सिंग छात्रावास और कावेरी छात्रावास का एक और तल बनाकर विस्तार किया गया है ताकि नर्सों और स्नातकोत्तर वृद्धि होते हुए छात्रों के लिए निवास की व्यवस्था की जा सके।
- पुरानी हैरीटेज बिल्डिंग, जो 1940 में चिल्ड्रन्स पवेलियन कहलाती थी, को भी इसके हैरीटेज वास्तुशिल्प को बनाए रखकर आशोधित किया गया है ताकि इसमें भूतल पर निम्हांस का हिस्ट्री म्यूजियम स्थापित किया जा सके। इसी बिल्डिंग के पहले तल पर मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान के संबंध में एक विज्ञान गैलरी होगी ताकि स्कूलों और कॉलेजों के छात्र–छात्राओं और आम नागरिकों में जागरूकता स्थापित की जा सके।
- संस्थान में आधुनिक मैगनेटो एंसेफॉलो–ग्राफी (एमईजी) लगाई गई है। यह देश में अपनी तरह का पहला है और इसमें ईईजी/विडियो ईईजी डाटा और एमईजी डाटा के साथ–साथ एमआरआई, सीटी, पीईटी स्कैन डाटा के एक साथ पंजीकरण करने का प्रावधान है। इससे निम्हांस में व्यापक एपीलेप्सी सर्जरी कार्यक्रम में अत्यधिक सुविधा मिलेगी।
- नवंबर, 2012 से कार्यरत निम्हांस कल्याण केन्द्र को एक और तल बनाकर वर्ष 2014 में और बढ़ाया गया था जिससे निवारक और प्रोत्साहक मानसिक स्वास्थ्य कार्यकलापों में और वृद्धि हुई।

''मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान नवाचार'' संबंधी उन्नत अनुसंधान केन्द्र

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और निम्हांस की संयुक्त पहल ''कार्मिक शक्ति विकास और ट्रांसलेशनल अनुसंधान'' का तंत्रिका जैव विज्ञान अनुसंधान केन्द्र (तीसरा तल) में उद्घाटन किया गया था। इस केन्द्र का विजन ''ट्रांसलेशनल अनुसंधान के लिए आधुनिकतम और नवीन प्रौद्योगिकी तैयार करना और मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी होना तथा वैज्ञानिक सहयोगों और कोलेबोरेशन द्वारा राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु व्यापक कार्मिक शक्ति तैयार करना है''। फिलहाल इस केन्द्र में विशेषज्ञता समिति द्वारा मूल्याकंन के उपरांत तीन परियोजनाएं है। इस अवसर पर ''नर्वस सिस्टम के आम संक्रमणों और शिक्षाप्रद स्लाइडों की एटलस'' और मानव ब्रेन बैंक द्वारा तैयार की गई पुस्तिका का विमोचन किया गया।

- संस्थान में नैदानिक प्रोटोमिक्स के लिए उन्नत व्यापक स्पेक्ट्रोमीटर सुविधा (ऑरबीट्रैप फ्यूजन ट्राइब्रिड मास स्पेक्ट्रोमीटर) शुरू हो चुकी है। निम्हांस और जैव सूचना संस्थान ने तंत्रिका संक्रमणों और तंत्रिका विज्ञानी रोगों की आणविक रूपरेखा तैयार करने के लिए कटिंग एज जिनोमिक और प्रोटोमिक प्लेटफार्म के उपयोग के लिए सहयोग किया है। निम्हांस के नैदानियों और आईओबी के वैज्ञानिकों के बीच स्वतंत्र और संवर्धित परस्पर वार्ता के लिए इस

संस्थान ने तंत्रिका जैव विज्ञानी अनुसंधान केन्द्र, निम्हांस में आईओपी के लिए जैव सूचना और प्रोटोमिक्स जैव सूचना आवंटित की है।

- महिला उपचार विंग, औषध विषालु विज्ञान प्रयोगशाला और वर्चुअल नॉलेज केन्द्र वाले एडिक्शन मेडिक्शन केन्द्र का उद्घाटन किया गया है और इसे रोगी परिचर्या हेतु समर्पित कर दिया गया है। महिला उपचार विंग औषध दुर्वसन विकृति से पीड़ित महिलाओं के लिए 20 पलंग वाला एक अनन्य सुविधा केन्द्र है। इस केन्द्र में दवाइयों, परामर्श, पारिवारिक कार्यकलापों और रोगी आधारित अन्य सेवाओं के रूप में व्यक्ति विशेष संबंधी परिचर्या पेश की जाएंगी। औषध विषालु विज्ञान प्रयोगशाला रसायनिक जांचे करने के लिए पूर्णतया सुसज्जित है ताकि औषध दुर्वसन से पीड़ित रोगियों और मनश्चिकित्सीय रोगों से पीड़ित रोगियों पर नजर रखी जा सके। इसने 20 विभिन्न जांच टेस्टों और एचपीटीएलसी (हाइपरफोर्मेंस थिन लेयर क्रोमेटोग्राफी), जीसीएमएस गैस क्रोमेटोग्राफी–मास स्पेक्ट्रोस्कोपी) विभिन्न औषध दुर्वसनों के अलिसा आधारित विश्लेषण का मानकीकरण किया है। मल्टी प्वाइंट विडियो कांफ्रेसिंग के उपयोग और भारत और विश्व के विभिन्न केन्द्रों में प्रशिक्षण सत्रों के संचरण के लिए वर्चुअल नॉलेज सेंटर स्थापित किया गया।
- मनश्चिकित्सीय विभाग द्वारा चिरकालिक आत्मघाती और हिंसक व्यवहार वाले रोगियों के लिए सिएफर एंड असिस्ट कहलाए जाने वाले दो नए वार्ड खोले हैं।

संस्थान में तंत्रिका केन्द्र में एक आधुनिकतम डिजिटल सब्ट्रेक्शन एंजियोग्राफी (डीएसए 2) उपस्कर को चालू कर दिया गया है।

15.42 राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान, बंगलौर

राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान (एनटीआई) बंगलौर, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रलय के अंतर्गत एक संगठन है जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और यूनिसेफ के घनिष्ठ सहयोग से 1959 में स्थापित किया गया। इस संस्थान को राष्ट्रीय टीबी नियंत्रण कार्यक्रम बनाने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था। यह संस्थान सेन्ट्रल टीबी प्रभाग की तकनीकी शाखा है जो देश में राष्ट्रीय टीबी नियंत्रण कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए उत्तरदायी है।

यह दक्षिण एशिया में क्षयरोग नियंत्रण के क्षेत्र में शीर्ष संस्थान है, जो इस क्षेत्र में क्षयरोग नियंत्रण के लिए मानव संसाधन आवयकताओं को पूरा करता है। 1985 से, संस्थान प्रशिक्षण और अनुसंधान हेतु डब्ल्यूएचओ के सहयोग केन्द्र के रुप में कार्यरत है। संस्थान क्षयरोग नियंत्रण के विभिन्न घटकों पर संचलनात्मक अनुसंधान करा रहा हैं। संस्थान में पशु अनुसंधान सुविधाओं द्वारा समर्पित क्षयरोग नियंत्रण कार्यकलापों में बाह्रय गुणवत्ता मूल्यांकन हेतु राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला है। यह देश भर में ऑषध रोधी टीबी के कार्यक्रम संबंधी प्रबंधन के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए मध्यवर्ती संदर्भ प्रयोगशाला स्थापित करने में भी सहयोग देता है।

इस संस्थान को आरएनटीसीपी संबंधी आपरेशन रिसर्च हेतु एक नोडल केन्द्र के रुप में भी अभिज्ञात किया गया हैद्य नोडल केन्द्र के रुप में मुख्य कार्यकलापों में कार्यशालाएं आयोजित करना, अनुसंधानात्मक एजेंडा तैयार करना और प्रकाशन के जरिए अनुसंधान डाटा का प्रचार–प्रसार करना शामिल है।

एनटीआई के उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- राष्ट्रीय स्तर पर लागू, आर्थिक रूप से व्यवहार्य और वैज्ञानिक रूप से मान्य टीबी नियंत्रण कार्यक्रम तैयार करना;
- राष्ट्रीय टीबी नियंत्रण कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए मानव शक्ति को प्रशिक्षित करना;

- टीबी नियंत्रण के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए डीजीएचएस निदेशालय और राज्य टीबी इकाइयों के सेंट्रल टीबी डिवीजन के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करना;
- राष्ट्रीय टीबी नियंत्रण कार्यक्रम पर नजर रखना और निगरानी रखना;
- ऑपरेशनल अनुसंधान करना और
- राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला के रुप में कार्य करना।

1985 के बाद से, संस्थान दक्षिण पूर्व एशिया में प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए एक डब्ल्यूएचओ सहयोगी केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है जो इस क्षेत्र में टीबी नियंत्रण के लिए मानव संसाधन आवश्यकताओं और अनुसंधान को पूरा करता है।

इसके अलावा एनटीआई में की गई तकनीकी गतिविधियां निम्लिखित हैं:

- आरएनटीसीपी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार और राज्य सरकारों को तकनीकी सहायता प्रदान करना;
- राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला के रूप में कार्य करना;
- आपरेशनल रिसर्च का कार्य करना;
- आरएनटीसीपी के प्रबंधन के लिए मानव संसाधन विकास;
- आरएनटीसीपी का समर्थन पर्यवेक्षण, निगरानी और मूल्यांकन;
- आरएनटीसीपी के लिए सहायता एडवोकेसी, संचार और सामाजिक जुड़ाव;
- आरएनटीसीपी के लिए सूचना प्रौद्योगिकी समर्थन प्रदान करना और
- डब्ल्यूएचओ, सार्क, संघ और ग्लोबल टीबी नियंत्रण के अन्य भागीदारों के लिए तकनीकी सहायता।

केन्द्रीय टीबी डिवीजन के एक तकनीकी स्कन्ध होने के नाते, निदेशक एनटीआई आरएनटीसीपी संबंधी राष्ट्रीय सलाहकार समितियों और टीडब्ल्यूजी का सदस्य है।

राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला द्वारा मानव संसाधन विकास, गुणवत्ता नियंत्रण, दवा प्रतिरोधी टीबी के कार्यक्रमात्मक प्रबंधन और लैब आधारित अनुसंधान में विभिन्न राज्यों के लिए प्रयोगशाला सहायता प्रदान की जाती है। इन सुविधाओं में प्रत्यक्ष थूक स्मीयर और फ्लोरोसेंट माइक्रोस्कोपी, अलगाव, पहचान और ठोस, तरल और लाइन प्रोब एस्से द्वारा माइकोबैक्टीरियम टीबी का संवेदनशीलता परीक्षण शामिल हैं।जेनेटिक अनुक्रमण और जनरल विशेषज्ञ सुविधाएं भी प्रयोगशाला में शुरू की गई है।राष्ट्रीय दवा प्रतिरोध सर्वेक्षण का एनटीआई एनआरएल द्वारा आयोजन किया जा रहा है।

प्रयोगशाला डिवीजन में निम्न शामिल हैं:

- **राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला:** विभिन्न मध्यवर्ती संदर्भ प्रयोगशालाओं में थूक स्मीयर माइक्रोस्कोपी की गुणवत्ता का एनटीआई की राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला (एनआरएल) द्वारा ऑनसाइट मूल्यांकन किया जा रहा है जो भारी गुणवत्ता मूल्यांकन के लिए आईआरएल का पर्यवेक्षण करता है। आईआरएल का समय–समय पर मूल्यांकन किया जाता है और तत्काल सुधारात्मक कार्रवाई के लिए सुधारात्मक कार्रवाईयों का सुझाव दिया जाता है।
- **आईसीईएलटी:** आईसीईएलटी नए, द्रुत और लागत प्रभावी निदान के लिए अनुसंधान और सहायता प्रदान करने के लिए एनटीआई में एक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है।
- **पशु मॉडल रिसर्च यूनिट:** प्रयोगशाला डिवीजन के अंतर्गत पशु मॉडल रिसर्च यूनिट जानवरों पर नियंत्रण और प्रयोग के पर्यवेक्षण (सीपीसीएसईए) के प्रयोजन हेतु गठित समिति के तहत पंजीकृत है।पशु संबंधी प्रयोग अध्ययन भारत सरकार के निर्धारित दिशा निर्देशों के अनुसार गठित संस्थागत पशु आचार समिति द्वारा अनुमोदन के अधीन है।

पंजीकृत नमूनों की कुल संख्या (एनडीआर++ अन्य)	2444
एनडीआर के लिए रोगी की कुल संख्या	474
एनडीआर के लिए नमूनों की कुल संख्या	948
एनडीआर के लिए प्राथमिक कल्चर के लिए रखे गए नमूनों की कुल संख्या	926
एनटीआई को भेजे गए रोगियों से प्राप्त पंजीकृत नमूनों की कुल संख्या	40
डॉट्स प्लस के तहत प्लान बी के संबंध में पंजीकृत एमडीआर संदिग्धों के थूक के नमूनों की कुल संख्या	––
पंजीकृत कुल एक्सडीआर संदिग्ध कल्चर के नमूने	973
प्राप्त प्रवीणता परीक्षण के लिए पंजीकृत कुल कल्चर के नमूने	30
बेल्जियम से प्राप्त प्रवीणता परीक्षण के 20वेंदौर के लिए पंजीकृत कुल कल्चरों के नमूने	20
प्राथमिक कल्चर के लिए रखे गए नमूनों की कुल संख्या (एलपीए व ओपी)	528
पहचान परीक्षण के अधीन नमूनों की कुल संख्या	144
1 और 2 लाइन औषधों दोनों के लिए एलजीए का इस्तेमाल करके आनुपातिक पद्धितियों द्वारा किए गए संवेदनशीलता परीक्षण की कुल संख्या	213
एमजीआईटी का उपयोग करके ड्रग की संवेदनशीलता परीक्षण की कुल संख्या	885
किए गए लाइन प्रोब एस्से की कुल संख्या	412
जीन एक्सपर्ट के अध्यधीन नमूनों की कुल संख्या	7

जनवरी 2014–– नवंबर 2014 की अवधि के दौरान एनटीआई में संसाधित नमूनें

प्रशिक्षण कार्यकलापः

राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान, बंगलुरू ने तीन ईक्यूए प्रशिक्षण कार्यक्रम, माइक्रोस्कोप की मामूली मरम्मत और निवारक अनुरक्षण में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम, एलईडी–फलोरोसेंट माइक्रोस्कोप प्रशिक्षण में चार प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा एमजीआईटी 2 लाइन डीएसटी प्रशिक्षण में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

एनटीआई ने भारत में अनेक अध्ययन भी की हैं। कुछ महत्वपूर्ण अध्ययनों की सूची नीचे दी गई हैः

1. कर्नाटक राज्य के तुमकुर जिले में क्षय रोगियों की ''कम रिपोर्टिंग'' का पता लगाने के लिए इंवेन्ट्री अध्ययन;
2. शुरुआती थूक जांच संबंधी स्मीयर नेगेटिव रिपोर्ट वाले पलमोनरी क्षय रोगियों जैसे लक्षणों वाले रोगियों के लिए अल्गोरिथ्म के निदान के कार्यान्वयन में चुनौतियां;
3. नीलामंगल ताल्लुक, बंगलुरू में स्कूल के बच्चों में क्षय रोग के संक्रमण का वार्षिक जोखिम;
4. कर्नाटक राज्य में आरएनटीसीपी के अंतर्गत पंजीकृत नए स्मीयर नेगेटिव पीटीबी रोगियों में अल्गोरिथ्म के निदान का मूल्यांकन;
5. शुरुआती थूक जांच संबंधी स्मीयर नेगेटिव रिपोर्ट वाले पलमोनरी क्षय रोगियों जैसे लक्षणों वाले रोगियों में वक्ष का एक्सरे करके अतिरिक्त जांच की भूमिका; और
6. एनटीआई ने विख्यात जर्नलों में लेख भी प्रकाशित किए।

संस्थान के संकाय ने आरएनटीसीपी कार्यान्वयन में सामना की जा रही कमियों और उपलब्धियों का मूल्याकंन करने तथा अनिवार्य सुधारात्मक कार्रवाई के लिए सिफारिशें देने के उद्देश्य से आंतरिक मूल्यांकन में केन्द्रीय क्षय रोग डिविजन को सहयता प्रदान की।

अक्टूबर, 2014 से पूर्– विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के लिए क्षय रोग संबंधी जागरूकता कार्यक्रम पुनः शुरू किया गया था। अब तक एसीएस दल ने कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए 30 प्री विश्वविद्यालय कॉलेजों का दौरा किया है और 7 कॉलेजों में बैचों में उनके प्रांगण में क्षय रोग जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया है। लगभग 1992 प्री यूनिवर्सिटी छात्रों को क्षय रोग, इसकी रोकथाम, उपचार और आरएनटीसीपी के अंतर्गत उपलब्ध सेवाओं की मूलभूत जानकारी के बारे में शिक्षित किया गया।

15.43 एचएससीसी(इंडिया) लिमिटेड, नोएडा

एचएससीसी को मार्च, 1983 में कंपनी अधिनियम, 1956 के अंतर्गत 50 लाख रूपए की प्रदत्त पूंजी और 40 लाख की भुगतान पूँजी के साथ स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रलय के अंतर्गत एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में समावेशन किया गया है। दिनांक 31.3.2014 के अनुसार

कंपनी की अधिकृत पूंजी 500 लाख रुपए है जो 100/–रूपए के 5,00,000 इक्विटी शेयर में विभाजित है। दिनांक 31.3.14 के अनुसार कंपनी की प्रदत्त पूंजी 240 लाख रूपए है। इसमें इसके रिजर्व और अधिशेष में से मौजूदा शेयरहोल्डर्स को वित्तीय वर्ष 2003–04 और 2008–09 के दौरान जारी क्रमशः 120 लाख और 80 लाख रूपए का बोनस शामिल है। शुरूआत से ही कंपनी के सारे कारोबार का प्रबंधन सरकार या अन्य किसी स्रोत से किसी भी ऋण के बगैर किया गया है। एचएसएलसी ने सितम्बर, 1999 से 'मिनी रत्न' का दर्जा कायम रखने में उत्कृष्टता दर्शायी है।

एचएससीसी स्वास्थ्य परिचर्या अवसंरचना जैसे अस्पताल मेडिकल कॉलेज प्रयोगशालाएं तथा चिकित्सा उपकरणों एवं भेषजों के प्रापण के क्षेत्रों में एक बहुविषयक प्रसिद्ध परामर्शदाता संगठन है। इसके सेवा स्पेक्ट्रम में संभाव्यता अध्ययनों, डिजाइन इंजीनियरिंग, विस्तृत निविदा प्रलेखन, निर्माण पर्यवेक्षण, व्यापक परियोजना प्रबंधन, सिविल, विद्युत, मेकनिकल, सूचना प्रौद्योगिकी एवं सहायक चिकित्सा सेवा क्षेत्रों में प्रापण सहायता सेवाएं कवर की गई है। इसके प्रमुख ग्राहक हैं:

- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और इसके अस्पताल/संस्थान,
- विदेश मंत्रालय एवं अन्य मंत्रालय,
- राज्य सरकार एवं उनके अस्पताल/संस्थान,
- सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम/अन्य संस्थान आई सी एम आर सी एस आई आर, आई सी ए आर, डी ओ बी टी, पी आई एम एस, पी जी आई, चंडीगढ़ पंजाब सरकार, हरियाणा सरकार और अन्य व्यापार सहयोगी।

स्वास्थ्य, अवसंरचना क्षेत्र में ज्ञान प्रबंध कंसलटेंसी कंपनी होने के कारण एचएससीसी आर्किटेक्ट, इंजीनियर, इकोनोमिस्ट, चार्टर्ड एकाउंटेंटस, कोस्ट एकाउंटटेंटस, एमबीए का प्रतियोगी और अत्यंत दक्ष संवर्ग है और मेडिसिन एवं कोरपोरेट प्लानिंग आदि के लोगों में कंसलटेंटस का पूल है। एचएससीसी में सभी स्तरों पर कार्यरत कर्मचारियों के संबंध अच्छे हैं।

विश्वस्तरीय परामर्शी संगठन में विकसित करने के लिए कंपनी के ऑपरेशनों और ग्राहक आधार का विस्तार करने तथा विविधीकरण पर बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त, कंपनी विदेश मंत्रालय के जरिए व्यावसायिक अवसरों को तलाशने पर विचार कर रहा है।

कंपनी आईएसओ 9001 मान्यता प्राप्त कंपनी है। कंपनी ने समय–समय पर गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली और अपने ग्राहकों के गुणवत्ता आश्वासन तथा अपने ग्राहकों की संतुष्टि में वृद्धि के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। कंपनी आई ''एस ओ 9001:2008'' प्रमाणित कंपनी है और इसके पास अपनी विभिन्न परियोजनाओं और दायित्वों की आवश्यकतानुसार आंतरिक गुणवत्ता नियंत्रण है।

एच एस सी सी वर्ष 1996–97 से स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रलय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करता रहा है। कंपनी को वर्ष 2007–08 से 2011–12 तक के लिए डीपीई द्वारा उत्कृष्ट का दर्जा दिया गया है और इसके लेखापरीक्षित परिणामों के आधार पर वर्ष 2013–14 के लिए उत्कृष्ठ का दर्जा दिए जाने की संभावना है। कंपनी अच्छे कॉरपोरेट शासन आचरणों का अनुसरण करती है। कंपनी में कॉरपोरेट शासन आचरण पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा, व्यावसायिकता, जिम्मेवारी और उपयुक्त प्रकटीकरण, ज्ञान प्रबंध प्रणाली, ई–टेंडरिंग, ई–प्रापण, आतंरिक सह सहवर्ती ऑडिट पर केन्द्रित हैं।

वर्ष के दौरान कंपनी ने निरंतर और सतत नवीन प्रक्रिया के लिए अनुसंधान एवं विकास हेतु निम्नलिखित पहल की है–

- कंपनी ने बायो–चिकित्सीय असिस्ट प्रबंधन और कम कीमत वाले पलंग दर हेतु रिपोर्ट तैयार की है।
- समय पर पूरा करने परियोजनाओं की प्रगति को मॉनीटर करने के लिए कंपनी ने एक प्रणाली विकसित की है।

समीक्षा वर्ष के दौरान कंपनी ने कारपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के लिए प्रयास किए थे–

- डीपीई दिशा–निर्देशों के अनुरूप कंपनी ने उत्तराखंड राहत निधि को अंशदान के लिए वित्तीय वर्ष 2013–14 के दौरान 30 लाख रूपए दिए।

कंपनी को भारत एवं विदेश में विभिन्न प्रतिष्ठित और चुनौतीपूर्ण परियोजनाओं के लिए डिजाइन एवं अभियांत्रिकी संबंधी परामर्शी सेवाओं, औषधों, फार्मास्युटिक्लस और चिकित्सीय उपस्करों के परियोजना प्रबंधन और प्रापण संबंधी कार्य प्रदान किया गया था। कुछ प्रमुख चालू परियोजनाएँ इस प्रकार हैं जिनके लिए एचएचसीसी परामर्शी सेवाएं प्रदान कर रही हैं :–

अभी चल रही प्रमुख परामर्शी परियोजनाओं का सार

क. वास्तु आयोजना, डिजाइन इंजीनियरिंग एवं परियोजना प्रबंधन सेवाएं

- एम्स कैंपस, अंसारी नगर, नई दिल्ली में एम्स के ओपीडी ब्लाक, छात्रावास ब्लाक, मदर एंड चाइल्ड ब्लाक, पेट वार्ड, सर्जिकल ब्लॉक के लिए एम्स में विनिर्माण कार्य।
- सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली का पुनर्विकास (चरण– I)
  - डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली में सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक।
  - सरिता विहार, नई दिल्ली में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (आयुष विभाग, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय) का निर्माण।
  - लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली के लिए व्यापक पुनर्विकास योजना।
  - राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र (एमसीडीसी), नई दिल्ली
  - एम्स, रायबरेली में आवास तथा अस्पताल का विनिर्माण
  - एम्स, झज्जर (हरियाणा), दूसरे परिसर में राष्ट्रीय कैंसर संस्थान का विनिर्माण
  - जीएमसी, पटियाला में नर्सिंग कॉलेज और राष्ट्रीय स्तर फिजियोथिरेपी वर्कशाप और सब– स्टेशन कार्य, जीएमसी, पटियाला।
  - उन्नत कैंसर नैदानिक, उपचार और अनुसंधान केन्द्र, भटिंडा।
  - कल्पना चावला शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, करनाल, हैदराबाद
  - पीजीआईएमईआर, संगरूर (हरियाणा), ने सेटेलाइट केन्द्र का विनिर्माण
  - पीएमएसएसवाई के तहत सरकारी चिकित्सा महाविद्यालय, अमृतसर में गुरू तेग बहादुर नैदानिक केन्द्र का विनिर्माण
  - पीएमएसएसवाई के तहत कोलकाता चिकित्सा महाविद्यालय में सुपर स्पेशियलिस्टी ब्लाक, ओपीडी और शैक्षणिक ब्लाक का विनिर्माण
  - पीएमएसएलवाई के तहत भुवनेश्वर (ओडिसा) में एम्स आवासीय बैलेंस तथा फेस II का विनिर्माण
  - आईआईटी खडगपुर के लिए 750 बिस्तरों वाले अस्पताल (चरण– I 400 बिस्तर) का विनिर्माण
  - पशु चिकित्सा जैविक उत्पाद संस्थान, पुणे के लिए बैंक्सीन प्रोसेसिंग सुविधाएं
  - कोचीन (केरल) में कैंसर अस्पताल का विनिर्माण
  - चरण III कार्य के तहत राष्ट्रीय यूनानी औषध संस्थान (एनआईयूएम) बैंगलुरू, रेजीमेंटल थैरेपी ब्लाक, ऑडिटोरियम एवं फामेंसी भवन का निर्माण
  - राष्ट्रीय पशु जैव–प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद
  - बैंगलुरू मेट्रो रेल निगम के लिए बेंगलुरू चिकित्सा महाविद्यालय के परिसर में माता एवं शिशु मेट्रो ब्लाक
  - एनआरएचम छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, केरल और हिमाचल प्रदेश
  - एनईआईजीआरआईएचएमएस, शिलांग के लिए पूर्वोत्तर आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान का विनिर्माण
  - नाहरलागुन (आंध्र प्रदेश) में सार्वजनिक अस्पताल का विनिर्माण
  - क्षेत्रीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान (आरआईएमएस) इम्फाल में पीजी पुरूष एवं महिला होस्टल, यूजी

महिला हास्टल, नर्सिंग होम और इंटरनी अस्पताल का विनिर्माण (पैकेज–I)

- आरआईएमएस, इम्फाल (पैकेज–II) – ओपीडी ब्लॉक का निर्माण
- आरएमआरसी, डीब्रूगढ़ में बायो–सेफ्टी स्तर–3 प्रयोगशाला विनिर्माण

विदेश

- बीर अस्पताल, काठमांडू, नेपाल के लिए 200 बिस्तर वाला आपातकालीन एवं अभिघात केन्द्र
- डिकोया, श्रीलंका में जिला जनरल अस्पताल

ख. प्रापण प्रबंधन सेवाएं

- केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना के लिए औषध एवं उपकरण।
- एआईआईए, सरिता विहार के लिए उपकरण की खरीद
- एनईआईजीआरआईएचएमएस, शिलांग के लिए चिकित्सा उपकरण।
- बीर अस्पताल, काठमांडू, एमईए के लिए चिकित्सा उपकरण।
- श्रीलंका के लिए चिकित्सा उपकरण की आपूर्ति।
- यांगान और सितवे म्यांमार के लिए चिकित्सा उपकरण।

वित्तीय विशिष्टता

कंपनी ने अब तक का सबसे अधिक कुल आय, परामर्श शुल्क, कर पूर्व लाभ, कर पश्चात लाभ राजस्व और अतिरिक्त तथा लाभांश रिकार्ड किया।

विगत वर्ष के 58.35 करोड़ रुपए की तुलना में इस वर्ष 60. 45 करोड़ रुपए की आय प्राप्त की जो 3.60% की वृद्धि दर्शाती है। विगत वर्ष के 33.80 करोड़ रुपए के परामर्श शुल्क की तुलना में इस वर्ष 39.19 करोड़ रुपए प्राप्त किया जो 15.95% की वृद्धि है।

कंपनी ने विगत वर्ष के 36.01 करोड़ रुपए की तुलना में इस वर्ष 37.14 करोड़ रुपए की कर पूर्व लाभ कमाया। अतः कंपनी ने वर्ष 2013–14 के लिए कर पूर्व लाभ में 3.14% की वृद्धि की । कंपनी ने विगत वर्ष के 22.57 करोड़ रुपए की तुलना में इस वर्ष 23.98 करोड़ रुपए का निवल लाभ अर्जित किया जो 6.25% की वृद्धि को दर्शाता है।

एचएससीसी में वर्ष 2013–14 के लिए वर्तमान वर्ष के लाभ में से 4.92 करोड़ रुपए की प्रदत्त पूंजी पर 205% के लाभांश की सिफारिश की गई है।

कंपनी ने लगातार 30वे वर्ष लाभांश घोषित किया। इस वर्ष लाभांश का भुगतान करने पर भारत सरकार को भुगतान किया गया, संचयी लाभांश 35.50 करोड़ रुपए होगा जो कंपनी के प्रदत्त इक्विटी पूंजी का लगभग 15 गुना होगा।

15.44 प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पी एम एस एस वाई)

देश में वांछनीय/विश्वसनीय तृतीयक स्वास्थ्य परिचर्चा सेवाओं की उपलब्धता में क्षेत्रीय असंतुलन को ठीक करने और गुण्वत्ता चिकित्सा शिक्षा हेतु सुविधाओं की भी वृद्धि करने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना (पी एम एस एस वाई) शुरू की गई है। पीएमएसएसवाई के दो घटक – एम्स जैसे संस्थानों की स्थापना और राजकीय चिकित्सा महाविद्यालयों का उन्नयन है।

1. प्रथम चरण में, छह एम्स अर्थात भोपाल, भुवनेश्वर, जोधपुर, पटना, रायपुर और ऋषिकेश में एक–एक एम्स स्थापित किए जा रहे हैं। दो अन्य एम्स, प्रत्येक उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में एक–एक को मंजूरी दी गई है। इसी के साथ, पीएमएसएसवाई के प्रथम और द्वितिय चरण में सुपर स्पेशियलिटी सुविधा केंद्र के सृजन हेतु उन्नयन के लिए 19 मौजूदा राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय संस्थानों

में कार्य प्रारम्भ किया गया है। इसके अलावा, पीएमएसएसवाई के तीसरे चरण में 39 अन्य चिकित्सा महाविद्यालय संस्थानों का उन्नयन करने का भी निर्णय लिया गया है।

2. पूर्ण पी एम एस एस वाई परियोजनाओं हेतु अनुमोदित परियोजना लागत इस प्रकार है –

करोड़ रु. में

	पूंजीगत लागत	आवर्ती लागत	कुल
प्रथम चरण	6210	3097.62	9307.62
द्वितिय चरण	2396	1031.5	3427.50
तृतीय चरण	5071	0	5071.00
कुल	**13677**	**4129.12**	**17806.12**

3. छह एम्स की स्थिति (पीएमएसएसवाई चरण–I)

शैक्षणिक सत्रः छह नए एम्स में प्रत्येक में कुल 250 एमबीबीएस छात्र के तीन बैच और कुल 120 बी.एस. नर्सिंग छात्रों के दो बैच में शिक्षण कार्य चल रहा है। सभी छह नए एम्स में ओपीडी सेवाएं भी शुरू की गई है। सभी छः एम्स में शिक्षण प्रयोजन हेतु आई पी डी सेवाएं शुरू की गई है।

विधानः छह एम्स को स्वायत्ता प्रदान करते के लिए अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान अधिनियम, 1956 में संशोधन करते हुए एम्स संशोधन अधिनियम, 2012 को लागू किया गया है। पूर्व में गठित की गई सोसाइटियाँ को समरूपी संस्थानों के रूप में शामिल किए गए है। इसके अलावा छह नए एम्स के लिए शासी निकाय, स्थायी वित्त और शैक्षणिक समिति का भी गठन किया गया है।

पदों का सृजन : प्रत्येक छह एम्स के लिए सांय तथा नर्सिग सहित विभिन्न वर्गों के 4089 पदों का सृजन किया गया। संकाय पदों को भर दिया गया है। संकाय सदस्यों की संख्या एम्स भोपाल में 61, भुवनेश्वर में 73, जोधपुर में 59, पटना में 68, रायपुर में 68 और ऋषिकेश में 62 है। प्रत्येक एम्स द्वारा सीमित गैर–संकायी पदों को भर लिया गया है।

मंत्रालय ने छह नए एम्स हेतु उपकरणों की खरीद हेतु अधिप्रापण सपोर्ट एजेंट (पीएसए) के रूप में मैसर्स एच एल एल लाईफकेयर लिमिटेड को नियुक्त किया है। प्रापण की प्रक्रिया चल रही है।

4. दो एम्स की स्थापना (पीएमएसएसवाई चरण– I I)

केंद्रीय सरकार ने प्रत्येक उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल राज्यों में एक–एक एम्स की स्थापना को मंजूरी दी है। उत्तर प्रदेश सरकार ने रायबरेली में एम्स की स्थापना हेतु केंद्र सरकार को भूमि हस्तांतरित की है। मंत्रालय ने परियोजना हेतु परियोजना प्रबंधन परामर्श के रूप में मैसर्स एच एच सी सी को नियुक्त किया है। एम्स, रायबरेली हेतु आवास परिसर के निर्माण हेतु कार्य शुरू किया गया है और प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त संस्थान में स्थानीय जनसंख्या के लाभ के लिए स्वास्थ्य परिचर्या प्रदान करने हेतु अन्य आवश्यक सुविधाओं सहित स्टार्ट अप ओपीडी की भी सुविधा है। स्टार्ट–अप ओपीडी का कार्य प्रगति पर है। एम्स रायबरेली के लिए संशोधित लागत अनुमान जांच के तहत है।

पश्चिम बंगाल में प्रस्तावित एम्स के लिए पहले पीएमएएसएसवाई के चरण–II के तहत रायगंज, उत्तर दीमाजपुर में स्थान का निर्धारण किया गया था और चूंकि राज्य सरकार ने प्रस्तावित निर्माण स्थल पर अपेक्षित भूमि नहीं दी थी। राज्य सरकार ने एम्स कल्याणी की स्थापना का अनुरोध किया था जिसे स्वीकार कर लिया गया है।

5. सरकारी चिकित्सा महाविद्यालय का उन्नयन (चरण I, II और III)

उन्नयन कार्यक्रम में मोटे तौर पर सुपर स्पेशिलिटी ब्लॉकों/आघात केंद्रों आदि के निर्माण द्वारा स्वास्थ्य अवसरंचना में सुधार करने और मौजूदा के साथ–साथ नए सुविधा केंद्रों हेतु चिकित्सा उपकरणों की खरीद की परिकल्पना की गई है। महाविद्यालय का उन्नयन निम्नानुसार चरणों में किया गया है–

चरण– I

पीएमएसएसवाई के प्रथम चरण में उन्नयन हेतु लिए गए 13 चिकित्सा महाविद्यालयों में से, आठ चिकित्सा महाविद्यालय

संस्थानों (नामतः त्रिवेंद्रम चिकित्सा महाविद्यालय, सेलम चिकित्सा महाविद्यालय, बंगलूरू चिकित्सा महाविद्यालय, एसजीपीजीआईएमएस लखनऊ; निम्स, हैदराबाद, जम्मू चिकित्सा महाविद्यालय; राजेंद्र आयुर्विज्ञान संस्थान(रिम्स), रांची; और आईएमएस, बीएचयू, वाराणसी में सिविल कार्य पूरा हो गया है।

कोलकाता चिकित्सा महाविद्यालय के संबंध में ओपीडी ब्लॉक, शैक्षणिक ब्लॉक का निर्माण किया गया है और निर्माण का प्रथम चरण पूरा कर लिया गया है। सुपर स्पेश्यिलिटी ब्लॉक, जिसका निर्माण द्वितीय चरण में शुरू किया जाता है, निविदा प्रक्रिया शुरू की गई है। श्रीनगर चिकित्सा महाविद्यालय में 99.5ः कार्य पूरा किया गया है। श्री वेंकटेश्वर आयुर्विज्ञान संस्थान (एसवीआईएमएस) तिरुपति, ग्रांट चिकित्सा महाविद्यालय, मुंबई और बी.जे. चिकित्सा महाविद्यालय, अहमदाबाद जहां उन्नयन में केवल चिकित्सा उपकरणों की खरीद शामिल है, में संभवतः मार्च 2015 तक खरीद प्रक्रिया पूरी हो जाएगी।

चरण– ।।

द्वितीय चरण में उन्नयन हेतु 6 चिकित्सा महाविद्यालय में से पांच संस्थानों में सिविल कार्य शामिल हैं और प्रगति/ स्थिति इस प्रकार है –

(i) आर पी राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, टांडा–सिविल कार्य पूरा किया गया और दिनांक 1.3. 2014 को नया एसएसबी को शुरू किया गया है;

(ii) एएमयू जवाहरलाल नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय, अलीगढ़ (94%);

(iii) राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, अमृतसर (79%);

(iv) पंडित बी.डी. शर्मा स्नाकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, रोहतक (50%) और

(v) नए सुपर स्पेशिलिटी ब्लॉक हेतु स्थान में परिवर्तन के कारण मदुरै चिकित्सा महाविद्यालय के संबंध में, योजना में बदलाव किया जाना चाहिए। सिविल कार्य शुरू किया गया है और 9% कार्य पूरा हो गया है।

राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, नागपुर में उन्नयन कार्यक्रम में केवल उपकरणों की खरीद शामिल है और संस्था/ राज्य सरकार द्वारा पूर्ण खरीद की जा रही है। संस्थान को 77.81 करोड़ रूपये की धनराशि जारी की गई है।

चरण– ।।।

केंद्रीय सरकार ने दिनांक 07.11.2013 को पीएमएसएसवाई– उन्नयन के तीसरे चरण के तहत 39 अतिरिक्त चिकित्सा महाविद्यालय के उन्नयन को मंजूरी दी है। कार्यान्वयन चरण–I और चरण–II के आधार पर एचएससीसी/एचएलएल/सीपीडब्ल्यूडी को 39 चिकित्सा महाविद्यालयों में सिविल कार्यों के लिए परियोजना प्रबंधन और पर्यवेक्षण परामर्शदाता के रूप में चयन किया गया है। इन चिकित्सा महाविद्यालयों के अंतर विश्लेषण/ मूल्यांकन करने के लिए अंतर विश्लेषण समिति गठित की गई है। इसके अतिरिक्त सिविल कार्य के लिए मानक ठेका दस्तावेज और परियोजना प्रबंधन के लिए मानक अनुबंध समझौता तथा इस उद्देश्य हेतु गठित संबंधित द्वारा सिफारिश की गई पर्यवेक्षण परामर्श सेवाओं का इस मंत्रालय के एकीकृत वित्त खण्ड के परामर्श में अंतिम रूप दे दिया तथा चिकित्सा महाविद्यालय में कार्य को लेने के लिए चयनित परियोजना प्रबंधन और पर्यवेक्षण परामर्शों को भेज दिया गया है। अंतराल विश्लेषण समितियों द्वारा 38 चिकित्सा महाविद्यालयों में अंतराल विश्लेषण का कार्य कर दिया गया, राज्य सरकारों द्वारा पूरे किए गए सिविल कार्य के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु परियोजना प्रबंधन और पर्यवेक्षण परामर्शदाताओं को अनुरोध किया गया है।

10वीं योजना और 11वीं योजना के दौरान समूचे पीएमएसएसवाई परियोजनाओं के लिए क्रमशः 21.05 करोड़ रुपए और 2580.06 करोड़ रुपए का व्यय हुआ था। समूचे पीएमएसएसवाई परियोजनाओँ के लिए 12वीं योजना हेतु 12,000 करोड़ रुपए का आवंटन किया गया है। 12वीं

योजना के दौरान वर्षवार आवंटन तथा व्यय नीचे दिया गया है:

(करोड़ रूपए में)

वर्ष	बजट अनुमान	संशोधित अनुमान	व्यय
2012–13	1544.21	1010.00	973.50
2013–14	1975.00	1377.00	1282.11
2014–15	1956		726.00

पीएमएसएसवाई चरण–IV के तहत एम्स की स्थापना तथा सरकारी चिकित्सा महाविद्यालयों के उन्नयन का प्रस्ताव

जून, 2014 में संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करने के दौरान भारत के माननीय राष्ट्रपति ने घोषणा की कि प्रत्येक राज्य में एम्स की स्थापना की जाएगी। तत्पश्चात् वित्त मंत्री ने अपने बजट भाषण में चार एम्स आंध्र प्रदेश, विदर्भ क्षेत्र (महाराष्ट्र), पश्चिम बंगाल और पूर्वांचल प्रत्येक में एक–एक एम्स स्थापना करने की घोषणा की। सदन में वित्त मंत्री ने यह भी कहा कि बाद के वर्षों में प्रत्येक राज्य में एक एम्स का गठन किया जाएगा। आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, पंजाब, तमिलनाडु, तेलंगाना, और पश्चिम बंगाल, की राज्य सरकारों को अपने राज्य में प्रस्तावित एम्स के लिए 3 अथवा 4 उपयुक्त वैकल्पिक स्थान की पहचान करने तथा 200 एकड़ भूमि एवं अपेक्षित अन्य अवसंरचना जैसे उपयुक्त सडक का सुलभ मार्ग, पर्याप्त जल आपूर्ति, अपेक्षित भार का विद्युत कनेक्शन तथा विनियामक/सांविधिक निकास निशुल्क प्रदान करने का भी अनुरोध किया है। आंध्र प्रदेश, असम, गोवा, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल सरकार ने प्रस्तावित एम्स के लिए स्थान की पहचान कर ली है। उनसे जांच सूची के अनुसार ब्यौरा देने का अनुरोध किया गया है। आंध्र प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल सरकारों से जांच सूची प्राप्त हो गई है। पहचान किए गए स्थानों का केन्द्रीय दल द्वारा निरीक्षण किया जाना है।

पीएमएसएसवाई के चरण I, II और III के तहत पहले से अनुमोदित 58 सरकारी चिकित्सा महाविद्यालयों के अलावा 12 और सरकारी चिकित्सा महाविद्यालयों का उन्नयन करने का प्रस्ताव है।

व्यय वित्त समिति के मसौदा ज्ञापन को संबधित मंत्रालय/विभाग को उनकी टिप्पणियों के लिए परिचालित कर दिया गया है।

15.45 अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, (आईआईपीएस) मुम्बई

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुम्बई की स्थापना सन् 1956 में जनांकिकीय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र के रूप में हुई थी। संस्थान एक 'मानित विश्वविद्यालय' है और यह स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है तथा संस्थान जनसंख्या अध्ययन के क्षेत्र में प्रशिक्षण, शोध संचालन तथा परामर्शी सेवाएं प्रदान करता है। संस्थान में 6 विभाग हैं अर्थात् गणितिय जनांकिकीय एवं सांख्यिकी विभाग, प्रजनन अध्ययन विभाग, जन स्वास्थ्य एवं मृत्युता अध्ययन विभाग, प्रवसन एवं नगरीय अध्ययन विभाग, जनसंख्या नीति एवं प्रोग्राम विभाग तथा विकास अध्ययन विभाग। इनके अलावा, वर्ष 1993 से बाह्य अध्ययन विभाग वार्षिक परियोजना आधार पर कार्य कर रहा है। निदेशक एवं वरिष्ठ प्रोफेसर के अलावा संकाय में 38 सदस्य शामिल हैं जो अध्यापन एवं शोध दोनों में कार्यरत हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम: वर्ष 2013–14 के दौरान संस्थान ने निम्नलिखित नियमित पाठ्यक्रम चलाए: (क) स्वास्थ्य प्रोत्साहन शिक्षा में डिप्लोमा (डीएचपीई), (ख) मास्टर ऑफ आर्ट्स / साईंस इन पापुलेशन स्टडीज (एमए/एमएससी), (ग) जैव–सांख्यिकी और जानपदिक रोग विज्ञान में एमएससी (घ) जनसंख्या अध्ययन में स्नात्तकोतर (एमपीएस), (ङ) जनसंख्या अध्ययन में मास्टर ऑफ फिलॉसाफी (एमफिल), (च) जनसंख्या अध्ययन में पीएचडी डॉक्टर ऑफ फिलॉसाफी उपर्युक्त नियमित पाठ्यक्रमों के अलावा, संस्थान दूरस्थ शिक्षा के माध्यम के द्वारा जनसंख्या अध्ययन में मास्टर (एमपीएस) तथा जनसंख्या अध्ययन में डिप्लोमा (डीपीएस) भी संचालित करता है।

वर्ष 2013–14 के दौरान 18 विद्यार्थियों को स्वास्थ्य प्रोत्साहन शिक्षा में डिप्लोमा प्रदान किए जाने के लिए योग्य घोषित किया गया, जनसंख्या विज्ञान में कला/ विज्ञान

निष्णात में 39 विद्यार्थियों को योग्य पाया गया, जनसंख्या अध्ययन में मास्टर की डिग्री के लिए 42 विद्यार्थियों को योग्य माना गया, जनसंख्या अध्ययन में मास्टर ऑफ फिलासॉफी डिग्री के लिए 32 विद्यार्थियों को योग्य घोषित किया गया, 12 विद्यार्थी जनसंख्या अध्ययन में डाक्टर ऑफ फिलासफी प्रदान करने हेतु योग्य पाए गए, जनसंख्या अध्ययन में मास्टर की डिग्री (दूरस्थ शिक्षा) के लिए 19 विद्यार्थी योग्य घोषित किए गए और जनसंख्या अध्ययन में डिप्लोमा (दूरस्थ शिक्षा) की डिग्री के लिए 3 विद्यार्थी योग्य घोषित किए गए।

अनुसंधान कार्यक्रमः संस्थान ने अपने स्वयं के संसाधनों का प्रयोग करते हुए और बाहरी वित्त–पोषण से भी अनुसंधान कार्यक्रम आयोजित किए। बाहरी वित्त–पोषित परियोजनाएं मुख्यतः संबंधित एजेंसियों के अनुरोध पर शुरू की जाती है। संस्थान पर पूरी हो चुकी और चल रही परियोजनाएं निम्नानुसार हैं–

क. संस्थान द्वारा वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं

1. सम्पूर्ण योजनाएं:

- भारत में गरीबी और प्रजनन कमी के मार्ग में समझौता;
- गुजरात से अंतर्राष्ट्रीय प्रवास; और
- मुंबई में नेपाली प्रवासियों की सामाजिक–आर्थिक और स्वास्थ्य स्थितियां।

2. सतत परियोजनाएं:

संस्थान द्वारा वित्त–पोषित विभिन्न परियोजनाएं पूर्ण होने के विभिन्न स्तर पर है। ये परियोजनाएं हैं:

- भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य अवसरंचना और एमसीएच परिचर्या
- भारत में जनसंख्याः दीर्घावधि परिप्रेक्ष्य
- मध्यकालीन अवधि में मुंबई प्रेजिडेंसी हेतु महत्वपूर्ण दरों का अनुमान

3. नई परियोजनाएं:

- भारत में कालाजार का प्रकोप, कारण और परिणामः पूर्वी बिहार का अध्ययन;
- महाराष्ट्र के अमरावती जिले में मृत्यु के कारणों का अनुमान लगाने के लिए वर्बल ओटॉप्सी का प्रयोग;
- भारत में बडे स्तर पर सर्वेक्षण में प्रयुक्त आंकड़ों के संग्रह के दो भिन्न तरीकों का तुलनात्मक अध्ययन – प्रश्नावली/पेपर–पेन और तकनीक आधारित सीएपीआई; और
- भारत की घरेलू सुविधाओं तथा परिसंपत्तियों में परिवर्तनः जनगणना आधारित अध्ययन।

ख. बाहरी एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं

1. सम्पूर्ण परियोजनाएं:

- महाराष्ट्र में व्यापक पोषण सर्वेक्षण
- शहरी गरीबों का स्वास्थ्य (एचयूपी)
- नगालैण्ड में महत्वपूर्ण दर सर्वेक्षण (वीआरएस नगालैण्ड)

2. सतत परियोजनाएं:

- भारत में देशांतरीय वृहावस्था अध्ययन (एलएएसआई)
- वैश्विक जरा और किशोर स्वास्थ्य अध्ययन (सेज) – भारत
- परिवार स्वास्थ्य और संपत्ति अध्ययन (एफएचडब्ल्यूएस)
- जिला स्तरीय घरेलू और सुविधा सर्वेक्षण – 4 (डीएलएचएस–4)
- नीति–निर्माण में अनुसंधान साक्ष्य का प्रयोग करने के लिए क्षमता में वृद्धि
- सशर्त नकद अंतरण योजनाएं (सीसीटी) तथा बाल कन्या कल्याण योजनाः चयनित योजनाओं का आकलन
- गुजरात में व्यापक पोषण सर्वेक्षण
- जनसंख्या परिवेश और बंदोबस्त

3. नई परियोजनाएः–

- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–4 (एनएफएच–4)
- उत्तर प्रदेश में नेमी टीकाकरण के संवर्धन में सहायक पर्यवेक्षण की भूमिका
- अवांछित गर्भधारण और प्रेरित गर्भपात मामले (यूपीएआई)

4. लघु अवधि प्रशिक्षण / निर्देशन पाठ्यक्रमः

संस्थान अनुरोध पर लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। केन्द्रीय/अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न शैक्षिक और अनुसंधान संगठनों से आगंतुकों की देखभाल करता है, जो अपने शैक्षिक पाठ्यक्रम के भाग के रूप में आईआईपीएस का नियमित रूप से दौरा करते हैं। इस शैक्षणिक वर्ष के दौरान संस्थान में निम्नलिखित छात्र समूह ने दौरा किया।

1. होली स्प्रिट इंस्टीट्यूट आफ नर्सिंग एजुकेशन, अंधेरी (पूर्व), मुंबई
2. सामुदायिक औषधि, सशस्त्र सेना मेडिकल कालेज विभाग, पुणे
3. निवारक और सामाजिक औषधि विभाग, ग्रांट मेडिकल कालेज एंड सर जे.जे. ग्रुप आफ होस्पिटल, मुंबई
4. महात्मा गांधी मिशन कालेज आफ नर्सिंग, नवी मुंबई
5. सामाजिक कार्य विभाग, असम डोन बोस्को यूनिवर्सिटी, गुवाहाटी
6. सामुदायिक औषधि विभाग, नायर अस्पताल और टी. एन. मेडिकल कालेज, मुंबई
7. गुलबर्ग विश्वविद्यालय, सामाजिक कार्यज्ञान गंगा अध्ययन विभाग, गुलबर्ग

5. विश्व जनसंख्या दिवस

प्रत्येक वर्ष 11 जुलाई को 'विश्व जनसंख्या दिवस' का आयोजन संस्थान की महत्वपूर्ण गतिविधियों में से एक है। इस वर्ष संस्थान में ''भारत में एनसीडीएस का बोझ'' नामक अर्द्ध दिवस विचार–गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रो.एफ. राम, निदेशक और वरिष्ठ प्रोफेसर ने भारत में एनसीडीसी के बढ़ते बोझ को उजागर किया। डा. बिरंची नारायण जेना, परियोजना प्रबंधक, बाजार पहुंच और सार्वजनिक मामले नोवो नार्डिस्क ने ''बदलता मधुमेहः एक जन स्वास्थ्य चुनौती'' पर व्याख्यान दिया। प्रो.पी. एरोकियासामी ने एनसीडी पर एलएएसआई पायलट से पिछले सदस्यों पर व्याख्यान दिया, व्याख्यान के बाद निबंध प्रतियोगिता के विजेता उम्मीदवारों को पुरस्कार वितरित किए गए। प्रो. एरोकियासामी, प्रो. एस.के. मोहंती और श्री प्रकाश फुलपागरे ने कार्यक्रम का आयोजन किया। संकाय, स्टाफ और छात्रों के लिए मधुमेह जांच शिविर लगाया या जिसमें कुल 130 व्यक्तियों के मधुमेह की जांच की गई।

6. संस्थान में आयोजित अन्य कार्यकलाप

क. स्थापना दिवसः संस्थान ने अपने परिसर में 16 अगस्त को स्थापना दिवस मनाया। समारोह प्रो.बी. पासवान, सांस्कृतिक समन्वयक के स्वागत भाषण से शुरू हुआ और इसका उद्घाटन प्रो. एफ. राम, आईआईपीएस, निदेशक द्वारा किया गया।

ख. हिन्दी कार्यशालाः संस्थान द्वारा अपने स्टाफ के सदस्यों के लिए 25 मार्च, 2014 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में डा. अनंत श्रीविदी, सहायक निदेशक (टंकण और आशुलिपि), केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, राजाभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नवी मुंबई द्वारा प्रशिक्षण/व्याख्यान दिया गया। कार्यशाला का विषय ''हिंदी भाषा में कंप्यूटर पर यूनीकोड का प्रयोग'' था।

ग. वार्षिक खेल प्रतियोगिताः मार्च 2014 के दौरान आईआईपीएस वार्षिक खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संकाय, स्टाफ और छात्रों ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। सभी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

7. प्रकाशन यूनिट

आईआईपीएस की प्रकाशन इकाई नियमित रूप से न्यूजलेटर, अनुसंधान कार्य और कार्य संबंधी दस्तावे का प्रकाशन करती है।

आईआईपीएस न्यूजलैटरः संस्थान न्यूजलैटर का प्रकाशन करता है जिसमें संस्थान की चल रही विभिन्न

गतिविधियों के बारे में सूचना प्रकाशित की जाती हैं। शैक्षणिक वर्ष के दौरान चार संख्या को कवर करने वाले आईआईपीएस न्यूजलैटर के दो अंक मुद्रित किए गए।

आईआईपीएस अनुसंधान सार श्रृंखलाः पीएचडी छात्रों और दौरे पर आए समकक्ष अध्येताओं को उनके अनुसंधान अध्ययनों के महत्वपूर्ण निष्कर्षों का तुरंत प्रचार करने के लिए अनुसंधान रिपोर्ट या वैज्ञानिक जर्नल के रूप में उन्हें प्रकाशित करने का अवसर प्रदान करती है। अभी तक इस सीरिज के तहत 14 अनुसंधान सार प्रकाशित किए गए हैं।

आईआईपीएस पेपर श्रृंखलाः वर्ष 2009–10 के दौरान शुरू की गई पेपर श्रृंखला एक नई पहल हैं। इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को आईआईपीएस द्वारा शुरू किए गए नए अनुसंधान विचारों, सैद्धान्तिक विचारों और प्रणाली सम्बंधी ज्ञान को जल्द से जल्द प्रचार करना है। इस प्रकाशन के तहत प्रकाशित कागजातों की जनसंख्या, स्वास्थ्य और विकास के क्षेत्रों में दो बाहरी विशेषज्ञों द्वारा समकक्ष समीक्षा की जाती हैं। अभी तक 9 पेपर प्रकाशित किए गए हैं।

8. भारतीय जनसांख्यिकी जर्नल

वर्तमान में, भारतीय जनसंख्या अध्ययन संघ (आईएएसपी) का व्यावसायिक जर्नल का प्रबंधन आईआईपीएस द्वारा किया जाता है। प्रो. एफ. राम 2011 से इस पत्रिका के संपादक हैं। यह बहु–आयामी जर्नल समकक्ष समीक्षा किए गए अनुच्छेदों और पुस्तक समीक्षाओं को प्रकाशित करता है, जो जनसांख्यिकीय और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों विशेषतः भारतीय जनसांख्यिकीय पर ध्यान देता है। प्रत्येक वर्ष प्रकाशित किए जाने वाले दो अंकों में लगभग 25 लेख, पुस्तक समीक्षा और आईएएसपी सम्मलनों का अध्यक्षीय भाषण और डा. जार्ज सिमंस स्मारक व्याख्यान शामिल होते हैं। आईएएसपी के सदस्यों के अलावा, भारत और विदेश दोनों क्षेत्रों में विश्वविद्यालयों और अनुसंधान द्वारा पत्रिका की सदस्यता ली गई है।

9. सूचना, संचार और प्रौद्योगिकी यूनिट

संस्थान की आईसीटी यूनिट, जिसे हाल तक कम्प्यूटर और डाटा सेंटर के रूप में जाना जाता था और डाटा केंद्र आईबीएम ब्लेड सेंटर सर्वर, नवीनतम कोर आई–3 तथा आंकड़ों के विश्लेषक के रूप में अपेक्षित अत्याधुनिक कम्प्यूटरों और सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर से सुसज्जित है। इस संस्थान में कुल 260 डेस्क्टॉप कंप्यूटर हैं। इस यूनिट में एक मुख्य कक्ष/लैब रूम हैं जिसमें 48 कम्प्यूटर एवं तीन एलसीडी प्रोजेक्टर हैं, और एक अन्य लघु कक्ष/लैब जिसमें 16 कंप्यूटरों की क्षमता है। इन प्रयोगशालाओं में एमपीएस, एमए/ एमएससी, जैव–सांख्यिकी और जानपदिक रोग विज्ञान में एमएससी, एम.फिल और लघु अवधि पाठ्यक्रम हेतु कंप्यूटर कक्षाएं आयोजित की जाती हैं।

सभी कंप्यूटरों में एक जीबी पीएस बैंड विड्थ कैपेसिटी लिंक की इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है और ये स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क से जुड़े हैं तथा वाई–फाई कनेक्टिविटी है। आईसीटी यूनिट संस्थान के संकाय और कर्मचारियों को इंटरनेट ईमेल सुविधा भी प्रदान कर रहा है। वायरलेस इंटरनेट सुविधाएं स्थापित की गई हैं और उन्हें छात्रावास एवं पुस्तकालय में छात्रों को उपलब्ध कराया गया है। आईसीटी यूनिट द्वारा 24X7 परिसर में छात्रों और संकाय को इंटरनेट और कंप्यूटर सुविधा प्रदान की जाती है।

स्थापित साफ्टवेयर पैकेज में आईबीएमएसपीएसएस वर्जन 20, साटा वर्जन 13, जीआईएस वर्जन 10, एमएल विन, एटलस टी, स्पेक्ट्रम, मोर्टपैक और एंडनोट शामिल है। आसीटी यूनिट का नेटवर्क 10 टीबी क्षमता वाले एकीकृत स्टोरेज सर्वर से संबद्ध है। संस्थान में भारतीय जनगणना (1991, 2001, 2011), राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, (I, II, III), जिला स्तरीय परिवार और सुविधा सर्वेक्षण (I,II,III), चयनित देशों के जनांकिकी स्वास्थ्य सर्वेक्षण (डीएचएस), राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण, (एनएसएस), वैश्विक वयस्क तंबाकू सर्वेक्षण (जीएटीएस), युवा अध्ययन, भारतीय देशांतरीय ज़रा अध्ययन, (एलएएसआई), तथा वैश्विक जरा अध्ययन एवं वयस्क स्वास्थ्य (एसएजीई) शोधकर्ताओं को उपलब्ध होता है। बाहरी शोधकर्ताओं को भी आंकड़े उपलब्ध कराए जाते हैं।

आईसीटी इकाई आई आई पी एस वेबसाईट का रख रखाव कर रही है। आईसीटी इकाई वेबसाईट को द्विभाषी (अंग्रेजी–हिन्दी) बनाने की प्रक्रिया में है। लेखा और प्रशासन सहित संस्थान के विभिन्न विभागों की कार्यप्रणाली को

शामिल करने के लिए संस्थान में ई–गवर्नेंस शुरू करने के लिए उपाए शुरू कर दिए हैं।

10. पुस्तकालय

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान पुस्तकालय संस्थान में पाठ्यक्रम विषय–वस्तु और संस्थान की अनुसंधान आवश्यकताओं को देखते हुए संसाधनों का उत्तम संग्रह है। इसमें 82457 पुस्तकें, 15395 जिल्द चढ़ी पत्रिकाएं, 16674 पुनः मुद्रित तथा 550 दृश्य–श्रृव्य सामग्रियां है और लगभग 200 पत्रिकाओं की सदस्यता आनलाइन उपलब्ध है। 125 से अधिक पत्रिकाएं उपहार और आदान–प्रदान के जरिए पुस्तकालय में प्राप्त होती है। प्रमुख पत्रिकाओं और संपादित पुस्तकों से 25,000 से अधिक अनुसंधान लेखों को सूचीबद्ध किया गया है, और इन्हें ओपीएसी के जरिए उपलब्ध कराया जाता है। पुस्तकालय में धर्म, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, सांख्यिकीय, अर्थशास्त्र, जन प्रशासन, शिक्षा, गणित, मानव विज्ञान, जन स्वास्थ्य, भौगोलिक, आदि जैसे अध्ययन और संगत विषयों का संग्रह है। पुस्तकालय अपने उपभोक्ताओं जैसे वर्तमान जागरूकता, नया संयोजन, सूचना का चयनित प्रचार–प्रसार, आनलाइन जन पहुंच सूचीपत्र, (ओपीएसी), दस्तावेज प्रदर्शनी सेवा, फोटोकापी सुविधाएं, संदर्भ सेवाएं, ग्रंथसूची सेवा मेटाडाटा इंटरपोल, आदि को सूचना सेवाएं भी उपलब्ध कराता है।

आईआईपीएस पुस्तकालय पूरी तरह कंप्यूटरीकृत प्रणाली है। पुस्तकालय संकाय, छात्रों, शोध अध्येताओं और संस्थागत सदस्यों को सेवाएं प्रदान करता है। पुस्तकालय में भारतीय जनगणना के 1941–82 तक के फंड पीडीएफ में डिजीटल रूप में विशेष संग्रह के रूप में उपलब्ध है जो कैम्पस को पूरा पाठ उपलब्ध कराता है। यह पुस्तकालय जेएसटीओआर, साइंसडायरेक्ट (सामाजिक व ज्ञान संग्रह), स्कोप्स, और इंडियास्टेट जैसे कई डाटाबेस तक पहुंच उपलवध कराता है। पुस्तकालय आनलाइन तरीके से स्प्रिंगर, सेज, विले, टेलर एण्ड फ्रांसिस, कैम्ब्रिज आदि चयनित जर्नलों को भी मंगवाता है। यह पुस्तकालय www.iipsindia.org के माध्यम से सभी के लिए उपलब्ध है।

15.46 परिवार कल्याण प्रशिक्षण और अनुसंधान केंद्र (एफडब्ल्यूटीआरसी), मुंबई

परिवार कल्याण प्रशिक्षण और अनुसंधान केंद्र (एफडब्ल्यूटीआरसी) मुंबई एक केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान है जो जन स्वास्थ्य महत्व के मुख्य स्वास्थ्य क्षेत्रों जैसे परिवार कल्याण हेतु प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, आरसीएच, एचआईवी/एड्स और अन्य एकीकृत राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में पूरे देश में बाह्य और बुनियादी स्तर के स्वास्थ्य कार्मिकों की विभिन्न श्रेणियों के लिए इन–सर्विस प्रशिक्षण देता है। यह केंद्र पूरे देश से प्रतिनियुक्त उम्मीदवारों और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ/यूनीसेफ /यूएनडीपी/डीएएनआईडीए) आदि द्वारा प्रायोजित उम्मीदवारों के लिए भी स्वास्थ्य शिक्षा में स्नात्तकोतर डिप्लोमा (अब डिप्लोमा इन हेल्थ प्रोमोशन एजूकेशन नाम से) एक वर्षीय आवासीय शैक्षणिक औपचारिक कार्यक्रम आयोजित करता है। डीएचपीई का पहला पाठ्यक्रम वर्ष 1987–88 में शुरू हुआ था। वर्तमान में स्वास्थ्य संवर्धन शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम का 28वां बैच चल रहा है जिसमें महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं ओडिशा से 23 प्रशिक्षु हैं।

भारत सरकार द्वारा स्वास्थ्य ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल सेवा की बेहतर डिलीवरी के लिए एनआरएचएम के अंतर्गत कार्य को पूरा करने के लिए उनकी दक्षता और क्षमता में सुधार करने हेतु परिवार कल्याण स्वास्थ्य विभाग, गैर–सरकारी संगठनों और निजी क्षेत्रों में कार्यरत परा–मेडिकल स्टाफ हेतु से पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कम्युनिटी हेल्थ केयर के लिए चलाई जा रही है। यह पाठ्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में सेवारत और ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले चिकित्सीय कार्मिक को प्रशिक्षित करने के लिए राष्ट्रीय सरकार के मौजूदा अधिदेश के बिल्कुल अनुरूप है। पहला पाठ्यक्रम अक्टूबर, 2007 से शुरू हुआ था। पाठ्यक्रम की अवधि 15 माह की है। पाठ्यक्रम का 5वां बैच शुरू किया गया है। क्षेत्रीय पद्धति और प्रदर्शन क्षेत्र में डीपीएचई और पीजीडीसीएचसी उम्मीदवारों के माध्यम से गैर–संचारी रोगों, प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के संबंध में विभिन्न आईईसी गतिविधियां शुरू की गई थीं।

मौजूदा भवन में सीमित स्थान और अवसंरचना के कारण, केंद्र चिकित्सा और पराचिकित्सा कार्मिक हेतु प्रशिक्षण की गुणवत्ता और अधिकता करने के लिए न्यू पंवेल, नवी मुंबई में नए परिसर में परिवर्तित किया जा रहा है। वर्तमान में, नए भवन के आरसीसी का लगभग 35% संरचना संबंधी कार्य पूरा किया गया है।

15.47 राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान (एनआईएचएफडब्ल्यू), नई दिल्ली

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान (एनआईएचएफडब्ल्यू) एक स्वायत्त एवं सर्वोच्च तकनीकी संस्थान है जो देश में जन स्वास्थ्य के संवर्धन हेतु कार्य कर रहा है। प्रमुख क्षेत्र स्वास्थ्य और संबंधित नीतियां, जन स्वास्थ्य प्रबंधन, स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार, स्वास्थ्य संबंधी अर्थशास्त्र और वित्त–पोषण जनसंख्या संबंधी अनुकूलन प्रजनन स्वास्थ्य, अस्पताल प्रबंधन, स्वास्थ्य के लिए संचार और स्वास्थ्य में प्रशिक्षण प्रौद्योगिकी प्रमुख क्षेत्र हैं। संस्थान ने अपने ग्यारह विभागों के माध्यम से जन स्वास्थ्य संबंधी अनेकों मुद्दों का समाधान किया है जिनकी प्रकृति बहु–विषयक हैं।

परिकल्पना: एनआईएचएफडब्ल्यू को वैश्विक स्तर पर 'उत्कृष्टता केंद्र' के रूप में देखा जाएगा।

मिशन: यह संस्थान पूर्ण शिक्षा एवं प्रशिक्षण, अनुसंधान एवं मूल्यांकन द्वारा परामर्श एवं सलाहकार सेवाओं के साथ–साथ बहु–विषयक विशेषज्ञता के माध्यम से जन स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों के प्रबंधन हेतु उत्प्रेरक और प्रवर्तक के रूप में कार्य करता है।

मुख्य समितियां: संस्थान की मुख्य समितियों में शासी निकाय (जीबी), स्थायी वित्त समिति (एसएफसी) और कार्यक्रम सलाहकार समिति (पीएसी) शामिल है। केन्द्रीय मंत्री, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण की अध्यक्षता में जीबी संस्थान का समग्र कार्यकलाप देखता है। केन्द्रीय सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की अध्यक्षता में एसएफसी वित्तीय संबंधी पहलुओं को देखता है, पीएसी शैक्षिक मामलों के संबंध में कार्य करती है। इन सभी समितियों में सदस्य सचिव के रूप में निदेशक, एनआईएचएफडब्ल्यू कार्य करता है।

शैक्षिक गतिविधियां

स्नातकोत्तर शिक्षा

देश में मूलभूत जन स्वास्थ्य शिक्षा अपेक्षाओं को पूरा करने और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रमों के क्षेत्र में शैक्षिक संबंधी उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए संस्थान की शैक्षिक गतिविधियां तैयार की जाती हैं।

एमडी (सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशासन): इस तीन वर्षीय अवधि वाले स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम (सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशासन में एमडी) दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध है और क्रमशः प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष और तृतीय वर्ष में पांच, तीन और आठ छात्रों अर्थात् कुल 16 छात्र हैं; को भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद (एमसीआई) द्वारा मान्यता प्रदान की जाती है।

स्वास्थ्य प्रशासन में डिप्लोमा: यह दो वर्षीय अवधि वाला स्वास्थ्य प्रशासन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा भी दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध है जो एमसीआई द्वारा मान्यता–प्राप्त है। पाठ्यक्रम में, वर्तमान शैक्षिक सत्र में तीन छात्र हैं।

जन स्वास्थ्य प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीपीएचएम): संस्थान द्वारा वर्ष 2008 में भारतीय जन स्वास्थ्य प्रतिष्ठान के साथ सहभागिता में शुरू हुआ था जिसको स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा सहायता दी गई थी, वर्तमान में इस एक वर्ष की अवधि वाले पाठ्यक्रम में तीन घरेलू, आठ अंतर्राष्ट्रीय छात्रों और एक स्वयं प्रायोजित छात्र सहित कुल 12 छात्र हैं। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न स्तरों पर कार्यरत जन स्वास्थ्य प्रबंधकों की दक्षता में तेजी लाना है।

शैक्षिक सत्र 2014–15 में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से **एक वर्ष की अवधि वाले स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण प्रबंधन डिप्लोमा** कोर्स में 93 छात्र हैं। वर्तमान शैक्षिक सत्र में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से **एक वर्ष की अवधि वाले अस्पताल प्रबंधन डिप्लोमा** कोर्स में 198 छात्र हैं। वर्ष 2014–15 में दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से **एक वर्ष की अवधि वाले स्वास्थ्य संवर्धन डिप्लोमा** कोर्स में 32 छात्र हैं।

पीएचडी कार्यक्रमः वर्तमान में, 13 छात्र देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से अपना डॉक्टरल कार्य कर रहे हैं।

ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षणः वर्ष 2014–15 के दौरान संस्थान में 14 छात्रों ने नामांकन और अपना ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा किया था।

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में नई पहलः संस्थान ने यूरोपियन संघ द्वारा वित्त पोषित संस्थागत एवं तकनीकी सहायक परियोजना (आईटीएस) की सहायता से पांच नए पाठ्यक्रम नामतः (i) ई–लर्निंग मोड के संबंध में वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारियों के लिए प्रबंधन, जन स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार संबंधी व्यवसायिक विकास कोर्स, (ii) ई–लर्निंग मोड के संबंध में कार्यक्रम प्रबंधकों हेतु कार्यक्रम प्रबंधन और सहायक एकक, (iii) स्नातकों के साथ–साथ स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों के लिए दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से स्वास्थ्य संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, (iv) चिकित्सा अधिकारियों, निगरानी अधिकारियों और जानपदिक रोग विज्ञानी हेतु संबद्ध महामारी विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा और (v) स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यरत स्नातकों हेतु जन स्वास्थ्य पोषण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा भी तैयार हो रहे हैं।

प्रशिक्षण संबंधी गतिविधियांः एनआईएचएफएफडब्ल्यू का मुख्य प्रयोजन विभिन्न क्षेत्रों के स्वास्थ्य कार्मिक को सेवाकाल के दौरान प्रशिक्षण देना है। यह विभिन्न लघु अवधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम कराते हैं जो एक से दस सप्ताह की अवधि का होता है। ये प्रशिक्षण गतिविधियां मुख्य रूप से आरसीएच, निगरानी एवं मूल्यांकन, मानव संसाधन प्रबंधन, स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार, जन स्वास्थ्य प्रबंधन, चिकित्सकीय जैव–सांख्यिकीय साफ्टवेयर का प्रयोग और भौगोलिक सूचना प्रणाली हेतु साफ्टवेयर का प्रयोग, जन स्वास्थ्य पोषण, परामर्श सेवाएं, मात्रात्मक और गुणात्मक शोध पद्धति, आईईसी / बीसीसी आदि को प्राथमिकता देती है।

अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे हावर्ड स्कूल आफ पब्लिक हैल्थ, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), यूनिसेफ, यूनेड, यूएनएफपीए, डब्ल्यूबीआई, यूसेड, डीएफआईडी, जीटीजैड, जनसंख्या और विकास में भागीदारी (पीपीडी), सिफन, आईएचबीपी, आईटीएसऔर इंकलेन के साथ सहभागिता में, संस्थान ने विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए हैं।

संस्थान यूरोपियन संघ (ईयू) द्वारा वित्त पोषित संस्थागत और तकनीकी सहायता (आईटीएस) के साथ सहभागिता में निम्नलिखित पाठ्यक्रमों नामतः प्रबंधन जन स्वास्थ्य और स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार में जिला चिकित्सा अधिकारियों हेतु व्यवसायिक विकास पाठ्यक्रम और ई–लर्निंग मोड के संबंध में कार्यक्रम प्रबंधन सहायक एककों हेतु सर्टिफिकेट कोर्स को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया में हैं। दूरस्थ शिक्षा मोड के संबंध में जन संचार, जन स्वास्थ्य पोषण और क्षेत्रीय जानपदिक रोग विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया चल रही है और इसे जल्द ही शुरू किया जाना संभावित है। यूसेड द्वारा सहायता–प्राप्त स्वास्थ्य व्यवहार में सुधार लाने संबंधित कार्यक्रम (आईएचबीपी) की सहभागिता से एनआईएचएफडब्ल्यू ने आईईसी / बीसीजी संसाधन सामग्री बनाने के अलावा राष्ट्रीय और जिला स्तर पर व्यवहार परिवर्तन संचार, क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण गतिविधियों संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु पूरक संसाधनों को लाने की सामान्य कार्यसूची को साझा करने का प्रस्ताव किया है।

अनुसंधान और मूल्यांकन

संस्थान ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के विभिन्न पहलुओं में अनुसंधान पर बल दिया है। अधिकतम अनुसंधान अध्ययन संस्थान द्वारा शुरू किए जाते हैं जबकि कुछ परियोजनाएं स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और अन्य सहभागी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियों द्वारा प्रायोजित किया जाता है। संस्थान ने पिछले वर्ष में एमडी छात्रों द्वारा सात अनुसंधान अध्ययन सहित 10 अनुसंधान अध्ययन पूरे किए हैं जबकि अध्ययनों की समान संख्या पर कार्य चल रहा है।

विगत दो वर्षों में संस्थान द्वारा शुरू की गई जन स्वास्थ्य शिक्षा और अनुसंधान सहायता संघ (पीएचईआरसी) में 35 राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से सदस्य संस्थान के रूप में 180 मेडिकल कॉलेज, 174 नर्सिंग कालेज, 50 स्वास्थ्य प्रशिक्षण संस्थानों (एचआईएचएवं परिवार कल्याण और एचएफडब्ल्यूटीसी), सीटीआई और 204 एनजीओ हैं।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की विशेषीकृत परियोजनाओं हेतु राष्ट्रीय नोडल एजेंसी

1. राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन/ प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य–II

नोडल एजेंसी के रूप में एनआईएचएफडब्ल्यू देश के विभिन्न भागों में 22 सहभागी प्रशिक्षण संस्थानों (सीटीआई) की सहायता से राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत विभिन्न प्रशिक्षणों के कार्य निष्पादन का समन्वय और निगरानी कर रही है। संस्थान के आरसीएच एकक की विशेष गतिविधियों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- **केंद्रीय प्रशिक्षण योजना (सीटीपी):** एनआईएचएफडब्ल्यू की वेबसाइट पर अंतिम केंद्रीय प्रशिक्षण योजना (सीटीपी) अपलोड की गई है। सीटीपी के कार्यान्वयन और प्रगति की निगरानी के साथ–साथ चल रहे प्रशिक्षणों की गुणवत्ता जांच के लिए राज्यों और संगत प्रशिक्षण केंद्रों के समन्वय चल रहा है।
- **निगरानी संबंधी दौरे:** एनआरएचएम/ आरसीएच प्प के तहत निगरानी संबंदी दौरे के भाग के रूप में 28 राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों में उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के दौरे हुए थे।
- स्वास्थ्य सुविधा केंद्रों के प्रत्येक स्तर पर उचित रूप से प्रशिक्षित स्वास्थ्य जनशक्ति की उपलब्धता को सुनिश्चित करने के लिए जिलावार प्रशिक्षण डेटाबेस की तैयारी शुरू की गई है।
- सभी राज्यों से प्राप्त मासिक के साथ–साथ तिमाही प्रशिक्षण प्रगति रिपोर्टों का विश्लेषण किया गया है और प्रशिक्षण में सुधार के लिए फीडबैक भेजा गया है।

2. एचआईवी संक्रमण हेतु वार्षिक सेंटिनल निगरानी

वर्ष 1998 से राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको) द्वारा एनआईएचएफडब्ल्यू को वार्षिक सेंटिनल निगरानी क्रियाकलापों के संबंध में पर्यवेक्षण, निगरानी, डाटा प्रबंधन और ग्रामीण रिपोर्ट की तैयारी के लिए नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया गया है। सभी राज्य एड्स नियंत्रण समितियों, क्षेत्रीय संस्थानों के अधिकारियों और केंद्रीय दल के सदस्यों, जिनमें जानपदिक रोग विज्ञानियों/सूक्ष्म जीव वैज्ञानिकों तथा मेडिकल कॉलेजों/अनुसंधान संगठनों के संकाय सदस्य शामिल हैं, के लिए अभिमुखीकरण प्रशिक्षण संचालित किए गए जिससे कि वे निगरानी के प्रचालन दिशा–निर्देशों से परिचित हो सकें।

3. वार्षिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण

प्रजनन मृत्यु दर, मातृ एवं बाल स्वास्थ्य के संबंध में परिवार के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य एवं पोषाहार स्थिति संबंधी व्यापक जिला स्तरीय आंकड़े प्राप्त करने की आवश्यकता को देखते हुए, योजना आयोग ने सभी जिलों के वार्षिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एएचएस) की सिफारिश की है। वर्तमान में, संस्थान द्वारा 9 राज्यों (असम, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के 284 जिलों में सर्वेक्षण किया जा रहा है।

4. जिला स्तरीय घरेलू सर्वेक्षण (डीएलएचएस)–4

वर्ष 2011–13 के दौरान स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने जिला स्तरीय घरेलू सर्वेक्षण (डीएलएचएस)–4 में आंकड़े एकत्रित करने हेतु क्लीनिकल, एंथ्रोपोमेटिरिक एवं जैव रसायन (कैब) घटक शामिल किए हैं। डीएलएचएस–4 आयोजित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुंबई नोडल एजेंसी है और सीएबी घटक को प्रचालनात्मक की जिम्मेदारी राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान (एनआईएचएफडब्ल्यू) को सौंपी गई है।

5. राष्ट्रीय कोल्ड चेन और टीका प्रबंधन संसाधन केंद्र (एनसीसीवीएमआरसी)

देश में लगभग 25,000 कोल्ड चेन बिंदुओं में लगभग 70,000 कोल्ड चेन उपकरण की मरम्मत और रखरखाव करने के लिए व्यापक प्रतिरक्षण कार्यक्रम में शामिल सभी जिला स्तरीय कोल्ड चैन तकनिशियनों के क्षमता निर्माण के उद्देश्य से एनआईएचएफडब्लयू पर एनसीसीवीएमआरसी को स्थापित करने का प्रस्ताव किया गया है। इसके अलावा, इस केंद्र पर टीका संभार–तंत्र प्रबंधन में लगभग 50 कोल्ड चेन अधिकारियों और टीका एवं संभार–तंत्र प्रबंधकों को प्रशिक्षित किया जाएगा। एनसीसीवीएमआरसी द्वारा एक

राष्ट्रीय कोल्डचेन प्रबंधन सूचना प्रणाली (एनसीसीएमआईएस), जो पहले से ही ऑनलाइन है, की भी निगरानी और प्रबंधन किया जाता है, जिसका उद्देश्य राज्यों और जिलों में कोल्डचेन प्रणालियों के विभिन्न मापदण्डों के संबंध में अद्यतन स्थिति रिपोर्ट उपलब्ध कराना है।

एनसीसीवीएमाअरसी राज्य स्वास्थ्य परिवहन संगठन (एसएचटीओ), पुणे में राष्ट्रीय कोल्ड चेन प्रशिक्षण केंद्र (एनसीसीटीसी) के लिए एक नोडल केंद्र का काम करता है। एनआईएचएफडब्ल्यू तथा महाराष्ट्र सरकार के बीच पहले ही इस आशय के समझौता–ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया जा चुका है। इस समय एनसीसीटीसी, पुणे इस क्रियाकलाप के लिए सहयोगी प्रशिक्षण संस्थान है।

6. स्वास्थ्य नीति परियोजना (एचपीपी)

जनसंख्या, स्वास्थ्य एवं पोषण से संबंधित मुद्दों पर साक्ष्य आधारित नीति अनुसंधान एवं विश्लेषण, परामर्श और बहुक्षेत्रीय समन्वय करने के लिए स्वास्थ्य नीति परियोजना (एचपीपी) फ्यूचर ग्रुप इंटरनेशनल के माध्यम से यूएसएआईडी से तकनीकी एवं वित्तीय सहायक के साथ संस्थान में नीति एकक स्थापित किया गया था। शुरू में, एकक का मुख्य ध्यान जनसंख्या और परिवार नियोजन पर था। यह इकाई योजना एवं मूल्यांकन विभाग के अधीन कार्य करती है और इसका प्रबंधन निदेशक, एनआईएचएफडब्ल्यू की अध्यक्षता में एक संचालन समिति द्वारा किया जाता है। संचालन समिति निदेश देती है और इकाई के कार्य–संचालन का निरीक्षण करती है। इकाई की क्रियाकलापों को सलाहकार पैनल के निर्देशानुसार संचालित किया जाता है।

नीति इकाई मुख्य रूप से निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करती है– (i) क्षेत्र–विशेष और साक्ष्य पर आधारित नीतिगत परिप्रेक्ष्य को महत्व देने के लिए नीतिगत अनुसंधान (जैसा कि राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 में जोर दिया गया है), (ii) प्रमुख नीतिगत समस्याओं का संश्लेषण, विश्लेषण एवं मूल्यांकन करना और नीति को कारगर बनाने हेतु लक्षित उत्पाद एवं कार्य–योजना तैयार करना और (iii) परिवार नियोजन कार्यक्रम को सुदृढ़ करने वाले प्रमुख नीतिगत निर्णयों को प्रभावित करने हेतु सही निर्णय लेने वालों का समर्थन।

7. माता एवं शिशु ट्रैकिंग प्रणाली (एमसीटीएस)

माता एवं शिशु ट्रैकिंग प्रणाली (एमसीटीएस), जो एक वेब–अनुप्रयोग है, दिसंबर, 2009 से पूरे देश में कार्यशील रही है। इस प्रणाली का उद्देश्य सभी गर्भवती महिलाओं को गर्भधारण से लेकर प्रसव के 42 दिन बाद तक और 5 वर्ष तक की आयु के बच्चों की निगरानी करना है, ताकि वे हमारे निगरानी उपकरण के माध्यम से समय पर अपनी उचित सेवाएं प्राप्त कर सकें। इस ट्रैकिंग उपकरण से देश में मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करने में मदद मिलेगी। संयुक्त राष्ट्र के सहस्राब्दि विकास लक्ष्य के प्रति भारत सरकार की यह वचनबद्धता भी है कि वर्ष 2015 तक शिशु मृत्यु दर को 28 से कम और मातृ–मृत्यु अनुपात को 109 से कम किया जाएगा। सांख्यिकी एवं जनसांख्यिकी विभाग में दिनांक 1 अक्टूबर, 2012 को स्थापित यह केंद्र निदेशक, एनआईएचएफडब्ल्यू और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के दिशा–निर्देशों के तहत कार्य करता है।

8. राष्ट्रीय स्वास्थ्य पोर्टल (एनएचपी) के लिए स्वास्थ्य सूचना केंद्र (सीएचआई)

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएचएफडब्ल्यू) ने राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (एनकेसी) के निर्णयों के अनुपालन में एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य पोर्टल (एनएचपी) स्थापित किया है, जिसका उद्देश्य भारत के नागरिकों को स्वास्थ्य सूचना और स्वास्थ्य देखभाल संबंधी सूचना उपलब्ध कराना है। एनएचपी बहुभाषीय सूचना, अनुप्रयोग और संसाधनों की उपलब्धता के लिए एकल केंद्र के रूप में कार्य करेगा। राष्ट्रीय स्वास्थ्य पोर्टल से विभिन्न प्रकार के प्रयोक्ताओं, जैसे– शिक्षा–शास्त्रियों, नागरिकों, छात्रों, स्वास्थ्य परिचर्या पेशेवरों, अनुसंधानकर्ताओं आदि को लाभ मिलेगा। एनआईएचएफडब्ल्यू ने एक स्वास्थ्य सूचना केंद्र (सीएचआई) स्थापित किया है, जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य पोर्टल की गतिविधियों के प्रबंधन के लिए सचिवालय के रूप में कार्य करेगा। बीटा वर्जन 15 नवंबर, 2013 को http://www.nhp.org.in पर कार्यशील हुआ। दिनांक 20 नवंबर, 2013 को केंद्र द्वारा 'सॉफ्ट लॉंच' तैयार किया गया। सीएचआई का दल ज्ञानवाणी रेडियो स्टेशन के माध्यम से भी एनएचपी के समर्थन और प्रचार–प्रसार में लगा हुआ है।

9. स्वस्थ व्यवहारों में सुधार लाने का कार्यक्रम (आईएचवीपी)

स्वस्थ व्यवहारों में सुधार लाने के कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान (एनआईएचएफडब्ल्यू) अक्टूबर, 2012 में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया गया है। समझौता ज्ञापन के अनुसार आईएचवी द्वारा एनआईएचएफडब्ल्यू को 'बीसीसी के क्षमता–निर्माण में उत्कृष्टता केंद्र' के रूप में कार्य करने के उसके प्रयासों में तकनीकी सहयोग प्रदान करेगा।

10. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

एनआईएचएफडब्ल्यू को दक्षिण–दक्षिण सहयोग के लिए एशिया क्षेत्र के नेटवर्क हेतु एक प्रमुख संस्थान के रूप में अभिज्ञात किया गया है। इस नेटवर्क का उद्देश्य सहयोगी संस्थाओं में संप्रेषण बढ़ाने हेतु क्षेत्रीय आवश्यकताओं एवं प्राथमिकताओं पर विचार करना और आईसीपीडी और एमडीजी के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए दक्षिण–दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देना है। एनआईएचएफडब्ल्यू विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों, जैसे डब्ल्यूएचओ, यूनीसेफ, यूएसएआईडी, जनसंख्या एवं विकास (पीपीडी) में साझेदार, आईएनसीएलईएन, फ्यूचर ग्रूप और यूरोपीय संघ, आईएचबीपी आदि के साथ सहयोग की प्रक्रिया में तेजी कायम रखने में सक्षम रहा है।

11. नैदानिक सेवाएं

इस संस्थान का प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान के क्षेत्र में एक उत्कृष्टता केंद्र के रूप में एक लम्बी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और ख्याति रही है। मरीजों को एनडोक्रीनोलॉजीकल, एनाटॉमिकल/सर्जिकल, आनुवांशिक और अन्य विकारों जैसी प्रजनन संबंधी विकारों के कारणों की गहन जांच के लिए प्रयोगशाला सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। एनडोक्रीनोलॉजीकल और प्रजनन संबंधी विकारों के प्रबंधन तथा बांझपन के प्रबंधन के लिए अपनाए गए वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से काफी लाभ मिला है।

12. प्रकाशन

एनआईएचएफडब्ल्यू द्वारा वर्ष 1978 से एक अंतर्विषयी त्रैमासिक पत्रिका– 'स्वास्थ्य एवं जनसंख्याः परिप्रेक्ष्य एवं मुद्दे' (एचपीपीआई) और वर्ष 1999 से त्रैमासिक न्यूजलैटर तथा एक हिन्दी प्रकाशन 'धारणा' का प्रकाशन किया जा रहा है। एचपीपीआई पत्रिका को 9 राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा उद्धृत किया जाता है। इसके आरंभ से संस्थान द्वारा छात्रों, वैज्ञानिकों, स्वास्थ्य प्रशासकों, कार्यक्रम प्रबंधकों आदि के लाभ के लिए एक सौ पचास (150) से अधिक तकनीकी रिपोर्ट, विभिन्न श्रेणियों के स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल, अनुसंधान रिपोर्ट, स्वास्थ्य स्थिति रिपोर्ट, राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम श्रृंखला, पुस्तकें आदि का प्रकाशन किया गया है।

13. राष्ट्रीय प्रलेखन केंद्र

एनआईएचएफडब्ल्यू का राष्ट्रीय प्रलेखन केंद्र (एनडीसी) देशभर में प्रशासकों, योजनाकर्ताओं, नीति–निर्धारकों, अनुसंधानकर्ताओं, शिक्षकों, प्रशिक्षकों, कार्यक्रम कार्मिकों एवं स्वास्थ्य, जनसंख्या और परिवार कल्याण से संबंधित जनता की सूचना की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु वैश्विक स्तर पर सूचना को प्राप्त करने, प्रसंस्कृत करने, संगठित करने और प्रसारित करने का प्रयास करता है।

14. राजभाषा कार्यान्वयन

संस्थान में संकाय के सदस्यों तथा कर्मचारियों द्वारा हिन्दी के प्रयोग को उचित महत्व दिया जाता है। संस्थान में राजभाषा के कार्यान्वयन की नियमित निगरानी इस प्रयोजन से विधिवत गठित एक समिति द्वारा की जाती है। संकाय के सदस्यों एवं कर्मचारियों द्वारा सरकारी काम–काज में हिंदी के परिणामी प्रयोग के लिए एक संशोधित प्रोत्साहन योजना चलाई जाती है। संस्थान के इतिहास में पहली बार एनआईएचएफडब्ल्यू को श्रेणी–क के राज्यों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2012–13 हेतु इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है। सितंबर, 2014 में, प्रो0 जयंत के. दास, निदेशक, एनआईएचएफडब्ल्यू ने राष्ट्रपति भवन में भारत के माननीय

राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी के कर कमल से व्यक्तिगत रूप से पुरस्कार प्राप्त किया, जहां माननीय गृहमंत्री, श्री राजनाथ सिंह भी उपस्थित थे।

15. परामर्श

संस्थान के निदेशक एवं संकाय सदस्यों को जनस्वास्थ्य के क्षेत्र में विशेषज्ञों के रूप में समय–समय पर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, प्रशिक्षण, बैठकों आदि में भाग लेने का सुअवसर प्राप्त होता है।

15.48 ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र, नजफगढ़, नई दिल्ली

ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र, नजफगढ़, नई दिल्ली को वर्ष 1960 में स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डीजीएचएस), भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र, नजफगढ़ के रूप में पुनर्संगठित किया गया था। केंद्र को वर्ष 1960 में स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय (डीजीएचएस) भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र के रूप में मान्यता दी गई थी। वर्ष 1961 में ग्रामीण चिकित्सा शिक्षा योजना के उन्मुखीकरण के तहत लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज के मेडिकल इंटर्न हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशिक्षण देने के लिए केंद्र के रूप में पीएचसी, नजफगढ़ को घोषित करने के लिए स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के स्तर पर निर्णय लिया गया है। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाने के लिए वर्ष 1985 में एएनएम स्कूल शुरू किए गए थे और वर्ष 1991 में व्यावसायिक की गई थी।

प्रशिक्षण

- रोम योजना के तहत मेडिकल इंटर्न को प्रशिक्षण इस केंद्र से लगभग 350 अवैतनिक चिकित्सा इंटर्न की ग्रामीण तैनाती हुई है।
- प्रति शैक्षणिक सत्र में 40 छात्रों के वार्षिक प्रवेश के साथ एएनएम 10+2 (व्यावसायिक) छात्रों को प्रशिक्षण। वर्ष 2013–14 के दौरान 78 छात्र उत्तीर्ण हुए।
- विभिन्न नर्सिंग संस्थानों जैसे नर्सिंग कॉलेज, सफदरजंग अस्पताल, आरएमएल अस्पताल, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, होली फैमिली अस्पताल, बत्तरा अस्पताल, अपोलो अस्पताल एवं 3 विभिन्न अन्य सरकारी/राज्य सरकार /निजी संस्थानों के बीएससी/ एमएससी/ जीएनएम छात्रों को सामुदायिक स्वास्थ्य नर्सिंग प्रशिक्षण अवधि के दौरान लगभग 1000 प्रशिक्षु प्रशिक्षित किए गए थे।
- नर्सिंग कार्मिकों को संवर्धक प्रशिक्षण; और
- एक दिवसीय अवलोकन दौरा

स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं

- वर्ष 2013–14 के दौरान आरएचटीसी के तहत सभी 3 स्वास्थ्य केंद्रों की सम्मिलित ओपीडी उपस्थिति 406806 थी।
- हमारे केंद्र पर 48814 मरीज 24×7 आकस्मिक सेवाओं में उपचार प्राप्त किया।
- 147 सामान्य प्रसव कराए गए।
- केंद्र में मलेरिया क्लीनिक, डीओटी केंद्र, आईसीटीसी और मोबाइल सेक्स क्लीनिक भी उपलब्ध हैं।

क्षेत्र सर्वेक्षण/आउटरीच

- एनआरएचएम के तहत सहयोग के साथ एएनएम तथा एलएचवी की तैनाती से हमारे 16 उपकेंद्रों के जरिए क्षेत्र–दौरा; और
- कैचमेंट आबादी को व्यापक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान किया जाता है।

15.49 गांधीग्राम ग्रामीण स्वास्थ्य संस्थान और परिवार कल्याण न्यास (जीआईआरएच एफडब्ल्यूटी)

फोर्ड फाउंडेशन, भारत सरकार एवं तमिलनाडु सरकार से वित्तीय सहायता सहित वर्ष 1964 में स्थापित हुआ। देश में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण प्रशिक्षण केंद्र 47 एचएफडब्लयूटीसी में से एक है। यह पीएचसी, निगम/ नगर निगम ओर तमिलनाडु एकीकृत पोषण परियोजनाओं में कार्यरत स्वास्थ्य एवं संबद्ध जनशक्ति को प्रशिक्षित करता है। वर्ष 2013–14 के दौरान 17 व्यक्तियों को स्वास्थ्य संवर्धन एवं शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम (पीजीडीएचपीई) में प्रशिक्षित किया गया और वर्ष 2014–15 के दौरान 26 छात्रों को दाखिला दिया गया।

क्षेत्रीय स्वास्थ्य शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (आरएचटीटीआई) के माध्यम से नर्सिंग कॉलेजों के एएनएम, स्टाफ नर्स एवं छात्रों की क्षमताओं को उन्नत करने में भी गांधी ग्राम संस्थान संलग्न है। वर्ष 2014–15 के दौरान आरएचटीटीआई द्वारा निम्नलिखित क्रियाकलाप संचालित किए गए हैं।

i) **नर्सिंग शिक्षा एवं प्रशासन में डिप्लोमा (डीएनईए):** वर्ष 2013–14 के लिए डीएनईए पाठ्यक्रम का 13वां बैच संचालित किया गया। सरकारी बोर्ड परीक्षाएं पूरा करने के बाद दिनांक 15.05.2014 को उम्मीदवारों को कार्यमुक्त किया गया। भारतीय नर्सिंग परिषद, नई दिल्ली के निर्देशानुसार डीएनईए पाठ्यक्रम बंद कर दिया गया था और उसे पोस्ट बेसिक बी.एससी (एन) कार्यक्रम के रूप में उन्नत करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

ii) स्वास्थ्य विजीटर पाठ्यक्रम (एएनएम)/एमपीएचडब्ल्यू (एफ) (6 माह) के लिए संवर्धन प्रशिक्षण) – वर्ष 2013–14 के दौरान 27 को प्रशिक्षित किया गया और वर्ष 2014–15 के दौरान 16 दाखिले किए गए।

iii) **सामुदायिक स्वास्थ्य नर्सिंग ने अल्पकालिक प्रशिक्षण:** सामुदायिक स्वास्थ्य नर्सिंग के अल्पकालिक प्रशिक्षण में वर्ष 2013–14 के दौरान कुल 939 को और वर्ष 2014–15 के दौरान 673 को प्रशिक्षित किया गया।

15.50 एचएलएल लाईफकेयर लिमिटेड (एचएलएल)

एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड (एचएलएल) को वर्ष 1966 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में शामिल किया गया। एचएलएल ने अपना पहला प्लान दिनांक 5 अप्रैल, 1969 को केरल राज्य के तिरुवनंतपुरम जिले में पेरूरकाडा में मैसर्स ओकामोटो इंडस्ट्रीज जापान के तकनीकी सहयोग से शुरू किया था। आज 7 विनिर्माण प्लांटों के साथ एचएलएल एक बहुउत्पाद, बहुइकाई संगठन के रूप में विकसित हो गया है जो मानव जाति की विभिन्न जनस्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करता है। वर्ष 2003 में, जब एचएलएल का 163 करोड़ आईएनआर का अच्छा टर्नओवर था, उसने वर्ष 2010 तक 1000 करोड़ आईएनआर टर्नओवर की कम्पनी बनने का लक्ष्य निर्धारित किया था। एचएलएल ने वर्ष 2010 तक न केवल उससे अधिक लक्ष्य हासिल किया बल्कि वर्ष 2020 तक 10 गुना अधिक विकास का लक्ष्य निर्धारित किया है।

अब, एचएलएल एक मिनी रत्न, अनुसूची ख केंद्रीय सार्वजनिक खेत्र का उपक्रम है। एचएलएल विश्व की एकमात्र कंपनी है जो इतनी व्यापक किस्मों के गर्भनिरोधकों का विनिर्माण और विपणन करती है। आज एचएलएल के पास प्रतिवर्ष 1.5 विलियन कंडोम का उत्पादन करने की क्षमता है, जो इसे कंडोम विनिर्माण में विश्व की अग्रणी कंपनी बनाता है, जो कि विश्व उत्पाद क्षमता का लगभग 10% है।

देश की स्वास्थ्य परिचर्या जरूरतों को पूरा करने के लिए नवोन्मेषी उत्पादों, सेवाओं और सामाजिक कार्यक्रमों की विस्तृत श्रृंखला के साथ, एचएलएल में लाइफकेयर लिमिटेड, 'स्वस्थ पीढी हेतु नवोन्मेष' के सूत्रवाक्य के साथ, अपने कार्य में दृढ़ता से संलग्न है।

कार्य–निष्पादन

एचएलएल ने अपने कार्यों से पिछले वर्ष के 832.94 करोड़ रुपए के मुकाबले वर्ष 2013–14 के दौरान 941.68 करोड़ रुपए का सर्वाधिक राजस्व प्राप्त किया। वर्ष 2012–13 के 72.69 करोड़ रुपए के मुकाबले ब्याज, कर, स्फीति और ऋणमुक्ति (ईबीआईटीडीए) से पहले की आय 8% बढ़कर 78.40 करोड़ रुपए हो गई। कर चुकाने से पहले लाभ (पीबीटी) पिछले वर्ष के 37.81 करोड़ रुपए के मुकाबले 36. 24 करोड़ रुपए था। कर चुकाने के बाद लाभ (पीएटी) पिछले वर्ष 2012–13 के 30.07 करोड़ रुपए के मुकाबले 24. 83 करोड़ रुपए था। 31.03.2014 को निवल संपत्ति 403.05 करोड़ रुपए थी जो कि इसी तिथि को पिछले वित्तीय वर्ष में 378.21 करोड़ रुपए से 7% अधिक थी।

विविधीकरण/विस्तार

क) एचएलएल बायोटेक लिमिटेड (एचबीएल)

एचएलएल बायोटेक लिमिटेड (एचबलएल), मार्च, 2012 में शामिल की गई एक 100% अनुषंगी कंपनी है, यह 594 करोड़ रुपए की परियोजना लागत से भारत सरकार के व्यापक प्रतिरक्षण कार्यक्रम हेतु अपेक्षित टीकों तथा अन्य नई पीढ़ी के टीकों, जिनका उपयोग रोके जा सकने वाले रोगों से बचने के लिए किया जाता है उनके विनिर्माण के लिए

चेन्नई के निकट चेंगलपट्टू में एक अत्याधुनिक एकीकृत टीका कॉम्लेक्स (आईवीसी) की स्थापना कर रहा है। आईवीसी का निर्माण पूरे जोर–शोर से हो रहा है जिसे भारत सरकार द्वारा ''राष्ट्रीय महत्व की परियोजना'' घोषित किया गया है।

ख) गोवा एण्टीबायोटिक्स और फार्मास्यूटिकल लि. (जीएपीएल)

वर्ष 2013–14 के दौरान, एचएलएएल ने फार्मा क्षेत्र में लक्षित वृद्धि के प्राप्त करने की एचएलएल की फार्मा विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाने के लिए, गोवा सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम मैसर्स गोवा एण्टीबायोटिक और फार्मास्यूटिकल लि. (जीएपीएल) के 74% पेड–अप शेयर कैपिटल खरीद लिए। जीएपीएल का विनिर्माण संयंत्र ट्यूम–परनेम, गोवा में स्थित है। कंपनी ड्राई पाउडर इंजेक्टेबल्स, कैपसूल, टैबलेट और लिक्विड ओरल में फार्मास्यूटिकल्स फार्मूलेशन का विनिर्माण करती है। जीएपीएल के कार्यों से कुल राजस्व और निवल लाभ पिछले वर्ष 2012–13 के 35.61 करोड़ रुपए और 19.90 लाख रुपए के मुकाबले वित्तीय वर्ष 2013–14 के दौरान क्रमशः 40.59 करोड़ रुपए और 2.99 करोड़ रुपए था।

ग) एचएलएल इन्फ्रा टेक सर्विसेज लि. (एचआईटीईएस)

अप्रैल, 2014 में एचएलएल ने आधारभूत ढाँचे के विकास, सुविधाओं के प्रबंधन, प्रापण परामर्श और संबद्ध सेवाओं जैसी सेवाएं प्रदान करने के लिए एचएलएल इंफ्रा टेक सर्विसेज लि. (एचआईटीईएस) नाम से एक 100% अनुषंगी कंपनी का निर्माण किया है।

घ) लाइफकेयर सेंटर – लाइफकेसर सेंटर व्यापक चिकित्सा खुदरा आउटलेट के माध्यम से सर्जिकल इम्प्लांट, सर्जिकल उपभोज्य, अनिवार्य जीवन रक्षक औषधियां, नेत्र रोग औषधियां तथा लेंस और फ्रेम जैसी नेत्र रोग संबंधी सहायता सामग्री प्रदान करते हैं। वर्ष के दौरान, कंपनी ने तीन मेडिकल कॉलेज अस्पतालों नामतः वीएसएस मेडिकल कॉलेज, बुर्ला, एमकेसीजी मेडिकल कॉलेज, बेहरामपुर और एससीबी मेडिकल कॉलेज, कटक में लाइफकेयर सेंटर स्थापित किए हैं। लाइफकेयर सेंटर केरल में कोइलांदी तथा कर्नाटक के निम्हांस, बंगलुरु में भी स्थापित किए गए थे। इन केंद्रों के साथ लाइफकेयर सेंटरों की कुल संख्या बढ़कर 14 हो गई है तथा इसका विस्तार चार राज्यों में हो गया है।

ङ) ब्लड बैग की क्षमता में वृद्धि

एचएलएल ने इस वर्ष के दौरान ब्लड बैग उत्पादन की क्षमता को बढ़ाकर 11.5 मिलियन से 12.5 मिलियन कर लिया है।

च) सेंटक्रोमेन

एचएलएल ने सेंटक्रोमेन के उत्पादन को 1500 कि.ग्रा. तक बढ़ाया है।

छ) बलरामपुरम परियोजना

वर्ष के दौरान, एचएलएल ने केरल के बलरामपुरम में कंडोम की पैकिंग और भण्डारण की सुविधा स्थापित की है।

ज) भौगोलिक विस्तार

- वर्ष के दौरान, एचएलएल ने माइक्रोनेशिया, जांबिया, मलेशिया और रवांडा सहित नए क्षेत्रों तक स्यूटर्स के बाजार का विस्तार किया है।
- अल्जीरिया, बेनिन और जांबिया सहित नए क्षेत्रों तक मूडस कंडोम के बाजार का विस्तार किया है।

झ) नई परियोजनाएं

वर्ष 2013–14 के दौरान एचएलएल ने निम्नलिखित परियोजनाएं पूरी की हैं:

- 28 करोड़ रुपए के निवेश से केरल में कोच्चि के निकट इरापुरम में 300 मिलियन नग की कंडोम उत्पादन की क्षमता में वृद्धि के लिए विनिर्माण संयंत्र।
- कंनागला फेक्ट्री, बेलगाम में कंडोम निर्माण क्षमता को 120 मिलियन पीसों से बढ़ाकर परियोजना लागत 5.6 करोड़ रुपए करने हेतु परियोजना।
- कंनागला, फेक्ट्री, बेलगाम में सेनेट्री नेपकिन निर्माण की क्षमता को 200 मिलियन पीसों से 400 मिलियन पीसों तक बढ़ाना।
- चिकित्सा उपकरणों के भंडारण के लिए अक्काकुलम, तिरुवनंतपुरम में प्रि–इंजीनियर्ड भवन।

ट) मुंबई में क्षेत्रीय कार्यालय भवन का निर्माण – कंपनी की स्वयं की भूमि पर 11.10 करोड़ रुपए के निवेश से खरकर, नवी मुंबई में क्षेत्रीय कार्यालय भवन का निर्माण पूर्ण होने के अंतिम चरण पर है।

ठ) **एलएनजी भंडारण एवं पुनः गैसीकरण, पेरूरकड़ा फैक्टी, त्रिवेंद्रम**– एलएनजी भंडारण तथा पुनः गैसीकरण सुविधा केंद्र को कंपनी द्वारा कंडोम निर्माण फैक्ट्री के पास केरल में पेरूकड़ा, त्रिवेंद्रमपुरम में अक्तूबर 2014 को स्थापित किया गया।

सूचना प्रौद्योगिकी

ईआरपी क्रियान्वयन (अच्छे से बेहतर परियोजना) के क्रम में, एचएलएल की ई–ट्रेडिंग (एसएपी–एसआरएम 7.0.2) प्रथम निविदा मांग के साथ 27 नवंबर 2013 को शुरू की गई। सिस्टम तक इंटरनेट पर कभी भी, कहीं भी पहुँच के लिए कर्मचारी स्वयं–सेवा (ईएसएस) तथा स्वयं सेवा प्रबंधन एमएसएस) तैनात किया गया। इन्द्रापुरम में नई फैक्ट्री में भी एसएपी सोल्यूशन का विस्तार किया गया है। एलएलएल ने एसएपी (जन सेवा तथा राष्ट्रीय भवन में लाभ के लिए) वार्षिक उपभोक्ता उत्कृष्टता पुरस्कार 2013– विशेष मान्यता पुरस्कार जीता। एचएलएल ने एक उद्यम, जो अपने उपभोक्ता तथा हितधारकों को महत्वपूर्ण व्यापार मूल्य प्रदान करने के लिए एक सफल सूचना प्रौद्योगिकी है, के रूप में केएमए–एनएसएससीओएम आईटी प्रयोगकर्ता पुरस्कार 2013 भी जीता है।

एचएलएल का निष्पादन

कंपनी के संचालन की उपलब्धियां निम्नलिखित हैः–

(करोड़ रूपये में)

विवरण	2013–14	2012–13
कुल आय	941.68	832.94
कर चुकाने के बाद कुल लाभ	25.70	30.07
कुल कीमत	399.39	372.82
संभाले गए कुल व्यापार की मात्रा	**1590.00**	**1376.00**

15.51 स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय का क्षेत्रीय कार्यालय

केन्द्रीय प्रायोजित स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों से संबंधित मामलों का पर्यवेक्षण, मॉनिटरिंग और समन्वय करने के लिए वर्ष 1978 में क्षेत्रीय समन्वय अधिकारी (आरसीओ) और क्षेत्रीय स्वास्थ्य अधिकारियों (आरसीओ) को सम्मिलित करके एक क्षेत्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यालय (आरओएचएंडएफडब्ल्यू) स्थापित किया गया। डीजीएचएस के रूप में कार्य कर रहे स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के 19 क्षेत्रीय कार्यालय हैं जो विभिन्न राज्यों की राजधानियों में स्थित हैं और क्षेत्रीय निदेशक इनके अध्यक्ष हैं। आरओएच तथा एफडब्ल्यू की आवश्यक यूनिटें हैं (i) मलेरिया प्रचालन क्षेत्र अनुसंधान योजना (एमओएफ–आरएस), (ii) कीट विज्ञानी अनुभाग (iii) मलेरिया अनुभाग (iv) स्वास्थ्य सूचना फील्ड यूनिट (एचआईएफडब्ल्यू) और (v) क्षेत्रीय मूल्यांकन दल (आरईटी)।

भूमिका व जिम्मेदारियांः

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए केन्द्र राज्य क्रियाकलापों के साथ संपर्क;
- मलेरिया कार्य की गुणवत्ता की पुनः जाँच कार्यलय स्थलों में मुफ्त मलेरिया क्लीनिक का रखरखाव और एनवीबीडीसीपी से संबंधित तकनीकी रिपोर्ट की समीक्षा/विश्लेषण करना;
- निरीक्षण के दौरान परिवार कल्याण अपनाने वालों के रिकार्ड और अन्य रजिस्टरों के संबंध में जांच और परिवार कल्याण कार्यक्रम के क्रियाकलापों के संबंध में फीडबैक मुहैया करवाना;
- प्रयोगशाला तकनीशियनों, मेडिकल और पैरामेडिकल स्टॉफ के साथ–साथ विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में नियुक्त अन्य श्रेणियों के स्टाफ के लिए प्रशिक्षण आयोजित करना और
- क्षेत्रीय मूल्यांकन टीम (आरईटी) स्वास्थ्य सूचना फील्ड यूनिट (एचआईएफयू), मलेरिया प्रचालन फील्ड अनुसंधान योजना (एमओएफआरएस) द्वारा विनिर्दिष्ट दायित्व शुरू किए गए हैं।

तकनीकी गतिविधियों का निष्पादन

आरओएचएफडब्ल्यू द्वारा वर्ष 2014–15 द्वारा शुरू की गई गतिविधियां इस प्रकार हैं:

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम के कार्यान्वयन की समीक्षा हेतु राज्य कार्यक्रम अधिकारी के साथ 193 समीक्षा बैठकें आयोजित की गईं।
- जिला और उप–जिला स्तरीय स्वास्थ्य सुविधा केंद्रों के फील्ड दौरे करके राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम के कार्यान्वयन की समीक्षा की गई।
- राष्ट्रीय स्तर पर 152 बैठकों में और राज्य स्तर पर 434 बैठकों में भाग लिया गया।
- 105 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें 2830 प्रतिभागियों को मलेरिया माइक्रोस्कोपी, आईसीडी–10 और अन्य कार्यकलापों में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- एमओएफआरएस, आरईटीएस और सीबीएचआई की टीम द्वारा 5 औषध प्रतिरोध अध्ययन, 47 जानपादिकरोग सर्वेक्षण तथा 15 मूल्यांकन अध्ययन किए गए।
- मलेरिया के लिए 448372 परिधीय स्मीयर की प्रति जांच की गई। उनमें से 2585 स्लाइडों को विसंगति युक्त पाया गया। संबंध स्वास्थ्य परिचर्या सुविधा केंद्र को फीडबैक दिया गया तथा सुधारात्मक कार्रवाई की गई।

आरओएचएफडब्ल्यू की तकनीकी गतिविधियाँ

समीक्षा बैठक	**193**		
राष्ट्रीय स्तर बैठक	**152**		
राज्य स्तर बैठक	**434**		
प्रशिक्षण कार्यक्रम	**26 (मलेरिया माइक्रोस्कोपी)**	**38 (सी.बी एच आई संबंधी प्रशिक्षण)**	**41 (अन्य प्रशिक्षण)**
प्रतिभागी	**579**	**1084**	**1167**
औषध विरोधी अध्ययन	**5**		
कीट विज्ञान संबधी सर्वेक्षण	**47**		
मूल्याकंन अध्ययन	**15**		
पेरीफेरल स्मीयर क्रास जाँच	**448372**		
विसंगतियां	**2585**		

15.52 नई दिल्ली क्षयरोग (एनडीटीबी) केंद्र, नई दिल्ली

वर्ष 1940 में मॉडल टीबी क्लीनिक के रूप में छोटी सी शुरुआत से आज एनडीटीबी केंद्र टीबी और वक्षरोगों के लिए राष्ट्रीय स्तर संस्थान के रूप में विकसित हो गया है। यहाँ से एकीकृत रूप से स्वास्थ्य परिचर्या प्रशिक्षण, शिक्षा प्रदान की जा रही है। एनडीटीबी केंद्र अपनी स्थापना के दिन से टीबी एवं वक्ष रोगों के लिए राष्ट्रीय स्तर संस्थान बनना था। आज यह वास्तविकता बन चुकी है कि केन्द्र ने पूरे देश में टीबी तथा श्वसन रोगों के उपचार में उत्कृष्टता हासिल कर ली है।

यह केंद्र देश के विभिन्न भागों से टीबी रोगियों का निदान व उपचार सुविधा पाने हेतु रेफरल केंद्र बन गया है। एनडीटीबी केंद्र को वर्ष 1951 में विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनिसेफ व भारत सरकार के सहयोग के साथ पहला प्रदर्शन सह प्रशिक्षण केंद्र बनाए जाने के साथ नवीनीकृत किया गया। देश का सबसे पुराना संस्थान होने के नाते इसने अपने आप को टीबी एवं श्वसन रोग के क्षेत्र में राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया है। सरकार ने देश में इसे शीर्ष संस्थान बनाने के लिए तकनीकी व वित्तीय दोनों समर्थन दिया है।

पूरे देश में डाट्स साधनों की गुणवत्ता विस्तार के उद्देश्य के साथ केन्द्र टीबी एवं श्वसन रोगों के क्षेत्र में निरंतर सेवाएं दे रहा है। केन्द्र का लक्ष्य है गतिविधियों व सुगमता के रूप में

साधनों को फैलाना तथा देश में टीबी के लिए आगे आने हेतु दशकों की उपलब्धियों को कायम रखना।

केन्द्र एक नई टीबी विराम कार्यनीति के सभी घटकों के लिए टीबी सेल्स पर सकारात्मक परिणाम पाने के साथ संपर्क हेतु सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। आईआरएल के रूप में केन्द्र राज्यों में प्रयोगशाला के लिए गुणवत्ता आश्वासन के माध्यम से वैश्विक मानक बनाए रखने में संस्थान आरएनटीसीपी की सहायता कर रहा है। संस्थान बाल टीबी प्रबंधन तथा संचालन अनुसंधानों के लिए कार्यक्रम में निजी क्षेत्रों व चिकित्सा सहाविध्यालयों को शामिल करने के संबंध में नीति निर्माण हेतु एक मार्गदर्शक बल है।

फिलहाल इस संस्थान के निम्नलिखित कार्यकलाप हैं:

- क्षयरोगियों तथा संबध रोग से ग्रस्त रोगियों के लिए रेफरल ओपीडी सेवाएं।
- क्षयरोगियों और मधुमेह/क्षयरोग एवं एचआईवी, चिरकालिक अवरुद्ध वायुपथ रोग तथा तंबाकू मुक्ति क्लीनिक।
- राज्य क्षयरोग प्रशिक्षण और प्रदर्शन केंद्र से संबद्ध कार्यकलाप।
- इंटरमीडिएट संदर्भ प्रयोगशाला कार्यकलाप।
- क्षयरोग तथा श्वास रोग के क्षेत्र में अनुसंधान

वर्ष 2014–15 के दौरान नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र की एक झलक:

क) बहिरंग उपस्थिति:

मानक	वर्ष 2013–14	वर्ष 2014–15	
		सितम्बर 2014 तक की उपलब्धियां	2014–15 के लिए लक्ष्य
पंजीकृत नए बहिरंग रोगी	6396	3992	8000
रोगियों का फिर से जांच के लिए आना	4610	3146	6200
कुल बहिरंग रोगी उपस्थिति	11006	7138	14200

ख. नई दिल्ली क्षयरोग केन्द्र में उपलब्ध विभिन्न नैदानिक/उपचारात्मक सुविधाओं के उपयोग के लिए रोगी पैटर्न

मानक	वर्ष 2013–14	वर्ष 2014–15	
		सितम्बर 2014 तक की उपलब्धियां	2014–15 के लिए लक्ष्य
प्रयोगशाला जांचों के लिए उपस्थिति	23107	10726	22000
मांटूक्स जांच के लिए उपस्थित होना	4148	3017	6000
एनडीटीबी केन्द्र के डीओटी केन्द्र के अंतर्गत उपचार लेना	106	75	––
रेडियोलॉजिकल जांचें	621	402	800
विशेष क्लीनिक में उपस्थित होना (मधुमेह ए एचआईवी, सीओएडी)	277	96	––

ग. प्रशिक्षण/आईआरएल दौरे/ प्रकाशन

मानक	वर्ष 2013–14	सितम्बर 2014 तक की उपलब्धि
प्रशिक्षित कार्मिक	1104	733
ईक्यूए के लिए आईआरएल दौरा	25	9
चेस्ट क्लीनिक के लिए पर्यवेक्षण व मॉनिटरिंग	18	15
अनुसंधान और प्रकाशन	3	2

नई दिल्ली क्षयरोग केंद्र ने पत्रिकाओं में शोध–पत्र भी प्रकाशित किए हैं और कुछ शोध–पत्रों को सम्मेलनों में प्रस्तुत किया है। यह केंद्र ''आरएनटीसीपी की उपयोगिता में बाधाओं के मूल्यांकन'' तथा ''आणविक एवं ठोस अनुपात

पद्धति द्वारा एमडीआर–टीबी के बीच ओफ्लोक्ससिन प्रतिरोध की तीव्र जाँच'' पर दो अनुसंधान परियोजनाएं भी चला रहा है।

15.53 केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (सीएचईबी)

केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वास्थ्य शिक्षा हेतु अग्रणी संस्थान है, इसकी स्थापना वर्ष 1956 में हुई थी। सीएचईबी की धारणा है, स्वास्थ्य परिचर्या प्रदानगी प्रणाली के अनिवार्य अंग के रूप में स्वास्थ्य सेवा को संस्थागत बनाना। सीएचईबी का मत है देश में स्वास्थ्य शिक्षा संवर्धन हेतु योजना तथा कार्यक्रम तैयार करना; स्वास्थ्य शिक्षा क्षेत्र में व्यवहार्य अनुसंधान आयोजित करना; स्वास्थ्य व्यावसायिकों तथा विद्यालय अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करना; तथा स्वास्थ्य जागरुकता निर्माण हेतु विभिन्न प्रकार के मुद्रित, इलेक्ट्रोनिक तथा संचार मीडिया सामग्री का उत्पादन करना।

वर्ष 2014–15 के दौरान प्रमुख उपलब्धियाँ:

- भारत के विभिन्न भागों तथा ग्रामीण स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण प्रशिक्षण केंद्र से 293 विद्यार्थियों को शामिल कर स्वास्थ्य शिक्षा एवं स्वास्थ्य संवर्धन के प्रति जागरुक करने हेतु 8 अभिमुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। विभिन्न स्वास्थ्य गतिविधियों के माध्यम से स्वास्थ्य जागरुकता निर्माण हेतु उन्हें सीएचईबी द्वारा किए गए संचालन, उपलब्धियों एवं प्रयासों से भी अवगत कराया गया।
- दो विद्यार्थियों ने सफलतापूर्वक दो वर्षीय स्वास्थ्य शिक्षा पाठ्यक्रम स्नानकोत्तर डिप्लोमा पूरा किया (बैच 2012–14)। यह पाठ्यक्रम दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध तथा भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद से मान्यता प्राप्त है और सीएचईबी में आयोजित की जाती है।
- एनवीबीडीसीपी के साथ 7 अप्रैल, 2014 को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। दिल्ली के पांच मेडिकल एवं सात नर्सिंग कॉलेजों ने जन जागरुकता निर्माण हेतु *''छोटी बात–बड़ा संदेश''* विषय के साथ विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाने हेतु गतिविधियों में भाग लिया।
- टाइम्स ऑफ इंडिया के सहयोग से लगभग 3000 बच्चों के साथ 31 मई, 2014 को *''विश्व तंबाकू रहित दिवस''* मनाया गया। आयोजन में पोस्टर व स्लोगन लेखन प्रतियोगिता; स्वास्थ्य संदेश; नाटक व गीत प्रतियोगिता आदि आयोजन करते हुए धूम्रपान व तंबाकू उपभोग की हानियों के विषय में जागरूकता दी गई। स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय ने सभी बच्चों के माता–पिता से धूम्रपान व तंबाकू उपभोग के विरूद्ध शपथ दिलवाई। इसके साथ इन सामग्रियों की हानि के विषय में बच्चों को जागरूक करने हेतु राष्ट्रीय बाल भवन में 15 दिवसीय अभियान भी चलाया गया था।
- सर्वसाधारण जागरूकता निर्माण हेतु विभिन्न स्वास्थ्य शैक्षिक गतिविधियां चलाए जाने के क्रम में ''राष्ट्रीय राजमार्गों पर सरकारी अस्पतालों में अभिघात परिचर्या सुविधाओं की स्थापना हेतु क्षमता निर्माण'' के संबंध में आईईसी घटकों के लिए वर्ष 2014–15 के लिए स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय/स्वास्थ्य एवं पोस्टर कल्याण मंत्रालय के लिए कार्रवाई योजना तैयार तथा प्रस्तुत की गई।
- सर्वसाधारण जागरूकता निर्माण हेतु विभिन्न स्वास्थ्य शैक्षिक गतिविधियाँ चलाए जाने के क्रम में ''जलने से हुए जख्म के निवारण तथा प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम'' के संबंध में आईईसी घटकों के लिए वर्ष 2014–15 हेतु स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय/स्वा.परि. कल्याण मंत्रालय हेतु कार्रवाई योजना तैयार तथा प्रस्तुत की गई।
- कक्षा III-X के विद्यार्थियों के लिए विशेषतः गैर–संक्रामक रोगों, पोषण, स्वस्थ व पारंपरिक खाद्य आदि पर विषयों पर अध्याय तैयार करने हेतु अकादमिक योगदान को एनसीईआरटी के सहयोग से आयोजित कार्यशालाओं में एनआईएचएफडब्ल्यू संकाय तथा एनसीडी प्रभाग (स्वा.सेवा महानिदेशालय) द्वारा सुविधाजनक बनाया गया।
- सीएचईबी की कार्यालयी वेबसाइट पर स्वस्थ जीवनशैली, जलने के निवारण व प्राथमिक उपचार तथा तंबाकू/धूम्रपान छोड़ने संबंधी आईईसी सामग्री (लिखित, ध्वनि, दृश्य आदि) डाले गए।

- राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र, स्वा.सेवा महानिदेशालय द्वारा प्रकाशित *'सुरक्षित इंजेक्शन प्रक्रिया पर पुस्तिका'* निर्माण में योगदान देना।
- विश्वसीनता स्वास्थ्य सूचना प्रदान करने हेतु राष्ट्रीय स्वास्थ्य पोर्टल की सामग्री वैधीकरण में योगदान देना।
- आईईसी सामग्री से संबंधित राष्ट्रीय अंग प्रत्यारोपण कार्यक्रम तथा जन जागरुकता गतिविधियों में तकनीकी सहायता देना।
- नवंबर, 2014 में आयोजित भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला–2014 के स्वास्थ्य मंडप में एनओटीपी के सहयोग से *''स्वस्थ्य जीवन शैली''* और ''अंग दान संवर्धन'' पर केंद्रित स्टाल लगाई गई। आईईसी सामग्री तथा अंगदान से संबंधित ट्रेन प्रदर्शक निर्माण हेतु एनओटीपी व इस क्षेत्र में कार्यरत अन्य एनजीओ के समन्वयन में कार्यशाला आयोजित की गई थी।
- इस वर्ष के दौरान *''स्वच्छता तथा स्वास्थ्य''* विषय पर एक पुस्तिका तैयार की जा रही है तथा अगामी वर्ष में मुद्रित की जाएगी।